A Thousand Splendid Suns

हज़ारों दमकते आफ़ताब

ख़ालिद हुसैनी

द काइट रनर के लेखक की दिल को छू लेने वाली कृति

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted]. [redacted]., 11 [redacted] [redacted], [redacted] [redacted], [redacted] 110 017, [redacted] [redacted] [redacted] (212.[redacted].[redacted].) [redacted]., 375 [redacted] [redacted], [redacted] 10014, [redacted]. [redacted] [redacted] (212[redacted]), 90 [redacted] [redacted], [redacted] [redacted], 700 [redacted], [redacted] [redacted] 2 [redacted] 3 [redacted]

([redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted].) [redacted] [redacted] [redacted], 80, [redacted], [redacted] [redacted].[redacted].[redacted]. [redacted].[redacted].[redacted]., [redacted]

[redacted] [redacted], 25 [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] 2, [redacted] ([redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]) [redacted] [redacted] ([redacted]), 707 [redacted] [redacted], [redacted], [redacted] 3008, [redacted] ([redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted])

[redacted] [redacted] (212.[redacted]), 67 [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] 0632, [redacted] ([redacted] [redacted] [redacted] [redacted]) [redacted] [redacted] ([redacted] [redacted]) ([redacted]) [redacted]., 24 [redacted] [redacted], [redacted], [redacted] 2196, [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted].,

रजिस्टर्ड ऑफिस 80 स्ट्रेंड, लंदन डब्ल्यू.सी2 आर. ओ.आर.एल., इंग्लैंड

अंग्रेज़ी का प्रथम संस्करण: व्लूम्सबरी, 2007 हिंदी का प्रथम संस्करण पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2012

कॉपीराइट© 2007 ATSS पब्लिकेशन्स, LLC

सर्वाधिकार सुरक्षित

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

आईएसबीएन: 9780143415879

टाइपसेट: कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-110032 मोबाइलः 9811388579

मुद्रक: श्री कृष्णा प्रिंटर्स, नोएडा

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूयांनुमति के विना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा ज़िल्दचंद या खुले किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के ख़रीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुनः प्रकाशन वा पुनः प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने की प्रति अपनाने, इसका अनूदित रूप तैयार करने अथवा इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

हमेशा सीखते रहना

पियर्सन

एक

मरियम पांच साल की थी जब उसने पहली बार हरामी शब्द सुना था।

वह एक गुरुवार का दिन था। वह जरूर गुरुवार ही होगा, क्योंकि मरियम को याद आया कि वह उस दिन बेचैन और सहमी हुई थी जो कि वह सिर्फ़ गुरुवार को ही रहा करती थी। यह वह दिन था जब जलील कोल्बा पर उससे मिलने आता था। जब तक वो उसे घुटनों तक ऊँची घास को पार करते हुए और हाथ हिलाते हुए दिखता, मरियम समय काटने के लिए एक कुर्सी पर चढ़ गई थी और अम्मी का चीनी चाय सेट गिरा दिया था। वह चाय का सेट मरियम की अम्मी नाना की अकेली निशानी थी जो उनको उनकी अम्मी से मिली थी।

उनका इंतकाल तब हो गया था जब नाना दो साल की थीं। नाना ने पोर्सिलीन के एक नीले-सफ़ेद टुकड़े को संभाल कर रखा था, चायदानी की टोंटी का वह शानदार घुमाव, हाथ से रंगी हुई उसकी गर्दन और उसकी फूलदार नक्काशी, चीनी के कटोरे पर बना हुआ ड्रैगन जो बुराइयों के नाश को आमादा दिखता था।

यही आख़िरी टुकड़ा मरियम की उंगलियों से फिसल कर कोल्बा के लकड़ी के फर्श पर गिर गया और टुकड़ों में बिखर गया था।

जब नाना ने कटोरे को देखा तो उनका चेहरा लाल हो गया। उनका ऊपरी होंठ कांपा और उनकी दोनों आंखों ने, जिनमें से एक आलसी थी और एक अच्छी, मरियम पर बिना पलक झपकाए टिक गईं एक सपाट और स्थिर निगाह थी वो। नाना इतने गुस्से में दिख रही थीं कि मरियम को डर लगा

4 ख़ालिद हुसैनी

कि कहीं जिन फिर से नाना पर सवार न हो जाए। लेकिन जिन इम यार नहीं आया। इसके बजाए, नाना ने मरियम की कलाई पकड़ी और उसे करीय खींचा और भिंचे हुए दांतों के साथ कहा, 'तुम एक लापरवाह हरामी हो। मैंन जो कुछ भी बर्दाश्त किया है यह उसका तोहफा है। पुश्तैनी चीज़ों को तोड़ने वाली लापरवाह हरामी ।'

तव मरियम समझ नहीं पाई थी। वह नहीं जानती थी कि हरामी शब्द का मतलब क्या होता है। न ही वह इतनी बड़ी थी कि नाइंसाफियों को समझ सकें, यह समझ सकें कि कसूरवार हरामी को पैदा करने वाले लोग हैं न कि खुद हरामी जिसका अर्कला गुनाह पैदा होना है। लेकिन जिस तरह से नाना ने इस शब्द को कहा था, मरियम ने अंदाजा लगाया कि हरामी होना एक बदसूरत, नापसंदीदा चीज़ है जैसे कि कोई कीड़ा होता है। जैसे कि तिलचट्टे होते हैं जिनको नाना हमेशा कीमती रहती और बुहार कर कोल्या से बाहर फेंकती रहतीं।

बाद में बड़ी होने पर मरियम समझ गई। नाना ने जिस तरह इसे कहा था, मानां वह इस कह नहीं रही हो, वल्कि उस पर थूक रही हो, उसी ने मरियम को इसकी पूरी चुभन का अहसास करा दिया था। तब वो नाना की बात का मतलब समझ गई थी कि यह एक अनचाही चीज़ थी, कि मरियम एक नाजायज़ इनसान थी जिसका प्यार, परिवार, घर और कवूल किए जाने जैसी चीज़ों पर कोर्ड जायज़ दावेदारी नहीं होगी, जिन पर दूसरे लोगों का दावा हुआ करता है।

जलील ने कभी भी उसे इस नाम से नहीं बुलाया था। जलील उसे एक छोटा फूल कहा करता था। उसे मरियम को अपनी गोद में बैठा कर कहानियां सुनाना बेहद पसंद था। वह हरात की कहानियां सुनाया करता था, जिस शहर में 1959 में मरियम पैदा हुई थी और जो एक समय फ़ारसी तहजीव का केंद्र हुआ करता था, लेखकों, चित्रकारों और सूफियों का घर था।

'वहां तुम जहां भी पांव रखो वहां एक शायर मिल जाता है,' वह हंसता।

जलील ने उसे गनी गौहर शाद की कहानी सुनाई जिसने पंद्रहवीं सदी में हेगत से अपनी मुहब्बत की निशानी के वतीर मशहूर मीनार बनवाए थे। वो मरियम की हेरात के गेहूं के खेतों, बागीचों, मोटे अंगूरों से लदी वेलों, शहर की भीड़ और महफूज वाज़ारों के बारे में बताता।

जलील ने एक दिन उसे बताया, 'वहां पिस्ते का एक पेड़ है जिसके नीचे एक बहुत महान शायर जामी दफ्न हैं।' वह झुका और फुसफुसाया, 'जामी पांच

हजारों दमकते आफ़ताब 5

सौ साल पहले हुए थे। मैं तुमको एक बार वहां उस पेड़ के पास ले गया था। तुम तब छोटी थीं। तुमको याद नहीं होगा।'

यह सच था। मरियम को याद नहीं था। और हालांकि अपनी जिंदगी के पहले पंद्रह साल वह हेरात से बस इतनी दूर रही थी कि वहां पैदल जाया जा सकता था लेकिन मरियम ने कभी कहानियों वाले उस पेड़ को नहीं देखा था। वह कभी उन मशहूर मीनारों को पास से नहीं देखने वाली थी और न ही कभी हेरात के बागीचों से फलों को तोड़ने वाली थी और न ही गेहूं के खेतों में टहलने वाली थी। लेकिन जब भी जलील इस तरह बात करता, मरियम बहुत खुशी से सुनती। वह इतनी खूब सारी और दुनियावी जानकारी के लिए जलील की तारीफ करती। वह नाज़ से फूल जाती कि उसके अब्बा को ऐसी बातों की जानकारी थी।

'क्या भरपूर झूठ है!' जलील के जाने के बाद नाना कहतीं। 'अमीर लोग भरपूर झूठ बोलते हैं। वो कभी तुमको किसी पेड़ के पास नहीं ले गया है। और उसे खुद को रिझाने मत दो। तुम्हारे इस प्यारे अब्बा ने हमको धोखा दिया है। उसने हमें निकाल फेंका। उसने हमें अपने बड़े शानदार घर से इस तरह निकाल फेंका मानो हम उसके लिए कुछ नहीं थे। और उसने यह सब बहुत खुशी से किया ।'

मरियम इसे सिर झुकाए सुन लेती। उसे नाना से यह कहने की कभी हिम्मत नहीं हुई कि जलील के बारे में इस तरह की बातों को वह कितना नापसंद करती थी। सच बात तो यह थी कि जलील के आसपास रहते हुए मरियम कभी खुद को हरामी महसूस नहीं करती थी। हर जुमेरात को जब जलील मुस्कान और तोहफ़ों और प्यारी-प्यारी बातों के साथ उससे मिलने आता तो घंटे- दो घंटे के लिए मरियम खुद को उस सारी खूबसूरती और ईनामों का हक़दार समझती जो जिंदगी के ऊपर उसका बकाया थे। और इसी लिए मरियम जलील को प्यार करती।

भले ही उसे जलील को किसी के साथ बांटना पड़ता था।

जलील की तीन बीवियां और नौ बच्चे थे। सारे नौ जायज बच्चे मरियम के लिए पराए थे। वो हेरात के सबसे अमीर लोगों में से एक था। उसका एक सिनेमाघर था, जिसे मरियम ने कभी नहीं देखा था लेकिन उसकी गुजारिशों

6 ख़ालिद हुसैनी

पर उसने मरियम को उसके बारे में बताया था। और इस तरह वह जानती थी कि उसकी सामने की दीवार नीले और हल्के भूरे रंग की टेराकोटा टाइलों से बनी थी, कि इसमें प्राइवेट बालकनी सीटें थीं और संबलों वाली छत थी। दोनों तरफ़ खुलने वाले दरवाजे एक टाइलों वाली लॉबी में खुलते थे जहां हिंदी फ़िल्मों के पोस्टर शीशे के फ्रेमों में लगाए हुए रहते थे। एक दिन जलील ने बताया कि मंगलवार को बच्चों को छूट वाले काउंटर पर मुफ्त में आइसक्रीम मिलती थी।

जब वो ये बातें बता रहा था, तो नाना रहस्यमय तरीके से मुस्कुरा रही थीं। उन्होंने जलील के कोल्बा से जाने तक इंतज़ार किया और फिर उसका मजाक उड़ाती हुई हंसी हंसते हुए बोलीं, 'पराए लोगों के बच्चे वहां आइसक्रीम खाते हैं। तुम्हें क्या मिला है मरियम? आइसक्रीम की कहानियां ।'

सिनेमा के अलावा, जलील के पास कारूख, फरह में ज़मीन थी, कालीनों की तीन दुकानें, कपड़ों की एक दुकान और एक काली 1956 मॉडल बुइक रोडमास्टर थी। वह हेरात के बेहतरीन संपर्कों वाले लोगों में से था जिसके दोस्तों में मेयर और सूबाई गवर्नर भी थे। उसका एक रसोइया, एक ड्राइवर और घर का काम करने के लिए तीन नौकर थे।

एक समय नाना भी उनमें से एक नौकर हुआ करती थी। जब तक उनका पेट फूलने नहीं लगा।

नाना ने बताया कि जब यह हुआ तो जलील के पूरे परिवार ने गहरी सांस भरी और यूं लगा पूरे हेरात की हवा खींच ली गई। जलील के ससुर ने खून की नदियां बहा देने की कसम खाई। बीवियों ने नाना को निकाल फेंकने की मांग की। नाना के अपने अब्बा ने, गुल दामन के पास गांव में पत्थर काटनेवाले उसके अब्बा ने उसे छोड़ दिया। अपमानित अब्बा ने अपना सामान समेटा और ईरान जाने वाली बस पर सवार हो गए और इसके बाद उनको न देखा गया और न उनकी कोई खोज खबर मिली।

'कभी-कभी,' नाना ने कोल्बा के बाहर मुर्गियों को दाना देते समय एक सवेरे बताया, 'मेरी इच्छा होती है कि मेरे अब्बा ने अपनी छुरियों से मेरा पेट चीर दिया होता और इज़्ज़तदार काम किया होता। यह मेरे लिए बेहतर होता।' उसने मुट्ठी भर दाना दड़बे में फेंका और मरियम को देखा। 'तुम्हारे लिए भी बेहतर होता शायद । तब तुम जो हो उसे जान लेने के दर्द से बच जातीं। लेकिन

हजारों दमकते आफ़ताब 7

मेरे अब्बा कायर थे। ऐसा करने के लिए उनके पास दिल नहीं था।'

जलील के पास भी इज्जत वाला काम करने का दिल नहीं था, नाना ने बताया। अपने परिवार, अपनी बीवियों, अपने ससुर के साथ खड़े रहने, और उसने जो किया था उसकी जिम्मेदारी कबूल करने का दिल उसके पास भी नहीं था। असल में बंद दरवाजों के पीछे अपने चेहरे बचाने के सौदे शुरू हुए। अगले दिन जलील ने नाना को उनके रहने की जगह यानी नौकरों के क्वार्टर से अपनी चीजें समेट लेने को कहा और उन्हें वहां से भेज दिया।

'पता है उसने अपने बचाव में अपनी बीवियों से क्या कहा? कि मैंने जलील पर ज़ोर डाला था। कि यह मेरा कसूर था। देखा तुमने? इस दुनिया में औरत होने का यही मतलब होता है।'

नाना ने मुर्गियों के दाने का कटोरा नीचे रख दिया। उन्होंने मरियम की ठोड़ी अपनी उंगली से उठाई।

'मेरी ओर देखो मरियम ।'

मरियम ने उन्हें हिचकते हुए देखा।

नाना ने कहा, 'इसे अब सीख लो और अच्छे से सीख लो मेरी बेटी, उत्तर दिशा दिखाती कंपास की सूई की तरह इल्जाम लगाने के लिए एक मर्द की उंगली हमेशा औरत को ही खोजती है। हमेशा। इसे याद रखना मरियम ।'

दो

'जलील और उसकी बीवियों के लिए मैं जंगली झाड़ी थी। उनके लिए मैं एक मगवर्ट थी। तुम भी। और तब तुम पैदा भी नहीं हुई थीं।'

'मगवर्ट क्या है?' मरियम ने पूछा।

"एक जंगली घास है,' नाना ने बताया। 'यह एक ऐसी चीज़ है जिसे तुम उखाड़कर फेंक देते हो।'

मरियम ने भीतर ही भीतर त्यौरियां चढ़ाई। जलील ने उसके साथ खर पतवार की तरह व्यवहार नहीं किया था। उसने कभी नहीं किया था। लेकिन मरियम ने सोचा कि अपने विरोध को दबा देने में ही समझदारी है।

'घास-फूस के उलट मुझे फिर से बसाया गया। तुम देखो कि मुझे खाना- पानी दिया गया। यह तुम्हारी वजह से हुआ। जलील ने अपने परिवार के साथ ऐसा ही करार कर रखा था।'

नाना ने कहा कि उन्होंने हेरात में रहने से मना कर दिया था।

'किसलिए? उसे अपनी किनचिनी बीवियों को पूरे शहर में दिन भर गाड़ी पर घुमाते हुए देखने के लिए?'

उन्होंने बताया कि वो गुल दामन के गांव में अपने अब्बा के खाली घर में भी नहीं रहेगी, जो हेरात से दो किलोमीटर दूर एक खड़ी पहाड़ी पर मौजूद था। उन्होंने कहा कि वो कहीं अलग, जुदा रहना चाहती थीं, ऐसी जगह जहां पड़ोसी उसके पेट को न घूरें, उसकी तरफ़ इशारे न करें, मक्कारी से हंसे नहीं

या इससे भी बदतर कि बेईमानी भरी रहमदिली से उनको अपमानित न करें।

'और मेरा यकीन करो,' नाना ने कहा, 'तुम्हारे अब्बा के लिए यह सुकून की बात थी कि मैं उनकी नजरों से दूर थी। यह उनके मन की बात थी।'

यह जलील की पहली बीवी खदीजा से पैदा हुआ उसका बड़ा वेटा मुीी था, जिसने उस सपाट खाली जगह का सुझाव दिया था। यह गुल दामन के बाहरी इलाके में स्थित था। यहां तक पहुंचने के लिए गड्डों वाली, धूल से भरी चढ़ाई वाली राह से गुज़रना पड़ता, जो हेरात और गुल दामन को जोड़ने वाली सड़क से निकलती थी। रास्ता दोनों तरफ़ से घुटनों तक ऊंची घास और सफ़ेद तथा चमकीले पीले फूलों के गुच्छों से भरा हुआ था। राह की चढ़ाई सांप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी थी और एक समतल मैदान तक ले जाती थी, जहां लंबे-लंबे पोपलार और कॉटनवुड और जंगली झाड़ियों के झुरमुट थे। वहां से गुल दामन की पवनचक्की के जंग लगे पंखों की नोकों को देखा जा सकता था और दाहिनी तथा बाईं तरफ़ नीचे हेरात पसरा हुआ था। रास्ता एक चौड़ी, ट्राउट मछली से भरी हुई धारा में सीधे जा मिलता था, जो गुल दामन को घेरे हुए सफ़ेद-कोह पहाड़ियों से निकलती थी। धारा में पहाड़ियों की तरफ़ दो सौ गंज ऊपर लंबी लटकती शाखाओं वाले देवदार (वीपिंग विलो) का एक गोल झुरमुट था। इसके बीच में देवदारों के साए में वो जगह थी।

जलील उसे देखने के लिए गया। नाना ने बताया कि जब वह लौटा तो वह अपनी बातों से ऐसा वार्डेन लग रहा था जो अपनी जेल की साफ़ दीवारों और चमकते फर्श के बारे में शेखी बघार रहा हो ।

'और इस तरह तुम्हारे अब्बा ने यह गंदी सी जगह बनवाई।'

नाना जब पंद्रह की थीं, तब उनकी एक वार करीब-करीब शादी हो गई थी। शादी का दावेदार शिंदांद का तोते बेचने वाला एक लड़का था। मरियम ने यह कहानी खुद नाना से ही सुनी थी और हालांकि नाना इस घटना को भूल चुकी थीं लेकिन मरियम उनकी आंखों की उदासी से बता सकती थी वे खुश रही होतीं। शायद अपनी जिंदगी में पहली बार नाना अपने शादी वाले उन दिनों में सचमुच में खुश हुई होतीं।

नाना जब कहानी सुना रही थीं, मरियम उनकी गोद में बैठे हुए शादी के जोड़े में अपनी अम्मी की कल्पना कर रही थी। उसने घोड़े की पीठ पर

10 ख़ालिद हुसैनी

बैठी हुई अम्मी की कल्पना की, जो नकाबपोश हरे गाउन के पीछे शर्माते हुए मुस्कुरा रही थीं, उनकी हथेलियों पर मेहंदी रची हुई थी, उनके संवारे हुए वालों पर चांदी का बुरादा चमक रहा था, उनकी चोटियों को आपस में एक छल्ले से बांधा गया था। कल्पना में उसने बाजे वालों को शहनाई और ढोल वजाते हुए, गली के बच्चों को आवाजें निकालते और एक दूसरे का पीछा करते हुए देखा।

तभी, शादी के एक हफ़्ता पहले नाना की देह में एक जिन दाखिल हो गया। मरियम को इसके ब्योरे की जरूरत नहीं है। उसने इसे खुद अपनी आंखों से बहुत बार देखा है अचानक नाना को गिरते हुए, उनकी देह को तनते हुए, सख़्त होते हुए, उनकी आंखों को पलटते हुए, उनकी बांहों और पैरों को इस तरह झटकते हुए मानो भीतर से कोई चीज़ उनका दम घोंट रही हो, उनके मुंह को कोनों से झाग निकलते हुए, जो सफ़ेद और कभी कभी खून मिली होने की वजह से गुलाबी होती। और इसके बाद सुस्ती, डरावना पागलपन और असंगत बड़बड़ाहट ।

यह खबर जब शिंदांद तक पहुंची, उस तोते बेचनेवाले लड़के के परिवार ने शादी से मना कर दिया।

'वे लोग डर गए थे,' नाना इसे ऐसे ही बताती थीं।

शादी का जोड़ा छुपा कर रख दिया गया। उसके बाद शादी के लिए किसी ने प्रस्ताव नहीं रखा।

उस सपाट जगह में जलील और उसके दोनों बेटों फरहाद और मोीी ने एक छोटा सा कोल्बा बनाया जहां मरियम अपनी जिंदगी के पहले पंद्रह साल रहने वाली थी। उन्होंने इसे ईंटों, मिट्टी के प्लास्टर और थोड़े से फूस से बनाया। इसमें सीने के लिए दो खाटें, लकड़ी की एक टेबल, खड़ी पीठ वाली दो कुर्सियां, एक खिड़की और दीवार में ठोकी गई तख्तियां थीं, जहां नाना मिट्टी के बर्तन और अपनी प्यारी चीनी चायदानी रखती थी। जलील ने सर्दियों के लिए ढलवां लोहे का एक चूल्हा भी रख दिया और कोल्बा के पीछे टुकड़ों में काटी गई लकड़ियां सजा दीं। रोटियां बनाने के लिए उसने बाहर एक तंदूर बनाया और बाड़ के साथ मुर्गियों का एक दड़बा भी लगा दिया। उसने कुछ भेड़ें ला दीं और उनके खाने के लिए एक नांद बनाई। फरहाद और मोीी के साथ उसने देवदार के पेड़ों के दायरे से सी गज दूर एक गहरा गड्डा खोदा और इसके ऊपर एक

हजारों दमकते आफ़ताब 11

आउट हाउस बनवाया।

कोल्बा बनाने के लिए जलील नौकर रख सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, नाना ने कहा।

'वह गुनाह की माफ़ी के बारे में सोच रहा था।'

नाना के ब्योरे के मुताबिक जिस दिन मरियम पैदा हुई थी, कोई नाना की मदद के लिए नहीं आया था। वह बताती कि यह नमी से भरा हुआ, 1959 के बसंत का एक लंबा सा दिन था, जिस साल बादशाह ज़ाहिर शाह के चालीस साल लंबी शांति से भरी हुकूमत के छब्बीस साल पूरे हुए थे। उन्होंने बताया कि जलील ने किंसी डॉक्टर, यहां तक कि दाई तक को बुलाने की ज़हमत नहीं उठाई। और उसने ऐसा तब किया जब वह जानता था कि जिन उसकी देह में दाखिल हो सकता है जिसकी वजह से बच्चे के पैदा होने के दौरान ही उसे दौरा भी पड़ सकता है। बगल में एक छुरी रखे हुए और पसीने में डूबी हुई वह अपने कोल्बा में अकेली पड़ी रही।

'जब दर्द बहुत अधिक हो जाता तो मैं तकिए में मुंह गड़ा लेती और गला बैठ जाने तक उसी में चीखती रहती। तब भी कोई मेरा चेहरा पोंछने और एक घूंट पानी देने नहीं आया। और तुम मरियम जो, तुम्हें कोई जल्दी ही नहीं थी। लगभग दो दिनों तक तुमने मुझे ठंडी, सख़्त फर्श पर गिराए रखा। मैं न खा सकी न सो सकी। मैं बस जोर लगाती रही और दुआ करती रही कि तुम बाहर आ जाओ।'

'मुझे दुख है नाना।'

'हमको जोड़नेवाली नाल मैंने खुद काटी। इसीलिए मैंने छुरी रख रखी थी।'

'मुझे दुख है।'

यहां आकर नाना के होंठों पर हमेशा एक धीमी, बोझिल सी मुस्कान आ जाती। मरियम बता नहीं सकती कि यह अब तक मौजूद शिकायत का नतीजा थी या बेमन की माफ़ी का नतीजा। नन्हीं मरियम को यह सोच सकने लायक समझ अभी नहीं आई थी कि अपनी पैदाइश के तरीके के लिए माफ़ी मांगना नामुनासिब है।

जब मरियम को इसकी समझ आई तब वो दस साल की हो गई थी और अब वो अपनी पैदाइश की इस कहानी पर भरोसा नहीं करती थी। वह

12 ख़ालिद हुसैनी

जलील की कहानी पर यकीन करती थी, कि भले ही वह दूर था लेकिन उसने नाना को हेरात के अस्पताल ले जाने का इंतजाम कर दिया था जहां उसकी देखरेख के लिए एक डॉक्टर था। यह वहां एक रोशन कमरे में, साफ़, सचमुच के बिस्तर पर पड़ी थी। मरियम ने जब जलील को छुरी वाली बात बताई तो उसने उदासी में सिर हिलाया।

मरियम को इस पर भी संदेह होने लगा था कि उसने अपनी अम्मी को पूरे दो दिनों तक परेशानी में डाले रखा। 'उन्होंने मुझे बताया था कि यह सव कुछ घंटों भर के भीतर ही हो गया था,' जलील ने बताया। 'तुम एक भली बेटी थीं, मरियम जो। अपनी पैदाइश में भी तुम एक अच्छी बेटी थीं।'

'तब तो वो यहां था भी नहीं!' नाना उलाहने देती हुई बोलतीं। 'वह तो तख़्ते-सफ़र में अपने बेशकीमती दोस्तों के साथ घुड़सवारी कर रहा था।'

नाना ने बताया कि जब लोगों ने जलील को बताया कि उसके एक बेटी हुई है तो जलील ने कंधे झटक दिए और अपने घोड़े की अयाल को ब्रश करना जारी रखा और तख़्ते-सफ़र में और दो हफ़्ते टिका रहा।'

'सच बात यह है कि तुम्हारे एक महीने का होने तक उसने तुमको पकड़ा भी नहीं। और तब भी तुम पर बस एक नजर डाली, तुम्हारे लंबे चेहरे पर टिप्पणी की और मुझे वापस पकड़ा दिया।'

मरियम का कहानी के इस हिस्से पर से भी भरोसा उठ गया था। जलील ने कबूल किया था कि हां, वो तख्ते-सफ़र में घुड़सवारी कर रहा था लेकिन जब उसे ख़बर मिली थी तो उसने कंधे नहीं झटके थे। वह घोड़े पर चढ़ा और हेरात के लिए निकल पड़ा था। उसने नन्हीं मरियम को अपनी बांहों में उछाला था, उसकी पपड़ीदार भौंहों पर अंगूठा फिराया था और एक लोरी गुनगुनाई थी। मरियम यह कहते हुए जलील की कल्पना नहीं कर सकती थी कि उसका चेहरा लंबा था, हालांकि यह सच था कि उसका चेहरा लंबा था।

नाना ने बताया था कि मरियम नाम उन्होंने ही चुना था क्योंकि यह उनकी अम्मी का. नाम था। जलील ने कहा कि मरियम नाम उसने चुना था क्योंकि मरियम यानी रजनीगंधा एक बहुत ही खूबसूरत फूल है।

'तुम्हारा पसंदीदा फूल?' मरियम पूछती ।

'हां, पसंदीदा फूलों में से एक,' वह कहता और मुस्कुरा देता।

तीन

ठेले के लोहे के पहियों की पत्थरों पर खड़खड़ाने की आवाज़ मरियम की शुरुआती यादों में थी। चावल, आटा, चायपत्ती, चीनी, खाने का तेल, साबुन, टूथपेस्ट से भरा हुआ यह ठेला महीने में एक बार आता था। इसे मरियम के दो सौतेले भाई धकेलते हुए लाते थे अक्सर मुीी और रामिन होते और कभी कभी रामिन और फरहाद होते थे। धूल भरे रास्ते पर चढ़ते हुए, चट्टानों और कंकड़ों को पार करते हुए, गड्डों और झाड़ियों से गुज़रते हुए बच्चे धारा पर पहुंचने तक बारी बारी से ठेले को धकेलते थे। वहां ठेले को खाली करना पड़ता था और सामान हाथ से ढो कर पानी को पार करना पड़ता था। तब बच्चे ठेले को धारा के पार ले जाते और फिर से इसमें सामान भर लेते। इसके बाद और दो सौ गज तक चलना होता था, जिसके दौरान वे लंबी, घनी घास से और कंटीली झाड़ियों से होकर गुज़रते थे। उनके रास्तों में मेढक उछलते । दोनों भाई पसीने चूते अपने चेहरों से मच्छरों को हटाते रहते।

'उनके नौकर थे,' मरियम ने कहा। 'वह नौकरों को भेज सकता था।' 'प्रायश्चित का उसका ख़याल,' नाना ने कहा।

ठेले की आवाज़ मरियम और नांना को बाहर खींच लाती। मरियम हमेशा याद करती कि नाना राशन वाले दिन कैसी दिखती थी एक लंबी, नंगे पांवों वाली औरत, दरवाजे पर झुकी हुई, सिकुड़ी हुई आलस भरी आंखें, चुनौती भरे और मज़ाक उड़ाने वाले अंदाज़ में हाथों को बांधे हुए। उसके छोटे कटे हुए,

14 ख़ालिद हुसैनी

धूप में चमकते बाल ढंके हुए नहीं रहते और न ही उनमें कंघी की गई होती। वह गले तक बटनों वाली एक भूरी कमीज़ पहने हुए होती, जो उस पर अच्छे से नहीं आती थी। उसकी जेबें बादाम जितने बड़े पत्थरों से भरी होती।

लड़के धारा के पास बैठ कर मरियम और नाना के राशन को कोल्बा तक ढोकर ले जाने तक इंतजार करते। वे जानते थे कि तीस गज़ से नजदीक नहीं जाना ही बेहतर है, तब भी जबकि नाना का निशाना ख़राब था और कंकड़ बहुत पहले ही गिर जाते थे। नाना चावल के थैलों को भीतर रखते हुए बच्चों पर चीखती रहती और उनको ऐसे नामों से पुकारती जिनका मतलब मरियम नहीं समझ पाती। वे उनकी अम्मियों को बद्दुआएं देती, उनके ऊपर नफ़रत भरे चेहरे बनाती। लड़के कभी भी इस जिल्लत का पलट कर जवाब नहीं देते थे।

मरियम को उन लड़कों के लिए दुख होता। वह तरस खाती हुई सोचती कि इतना भारी वज़न धकेलते हुए उनके हाथ और पांव कितने थक गए होंगे। उसने चाहा कि उन लोगों को पानी पिलाने की उसे इजाजत मिल पाती। लेकिन उसने कहा कुछ नहीं और जब वे उसको देख कर हाथ हिलाते तो वह हाथ नहीं हिलाती। एक बार नाना को खुश करने के लिए मरियम मोीी पर चिल्लाई भी थी और कहा था कि उसका मुंह छिपकली की चूतड़ की तरह है। और बाद में उसने इस बात का कसूर, शर्म और डर महसूस किया था कि वे इस बात को जाकर जलील को बता देंगे। हालांकि इस पर नाना अपने आगे के सड़ते हुए दांतों को खोल कर इतने ज़ोर से हंसी थीं कि मरियम को लगा था कि उनको मिर्गी का दौरा न पड़ जाए। हंसी रुकी तो उन्होंने मरियम को देखा, 'तुम अच्छी लड़की हो।'

जब ठेला खाली हो जाता तो बच्चे उसे घसीटते और धक्का देते हुए 'वापस ले जाते। ऊंची घास और खिली हुई घासफूस के पीछे ओझल हो जाने तक मरियम उनको देखती रहती ।

'तुम आ रही हो?'

'हां नाना।'

'वो तुम पर हंसते हैं। वे हंसते हैं, मैंने सुना है।'

'मैं आ रही हूं।'

'तुम मेरा यकीन नहीं करतीं?'

'लो आ गई।'

हजारों दमकते आफ़ताब 15

'तुम्हें पता है, मैं तुमको प्यार करती हूं मरियम जो।'

सवेरे दूर से आती भेड़ों की मिमियाने और बांसुरी की तेज आवाज़ से वे जाग जातीं। गुल दामन के गड़ेरिए अपनी भेड़ों के झुंड को चराने के लिए घास से भरी पहाड़ी की तरफ़ ले आते थे। मरियम और नाना बकरियों को दूहतीं, मुर्गियों को दाने देतीं और अंडे बटोरतीं। वो मिलकर रोटियां बनातीं। नाना ने मरियम को सिखाया था कि आटा कैसे गूंथते हैं, तंदूर कैसे सुलगाते हैं और बेले हुए आटे को कैसे इसकी भीतरी दीवार पर चिपकाते हैं। नाना ने उसे सीना भी सिखाया था, और भात बनाना और अलग-अलग तरह की सब्ज़ियां बनाना भी: शलजम स्टू, पालक सब्ज़ी, अदरक-गोभी की सब्ज़ी आदि ।

नाना ने मिलने के लिए आनेवालों और लोगों को लेकर अपनी नापसंदीदगी को असल में कभी राज़ नहीं रखा। लेकिन उसने कुछ चुने हुए लोगों को इस दायरे से बाहर रखा था। और इनमें थे गुल दामन के रहनुमा, गांव के अरबाब, हबीब खान। उनका सिर छोटा था, उनके दाढ़ी थी और वे महीने में एक बार आते थे। उनके पीछे-पीछे उनका नौकर आता था जो मरियम के लिए मुर्गे और खिचड़ी का बर्तन या कभी कभी अंडों की डलिया लिए रहता था।

फिर एक गोल-मटोल सी, बूढ़ी औरत भी थी, जिसे नाना बीबी जो पुकारतीं। उनके मरहूम शौहर पंत्थर तराशने का काम करते थे और नाना के अब्बा के दोस्त हुआ करते थे। बीबी जो हर बार अपनी छह दुल्हनों और एक-दो पोतों में से किसी एक के साथ आती थीं। वे उनके घर तक आने के पूरे रास्ते लंगड़ाते और हांफते हुए आतीं और अपने लिए नाना द्वारा लाकर रखी गई कुर्सी पर एक दर्द भरी कराह के साथ कूल्हों को रगड़ते और झुकते हुए बैठ जातीं। बीबी जो हमेशा मरियम के लिए कुछ लेकर आतीं, मिठाइयों का डिब्बा या बेल की टोकरी। नाना के लिए उनके पास पहले तो अपनी गिरती हुई सेहत को लेकर शिकायतें होतीं और फिर हेरात और गुल दामन को लेकर गपशप जो बहुत रस ले लेकर और पूरे ब्योरे के साथ सुनाई जातीं। इन सब के दौरान उनकी बहू उनके पीछे बैठी चुपचाप और पूरे फ़र्ज के साथ सुनती रहती।

लेकिन मरियम के पसंदीदा मुल्ला फैजुल्ला थे। बेशक उनकी जगह जलील के बाद ही थी, वे गांव में कुरान पढ़ाने के बुजुर्ग उस्ताद थे। वे गुल दामन में हफ़्ते में एक या दो बार आते और मरियम को रोज़ाना पांच वक़्ती नमाजें और

16 ख़ालिद हुसैनी

कुरान पढ़ना सिखाते जैसा कि उन्होंने नाना को उनके बचपन में पढ़ाया था। ये मुल्ला फैजुल्ला ही थे, जिन्होंने मरियम को पढ़ना सिखाया था। जब यो शब्दों को बेआवाज़ पढ़ते हुए होंठ हिलाती, शब्दों के बीच अपनी उंगली फिराती, उंगलियां इस तरह गड़ाती कि नाखून सफ़ेद पड़ जाते मानी वह उन प्रतीकों में से मतलब को निचोड़ कर निकाल सकती है, तो वे सव्र के साथ उसके कंधों के ऊपर देखते रहते। ये मुल्ला फैजुल्ला ही थे जिन्होंने उसका हाथ पकड़ कर उसे अलिफ की हर उठान, वे के हर मोड़, से के तीन नुक़्तों में उसकी रहनुमाई की थी।

वे एक मरियल से और उमर की वजह से झुक गए बूढ़े आदमी थे जिनकी मुस्कान में दांत नहीं दिखते थे और जिनकी सफ़ेद दाढ़ी उनकी नामि तक झूलती रहती थी। अमूमन वे कोल्बा तक अकेले ही आते थे। मरियम मुल्ला फैजुल्ला के हाथ चूमती जिनके बारे में वह महसूस करती कि वह चमड़ी. की एक पतली परत से ढंकी हुई टहनियों के जोड़े को चूम रही है। और उस दिन का सवक शुरू करने के लिए भीतर जाकर बैठने से पहले वे भी उसकी भौंहों के ऊपर चूमते। इसके बाद वे दोनों कोल्वा के बाहर बैठते और चिलगोजे खाते और ग्रीन टी पीते, बुलबुलों को एक पेड़ से दूसरें पेड़ पर उड़ते हुए देखते। कभी कभी वे झड़ी हुई भूरी पत्तियों और झाड़ियों के बीच टहलने निकल जाते, वे धारा के साथ साथ पहाड़ी की तरफ़ चलते। टहलते हुए भी मुल्ला फैजुल्ला अपनी तस्वीह के दाने फेरते रहते और अपनी कांपती हुई आवाज़ में मरियम को अपनी नौजवानी के दिनों में देखी गई चीज़ों के किस्से सुनाते रहते। जैसे कि ईरान में देखा हुआ दो सिरों वाला सांप, इस्फहान का तैंतीस मंहगों वाला पुल, और वह तरवूज़ जिसे एक वार उन्होंने मज़ार की नीली मस्जिद के बाहर काटा था और पाया था कि उसके बीजों ने आधे हिस्से में अल्लाह और दूसरे आधे हिस्से में अकबर लिखा हुआ था।

मुल्ला फैजुल्ला ने मरियम के आगे कबूल किया कि कई वार वे कुरान की वार्ता का मतलब नहीं समझ पाते हैं। लेकिन उन्होंने कहा कि उनको अपनी जुवान से फिसलते अरवी शब्दों की जादुई आवाज़ पसंद आती थी।

उन्होंने बताया कि वे उनको सुकून पहुंचाते थे, उनके दिल को चैन देते थे।

'वो तुमको भी सुकून पहुंचाएंगे मरियम जो,' उन्होंने कहा। 'तुम उनको ज़रूरत पड़ने पर पुकार सकती हो और वो तुमको मायूस नहीं करेंगे। खुदा के शब्द कभी धोखा नहीं देते, मेरी बच्ची ।'

हजारों दमकते आफ़ताब 17

भुल्ला फैजुल्ला उसको कहानियां सुनाने के साथ साथ खुद भी कहानियां सुनते थे। जब मरियम बोलती तो उनका ख़याल कभी नहीं टूटता था। वे हल्के से सिर हिलाते और शुक्रिया के अंदाज में मुस्कुराते मानो एक मुंहमांगी मुराद मिल गई हो। मुल्ला फैजुल्ला को उन चीजों के बारे में बताना आसान था, जिनके बारे में मरियम नाना से कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाई थी।

एक दिन जब वे टहल रहे थे, मरियम ने उनको बताया कि उसकी चाहत है कि उसे स्कूल जाने की इजाजत मिल जाती।

'मेरा मतलब है कि एक असली स्कूल, उस्ताद साहिब। एक क्लास रूम जैसा। मेरे अब्बा के दूसरे बच्चों के स्कूल जैसा ।'

मुल्ला फैजुल्ला रुक गए।

एक हफ़्ता पहले बीबी जो ख़बर लाई थीं कि जलील की बेटियां सायदे और नहीद हेरात में लड़कियों के मेहरी स्कूल में जा रही हैं। तब से मरियम के दिमाग में क्लास रूमों और टीचरों के ख़याल उमड़-घुमड़ रहे थे। लकीर वाली नोटबुकों, गिनती लिखनेवाली कॉपी के खाने और गहरे काले अक्षर लिखने. वाले कलमों की तस्वीरों ने उसे घेर रखा था। उसने अपनी ही उम्र की दूसरी लड़कियों वाले एक क्लास रूम में खुद की कल्पना की। मरियम काग़ज़ पर रूलर रख कर अहम लगने वाली लकीरें खींचने को तरस रही थी।

'यह चाहती हो तुम?' मुल्ला फैजुल्ला ने उसको नरम, गीली आंखों से देखते हुए पूछा। उनके हाथ अपनी झुकी हुई पीठ पर थे और उनकी पगड़ी की परछाईं खिले हुए बटरकप की झुरमुट पर पड़ रही थी।

'हां।'

'और तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारी मां से इसकी इजाजत लूं?'

मरियम मुस्कुराई। वह सोचती थी कि जलील को छोड़ कर इस बूढ़े उस्ताद के अलावा इस दुनिया में कोई नहीं है जो उसे बेहतर तरीके से समझता हो।

'तो मैं क्या कर सकता हूं? खुदा ने अपनी मर्जी से हम सबको अपनी अपनी कमजोरियां दी हैं और मेरी कमजोरियों में सबसे बड़ी कमज़ोरी ये है कि मुझमें तुम्हें मना करने की ताकत नहीं है।'

लेकिन बाद में जब उन्होंने नाना से इसकी चर्चा चलाई तो उन्होंने प्याज़ काट रही अपनी छुरी गिरा दी। 'किसके लिए?'

'अगर बच्ची सीखना चाहती है तो उसे सीखने दो प्यारी। बच्ची को पढ़ने दो।'

18 ख़ालिद हुसैनी

'सीखना? क्या सीखना, मुल्ला साहिब?' नाना ने तीखे लहजे में कहा। 'सीखने के लिए क्या है?' उन्होंने मरियम की तरफ़ देखते हुए आंखें तरेरीं।

मरियम नीचे अपने हाथों को देखने लगी।

'तुम्हारी जैसी लड़की को स्कूल में पढ़ाने का क्या तुक है? यह तो पीकदान को चमकाने जैसी बात है। और तुम इन स्कूलों में कोई शऊर नहीं सीख पाओगी। तुम्हारी और मेरी जैसी औरत को जिंदगी में एक ही सलीके की ज़रूरत होती है और यह सलीका स्कूलों में नहीं पढ़ाते। मुझे देखो।'

'तुमको उससे इस तरह नहीं बात करना चाहिए, मेरी बच्ची।' मुल्ला फैजुल्ला ने कहा।

'देखो मुझे।'

मरियम ने देखा।

'सिर्फ एक सलीका। और वह है तहम्मुल । बर्दाश्त करना।'

'क्या बर्दाश्त करना नाना?'

'ओह। तुम उसकी फिक्र मत करो,' नाना ने कहा। 'ऐसी चीज़ों की कमी नहीं रहेगी।''

वह बताती रही कि किस तरह जलील की बीवियां उसको एक बदसूरत, नीच पत्थर काटने वाले की बेटी कहती थीं। कैसे वे उससे ठंड में बाहर कपड़े धुलवाती थीं जब तक कि उसका चेहरा सुन्न न पड़ जाता और उसकी उंगलियों के पोरे जलने न लग जाते।

'जिंदगी में हमारा यही माल-मत्ता है मरियम। हम जैसी औरतें। हम सहती हैं। हम बस यही करती हैं। समझती हो तुम? इसके अलावा वे स्कूल में तुम पर हंसेंगे। वे हंसेंगे। वे तुमको हरामी कहेंगे। वे तुमको बहुत बुरी बातें कहेंगे। मैं इसकी इजाजत नहीं दूंगी।'

मरियम ने सिर हिलाया।

'और स्कूल के बारे में अब कोई बात नहीं होगी। मेरे पास बस तुम्हीं हो। मैं उनको तुम्हें छीन लेने नहीं दूंगी। देखो मुझे। अब स्कूल की कोई बात नहीं होगी।'

'समझदारी से काम लो। चलो भी। अगर बच्ची चाहती है तो' मुल्ला फैजुल्ला ने कहना शुरू किया।

'और आप उस्ताद साहिब, पूरे आदर के साथ मेरा कहना है कि आपको

हजारों दमकते आफ़ताब 19

ऐसी बेवकूफ़ की बातों को बढ़ावा देने के बजाए दूसरी अच्छी बातें आनी चाहिए। अगर आप सचमुच में उसकी परवाह करते हैं तो आप उसे यह सिखाइए कि वह इस घर से और अपनी अम्मी से जुड़ी हुई है। इसके बाहर उसके लिए कुछ भी नहीं है। उसके लिए नकार और दर्द के सिवा कुछ भी नहीं है बाहर की दुनिया में। मैं जानती हूं उस्ताद साहिब, मैं जानती हूं।'

चार

कोल्या में कोई मिलने आता ती मरियम को अच्छा लगता। गांव के अरबाब और उनके तोहफ्रें, बीबी जी और उनके दुखते हुए कुल्ले और कभी खत्म न होने वाली बातें। और बेशक मुल्ला फैजुल्ला। लेकिन मरियम में जलील से मिलने की जितनी चाहत थी उतनी किसी की, किसी और चीज़ की नहीं थी।

बेकरारी मंगल की रात से ही शुरू हो जाती। मरियम अच्छे से नहीं सी पाती, यह सोच सोच कर घबराती रहती कि कारोबार की कोई परेशानी जखील की जुमेरात को आने से रोक न दे। कि तब उसे पूरा एक और हफ़्ता इंतजार करना पड़ेगा। बुधवार की वह कोल्वा के बाहर 'भागती रहती और दड़ये में मुर्गियों को दाना देते वक़्त भी उसका मन कहीं और होता। बिना किसी मकसद के वह यों ही टहलती, फूलों की पंखुड़ियां चुनती और बांह पर काट रहे मच्छरों को मारती। आखिरकार जुमेरात को वह बस इतना कर पाती कि यह आंखों की धारा पर जमाए हुए और इंतजार करते हुए दीवार से लग कर बैठ जाती। अगर जलील को आने में देर होती तो एक अजीब सा कर उसमें समाता रहता। उसके घुटने कमजोर पड़ जाते और वह कहीं और जाकर लेट जाती।

तब नाना उसे पुकारती, 'और लो, वो रहे तुम्हारे अव्वा। अपनी पूरी शानी-शीकत के साथ।'

मरियम अपने पैरों पर उछल कर खड़ी होती जब वह उनको धारा के पार पत्थरों को फांदते हुए देख लेती तो बस मुस्कुरा उठती और पूरे दिल से

हजारों दमकते आफ़ताब 21

हाथ लहराने लगती। मरियम जानती थी कि नाना उसे देखेंगी, उसकी हर प्रतिक्रिया को आंकेंगी और दरवाजे पर खड़े होकर धीरे-धीरे उनको अपनी तरफ़ आते देखने के लिए और उनकी तरफ़ न दौड़ पड़ने के लिए हमेशा उसे बहुत कोशिश करनी पड़ती थी। वह खुद को रोक लेती, सब्र के साथ उनको ऊंची घास के बीच से आते हुए देखती, उनका सूट जैकेट उनके कंधों पर लटक रहा होता और हवा के झोंके उनकी लाल नेकटाई को उड़ा रहे होते।

जब जलील उनके मैदान में दाखिल होता तो वह अपनी जैकेट तंदूर के ऊपर फेंक देता और अपनी बांहें खोल लेता। चलती हुई मरियम आख़िरकार दौड़ पड़ती और वह उसे बांहों में उठा लेता और ऊपर उछाल देता। मरियम किलकारी मारती ।.

हवा में लटकी हुई मरियम नीचे जलील का उठा हुआ चेहरा देखती, वह देखती उसकी चौड़ी टेढ़ी मुस्कान, उसका गंजा सिर, उसकी बीच से बंटी हुई ठुड्डी जिसमें उसकी नन्हीं उंगली का सिरा पूरा का पूरा समा सकता था- और सड़ी हुए दांतों वाले लोगों के शहर में सबसे चमकदार सफ़ेद दांत। उसे जलील की तराशी हुई मूंछें पसंद थीं और उसे यह भी पसंद था कि चाहे कोई भी मौसम हो हमेशा मिलने के लिए आते हुए वो अपने पसंदीदा गहरे भूरे रंग का सूट पहनता जिसकी सीने वाली जेब में तिकोना मोड़ा हुआ रूमालं रखा रहता । और उसे पसंद थे उसकी कलाई के बटन, और टाई जो अक्सर लाल होती और जिसे वह ढीली-ढाली छोड़ देता। मरियम जलील की आंखों के भूरेपन में झलकते अपने प्रतिबिंब में खुद को भी देख पाती अपने झूलते हुए बाल, खुशी से दमकता अपना चेहरा और अपने पीछे का आसमान।

नाना कहती कि एक दिन मरियम को छोड़ देगा और वह उसकी हाथों से छूट कर जमीन पर आ गिरेगी और उसकी हड्डियां टूट जाएंगी। लेकिन मरियम को यकीन नहीं हुआ कि जलील उसे गिरा देगा। वो मानती थी कि वह अपने अब्बा के

साफ़, सजे-संवरे हाथों से महफूज़ ज़मीन पर उतरेगी।

वो कोल्बा के बाहर छाया में बैठते और नाना उनको चाय देती। जलील और वे एक परेशान सी मुस्कान के साथ सिर हिलाते हुए एक दूसरे का स्वागत करते थे। जलील कभी भी नाना के चलाए गए पत्थरों और बद्दुआओं का बुरा नहीं मानता।

जब वो आसपास नहीं होता तो नाना उसे कोसतीं, लेकिन जब वो मिलने

22 ख़ालिद हुसैनी

आता तो नरम पड़ जाती और सलीके से व्यवहार करतीं। हमेशा वे अपने बाल घोतीं। अपने दांत मांजतीं और उसके लिए अपना सबसे अच्छा बुर्का पहनतीं। वे उसके सामने कुर्सी पर अपनी गोद में अपने हाथ मोड़े चुपचाप बैठी रहतीं। वो कभी उसको सीधे नजर मिला कर नहीं देखतीं और उसके आसपास कभी भी कड़े लहजे में नहीं बोलतीं। जब वो

हंसतीं तो अपने ख़राब दांतों को छुपाने के लिए वो अपनी हथेली से मुंह ढंक लेतीं।

नाना उसके काम-धंधों के बारे में पूछतीं। वे उनकी बीवियों के बारे में भी पूछतीं। जब उन्होंने जलील को बताया कि उन्होंने बीबी जो से सुना है कि उसकी छोटी बीवी नरगिस को तीसरा बच्चा होने वाला है तो जलील ने अदब से मुस्कुराते हुए अपना सिर हिलाया।

'तो। तुम जरूर ही खुश होंगे,' नाना ने कहा। 'अब तुम्हारे कितने बच्चे हो जाएंगे? दस माशाअल्लाह? दस?'

जलील ने कहा, हां दस ।

'अगर तुम मरियम को गिनो तो ग्यारह, बेशक ।'

जलील के घर जाने के बाद मरियम और नाना की इस पर एक छोटी-सी लड़ाई हो गई। मरियम ने कहा कि नाना ने जलील के साथ शरारत की थी।

चाय पीने के बाद मरियम और जलील नाना के साथ के साथ धारा में मछली मारने जाते । जलील मरियम को बताता कि डोरी को कैसे डालते हैं और कैसे ट्राउट को फंसाते हैं। उसने ट्राउट को निकालते, धोने और एक बार में ही कांटों से उसका मांस उतार लेने का सही तरीका मरियम को सिखाया। मछली का इंतज़ार करते हुए उसने मरियम को तस्वीरें बनाना सिखाया, उसके दिखाया कि कागज पर से बिना कलम उठाए, एक ही झटके में हाथी कैसे बनाते हैं। उसने उसे गीत सिखाए। साथ मिल कर वे गाते:

लिली लिली बर्डबाथ

सिटिंग ऑन ए डर्ट पाथ

मिनो सैट ऑन द रिम एंड बैंक

स्लिप्ड, एंड इन द वाटर शी सैंक

जलील हेरात से इत्तिफाक-ए-इस्लाम अखबार की कतरनें लेकर आता और मरियम को पढ़ कर सुनाता। वह मरियम का सूत्र था, उसके लिए इसका सबूत था कि कोल्बा, गुल दामन और हेरात से भी परे एक भरी-पूरी दुनिया

हजारों दमकते आफ़ताब 23

भौजूद थी, एक ऐसी दुनिया जहां सदर और ऐसे ऐसे लोग रहते हैं जिनका नाम लेना आसान नहीं है, ऐसी दुनिया जहां ट्रेनें और अजायबघर और फुटबॉल है, जहां रॉकेट धरती के चक्कर लगाते हैं और चांद पर उत्तरते हैं और हरेक जुमेरात जलील अपने साथ उस दुनिया के कुछ टुकड़े कोल्वा में लेकर आता था।

यह जलील ही था, जिसने मरियम को 1973 की गर्मियों में बताया था कि काबुल पर चालीस सालों से हुकूमत करने वाले बादशाह जाहिर शाह का राज विना खून बहाए हुए एक तख्तापलट के ज़रिए ख़त्म कर दिया गया है। तब मरियम चौदह साल की थी।

'उसके भतीजे दाऊद खान ने ऐसा तब किया जब बादशाह इटली में अपना इलाज करा रहे थे। दाऊद खान तुम्हें याद है, ठीक? मैंने तुमको उसके बारे में बताया था। जब तुम पैदा हुई थीं, तब वो काबुल में वजीर-ए-आज़म हुआ करता था। बहरहाल अफ़ग़ानिस्तान में अब वादशाहियत नहीं रही मरियम । देखो अब यह एक जम्हूरियत है और दाऊद खान सदर है। ऐसी अफवाहें भी हैं कि समाजवादियों ने उसे हुकूमत में आने में मदद की है। गौर करना कि ऐसा नहीं है कि वह खुद समाजवादी है, बल्कि समाजवादियों ने उसकी मदद की है। जो भी हो, यह एक अफवाह है।'

मरियम ने पूछा था कि समाजवादी क्या होता है और जलील ने समझाना शुरू किया था लेकिन मरियम उसे सुन नहीं रही थी।

'तुम सुन रही हो?'

'हां, मैं सुन रही हूं।'

उसने मरियम को अपने कोट की बगल की जेब के फूले हुए हिस्से को देखते हुए पाया। 'आह। बेशक। खैर, ये लो...'

उसने अपनी जेब से एक छोटा सा डिब्बा निकाल कर मरियम को दिया। समय-समय पर वो यह करता रहता था। कभी उसमें से जड़ाऊ कंगन निकलता तो कभी नीलम के दानों वाला गुलूबंद। उस दिन मरियम ने डिब्बा खोला तो उसे पत्ते के आकार का एक पेंडेंट और कुछ छोटे सिक्के मिले जिन पर चांद उकेरा हुआ था और सितारे उससे लटक रहे थे।

'इसे पहन कर देखो मरियम जो।'

उसने पहने। 'क्या सोच रहे हैं?'

24 ख़ालिद हुसैनी

जलील खुशी से दमकते हुए बोला, 'मैं सोच रहा हूं कि तुम एक रानी जैसी लग रही हो।'

उसके जाने के बाद नाना ने मरियम के गले में पेंडेंट देखा।

'बंजारों के गहने,' उन्होंने कहा। 'मैंने उनको ऐसे गहने बनाते देखा है। वे लोगों के फेंके हुए सिक्कों को पिघला कर गहने बनाते हैं। देखते हैं कि तुम्हारे बेशकीमती अब्बा तुम्हारे लिए अगली बार सोने के गहने लाते हैं कि नहीं। देखते हैं।'

जब जलील के जाने का वक़्त होता तो मरियम हमेशा दरवाजे पर खड़ी होकर उनको मैदान से जाते हुए देखती। वह अपने और उनके मिलने के बीच खड़े घने, चट्टानी हफ़्ते के बीच हताश सी दिखती। उनको जाते देखते हुए मरियम हमेशा अपनी सांस रोक लेती थी। वह सांसें रोक कर अपने मन में सेकेंडों की गिनती करती। वह दिल ही दिल में मानती कि हर उस सेकेंड के लिए, जब उसने सांस नहीं ली थी, खुदा उसे एक दिन और जलील का साथ बख़्शेगा।

रात में मरियम अपनी खाट पर पड़े सोचती रहती कि हेरात में उसका घर कैसा था। वह सोचती कि उसके साथ रहना कैसा लगेगा, उसे रोज़ देखना कैसा लगेगा। वह कल्पनाएं करती कि जलील के दाढ़ी बनाने के बाद वो उसे तौलिया थमा रही है, रेज़र से खरोंच लगा लेने पर वो उसको बता रही है। वो उसके लिए चाय बनाती। वो उसके टूटे हुए बटन लगा देती। वे हेरात के बाज़ारों में साथ-साथ टहलते, जहां जलील उससे कहता कि तुमको जो भी लेना हो ले ली। वे कार में निकलते और लोग उनकी तरफ़ इशारे करते हुए कहते, 'वो जा रहे हैं जलील अपनी बेटी के साथ।' वह उसे उस मशहूर पेड़ के पास ले जाता जिसके नीचे एक शायर दफ़्न था।

जल्दी ही एक दिन मरियम ने फैसला किया कि वो जलील से ये बाते कहेगी। और जब वो सुनेगा और देखेगा कि वो उसके चले जाने के बाद उसकी कितनी कमी महसूस करती है तो वह जरूर मरियम को अपने साथ ले जाएगा। वी उसे अपने बाक़ी बच्चों की तरह घर में रखने के लिए हेरात लेकर जाएगा।

पाँच

'मुझे पता है कि मैं क्या चाहती हूं,' मरियम ने जलील से कहा।

ये 1974 का बसंत का मौसम था, और उस साल मरियम पंद्रह की हुई थी। वे तीनों कोल्बा के बाहर बेदमजनूं के पेड़ों के साए में आमने सामने एक त्रिकोण में रखी हुई मुड़नेवाली कुर्सियों पर बैठे थे।

'अपने जन्मदिन के लिए... मुझे पता है कि मैं क्या चाहती हूं।'

'पता है?' जलील ने उसका हौसला बढ़ाने के लिए मुस्कुराते हुए कहा। दो हफ्ते पहले मरियम की जिद पर जलील ने उसे अपने सिनेमाघर में चल रही एक अमेरिकी फ़िल्म के बारे में बताया था। यह एक ख़ास तरह की फ़िल्म थी, जिसे वो कार्टून फ़िल्म कहता था। उसने बताया कि पूरी फ़िल्म हज़ारों रेखांकनों का एक सिलसिला थी, इसलिए जब उनकी फ़िल्म बना कर पर्दे पर चलाई जाती थी तो लगता था कि तस्वीरें चल-फिर रही हैं। जलील ने बताया कि फ़िल्म एक बूढ़े, खिलौना बनानेवाले की कहानी कहती थी जिसका कोई बच्चा नहीं था, जो बहुत अकेला था और एक बेटे की चाहत में बेकरार था। इसलिए उसने एक बेटे रूप में एक कठपुतली बनाई, जिसमें जादू से जान आ गई। मरियम ने उससे आगे बताने के लिए कहा और जलील ने बताया कि बूढ़े और कठपुतली ने सभी तरह के साहस से भरे कारनामे किए और फिर एक जगह थी जिसे प्लेज़र आइलैंड कहा जाता था और बुरे बच्चे थे जो गधों में बदल गए थे। कठपुतली और उसके अब्बा को आख़िर में व्हेल

26 ख़ालिद हुसैनी

निगल लेती है। मरियम ने फ़िल्म के बारे में सारी बातें मुल्ला फैजुल्ला को बताई।

'मैं चाहती हूं कि आप मुझे अपने सिनेमा में ले चलें,' अब मरियम ने कहा। 'मैं कार्टून देखना चाहती हूं। मैं कठपुतली बच्चा देखना चाहती हूं।'

इसके साथ ही मरियम को लगा कि माहौल बदल गया है। उसके अम्मी-अब्बा अपनी अपनी जगहों पर थोड़े हिले डुले। मरियम उनके बीच नज़रों की अदला-बदली को महसूस कर सकती थी।

'यह अच्छा ख़याल नहीं है,' नाना ने कहा। उनकी आवाज़ शांत और काबू में थी, उसका लहजा नरमी से भरा हुआ था, जिसे वह जलील की मौजूदगी में इस्तेमाल में लाती थी। लेकिन मरियम उसकी सख्त, इल्ज़ाम लगाती हुई नज़र को महसूस कर सकती थी।

जलील ने अपनी कुर्सी पर पहलू बदली। वह खांसा और उसने अपना गला साफ़ किया।

'पता है,' उसने कहा, 'पिक्चर की क्वालिटी उतनी अच्छी नहीं है। आवाज़ भी अच्छी नहीं है। और प्रोजेक्टर भी इधर ख़राब चल रहा है। शायद तुम्हारी अम्मी सही हैं। शायद तुम किसी दूसरे तोहफे के बारे में सोच सकती हो, मरियम जो।'

'एंह,' नाना ने कहा। 'देखा? तुम्हारे अब्बा को भी यही लगता है।'

लेकिन बाद में धारा के पास मरियम ने कहा, 'मुझे ले चलो।'

'मैं तुमको बता दूंगा,' जलील ने कहा। 'मैं किसी को भेज दूंगा कि आकर तुम्हें ले जाए। मैं इसका पक्का इंतजाम कर दूंगा कि तुमको अच्छी सीट मिले और वो सारी चॉकलेटें भी, जो तुम चाहती हो।'

'ना। मैं चाहती हूं कि आप मुझे ले चलें।'

'मरियम जो-'

'और मैं चाहती हूं कि आप मेरे भाइयों और बहनों को भी बुलाएं। मैं उनसे मिलना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि सब एक साथ जाएं। यही मैं चाहती हूं।'

जलील ने गहरी सांस ली। वह दूर पहाड़ियों की तरफ़ देखने लगा। मरियम ने उसे याद किया कि वो बता रहा था कि पर्दे पर इंसान का चेहरा घर जितना बड़ा लगता है, कि जब एक कार टूटती तो आप अपनी हड्डियों में उसके लोहे का मुड़ना महसूस करते हैं। उसने निजी बालकनी सीटों में अपने भाइयों-बहनों और जलील के साथ बैठे और आइसक्रीम खाते हुए अपनी कल्पना की।

हजारों दमकते आफ़ताब 27

'मैं यही चाहती हूं,' उसने कहा।

जलील ने उसे बेचारगी के भाव के साथ देखा।

'कल। दोपहर में मैं तुमसे ठीक इसी जगह पर मिलूंगा। ठीक? कल?'

'यहां आओ,' उसने कहा। वह नीचे झुका और उसे ऊपर उठा लिया और देर तक, देर तक पकड़े रखा।

अव्वल तो नाना कोल्बा के चारों तरफ़ घूमते हुए अपनी मुट्ठियां कस और खोल रही थीं।

'मेरी जो बेटियां हो सकती थीं, उनमें से खुदा ने तुम जैसी नाशुक्री बेटी ही क्यों दी? हर चीज़ मैंने तुम्हारे लिए बर्दाश्त की! तुम्हें इतनी हिम्मत कैसे हुई! मुझे इस तरह छोड़ने की तुममें इतनी हिम्मत कैसे हुई, नन्हीं हरामी!'

तब वो हंसी।

'कैसी बेवकूफ़ लड़की हो तुम! तुमको लगता है कि तुम उसके लिए मायने रखती हो, कि वो तुमको अपने घर में रखना चाहता है? तुम सोचती हो कि तुम उसकी बेटी हो? कि वो तुमको रखने जा रहा है? तब मुझे कुछ बताने दो। मर्द का दिल एक कमबख्त, कमबख्त चीज़ होती है मरियम। यह एक मां की कोख जैसी नहीं होती। इसने खून नहीं बहाया है, इसने तुम्हारे लिए अपने भीतर जगह नहीं बनाई है। अकेले मैं ही तुमको प्यार करती हूं। मैं ही इस दुनिया में तुम्हारा सब कुछ हूं मरियम और जब मैं रुखसत हो जाऊंगी, तो तुम्हारे पास कुछ नहीं बचेगा। तुम्हारे पास कुछ नहीं होगा। तुम कुछ नहीं हो!'

फिर उसने जुर्म के एहसास को आजमाया।

'अगर तुम गईं तो मैं मर जाऊंगी। जिन आएगा और मुझे दौरा पड़ेगा। तुम देख लेना मैं अपनी जीभ निगल कर मर जाऊंगी। मुझे मत छोड़ो मरियम जो। रहम करो और रुक जाओ। तुम गईं तो मैं मर जाऊंगी।'

मरियम ने कुछ नहीं कहा।

'तुम जानती हो मैं तुमको प्यार करती हूं मरियम जो।'

मरियम ने कहा कि वह टहलने जा रही है।

उसे डर था कि अगर वह रुकी तो शायद दिल दुखाने वाली बातें उसके मुंह से निकल जाएंगीः कि वह जानती थी कि जिन एक झूठ था, कि जलील

28 ख़ालिद हुसैनी

ने उसे बताया था कि यह नाना की एक बीमारी थी जो दवाओं से ठीक हो सकती थी। उसने नाना से पूछ लिया होता कि उसने क्यों जलील के डॉक्टर को दिखाने से मना कर दिया था, जिसके लिए उसने जोर दिया था। जो दवाएं जलील ने उनके लिए ख़रीद कर दी थीं, क्यों उन्होंने वो दवाएं नहीं ली थीं। वह अगर अपनी बातों को जुबान पर ला पाती तो उसने नाना ने कहा होता कि वो खुद को एक औज़ार बना दिए जाने से और झूठों से तंग 'आ गई थी। कि वह नाना द्वारा अपनी जिंदगी की सच्चाइयों को तोड़-मरोड़ कर पेश किए जाने और मरियम को दुनिया के ख़िलाफ़ अपनी शिकायतों में से एक बना दिए जाने से आजिज़ आ चुकी थी।

तुम डरी हुई हो, नाना, शायद उसने कहा होता। तुम डरी हुई हो कि शायद मैं वह खुशी हासिल कर लूंगी जिसे तुम कभी नहीं हासिल कर पाईं। और तुम मुझे खुश नहीं देखना चाहतीं। तुम मेरे लिए एक अच्छी जिंदगी नहीं चाहतीं। तुम वह इंसान हो जिसका दिल कमबख़्त है।

मैदान के सिरे पर एक चौकी थी, जहां मरियम जाना पसंद करती थी। वह वहां सूखी, गर्म घास पर बैठ गई। यहां से हेरात दिख रहा था। वह उसके नीचे बच्चों के बोर्ड गेम की तरह पसरा हुआ था शहर के उत्तर में वुमेन्स गार्डेन था, चार-सुक बाज़ार और दक्षिण में सिकंदर महान के पुराने किले के खंडहर थे। कुछ दूरी पर वह मीनारों को भी देख सकती थी जो मिट्टी की विशालकाय उंगलियों की तरह दिख रही थीं। और गलियां थीं जिनके बारे में उसने कल्पना की थी वे लोगों, गाड़ियों और खच्चरों से भरी हुई होंगी। उसने ऊपर अबाबीलों को झपट्टा मारते और गोल-गोल घूमते देखा। वो इन चिड़ियों से जलती थी। वो हेरात में रह चुकी थीं। वो उसकी मस्जिदों, उसके बाज़ारों के ऊपर उड़ चुकी थीं। हो सकता है वे जलील के घर की दीवारों पर, उसके सिनेमाघर की बाहरी सीढ़ियों पर भी उतरी हों।

उसने दस कंकड़ उठाए और उनको एक ऊपर एक तीन खंभों की तरह खड़ा किया। यह वह खेल था, जिसे वह कभी-कभी तब खेलती थी जब नाना उसे नहीं

देख रही होतीं। पहले खंभे में उसने चार कंकड़ रखे, ये खदीजा के बच्चों के लिए थे, तीन अफसूं के लिए और तीसरे में तीन नरगिस के बच्चों के लिए। और तब उसने एक चौथा खंभा बनाया। यह अकेला, ग्यारहवां कंकड़ था।

हजारों दमकते आफ़ताब 29

अगली सुबह मरियम ने घुटनों तक आती क्रीम रंग की पोशाक, सूती पाजामा और सिर पर हरा हिजाब पहना। हिजाब पर वह थोड़ी खीझी भी थी जो हरे रंग की थी और उसकी पोशाक से मेल नहीं खा रही थी। लेकिन उसे यही पहनना पड़ा क्योंकि कीड़ों ने उसकी सफ़ेद हिजाब में छेद कर दिए थे।

उसने घड़ी देखी। यह एक पुरानी, चाभी देने वाली घड़ी थी जिसकी हल्की हरी डायल पर काले नंबर थे। यह मुल्ला फैजुल्ला का तोहफ़ा थी। घड़ी में नौ बजे थे। उसने जानना चाहा कि नाना कहां हैं। उसने बाहर जाकर उनको खोजने के बारे में सोचा, लेकिन उसे उनका सामना हो जाने और उनकी तकलीफदेह निगाह से डर लगा। नाना उस पर धोखा देने का इलज़ाम लगाएंगी। वह उसकी ग़लत चाहतों के लिए उसका मज़ाक उड़ाएंगी।

मरियम बैठ गई। वक़्त गुज़ारने के लिए वह बार-बार एक स्ट्रोक में एक हाथी बनाने की कोशिश करने लगी। यह तरीका जलील ने उसे सिखाया था। लगातार बैठे रहने से उसकी देह अकड़ गई लेकिन कपड़े मुड़ जाने के डर से वह लेटी नहीं।

जब सुइयों ने आख़िरकार साढ़े ग्यारह बजाए तो मरियम ने ग्यारह कंकड़ निकाले और बाहर निकली। धारा तक जानेवाले रास्ते में उसने नाना को बैठे देखा। वो लंबी लटकती शाखाओं वाले एक बेदमजनूं की गुंबदनुमा छत के नीचे, साए में कुर्सी डाले बैठी थीं। मरियम नहीं बता सकती कि नाना ने उसे देखा या नहीं।

धारा पर मरियम ने उस जगह पर जाकर इंतज़ार किया, जहां के बारे में पिछले दिन उन्होंने तय किया था। आसमान में कुछ स्याह, गोभी के आकार के बादल तैर रहे थे। जलील ने उसे बताया था कि स्याह बादलों का रंग स्याह इसलिए होता है कि वे इतने घने होते हैं कि उनका ऊपरी हिस्सा धूप को सोख कर निचले हिस्से पर इसकी परछाईं डालता है। उसने बताया था, उनके निचले तल का अंधेरा ही तुम देखती हो मरियम जो।

कुछ वक़्त गुज़रा ।

मरियम कोल्बा लौट आई। इस बार वह मैदान के पश्चिमी किनारे की तरफ़ से लौटी ताकि उसे नाना से मिलना न पड़े। उसने घड़ी देखी। लगभग एक बज चुके थे।

वे एक कारोबारी आदमी हैं मरियम ने सोचा। कुछ काम आ गया होगा।

30 ख़ालिद हुसैनी

वो धारा तक लौटी और फिर काफ़ी देर तक इंतजार किया। ऊपर मंडरा रही श्यामा चिड़िया घास में कहीं समा गई। उसने एक कीड़े को एक छोटे कंटीले पेड़ के तने के पास जाते देखा ।

उसने तब तक इंतजार किया जब तक उसके पांव अकड़ नहीं गए। इस बार वो कोल्बा नहीं लौटी। उसने अपने पाजामे के पांयचे घुटनों तक मोड़ लिए, धारा को पार किया और जिंदगी में पहली पहाड़ी से उतर कर हेरात की तरफ़ चल पड़ी।

नाना हेरात के बारे में भी गलत थी। किसी ने उसकी तरफ़ इशारा नहीं किया। कोई उस पर नहीं हंसा। मरियम सनोबर की कतारों के बीच से निकलते रास्ते पर चलती गई। सड़क शोर और भीड़ से भरी हुई थी। वह पैदल चलनेवालों, साइकिल सवारों और खच्चरों से खींची जा रही गाड़ियों की जमी हुई भीड़ के बीच चलती रही और किसी ने उस पर पत्थर नहीं फेंके। किसी ने उसको हरामी नहीं कहा। शायद ही किसी ने उसे देखा भी होगा। वह यहां । शानदार तरीके से एक आम इंसान थी और इस बात की उसे उम्मीद नहीं थी। 1

कुछ देर के लिए मरियम एक बड़े-से पार्क के बीच में एक अंडाकार तालाब के पास खड़ी रही जहां पत्थर वाले रास्ते आपस में एक दूसरे को काट रहे थे। हैरानी के साथ उसने तालाब के एक सिरे पर खड़े संगमरमर के खूबसूरत घोड़ों पर अपनी उंगलियां फिराईं और अपनी धुंधली आंखों से पानी को निहारा। उसने चोरी-छुपे उन लड़कों के झुंड को देखा जो काग़ज़ की नावें तैरा रहे थे। मरियम ने हर जगह फूल ही फूल देखे-ट्यूलिप, लिली, सांझ को खिलने वाली मालती। उनकी पंखुड़ियां धूप में नहाई हुई थीं। लोग राहों पर चल रहे थे, बेंचों पर बैठे थे और चाय पी रहे थे।

मरियम मुश्किल से ही यकीन कर पा रही थी कि वह यहां थी। उसका हेरात उत्तेजना के साथ हिलकोरें ले रहा था। उसने चाहा कि मुल्ला फैजुल्ला उसे इस वक़्त देख पाते। वो पाते कि वो कितनी साहसी है। कितनी बहादुर! इस शहर में उसकी जो नई जिंदगी उसका इंतजार कर रही थी, उसने खुद 'को उसके हाथों में सौंप दिया था। एक अब्बा, भाइयों और बहनों वाली जिंदगी। ऐसी जिंदगी जिसमें वह प्यार कर पाए और बदले में उसें प्यार मिले। यह सब बिना किसी शर्त या मकसद के हो और ऐसा करने में कोई शर्म भी न हो।

इसी जोश में वह पार्क के पास आम रास्ता पकड़ कर वापस लौटने लगी।

हजारों दमकते आफ़ताब 31

वह छायादार पेड़ों के नीचे बैठे थुलथुल चेहरों वालो बूढ़े फेरीवालों और उनके सामने सजाए हुए चेरी और अंगूर के ढेरों को देखते हुए उनके पास से होकर गुजरी। नंगे पांव लड़के बेल के थैले लहराते हुए कारों और बसों के पीछे भाग रहे थे। मरियम एक नुक्कड़ पर खड़ी गुजरने वालों को देखती रही और यह समझने की नाकाम कोशिश करती रही कि कैसे वे अपने आस पास की शानदार चीजों की तरफ़ से इतने बेपरवाह हो सकते थे।

कुछ देर बाद उसने एक उम्रदराज घोड़ागाड़ी मालिक से पूछने की हिम्मत जुटाई कि क्या वह जानता है कि सिनेमाघर के मालिक जलील कहां रहते हैं। फूले हुए गालों वाले बूढ़े ने सतरंगी चापन पहन रखी थी। 'तुम हेरात की नहीं हो, है न?' उसने दोस्ताना लहजे में कहा। 'हर कोई जानता है कि जलील खान कहां रहते हैं।'

'क्या आप मुझे दिखा सकते हैं?'

उसने पन्नी में लिपटी हुई एक टॉफी खोली और कहा, 'तुम अकेली हो?'

'हां।'

'आओ, चढ़ जाओ। मैं तुम्हें वहां ले चलूंगा।'

'मैं आपको किराया नहीं दे सकती। मेरे पास पैसे नहीं हैं।'

बूढ़े ने टॉफी उसे दे दी। उसने कहा कि उसे दो घंटों तक गाड़ी नहीं चलानी थी और बहरहाल वह घर जाने की सोच रहा था। जलील का घर उसके रास्ते में था।

मरियम गाड़ी पर सवार हो गई। वे आसपास बैठे हुए चुपचाप चलते रहे। रास्ते में मरियम ने जड़ी-बूटियों की दुकानें देखीं, उसने बिना दरवाजों वाले बड़े-बड़े कमरे देखे जहां ख़रीददार संतरे और नाशपाती, किताबें और यहां तक कि बाज़ तक खरीद रहे थे। बच्चे मिट्टी में घेरे बना कर कंचे खेल रहे थे। चायखानों के बाहर दरी से ढंके हुए लकड़ी के तख़्त पर बैठे लोग चाय और हुक्के पी रहे थे।

बूढ़े ने गाड़ी को एक चौड़ी, नुकीले पेड़ों की कतारों वाली सड़क पर मोड़ दिया। बीच रास्ते पर एक जगह उसने घोड़े को रोका।

'वह रही। लगता है कि तुम खुशकिस्मत हो, दुख़्तर जो। यह उन्हीं की कार है।'

मरियम कूद कर नीचे उतरी। वह मुस्कुराया और चला गया।

32 ख़ालिद हुसैनी

मरियम ने कभी किसी कार को नहीं छुआ था। उसने जलील की कार के हुड पर उंगलियां फिराई। वह एक काली, चमकदार और जगमगाते पहियों वाली गाड़ी थी, जिसमें उसने अपनी खुद की एक चिपटी और चौड़ी तस्वीर देखी। उसकी सीटें सफ़ेद चमड़े की बनी थीं। स्टीयरिंग व्हील के पीछे मरियम। ने शीशे के गोल पैनल और उनके नीचे सुइयां देखीं।

एक पल के लिए मरियम ने अपने सिर में नाना की मज़ाक उड़ाती हुई, अपनी उम्मीदों की चमक को फीकी करती हुई आवाज़ सुनी। कांपते पांवों के साथ मरियम घर के सामने के दरवाजे पर पहुंची। उसने दीवार पर अपने हाथ रखे। वे इतनी ऊंची और अपशगुनी लग रही थीं। उसे उन दीवारों की दूसरी तरफ़ से झांकती सनोबर के पेड़ों की फुनगियां देखने के लिए अपनी गर्दन को तानना पड़ा। फुनगियां हवा के झोंकों से हिल रही थीं और उसने कल्पना की कि वे उसके स्वागत में सिर हिला रही हैं। मरियम ने डर की उठती हुई लहर के ख़िलाफ़ खुद को टिकाए रखा।

नंगे पांवों वाली एक औरत ने दरवाज़ा खोला। उसके निचले होंठों के नीचे गोदना था।

'मैं जलील खान से मिलने आई हूं। मैं मरियम हूं। उनकी बेटी।'

असमंजस का एक भाव लड़की के चेहरे पर दौड़ गया। तब फिर पहचान लेने का भाव आया। उसके होंठों पर अब एक हल्की सी मुस्कान आई और उसके बारे में उत्सुकता और अंदाज़ा लगाने का भाव भी। 'यहीं रुको,' लड़की ने जल्दी से कहा।

उसने दरवाज़ा बंद किया।

कुछ मिनट गुज़रे। तब एक मर्द ने दरवाज़ा खोला। वह लंबा और चौड़े कंधों वाला एक आदमी था जिसकी आंखें सोई-सोई सी और चेहरा शांत दिख रहा था।

'मैं जलील खान का शोफर हूं,' उसने यह कठोरता से नहीं कही।

'उनके क्या?'

'उनका ड्राइवर ।

जलील खान यहां नहीं हैं।'

'मैंने उनकी कार देखी,' मरियम ने कहा।

'वे एक ज़रूरी काम के सिलसिले में बाहर हैं।'

'वे कब लौटेंगे?'

हजारों दमकते आफ़ताब 33

'उन्होंने नहीं बताया है।'

मरियम ने कहा कि वह इंतजार करेगी।

उसने दरवाजा बंद कर दिया। मरियम बैठ गई और उसने अपने घुटने अपने सीने से लगा लिए। शाम ढलने लगी थी और उसे भूख लग रही थी। उसे गाड़ीवाले की टॉफी खा ली। कुछ देर बाद ड्राइवर फिर से निकला ।

'तुम्हारे लिए अब घर चले जाना जरूरी है,' उसने कहा। 'घंटे भर में अंधेरा हो जाएगा।'

'मुझे अंधेरे की आदत है।'

'ठंड भी होगी। क्यों नहीं मैं तुमको तुम्हारे घर तक छोड़ आऊं? मैं उनको बता दूंगा कि तुम यहां आई थीं।'

मरियम ने बस उसे देखा।

'तब मैं तुम्हें होटल में ले चलूंगा। वहां तुम आराम से सो सकोगी। सर्वेरे हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं।'

'मुझे घर में आने दो।'

'मुझे ऐसा नहीं करने को कहा गया है। देखो, कोई नहीं जानता कि वे कब तक लौटेंगे। कई दिन भी लग सकते हैं।'

मरियम ने अपने सीने पर हाथ बांध लिए।

ड्राइवर ने गहरी सांस ली और उसको हल्के उलाहने के साथ देखा ।

बरसों बाद, मरियम को इस पर सोचने के काफ़ी सारे मौक़े आनेवाले थे कि अगर वह ड्राइवर को उसे कोल्बा तक पहुंचा देने देती तो चीजें कौन सा रुख अख्तियार करतीं। लेकिन उसने उसे नहीं पहुंचाने दिया। उसने जलील के घर के सामने रात गुज़ारी। उसने आसमान में अंधेरा घिरते हुए देखा, अंधेरे ने मुहल्ले के घरों को अपने में डुबो लिया। गोदनेवाली लड़की उसके लिए थोड़ी रोटी और एक प्लेट चावल लेकर आई, जिसे मरियम ने कह दिया कि उसे नहीं चाहिए। लड़की ने मरियम के नज़दीक उनको रख दिया। समय-समय पर मरियम को सड़क पर पैरों की आहट, दरवाजों का खुलना, दुआ सलाम की हल्की आवाजें सुनाई देतीं। बिजली की बत्तियां जलीं और खिड़कियां फीकी रोशनी में दमक उठीं। जब वो भूख और अधिक बर्दाश्त नहीं कर पाई तो उसने प्लेट में रखे चावल और रोटी खा ली। फिर उसने बागीचे में बोलते झिंगुरों को सुना।
ऊपर आसमान में बादल फीके चांद को पीछे छोड़ते हुए तैर रहे थे।

34 ख़ालिद हुसैनी

सवेरे झकझोरे जाने से उसकी नींद खुली। मरियम ने देखा कि रान में किसी ने उसे कंबल ओढ़ा दिया था।

उसका कंधा झकझोरने वाला ड्राइवर था।

'बहुत हो गया। तुमने तमाशा बना दिया है। बस । अब चलने का वक़्त हो गया है।'

मरियम उठ बैठी और अपनी आंखें मलने लगी। उसकी पीठ और गर्दन दुख रहे थे। 'मैं उनका इंतज़ार करूंगी।'

'मुझे देखो,' ड्राइवर ने कहा। 'जलील खान ने कहा है कि मैं तुमको वापस ले जाऊं। अभी। समझीं? जलील खान ने ऐसा कहा है।'

उसने कार का पिछला सवारी वाला दरवाज़ा खोला। 'बिया। चलो आ जाओ, उसने नर्मी से कहा।

'मैं उनसे मिलना चाहती हूं,' मरियम ने कहा। उसकी आंखों में आंसू भर आए थे।

ड्राइवर ने गहरी सांस ली। 'चलो, मुझे तुमको घर छोड़ आने दो। चलो दुख़्तर जो।'

मरियम खड़ी हुई और उसकी तरफ़ बढ़ी। लेकिन तभी, आख़िरी पल में उसने अपनी दिशा बदल दी और सामने के दरवाज़ों की तरफ़ दौड़ पड़ी। उसने अपने कंधों को पकड़ने के लिए फिसलतीं ड्राइवर की उंगलियां महसूस कीं। वह उसकी पकड़ से निकली और खुले दरवाज़ों से होती हुई भीतर दाखिल हो गई।

जलील के वागीचे में विताए गए उन मुट्ठी भर पलों में मरियम की आंखों ने चमकते शीशे के ढांचे की झलक पाई जिसके भीतर पौधे थे, लकड़ी की जाफरी पर चढ़ी अंगूर की बेलों को देखा, स्याह पत्थर के टुकड़ों से बने मछली रखने के तालाब को देखा, फलदार पेड़ों और चमकीले रंगों वाले फूलों से भरी झाड़ियों को देखा। वो यही सब चीजें देख रही थी कि उसकी नज़र बागीचे के पार ऊपरी मंजिल की खिड़की में एक चेहरे पर पड़ी। वह चेहरा वहां केवल एक पल के लिए, एक झलक भर के लिए था लेकिन इतना काफ़ी था। मरियम के लिए उस चेहरे की फैल गई आंखों और खुले हुए मुंह को देख लेने के लिए इतना काफी थी।

वह नज़र से ओझल हो गया। एक हाथ की।लक मिली जिसने तेजी से तार खींच दिया। पर्दा गिर गया।

हजारों दमकले आफ़ताब 35

तभी दो हाथों ने उसे अपनी बगल में दबाया और वह जमीन से उठा ली गई। मरियम लात मारने लगी। उसकी जेब से निकल कर कंकड़ विखर गए। कार में ले जाए जाने और पिछली सीट के ठंडे चमड़े पर रखे जाने के दौरान मरियम ने लात मारना और चिल्लाना जारी रखा।

गाड़ी चलाते हुए ड्राइवर धीमी और तसल्ली देती आवाज़ में बात करता रहा। मरियम ने उसे नहीं सुना। पूरे सफ़र के दौरान पिछली सीट पर हिचकोले खाते हुए वह रोती रही। ये आंसू दुख के, गुस्से के और मोहभंग के आंसू थे। लेकिन सबसे अधिक ये आंसू गहरी, गहरी शर्म के आंसू थे कि कैसे उत्तने खुद को जलील के हाथों सौंप कर अपने को बेवकूफ़ बनाया है, कि कैसे वह इस बात के लिए परेशान रही कि कौन सी पोशाक पहनी जाए, कि हिजाब मेल नहीं खा रहा था, पूरे रास्ते चल कर आने के लिए, घर के सामने से हट जाने से इन्कार करने के लिए, आवारा कुत्ते की तरह सड़क पर सोने के लिए। और वह इससे शर्मिंदा थी कि कैसे उसने अपनी मां की सख्त निगाह और सूजी आंखों को नज़रअंदाज़ कर दिया था। नाना ने उसे चेताया था और वह पूरी तरह सही थीं।

मरियम ऊपरी मंज़िल की खिड़की से दिखते उस चेहरे के बारे में सोचती रही। उसने उसे सड़क पर सोता छोड़ दिया। सड़क पर। मरियम पड़ी पड़ी रोती रही। वह बैठी नहीं, वह दिखाई देना नहीं चाहती थी। उसने कल्पना की कि सारा हेरात जानता था कि कैसे उसने अपने आप को अपमानित किया था। उसने चाहा कि यहां मुल्ला फैजुल्ला होते तो वह अपना सिर उनकी गोद में रख देती और उनको सुकून पहुंचाने देती।

कुछ देर बाद सड़क हिचकोलों से भर हुई और कार का शोर बढ़ गया। वे हेरात से गुल दामन जाने वाली ऊंचाई पर चढ़ रहे थे।

मरियम सोच रही थी कि वह नाना को क्या बताएगी। वह उनसे कैसे माफ़ी मांगेगी? वह नाना का सामना भी कैसे कर पाएगी?

कार रुकी और ड्राइवर ने उसे बाहर आने में मदद की। 'मैं तुम्हारे साथ चलूंगा,' उसने कहा ।

उसने ड्राइवर को सड़क पार कर के बढ़ते हुए आगे चलने दिया। रास्ते के किनारे किनारे हनीसकल और मिल्कवीड की झाड़ियां उगी थीं। चमकते

36 ख़ालिद हुसैनी

जंगली फूलों पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। ड्राइवर ने उसका हाथ पकड़ा और धारा को पार करने में उसकी मदद की। इसके बाद उसने उसे जाने दिया, और बात करने लगा कि कैसे हेरात की एक सौ बीस दिनों तक चलने वाली हवाएं जल्दी ही शुरू होने वाली हैं, जो सुबह से लेकर शाम ढलने तक चलती हैं और कैसे मच्छर काट खाने के अभियान पर निकल पड़ेंगे और फिर अचानक वो उसके सामने खड़ा हुआ और उसकी आंखों को ढंकने की कोशिश करते हुए उस वापस उसी रास्ते की तरफ़ धकेलने लगा जिधर से वे आ रहे थे। वो कह रहा था, 'लौट जाओ! नहीं। अब मत देखो। घूमो! लौट जाओ!' लेकिन वह उतना फुर्तीला साबित नहीं हुआ। मरियम ने देख लिया था। हवा का एक झोंका नीचे से उठा और बेदमजनूं की लंबी लटकती शाखाओं को बीच से पर्दे की तरह बांटता हुआ निकल गया और मरियम ने पेड़ के नीचे जो था, उसकी एक झलक पा ली सीधी पीठ वाली कुर्सी उल्टी पड़ी थी। ऊंची शाखा से एक रस्सी लटक रही थी। इसके एक सिरे पर नाना की देह झूल रही थी।

छह

नाना को उन्होंने गुल दामन के कब्रिस्तान के एक कोने में दफनाया। मुल्ला फैजुल्ला के कब्र के पास नमाज पढ़ाने और इसके बाद लोगों द्वारा कफ़न में लिपटी नाना की देह को ज़मीन में उतारने के दौरान मरियम औरतों के बीच बीबी जो की बगल में खड़ी रही।

इसके बाद जलील मरियम को कोल्बा तक ले गया जहां साथ में आए गांव वालों के सामने मरियम के साथ खूब लाड़-प्यार दिखाया। उसने मरियम की कुछ चीजें उठाईं और उनको एक सूटकेस में रखा। वह खाट पर पड़ी मरियम की बगल में बैठा और उसके चेहरे पर हवा की। उसने उसकी ललाट को सहलाया और चेहरे पर दुख का भाव लिए हुए उसने उससे पूछा कि क्या उसे किसी चीज़ की जरूरत थी? किसी चीज़ की? उसने यह बात इसी तरह दो बार कही।

'मैं मुल्ला फैजुल्ला को चाहती हूं,' मरियम ने कहा। 'बेशक। वे बाहर हैं। मैं उनको बुलाता हूं।'

जब मुल्ला फैजुल्ला की दुबली, लंबी देह कोल्बा के दरवाजे पर दिखी तो मरियम उस दिन पहली बार रोई।

'ओह मरियम जो ।'

वे उसकी बगल में बैठे और उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में ले लिया। 'रोओ मरियम जो। रोओ। इसमें कोई शर्म की बात नहीं है। लेकिन

98 ख़ालिद हुसैनी

कुरान जो कहता है उसे याद रखना, 'शुक्रिया उराका जिसके हाथों में तहान है और जिसकी सारी चीज़ों पर हुक्म चलता है, जिसने मीत और जिंदगी बनाई है वह एक दिन तुमको आजमा सकता है।' झुगन ने सच्ची बात कही है। हमारे कंधों पर आ पड़ी हरेक आजमाइश और हरेक दुख के पीछे खुदा की हिक़मत होती है।'

लेकिन मरियम खुदा के शब्दों में सुकून नहीं सुन सकी। उस दिन तो नहीं। उस वक़्त नहीं। वह बस यह कहती हुई नाना की आवाज़ सुन पा रही थी, अगर तुम जाओगी तो मैं मर जाऊंगी। वस में मर जाऊंगी। वह बस गे सकी और अपने आंसुओं को मुल्ला फैजुल्ला के हाथों की धब्बेदार, पतली चमड़ी पर गिरने दिया।

अपने घर लौटते वक़्त जलील अपनी कार की पिछली सीट पर मरियम के साथ बैठा और अपने हाथ उसके कंधों पर लपेट दिए।

'तुम हमारे साथ रह सकती हो मरियम जो,' उसने कहा। 'मैंने पहले ही तुम्हारी खातिर कमरा साफ़ करने को कह दिया है। यह ऊपर वाली मंजिल पर है। मुझे लगता है कि तुम इसे पसंद करोगी। तुम वहां से बागीचा देख पाओगी।'

पहली बार मरियम उसको नाना के कानों से सुन सकती थी। उसके खोखले और झूठे दिलासों के नीचे छुपी बेईमानी को अब वह साफ़-साफ़ सुन सकती थी। वह उनकी तरफ़ नज़र उठा कर देख नहीं सकी।

कार जब जलील के घर के सामने उतरी तो ड्राइवर ने उनके लिए दरवाज़ा खोला और मरियम का सूटकेस उठा लिया। जलील उसके दोनों कंधों पर हथे लियां टिकाए उसे उन्हीं दरवाज़ों के ज़रिए घर के भीतर ले चला, जिनके बाहर दो दिन पहले ही उनका इंतजार करते हुए मरियम सोई थी। दो

दिन पहले के वे दिन एक दूसरा ही जीवन लग रहे थे जब मरियम इस बागीचे में जलील के साथ चलने से अधिक दुनिया में किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचती थी। मरियम ने खुद से पूछा कि कैसे इतनी जल्दी उसकी ज़िंदगी बिखर गई। उसने अपनी निगाहें जमीन पर, स्याह पत्थरों वाले रास्ते पर पड़ते कदमों पर टिकाए रखीं। यह जानती थी कि बागीचे में लोग मौजूद हैं जो फुसफुसा रहे हैं, किनारे किनारे चल रहे हैं। उसने ऊपर की मंजिल की खिड़कियों से झांकती

हजारों दमकते आफ़ताब 39

निगाहों का वजन महसूस किया।

घर के भीतर भी मरियम ने अपना सिर झुकाए रखा। वह एक कत्थई रंग की दरी पर चल रही थी जिसमें नीले-पीले रंग के आठ कोनों वाले सांचे बने थे। अपनी आंखों के कोनों से उसने संगमरमर के आधार वाली मूर्ति, आधी ऊंचाई के गुलदान, दीवार पर टंगी घिसे हुए सिरे वाले चटख रंगों वाली टेपेस्ट्री देखी। उनको ले जाने वाली सीढ़ी पर भी वैसी ही कालीन बिछी हुई थी जिसमें हर सीढ़ी पर कीलें ठुकी हुई थीं। ऊपर आने के बाद ज़लील उसे दाहिनी तरफ़ ले गया जहां एक और कालीन बिछा लंबा गलियारा था। वो एक दरवाजे पर रुका, उसे खोला और उसे भीतर आने दिया।

'तुम्हारी बहनें नीलोफर और अतिया कभी-कभी यहां खेलती हैं,' जलील ने कहा। 'लेकिन हम इसे अधिकतर मेहमानखाने के रूप में इस्तेमाल करते हैं। मुझे लगता है कि यहां तुम आराम से रह सकोगी। यह अच्छा है, है न?'

कमरे में एक बिस्तर था जिस पर मधुमक्खी के छत्ते जैसी डिज़ाइन वाला, हरे फूलों वाला एक कंबल था। पर्दे कंबल के रंग से मेल खाते थे और उनको समेट देने पर वहां से नीचे का बागीचा दिखता था। बिस्तर की बगल में तीन दराजों वाला एक संदूक था, जिसके पाए फूलदार थे। दीवार से लगे खाने बने हुए थे जिनमें फ्रेम की हुई तस्वीरें रखीं थीं। मरियम उन तस्वीरों को नहीं पहचानती थी। एक खाने पर मरियम ने लकड़ी से बनी मिलती-जुलती गुड़ियां देखीं, जिनको उनके घटते हुए कद के हिसाब से एक कतार में खड़ा किया गया था।

जलील ने उसे खिलौनों को देखते हुए देखा। 'मार्योश्का गुड़ियां।
मैं उन्हें मास्को से लाया था। तुम चाहो तो उनसे खेल सकती हो। कोई बुरा नहीं मानेगा ।'

मरियम बिस्तर पर बैठ गई।

'तुम्हें क्या कोई चीज़ चाहिए?' जलील ने कहा।

मरियम लेट गई। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। कुछ देर बाद उसने दरवाज़े के हल्के से बंद होने की आवाज़ सुनी।

नीचे बाथरूम जाने के अलावा मरियम पूरे वक़्त अपने कमरे में ही रहती। गोदनों वाली लड़की, जिसने मरियम के लिए दरवाज़ा खोला था, उसके लिए

40 ख़ालिद हुसैनी

ट्रे में खाना ले आती: भेड़ का कबाब, सब्ज़ी, सूप। इनमें से अधिकतर यों ही अछूता पड़ा रहता। जलील दिन में कई बार आता, बिस्तर पर उसकी बगल में बैठता और पूछता कि वह ठीक से तो है।

'तुम नीचे हम सबके साथ खा सकती हो,' वह बिना ज़्यादा जोर दिए यह बात कहता। जब मरियम ने कहा कि वह अकेले खाना पसंद करेगी तो वह फटाफट मान गया।

खिड़कियों से मरियम अनमने तरीके से जलील की रोज़मर्रा की जिंदगी की उन सारी चीज़ों को देखती जिनके बारे में वह पूरी जिंदगी सोचती रही थी और देखने को तरसती थी। सामने के दरवाज़े से नौकर भागते हुए आते-जाते । एक माली हमेशा झाड़ियों को काटता-छांटता, ग्रीन हाउस के पौधों को पानी देता। सड़क पर लंबी, आकर्षक हुडों वाली कारें रुकतीं। उनमें से सूट, चापन और काराकुल टोपी पहने मर्द और हिजाब पहने औरतें, संवरे बालों वाले बच्चे उतरते। मरियम जलील को उन अजनबियों से हाथ मिलाते देखती, वह उसे अपने सीने तक हाथ उठा कर उनकी बीवियों से सलाम करते हुए देखती। वह जानती थी कि नाना ने सच कहा था। उसका इस जगह से कोई रिश्ता नहीं था।

लेकिन तब मेरा रिश्ता किस जगह से है? अब मैं क्या करनेवाली हूं?

इस दुनिया में मैं ही तुम्हारा सबकुछ हूं मरियम। जब मैं रुखसत हो जाऊंगी तो तुम्हारे पास कुछ नहीं बचेगा। तुम्हारे पास कुछ नहीं बचेगा। कुछ नहीं होगा तुम्हारे पास। तुम कुछ नहीं होओगी!

कोल्बा के पास के बेदमजनूंओं से गुजरने वाली हवा की तरह एक कहा न जा सकनेवाला अंधकार का झोंका मरियम से होकर गुज़रता रहा।

जलील के घर में रहते हुए मरियम का यह दूसरा पूरा दिन था, जब एक छोटी-सी लड़की कमरे में आई।

'मुझे कुछ लेना है,' उसने कहा।

मरियम बिस्तर पर पांव मोड़ कर बैठ गई और कंबल को अपनी गोद में खींच लिया।

लड़की ने फुर्ती से जाकर अल्मारी का दरवाजा खोला। उसने एक स्याह चौकोर डिब्बा निकाला।

'पता है ये क्या है?' उसने पूछा। उसने डिब्बे को खोला। 'इसे ग्रामोफोन

हजारों दमकते आफ़ताब 41

कहते हैं। ग्रामोफोन! इसमें रेकार्ड बजाए जाते हैं। तुम जानती हो? संगीत? ग्रामोफोन ।'

'तुम नीलोफर हो। तुम आठ बरस की हो?'

नन्हीं लड़की मुस्कुराई। उसकी मुस्कान जलील जैसी थी और उसके गालों पर गड्ढे बनते थे। 'तुम कैसे जानती हो?'

मरियम ने कंधे झटके। वह इस लड़की को यह नहीं बतानेवाली थी कि उसने एक पत्थर का नाम इसके नाम पर रखा हुआ था।

'क्या तुम गाना सुनना चाहती हो?' मरियम ने फिर से कंधे झटके।

नीलोफर ने ग्रामोफोन का प्लग लगाया। उसने डिब्बे के ढक्कन के नीचे पाउच में से एक छोटा सा रेकॉर्ड निकाल कर उसमें लगाया और सूई नीचे की।

गीत बजने लगा:

आई विल यूज़ ए फ्लावर पेटल फॉर पेपर एंड राइट यू द स्वीटेस्ट लेटर , यू आर द सुल्तान ऑफ माई हार्ट, द सुल्तान ऑफ माई हार्ट

'तुम जानती हो यह गीत?'

'नहीं।'

'यह एक ईरानी फ़िल्म का गीत है। इस फ़िल्म को मैंने अब्बा के सिनेमाघर में देखा था। तुम कुछ देखना चाहती हो?'

मरियम कुछ कह पाती इसके पहले ही नीलोफर ने अपनी हथेलियों और ललाट को ज़मीन पर टिका दिया था। उसने अपने तलवों से ज़ोर लगाया और अब वह सिर के बल खड़ी थी।

'क्या तुम ऐसा कर सकती हो?' उसने भारी आवाज़ में कहा।

'नहीं।'

नीलोफर ने अपने पैर वापस गिरा लिए और अपनी कुर्ती को नीचे खींचा। 'मैं तुमको सिखा सकती हूं,' नीलोफर ने अपनी लाल हो आई भौंहों से बाल हटाते हुए कहा। 'तो तुम कब तक यहां रहोगी?'

42 ख़ालिद हुसैनी

'मैं नहीं जानती।'

'मेरी अम्भी कहती हैं कि तुम सचमुच की उस तरह मेरी बहन नहीं हो, जैसा कि तुम बताती हो।'

'मैंने कभी नहीं कहा कि मैं सचमुच की बहन हूं,' मरियम ने झूठ बोला।

'वो कहती हैं कि तुमने कहा था। मुझे इससे मतलब नहीं। मेरा मतलब है कि तुमने कहा है या नहीं कहा है, इससे मुझे कोई मतलब नहीं है। मैं इसका बुरा नहीं मानती।'

मरियम लेट गई। 'मैं थक गई हूं।'

'मेरी अम्मी ने बताया कि तुम्हारी अम्मी ने जिन की वजह से फांसी लगा ली।'

'अब तुम रोक सकती हो,' मरियम ने उसकी तरफ़ मुड़ते हुए कहा। 'मेरा मतलब है कि गाना रोक सकती हो।'

उसी दिन बीबी जो उसे देखने आईं। उनके आते-आते बारिश होने लगी। उन्होंने किसी तरह मुंह बनाते हुए बिस्तर की बग़ल में कुर्सी पर अपने बड़े से शरीर को टिकाया।

'ये बारिश, मरियम जो, ये बारिश मेरे कूल्हों के लिए जहर है। जहर, मैं कह रही हूं। उम्मीद है... ओह अब मेरे पास आओ बच्ची। बीबी जो के पास आओ। रोओ नहीं। लो, बेचारी बच्ची... च्ह, च्ह... बेचारी ।'

उस रात मरियम देर तक नहीं सो सकी। वो बिस्तर में पड़ी आसमान को देखती रही और नीचे क़दमों की आवाजें, दीवारों में घुटी हुई बातचीत और खिड़कियों पर बारिश की बौछारों को सुनती रही। जब उसके झपकी आ गई थी तो वह एक चीख से अचकचा कर जाग पड़ी। नीचे से तीखी और गुस्से से भरी आवाजें आ रही थीं। मरियम एक शब्द नहीं बोल पाई। किसी ने दरवाजा जोर से बंद किया।

अगली सुबह मुल्ला फैजुल्ला उससे मिलने आए। जब उसने दरवाज़े पर अपने दोस्त की सफ़ेद दाढ़ी और स्नेह से भरी हुई दंतहीन मुस्कान देखी तो मरियम को अपनी आंखों के कोनों पर फिर से आंसुओं की चुभन महसूस की। उसने बिस्तर के किनारे की तरफ़ अपने पांव डाले और दौड़ पड़ी। उसने हमेशा की तरह मुल्ला के हाथ चूमे और मुल्ला ने उसकी भौंहें। मरियम ने उनके लिए एक कुर्सी खींची।

हजारों दमकते आफ़ताब 43

मुल्ला ने मरियम के लिए लाया हुआ कुरान उसे दिखाया। 'मुझे लगा कि रोज़मर्रा की चीजों को छोड़ने में कोई तुक नहीं है।'

'आपको पता है कि मुझे अब इस सबकी की जरूरत नहीं है मुल्ला साहिच। आप मुझे कुरान का हर सूरा और हर आयत बरसों पहले पढ़ा चुके हैं।'

वे मुस्कुराए और हार मानने का इशारा करते हुए अपना हाथ खड़े कर दिए। 'तो मैं कबूल करता हूं। मैं पकड़ लिया गया। लेकिन मैं तुमसे मिलने के और भी ख़राब बहाने सोच सकता हूं।'

'आपको बहानों की जरूरत नहीं है। आपको नहीं।'

'ये तुम्हारी रहमदिली है मरियम जो।'

मुल्ला साहिव ने उसे कुरान दिया। जैसा कि उन्होंने मरियम को सिखाया था, उसने तीन बार कुरान की चूमा और हर बार उसे अपनी भौंहों से लगाया और फिर उसे मुल्ला साहिब को लौटा दिया।

'तुम कैसी हो मेरी बच्ची?'

'मैं सोचती,' मरियम ने कहना शुरू किया। उसे रुक जाना पड़ा क्योंकि उसे लगा कि गले में कोई पत्थर फंस गया है। 'मैं वह बात सोचती रहती हूं जो मेरे चलने से पहले उन्होंने मुझसे कही थी। बो-'

'ना ना ना।' मुल्ला फैजुल्ला ने अपना हाथ उसके घुटने पर रखे। 'तुम्हारी अम्मी, अल्लाह उन्हें माफ़ करे, एक परेशान और दुखियारी औरत थीं मरियम जी। उन्होंने अपने साथ, तुम्हारे साथ और अल्लाह के साथ भी बुरा किया। अल्लाह उनको माफ़ करेगा क्योंकि वही माफ़ करनेवाला है। लेकिन उन्होंने जो किया उससे अल्लाह उदास होगा। जान लेने को अल्लाह कबूल नहीं करता, चाहे अपनी जान हो या दूसरों की। क्योंकि वह कहता है कि ज़िंदगी पाक चीज़ है। देखो' उन्होंने कुर्सी करीव खींची और मरियम के हाथ अपने हाथों में लिए। 'देखो, मैं तुम्हारी अम्मी को तुम्हारे पैदा होने से बहुत पहले से जानता हूं, जब वो अभी छोटी ही थीं। और मैं तुमको बताता हूं कि वो तब भी दुखियारी थीं। मुझे अंदेशा है कि उन्होंने जो किया उसके बीज बहुत पहले बोए जा चुके थे। मेरे कहने का मतलब यह है कि इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। यह तुम्हारी गलती नहीं थी मेरी वच्ची।'

'मुझे उनको छोड़ कर नहीं जाना चाहिए था। मुझे चाहिए था-' "रुक जाओ। ऐसे ख़याल अच्छे नहीं हैं मरियम जो। सुन लो मेरी बात,

44 ख़ालिद हुसैनी

बच्ची? अच्छा नहीं है। यह तुमको तबाह कर देगा। यह तुम्हारी गलती नहीं थी। यह तुम्हारी गलती नहीं थी। ना।'

मरियम ने सिर हिलाया, लेकिन वह पूरे दिल से यही चाहती थी कि वो इस बात पर यकीन नहीं करे।

एक हफ्ते बाद दोपहर ढल रही थी जब उसका दरवाजा खटखटाया गया और एक लंबी औरत उसमें दाखिल हुई। उसका रंग गोरा, लाल रंगत लिए। हुए बाल और लंबी उंगलियां थीं।

'मैं अफसूं हूं,' उसने कहा। 'नीलोफर की अम्मी। तुम नहा कर नीचे क्यों नहीं आतीं मरियम?'

मरियम ने कहा कि वह इसके बजाए अपने कमरे में ही रहेगी।

'नहीं, तुम समझी नहीं। तुम्हारा नीचे आना जरूरी है। हमें तुमसे बात करनी है। यह अहम बात है।'

सात

जलील और उसकी बीवियां एक लंबी, गहरी भूरी टेबल पर उसके आमने-सामने बैठे थे। उनके बीच में टेबल पर क्रिस्टल के एक गुलदान में ताजे गेंदे के फूल और पानी की गीली सुराही रखी थी। लाल बालों वाली एक औरत अफसूं, जिसने खुद को नीलोफर की अम्मी बताया था, जलील की दाहिनी तरफ़ बैठी थी। दूसरी दो खदीजा और नरगिस उसकी बाईं तरफ़ थीं। हरेक बीवी के पास झीना काला दुपट्टा था जिसे उन्होंने अपने सिरों पर नहीं ओढ़ रखा था बल्कि उनको अपने गले में ढीले-ढाले तरीके से लपेट रखा था। मरियम यकीन नहीं कर सकती थी कि उन्होंने नाना के मातम में काला कपड़ा पहना होगा। उसने कल्पना की कि उसे बुलाए जाने के पहले किसी ने या शायद जलील नेः ही इसकी सलाह दी होगी।

अफसूं ने सुराही से पानी डाला और गिलास को मरियम के आगे चारखानेदार कपड़े के कोस्टर पर रख दिया। 'अभी तो बसंत ही है और गर्मी शुरू हो गई,' उसने कहा। उसने अपने हाथ को पंखे की तरह झला।

'तुम आराम से तो रहीं?' नरगिस ने पूछा, जिसकी छोटी ठुट्टी और काले घुंघराले बाल थे। 'उम्मीद है कि तुम आराम से रही होंगी। यह... तकलीफ... तुम्हारे लिए बहुत ही सख्त होगी। बहुत मुश्किल ।'

बाक़ी दोनों ने सिर हिलाया। मरियम ने उनकी करीने से सजी हुई भौंहों और पतली, उदार मुस्कान को देखा। मरियम के सिर में एक चुभती हुई भनभनाहट थी।

46 ख़ालिद हुसैनी

उसका गला जल रहा था। उसने थोड़ा पानी पीया।

जलील के पीछे की चौड़ी खिड़की से मरियम सेब के पेड़ों की कतार को देख सकती थी, जिन पर फूल आए हुए थे। खिड़की से लगी दीवार पर एक गहरे रंग का लकड़ी का कैबिनेट था। इसके भीतर एक घड़ी थी और मछली पकड़े हुए जलील और तीन लड़कों का फ्रेम किया हुआ फोटो था। जलील और लड़के हंस रहे थे।

'खैर,' अफसूं ने बोलना शुरू किया। 'मैं-मतलब हम तुमको इसलिए यहां लाए हैं क्योंकि हमारे पास तुम्हारे लिए बहुत अच्छी खबर है।'

मरियम ने नजरें उठाईं।

उसने नजरों ही नज़रों में बीवी को जलील से कुछ बातें करते हुए देखा, जो अपनी कुर्सी में धंसा हुआ टेबल पर रखी सुराही की तरफ़ अनमने तरीके से देखे जा रहा था। यह उन सबमें सबसे उम्रदराज दिखने वाली खदीजा थी जिसने मरियम की तरफ़ निगाह की और मरियम को महसूस हुआ कि इस काम के बारे में भी उसको बुलाने से पहले बातें हो चुकी हैं, और इस पर सब राज़ी हैं।

'तुम्हारी शादी के लिए एक लड़के ने रिश्ता भेजा है,' खदीजा ने कहा।

मरियम के. पेट में हौल सा उठा। 'क्या चीज़?' उसने अचानक सुन्न हो आए होंठों से कहा।

'शादी के लिए रिश्ता। उसका नाम रशीद है,' खदीजा ने बोलना जारी रखा। तुम्हारे अब्बा की उससे कारोबारी जान-पहचान है। वह कांधार का पश्तून है, लेकिन काबुल के देह-माज़ांग जिले में रहता है। उसका अपना दो मंजिला मकान है।'

अफसूं ने सिर हिलाया। 'और वह हमारी-तुम्हारी तरह फ़ारसी बोलता। तो तुमको पश्तो नहीं सीखना पड़ेगा।'

मरियम का सीना जकड़ रहा था। कमरा ऊपर-नीचे डोल रहा था और उसके पांवों के नीचे से जमीन खिसक रही थी।

'यह जूते बनाता है,' खदीजा कह रही थी। 'लेकिन वह कोई सड़कछाप आम मोची नहीं है। नहीं नहीं। उसकी अपनी दुकान है और वह काबुल के उन जूते बनाने वालों में से है जिनकी सबसे अधिक मांग है। वह राजदूतों और सदर के परिवारवालों जैसे रुतबे वाले लोगों के लिए जूते बनाता है। तो देखो

हजारों दमकते आफ़ताब 47

तुम्हारा खर्च उठाने में उसको कोई दिक्कत नहीं होगी।'

मरियम ने अपनी आंखें जलील पर टिका लीं। उसका दिल उसके सीने में उछल रहा था। 'क्या यह सही है? वो जो कह रही हैं क्या वो सही है?'

लेकिन जलील ने उसको नहीं देखा। वह अपने निचले होंठ के कोने को चबाता और सुराही को घूरता रहा।

'अब वो तुमसे थोड़ा ही बड़ा है,' अफसू ने सुर में सुर मिलाया। 'लेकिन वह ज़्यादा का नहीं होगा... चालीस तक। ज़्यादा से ज़्यादा हुआ तो पैंतालीस का होगा। तुम कुछ नहीं कहोगी नरगिस?" टी

'हां। लेकिन मैंने नौ साल की लड़कियों को तुम्हारे लिए रिश्ता भेजनेवाले इस लड़के से बीस साल बड़े लोगों के साथ दिए जाते देखा है मरियम। हम सबने देखा है। तुम कितने की हो, पंद्रह की? यह अच्छा है, एक लड़की की शादी की यह सबसे अच्छी, असली उम्र है।' इस पर जोश से भर कर सबने सिर हिलाए। मरियम इस पर गौर किए बिना नहीं रह सकी कि उसकी सौतेली बहनों सियादे और नाहिद का कोई जिक्र नहीं हो रहा था। ये दोनों उसी की उम्र की थीं और हेरात के मेहरी स्कूल में पढ़ रही थीं। उन दोनों का मंसूबा काबुल यूनिवर्सिटी में दाखिला लेने का

था। आखिरकार पंद्रह की उम्र उनके लिए शादी की अच्छी, असली उम्र नहीं थी।

'इससे भी ज़्यादा,' नरगिस बोलती रही, 'उसने भी जीवन में तो बड़े नुक़सान उठाए हैं। हमने सुना कि उसकी बीवी दस साल पहले बच्चे की पैदाइश के दौरान मर गई थी। और फिर तीन साल पहले उसका बेटा झील में डूब कर मर गया।'

'यह बहुत बुरा है, हां। वह पिछले कुछ बरसों से एक दुल्हन की तलाश में था लेकिन उसे कोई मनमाफिक नहीं मिलीं।'"

'मैं शादी नहीं करना चाहती,' मरियम ने कहा। उसने जलील की तरफ़ देखा। 'मैं यह नहीं चाहती। मेरी शादी मत करो।' उसने अपनी आवाज में सिसकता और फरियाद करता हुआ लहजा अच्छा नहीं लगा, लेकिन वह इससे बच नहीं सकी।

'अब समझदारी से काम लो मरियम,' एक बीवी ने कहा।

मरियम को अब इसका ख्याल नहीं रहा कि कौन क्या कह रहा है। वह जलील को घूरती रही और इंतजार करती रही थी कि वह मुंह खोले और कहे

48 ख़ालिद हुसैनी

कि यह सब झूठ था।

'तुम पूरी जिंदगी यहां नहीं गुजार सकतीं।'

'क्या तुम अपना खुद का एक परिवार नहीं चाहतीं?'

'हां, एक घर, अपने बच्चे?'

'तुमको आगे जीना है।'

'सही है कि तुम्हारे लिए एक स्थानीय, एक ताजिक से शादी करना अच्छा होगा। लेकिन रशीद अमीर है और तुममें उसकी दिलचस्पी है। उसके पास घर है, काम है। यही सब चीजें मायने रखती हैं, नहीं क्या? और काबुल एक खूबसूरत और रोमांचक शहर है। शायद तुमको इससे बेहतर मौक़ा न मिले।'

मरियम ने बीवियों की तरफ़ रुख किया।

'मैं मुल्ला फैजुल्ला के साथ रहूंगी,' उसने कहा। 'वे मुझे रख लेंगे। मैं जानती हूं कि वे रख लेंगे।'

'यह अच्छा नहीं है,' खदीजा ने कहा। 'वे बूढ़े हैं और वे इतने...' वह सही शब्द के लिए रुक गई। मरियम जानती थी जो वह असल में क्या कहना चाहती थी कि वे इतने नजदीक हैं। वह समझ गई थी कि उनकी बातों का क्या मतलब था। शायद तुमको इससे बेहतर मौक़ा न मिले। और न ही उनको इससे बेहतर मौक़ा मिलेगा। उसका पैदा होना उनके लिए अपमानजनक था और अब उनके लिए यह एक आखिरी मौक़ा था जब वे अपने पति की उस भारी गलती की आख़िरी निशानी को पोंछ कर मिटा सकती थीं। वह दूर भेजी जा रही थी क्योंकि वह उनकी शर्मिंदगी की चलती-फिरती, सांस लेती निशानी थी।

'वे इतने बूढ़े और कमजोर हैं,' खदीजा ने आखिरकार कहा। 'और जब वे नहीं रहेंगे तो तुम क्या करोगी? तुम उनके परिवार पर बोझ बन जाओगी।'

जैसी कि तुम अभी हमारे ऊपर हो। मरियम ने खदीजा के मुंह से सर्दियों की भाप की तरह निकलते इन अनबोले शब्दों को लगभग देख लिया।

मरियम ने खुद को काबुल में रख कर देखा। जलील ने एक बार उसे बताया था कि वह एक बड़ा, अजनबी, भीड़ भरा शहर था जो हेरात से साढ़े छह सौ किमी पूरब में था। साढ़े छह सौ किलोमीटर। अपने कोल्बा से वह अधिक से अधिक दो किलोमीटर दूर गई थी जब वो जलील के घर चल कर गई थी। उसने खुद को काबुल में रख कर देखा, कल्पना से भी परे इस दूरी के दूसरे सिरे पर एक अजनबी के घर में रहते हुए जहां उसे उसके मिजाज

हजारों दमकते आफ़ताब 49

और उसकी मांगों के आगे सिर झुकाए रहना होगा। उसे रशीद नाम के इस आदमी के लिए सफाई करनी होगी, खाना बनाना होगा, उसके कपड़े धोने होंगे। और फिर दूसरे काम भी होंगे नाना ने उसे बताया था कि शौहर अपनी बीवियों के साथ क्या करते हैं। यह खास तौर से उन अंतरंगताओं का ही ख़याल था, जिसने उसे डर से भर दिया और वह पसीने-पसीने हो गई। यह अंतरंग संबंध उसे बुराइयों से भरे दर्दनाक काम लगते थे।

वह फिर से जलील की तरफ़ मुड़ी। 'उनको बताइए। उनको बताइए कि आप उनको ऐसा नहीं करने दीजिएगा।'

'असल में तुम्हारे अब्बा ने रशीद को पहले ही ज़बान दे दी है,' अफसूं न कहा है। 'रशीद यहीं हेरात में हैं। वे काबुल से यहां आए हैं। निकाह कल सुबह होनी है और इसके बाद दोपहर में एक बस काबुल को रवाना होगी।'

'बताइए उनको!' मरियम चीख पड़ी।

औरतें अब चुप हो गईं। मरियम ने महसूस किया कि वे भी जलील को देख रही थीं। वो भी इंतज़ार कर रही थीं। कमरे में खामोशी पसर गई। जलील चोट खाया हुआ, बेचारगी भरा भाव अपने चेहरे पर लिए अपनी शादी की अंगूठी घुमा रहा था। कैबिनेट के भीतर घड़ी टिक टिक कर रही थी।

'जलील जो?' आखिर में एक औरत बोली।

जलील की आंखें धीमे-धीमे उठीं, मरियम की आंखों से मिलीं, पल भर को ठहरों और फिर झुक गईं। उसने मुंह खोला लेकिन उससे बस दर्द में डूबी हुई कराह ही निकल पाई।

'कुछ कहिए,' मरियम ने कहा।

तब जलील बोला। महीन, घिसी हुई आवाज़ में उसने कहा, 'धत्त तेरे की, मरियम मेरे साथ यह मत करो।' वह यों बोला मानो उसके साथ कुछ किया जाने वाला था।

और इसी के साथ मरियम ने महसूस किया कि कमरे से तनाव गायब हो गया।

जलील की बीवियों ने तसल्ली का एक नया और अधिक जीवंतता से भरा हुआ दौर शुरू किया तो मरियम नज़रें नीची किए टेबल की तरफ़ देखने लगी। उसकी आंखें टेबल के सुडौल पायों, लहरदार घुमावों वाले कोनों और गहरे भूरे रंग की इसकी चमकदार सतह पर फिरती रहीं। उसने गौर किया

5 0 ख़ालिद हुसैनी

कि उसके सांस छोड़ने पर हर बार सतह पर धुंध जम जा रही थी और वो अपने अब्बा की टेबल से गायब हो जा रही थी।

अफसूं उसे वापस ऊपर पहुंचा आई। जब अफसूं ने दरवाजा बंद किया तो मरियम ने ताले में घूमती चाबी की तेज आवाज सुनी।

आठ

सवेरे मरियम को सफ़ेद सूती पाजामे पर पहनने के लिए एक लंबी आस्तीन की गहरी हरी पोशाक दी गई। अफसूं ने उसे एक हरा हिजाब और उससे मेल खाती चप्पलें दीं।

उसे लंबे, बादामी टेबल वाले कमरे में ले जाया गया। फ़र्क़ बस यह था कि टेबल के बीच में चीनी में लिपटी हुई बादाम की मिठाइयां, एक कुरान, एक हरा बुर्का और एक शीशा रखा था। दो मर्द जिनको मरियम ने कभी नहीं देखा था-उसने अंदाजा लगाया कि वे गवाह होंगे और एक मुल्ला जिसे वो पहचान नहीं पाई, पहले से बैठे थे।

जलील ने उसको एक कुर्सी दिखाई। उसने एक हल्का भूरा सूट और लाल टाई बांध रखी थी। उसके बाल धुले हुए थे। जब उसने मरियम के लिए कुर्सी खींची तो वह उसका हौसला बढ़ाने के लिए मुस्कुराया। खदीजा और अफसूं इस बार मरियम की तरफ़ बैठीं।

मुल्ला ने बुर्के की तरफ़ इशारा किया और नरगिस ने मरियम के बैठने से पहले उसके सिर पर पहना दिया। मरियम नीचे अपने हाथों को देखने लगी। 'अब आप उनको बुला सकते हैं,' जलील ने किसी से कहा।

मरियम को उसकी गंध पहले मिली, झलक बाद में। सिगरेट का धुआं और कोलोन की भारी, मीठी गंध। वह जलील की तरह हल्की गंध नहीं थी। इसकी खुशबू मरियम की नाक में भर गई। बुर्के के भीतर, अपनी आंखों के

5 2 ख़ालिद हुसैनी

कोनों से मरियम ने दरवाजे पर एक लंबे, मोटी तोंद और चौड़े कंधों वाले एक झुके हुए आदमी को देखा। उस आदमी के कद को देख वह धक से रह गई और उसने अपनी निगाहें नीची कर लीं। उसका दिल हथौड़े की तरह बज रहा था। उसने दरवाजे पर उसके रुकने को महसूस किया। इसके बाद उसकी धीमी, भारी पैरों की हरकतों को महसूस किया। उसके कदमों की धमक से टेबल पर रखा मिठाइयों का कटोरा टनक रहा था। एक भारी घुरघुराहट के साथ वह उसकी बगल में कुर्सी पर धंस गया। वह शोर करते हुए सांसें ले रहा था।

मुल्ला ने दोनों का स्वागत किया। उसने कहा कि यह एक रिवायती निकाह नहीं है।

'मैं समझता हूं कि रशीद आगा ने काबुल के लिए बस की टिकटें ले रखी हैं, जो जल्दी ही खुलने वाली है। समय की कमी है इसलिए हम कार्रवाई को जल्दी पूरा करने के लिए कुछ रस्मों को छोड़ देंगे।

मुल्ला ने कुछ दुआएं पढ़ीं, शादी की अहमियत पर दो-चार बातें कहीं।

उसने जलील से पूछा कि क्या उसे इस शादी पर कोई एतराज़ है और जलील ने सिर हिलाकर इन्कार किया। तब मुल्ला ने रशीद से पूछा कि क्या वह मरियम के साथ शादी के इस निकाहनामे में शामिल होना चाहता है। रशीद ने 'हां' कहा। उसकी रूखी, सख़्त आवाज़ ने मरियम को पैरों तले कुचली जा रही पतझड़ की सूखी पत्तियों की आवाज़ की याद दिलाई।

'और मरियम जान, आपको यह आदमी अपने शौहर के रूप में कबूल है?'

मरियम चुप रही। लोगों ने गले साफ़ किए।

'उसे कबूल है,' टेबल की दूसरी तरफ़ से एक औरत की आवाज आई। 'असल में,' मुल्ला ने कहा, 'उनको खुद जवाब देना होगा। और उनको तीन बार पूछे जाने तक इंतजार करना चाहिए। बात यह है कि रशीद ने उनके लिए ख़्वाहिश जताई है न कि मरियम ने।'

उसने सवाल को दो बार और पूछा। जब मरियम ने कुछ नहीं कहा तो उसने एक बार फिर पूछा। और इस बार जोर देकर पूछा। मरियम अपनी बगल में जलील को अपनी कुर्सी पर पहलू बदले हुए महसूस कर सकती थी। वह टेबल के नीचे पैरों का मुड़ना और खुलना महसूस कर सकती थी। लोगों ने

हजारों दमकते आफ़ताब 53

फिर से गले साफ़ किए। एक छोटे, सफ़ेद हाथ ने बढ़ कर टेबल पर हल्की- सी धूल को उड़ा कर साफ़ किया।

'मरियम,' जलील फुसफुसाया। 'हां,' उसने कांपते हुए कहा।

बुर्के के नीचे से एक शीशा गुजरा। इसमें मरियम ने पहले अपना चेहरा देखा, अपनी बेढंगी भौंहें, चिपके हुए बाल, आंखों का उदास हरापन

देखा। उसकी आंखें इतनी नजदीक थीं कि गलती से उसे भेंगी समझा जा सकता था। उसकी चमड़ी रूखी थी और बेजान और धब्बों से भरी दिख रही थी। उसे अपनी ललाट बहुत चौड़ी, ठुड्डी बहुत संकरी, होंठ बहुत पतले लग रहे थे। कुल मिला कर वह एक लंबा, तिकोना लंबोतरा चेहरा लग रहा था। और तब भी मरियम ने देखा कि अजीब तरह से इन सारे भुलाए जा सकने वाले अंगों ने एक ऐसे चेहरे को रचा था जो खूबसूरत भले न हो लेकिन बुरा भी नहीं था।

शीशे में मरियम ने पहली बार रशीद की झलक पाई बड़ा, चौड़ा, लाल चेहरा, नुकीली नाक, मक्कारी से भरे मौज-मजे के संकेत देते मांसल गाल, पानीदार, लाल आंखें, भरे हुए दांत जिनमें से सामने के दो दांत तिकोनी छत की तरह एक साथ सटे हुए थे, नामुमकिन रूप से घने बाल, छितरी हुई भौंहों के ऊपर महज दो उंगलियों भर की जगह खाली थी जिसके ऊपर मोटे, कड़े, काले-सफ़ेद बाल थे।

शीशे में उनकी नज़रें थोड़ी देर को मिलीं और अलग हो गईं।

यह मेरे शौहर का चेहरा है, मरियम ने सोचा।

उन्होंने सोने की पतली अंगूठियों की अदला बदली की, जिनको रशीद ने अपने कोट की जेब से निकाला। उसके नाखून पीले-बादामी रंग के थे जिनकी रंगत सड़ते हुए सेब के भीतरी हिस्से जैसी थी। उनमें से कुछ के सिरे मुड़े और उभरे हुए थे। उसकी उंगलियों में अंगूठी पहनाते वक़्त मरियम के हाथ कांप 'रहे थे और रशीद ने उसकी मदद की। उसकी अपनी अंगूठी थोड़ी छोटी थी लेकिन रशीद को उसे उसकी उंगली को जोड़ों के ऊपर पहनाने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

'लो,' उसने कहा।

'अंगूठी खूबसूरत है,' एक बीवी ने कहा। 'यह प्यारी है, मरियम।'

'अब बस निकाहनामे पर दस्तखत करना बाक़ी है,' मुल्ला ने कहा।

मरियम ने अपनी आंखों को अपने हाथों पर केंद्रित किए हुए अपना

54 ख़ालिद हुसैनी

नाम लिखा- मीम, रे, ये और फिर मीम। अगली बार मरियम अपना नाम सत्ताईस साल के बाद एक दस्तावेज़ पर लिखने वाली थी, जिसे उसके आगे फिर से एक मुल्ला ही पेश करने वाला था।

'अब आप शौहर-बीवी हैं,' मुल्ला ने कहा। 'मुबारक हो।'

रशीद बहुरंगी बस में इंतजार कर रहा था। मरियम पिछले बंपर के पास जलील के साथ खड़ी थी, जहां से वह रशीद को नहीं देख पा रही थी। उसे केवल खुली खिड़की में छल्ले बनाता उसकी सिगरेट का धुआं दिख रहा था। उनके आस पास हाथ मिलाए जा रहे थे, एक दूसरे को अलविदा कहा जा रहा था। कुरान को चूमा जा रहा था, उसको सिर के ऊपर से गुज़ारा जा रहा था। नंगे पांव लड़के सवारियों के बीच में कूद रहे थे, उनके चेहरे च्यूइंग गम और सिगरेटों की डलियों के पीछे गायब थे।

जलील उसे बताने में लगा था कि काबुल इतना ख़ूबसूरत था, कि मुगत बादशाह बाबर ने कहा था कि उसे वहीं दफ़्नाया जाए। मरियम जानती थी कि अब वह काबुल के बागीचों और उसकी दुकानों, उसके पेड़ों, उसकी हवा के बारे में बताएगा। उसके बस पर सवार होने से भी काफ़ी पहले वह खुशी से हाथ हिलाता, खैरियत मनाता और बच कर निकल गया महसूस करता हुआ चल पड़ेगा।

मरियम इसकी इजाजत नहीं देने वाली थी।

'मैं आपकी इबादत करती थी,' उसने कहा।

जलील बीच वाक्य में ही रुक गया। उसने अपने हाथ बांधे और खोल लिए।
एक नौजवान हिंदू जोड़ा उनके बीच से गुज़रा। बीवी ने बच्चा पकड़ रखा था और पति सूटकेस खींच रहा था। जलील इस रुकावट पर मन ही मन खुश हुआ। उन्होंने एक दूसरे से माफ़ी मांगी और नर्मी से मुस्कुराए।

'हर जुमेरात को मैं घंटों बैठी आपका इंतज़ार करती रहती थी। मैं फिक्र कर कर के खुद को हल्कान कर लेती कि आप शायद नहीं आएंगे।'

'यह एक लंबा सफ़र है। तुमको कुछ खा लेना चाहिए।' उसने कहा कि वह कुछ रोटियां और पनीर ख़रीद सकता है।

'मैं हर वक़्त आपके बारे में सोचती रहती थी। मैं दुआएं करती थी कि आप सौ साल का होने तक जीएं। मैं नहीं जानती थी। मैं नहीं जानती

हजारों दमकते आफ़ताब 55

थी कि आपको मेरी वजह से शर्म आएगी।'

जलील ने बड़ी उम्र के लड़के की तरह नज़र नीची कर ली जो मानो अपने जूतों की नोक से कुछ खोद रहा हो।

'आप मेरी वजह से शर्मिंदा थे।'

'मैं तुमको देखने आऊंगा,' वह बुदबुदाया। 'मैं काबुल आऊंगा और तुमसे मिलूंगा। हम-'

'नहीं। नहीं,' उसने कहा। 'मत आइएगा। मैं आपसे नहीं मिलूंगी। आप मत आइएगा। मैं आपसे कोई रिश्ता नहीं रखना चाहती। कभी भी। कभी भी।'

जलील ने चोट खाई नज़रों से उसे देखा।

'आपके और मेरे लिए यहीं सब कुछ ख़त्म होता है। अलविदा कहिए।'

'मुझे इस तरह मत छोड़ो,' जलील ने धीमी आवाज़ में कहा।

'आपमें इतनी शराफत भी नहीं थी कि आप मुझको मुल्ला फैजुल्ला को अलविदा कहने की मोहलत भी देते।'

वह मुड़ी और बस की तरफ़ चल पड़ी। वह अपने पीछे जलील के चलने की आवाज़ सुन रही थी। जब वह खुद से खुलने बंद होने वाले दरवाजों के तक पहुंची तो पीछे से जलील की आवाज़ आई।

'मरियम जो।'

वह पायदान पर चढ़ी और हालांकि वह अपनी आंखों के कोनों से नीचे जलील को अपने साथ साथ चलते हुए देख सकती थी लेकिन उसने खिड़की की तरफ़ नहीं देखा। वह गलियारा पार करके पीछे गई जहां रशीद अपने पांवों के बीच में सूटकेस रखे हुए बैठा था। जब जलील की हथेलियां शीशे को दबा रही थीं और उंगलियां से वह शीशे को थपथपा रहा था, तब भी वह देखने के लिए नहीं मुड़ी। जब बस आगे की तरफ़ झटका खाते हुए बढ़ी तो वह जलील को इसके साथ-साथ तेज़ी से दौड़ते हुए देखने के लिए भी नहीं मुड़ी। और जब बस आगे बढ़ चली तो वह जलील को पीछे खड़े

हाथ हिलाते हुए और धूल के बादलों में गायब हो जाने के लिए देखने को नहीं मुड़ी।

खिड़की के पास वाली और बीच की सीट को घेरे रशीद ने अपना मोटा हाथ मरियम के हाथों पर रख दिए।

'बस बच्ची। बस... बस...' उसने कहा। वह खिड़की की तरफ़ आंखें तिरछी किए देख रहा था मानो उसने कोई दिलचस्प चीज़ देख ली हो।

नौ

वे अगले दिन शाम होने से पहले रशीद के घर पहुंचे।

'हम देह-माजांग में हैं,' रशीद ने कहा। वे बाहर, फुटपाथ पर थे। उसने एक हाथ से सूटकेस पकड़ रखी थी और दूसरे से सामने का लकड़ी का दरवाजा खोल रहा था। 'यह शहर का दक्षिणी-पश्चिमी हिस्सा है। चिड़ियाघर यहां से पास में ही है और यूनिवर्सिटी भी।'

मरियम ने सिर हिलाया। वह जान चुकी थी जब वो बोल रहा हो तो उसे उनकी बातों को गौर से सुनना होगा, भले ही वह उनको नहीं समझ पाए। वह काबुल की उसकी फ़ारसी और उसमें मिले पश्तो लहजे से परिचित नहीं थी जो कांधार में उसकी पुश्तैनी जुबान थी। दूसरी तरफ़ रशीद को मरियम की हेरात की फ़ारसी को समझने में कोई दिक्कत नहीं लग रही थी।

मरियम ने जल्दी से उस संकरी, कच्ची सड़क पर नजर दौड़ाई, जिसके किनारे रशीद का घर था। इस सड़क के किनारे बने घर एक दूसरे से बहुत सटे हुए थे, उनकी दीवारें आपस में मिलती थीं। इन घरों के सामने दीवारों से घिरा एक छोटा सा आंगन था, जो उनको सड़क से अलग करता था। अधिकतर घरों की छतें सपाट थीं और ईंटों की बनी हुई थीं, उनमें से कुछ मिट्टी की भी थीं, जो शहर को घेरे हुए पहाड़ों की तरह ही धूसर रंग के थे। दोनों तरफ़ गटर फुटपाथ को सड़क से अलग करते थे और उनमें कीचड़ से भरा पानी बहता रहता था। मरियम ने सड़क पर जहां- तहां बिखरे हुए, मक्खियों से भरे

हजारों दमकते आफ़ताब 57

कूड़े के ढेर देखे। रशीद का घर दो मंजिला था। मरियम देख सकती थी कि यह कभी नीला रहा होगा।

रशीद के सामने का दरवाजा खोलने के बाद मरियम ने खुद को एक छोटे, गंदे आंगन में पाया जहां पतली पतली पट्टियों में पीली घास उग रही थी। मरियम ने दाहिनी तरफ़ के आंगन में एक आउट हाउस देखा और बाईं तरफ़ हैंडपंप वाला एक कुआं था जहां छोटे-छोटे पौधे सूख रहे थे। कुएं के पास ही औजारों को रखने के लिए बना एक शेड था और एक साइकिल दीवार से टिका कर रखी हुई थी।

'तुम्हारे अब्बा ने बताया कि तुमको मछली मारना पसंद है,' जब वे आंगन पार कर घर की तरफ़ बढ़ रहे थे तो रशीद ने कहा। मरियम ने देखा कि घर में पीछे की तरफ़ कोई आंगन नहीं है। 'यहां से उत्तर की तरफ़ वादियां हैं। नदी खूब सारी मछलियों से भरी हुई है। शायद किसी दिन मैं तुमको ले चलूं।'

उसने दरवाज़ा खोला और उसे घर में दाखिल होने दिया।

रशीद का घर जलील के घर से तो बहुत छोटा था लेकिन मरियम और नाना के कोल्बा के मुकाबले यह हवेली था। इसमें एक गलियारा था, बैठक थी और एक रसोई थी, जिसमें उसने मरियम को बर्तन, तसले, कुकर और एक किरासन इस्टोप दिखा। बैठक में हल्के हरे रंग का चमड़े का पलंग था। बग़लों से यह फट गया था जिसे भद्दे ढंग से सिला गया था। छतें नंगी थीं। वहां टेबल, बेंत की दो कुर्सियां, दो फोल्डिंग कुर्सियां और कोने में एक काला, लोहे का स्टोव था।

मरियम बैठक के बीच में खड़ी अपने चारों तरफ़ देख रही थी। कोल्बा में वह अपनी उंगलियों से छत को छू सकती थी। वह अपनी खाट पर पड़े पड़े खिड़की से आती धूप के कोण से समय बता सकती थी। वह जानती थी कि कितना खुलने के बाद उसके दरवाजे के कब्जे टूट जाएंगे। वह लकड़ी के फर्श के तीसों टुकड़ों में से हरेक की खपच्चियों और दरारों को जानती थी। अब वे सारी जानी-पहचानी चीजें ख़त्म हो गई हैं। नाना मर चुकी है और वह खुद यहां, एक अजनबी शहर में थी और उस जिंदगी से अलग कर दी गई थी, जिसे वह उसकी वादियों, बर्फ से ढंकी पहाड़ियों और पूरे रेगिस्तानों के जरिए जानती थी। वह एक अजनबी के घर में थी, इसके अलग-अलग कमरे और सिगरेट के धुएं

58 ख़ालिद हुसैनी

की गंध के साथ, अनजाने बर्तनों से भरी अलमारी के साथ, इसके भारी, गहरे हरे रंग के पदों के साथ और एक छत के साथ जिसके बारे में यह

जानती थी कि उस तक वह नहीं पहुंच पाएगी। इस जगह में मरियम का दम घुट रहा था। उसमें नाना, मुल्ला फैजुल्ला और अपनी पुरानी जिंदगी की तेज चाहत जगी।

तब उसने रोना शुरू किया।

'रोने की क्या बात है?' रशीद ने रूखेपन के साथ कहा। उसने अपनी पतलून की जेब में हाथ डाले, मरियम की उंगलियां खोलीं और उसकी हथेली में एक रूमाल रख दिया। उसने एक सिगरेट जलाई और दीवार के सहारे टिक गया। वह मरियम को रूमाल से आंखें पोंछते हुए देखता रहा।

'हो गया?'

मरियम ने सिर हिलाया।

'क्या आपको यकीन है?'

'हो।'

गया! तब उसने मरियम की कोहनी पकड़ी और बैठक की खिड़की तक ले

'यें खिड़की उत्तर की तरफ़ खुलती है,' उसने शीशे को अपनी तर्जनी के टेढ़े नाखूनों से ठकठकाते हुए कहा। 'हमारे ठीक सामने वह अस्मई पहाड़ है- देखा? और बाईं तरफ़ अली आबाद पहाड़ है। यूनिवर्सिटी इसके ठीक नीचे है। हमारे पीछे पूरब में शेर दरवाज़ा पहाड़ है जिसे तुम यहां से नहीं देख सकतीं। हर रोज़ दोपहर में वहां तोप दगती है। अब रोना बंद करो। मैं कहता हूं।'

मरियम ने अपनी आंखों पर हाथ फेरे।

'एक चीज़ मैं कभी नहीं बरदाश्त नहीं कर सकता,' उसने त्योरियां चढ़ाते हुए कहा। 'औरत के रोने की आवाज़। माफ़ करना। मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता।'

'मैं घर जाना चाहती हूं,' मरियम ने कहा।

रशीद ने चिढ़ते हुए गहरी सांस ली। धुएं से भरी उसकी सांस मरियम के चेहरे से टकराई। 'मैं इस बार इसे निजी रूप में नहीं लूँगा। इस बार।'

फिर से उसने मरियम की कोहनी पकड़ी और उसे ऊपरी मंजिल की

तरफ़ ले चला।

हजारों दमकले आफ़ताब 59

ऊपर एक संकरा, फीकी रोशनी से भरा गलियारा और दो सोने के कमरे थे। बड़े कमरे का दरवाजा हल्का खुला हुआ था। उसमें से मरियम देख सकती धी कि बाक्ली घर की तरह यह भी बिखरा-बिखरा हुआ है कोने में बिस्तर, एक बादामी कंबल और तकिया, एक अलमारी और एक ड्रेसर। दीवारें खाली थीं, बस एक छोटा सा शीशा लगा हुआ था। रशीद ने दरवाजा बंद कर दिया।

'यह मेरा कमरा है।'

उसने मरियम से कहा कि वह मेहमानखाने में रह सकती थी। 'उम्मीद है कि तुम बुरा नहीं मानोगी। मुझे अकेले सोने की आदत है।'

मरियम ने उसे नहीं बताया कि कम से कम इस बात से उसे कितनी राहत मिली है।

जो कमरा मरियम का होने वाला था, वह उस कमरे से काफ़ी छोटा था, जिसमें वो जलील के घर में रुकी थी। उसमें एक बिस्तर, एक पुराना काला-भूरा ड्रेसर और एक छोटी अलमारी थी। खिड़की से आंगन और उसके पार सड़क दिखती थी। रशीद ने उसका सूटकेस कोने में रख दिया।

मरियम बिस्तर पर बैठ गई।

'तुमने गौर नहीं किया,' उसने कहा। वह दरवाजे में ही रुक गया था और अंटने के लिए थोड़ा झुक गया था। 'खिड़की के पत्थरों पर देखो । जानती हो वो क्या हैं? हैरात के लिए निकलने से पहले मैंने उनको रखा था।'

अब जाकर मरियम पत्थर पर रखी टोकरी देख पाई। सफ़ेद मरियम (रजनीगंधा) के फूल इसके दोनों तरफ़ लटके हुए थे।

'तुमको पसंद आए? तुम खुश हुईं?'

'हां।'

'तो तुम मुझे शुक्रिया कह सकती हो।'

'शुक्रिया। माफ़ कीजिएगा। तशंक्कुर-'

'तुम कांप रही हो। शायद मैं तुमको डरा रहा हूं? क्या मैं तुमको डरा रहा हूं? क्या तुमको मुझसे डर लग रहा है?'

मरियम उसकी तरफ़ नहीं देख रही थी, लेकिन वह इस सवाल में छुपे कुरेदते हुए मज़ाक को महसूस कर पा रही थी। उसने इन्कार में अपना सिर हिलाया जिसे उसने अपनी शादीशुदा जिंदगी का पहला झूठ माना।

'नहीं? तो अच्छा है। तुम्हारे लिए अच्छा है। खैर अब यह तुम्हारा घर है।

60 ख़ालिद हुसैनी

तुमको यहां रहना अच्छा लगेगा। तुम देख लोगी। क्या मैंने तुमको बताया कि यहां बिजली है? अधिकतर दिन में और हर रात में बिजली रहती है।'

उसने जताया कि अब वह जाएगा। दरवाजे पर वह थोड़ा रुका, उसने एक लंबा कश लिया और धुएं से अपनी आंखें सिकोड़ीं। मरियम को लगा कि वह कुछ कहने जा रहा है। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और उसे उसके सूटकेस और फूलों के साथ अकेला छोड़ दिया।

दस

शुरुआती कुछ दिनों में मरियम मुश्किल से ही अपने कमरे से बाहर निकली।. हर सुबह नमाज़ के लिए दूर से आती अज़ान की आवाज़ के साथ उठती और इसके बाद फिर से अपने बिस्तर में दुबक जाती। बिस्तर से ही वो रशीद को बाथरूम में नहाते, धोते सुनती और जब वो दुकान के लिए निकलने से पहले उसे देखने उसके कमरे में आता, तब भी वो बिस्तर में ही होती। अपनी खिड़की से वो उसे आंगन में अपना दोपहर का खाना साइकिल के पिछले कैरियर पर बांधते हुए देखती, जिसके बाद वह साइकिल को आंगन के पार ले जाते हुए सड़क पर चला जाता। वह उसे पैडल मारते हुए जाती देखती, उसके चौड़े, मोटे कंधों वाली आकृति को नुक्कड़ पर नज़रों से ओझल होते देखती ।

अधिकतर दिन मंरियम बिस्तर में ही रही जहां वो दिशाहीन और लाचार सी महसूस करती। कभी कभी वह नीचे उतर कर रसोई तक जाती जहां वह चिपचिपे, ग्रीज़ के धब्बों से सने ओटे पर, विनाइल पर, जले हुए खाने की गंध से भरे फूलदार पर्दों पर हाथ फिराती। वह बेढब दराजों, बेमेल चम्मचों और छुरियों, छलनी और छिपटी को, लकड़ी की लेपनी को छान मारती, जो उसकी आनेवाली नई जिंदगी के औज़ार होने वाले थे। ये सारे उसे उस तबाही की याद दिलाते थे जो उसकी जिंदगी पर छा गई थी और उसे अपनी जड़ों से उखड़ा हुआ, विस्थापित महसूस कराते, मानो वह किसी की जिंदगी में दाखिल हो गई कोई घुसपैठिया हो।

62 ख़ालिद हुसैनी

उसके कोल्बा में उसकी भूख का अंदाजा लगाया जा सकता था। यहां उसका पेट खाने की शायद ही कभी मांग करता था। कभी कभी वह बैठक में खिड़की के पास जाकर वो बचे हुए भात और रोटी का एक टुकड़ा खा लेती। वहां से वह अपनी सड़क से लगे एकमंजिला घरों की छतों को देख सकती थी। वह उनके आंगन भी देख सकती थी, जहां वो औरतों को कपड़े धोते और अपने बच्चों को भगाते हुए देखती, मुर्गियों को धूल में चारा खोजते हुए, फावड़ों और कुदालों को रखे हुए और गायों को पेड़ों से बंधे हुए देखती ।

वह गर्मियों की उन रातों को बड़ी ललक के साथ याद करती जब गुल दामन के ऊपर चमक रहे चांद को देखते हुए वो और नाना कोल्बा की सपाट छत पर सोतीं। रात इतनी गर्म होती कि उनकी कमीजें खिड़की से चिपकी गीली पत्ती की तरह उनके सीने से चिपक जातीं। वह सर्दियों की दोपहर बाद की कोल्बा में मुल्ला फैजुल्ला से पढ़ाई की कमी महसूस करती, अपनी छत पर पेड़ों से टूट कर गिरते बर्फ के टुकड़ों को याद करती, बाहर बर्फ से झुकी टहनियों पर बोलते कौवों को याद करती।

घर में अकेले मरियम बेचैनी से रसोई से बैठक, ऊपर अपने कमरे से नीचे तक घूमती रहती। अंत में वह अपने कमरे में वापस लौट आती जहां वह नमाज़ पढ़ती या अपने बिस्तर पर बैठी रहती, अपनी अम्मी को शिद्दत से याद करते हुए वह पाती कि वह नफ़रत से भरती जा रही है और अपने घर के लिए बेचैन हो जाती।

सूरज पश्चिम में ढल रहा होता जब मरियम की बेचैनी अपने चरम पर पहुंच जाती। रात के बारे में सोच कर उसके दांत बज उठते, कि किसी रात आखिरकार रशीद उसके साथ वह करने का फैसला कर सकता है जो सारे

शौहर अपनी बीवियों के साथ करते हैं। जब रशीद नीचे अकेले खा रहा होता तो वह भावनात्मक रूप से टूट कर बिस्तर में पड़ जाती।

वह हमेशा उसके कमरे के पास रुकता और अंदर सिर घुसा कर देखता ।

'तुम इतनी जल्दी नहीं सी सकतीं। अभी बस सात बजे हैं। क्या तुभजगी हो? जवाब दो। चलो, अभी आओ ।'

वह अंधेरे में खड़ा तब तक जोर देता रहता, जब तक मरियम नहीं कहती, 'मैं यहीं हूं।'

वह सरक आता और उसके चौखटे में बैठ जाता। अपने बिस्तर से वो

हजारों दमकते आफ़ताब 63

उसकी बड़ी सी देह के ढांचे को, उसकी लंबी टांगों को, उसकी नुकीली नाक के पास उमड़ते सिगरेट के धुएं को, उसकी सिगरेट की चमकती और मंद पड़ते दमकते सिरे को देखती।

वह बताता कि उसका दिन कैसे गुजरा। रशीद ने बताया कि उसने जूतों का एक जोड़ा खासतौर से उप विदेश मंत्री के लिए बनाया है, जो केवल उसी के यहां से जूते ख़रीदते हैं। उसे पोलैंड के एक कूटनीतिज्ञ और उसकी पत्नी के लिए चप्पलों का ऑर्डर मिला है। वह उसे बताता कि लोगों में जूतों को लेकर कैसे-कैसे अंधविश्वास मौजूद हैंः कि उनको बिस्तर पर रख देना परिवार में मौत को दावत देना है, कि अगर कोई बायां जूता पहले पहन ले तो. उसका किसी से झगड़ा हो सकता है।

'जब यह जुमे को बिना किसी इरादे के किया जाए तो ऐसा नहीं होता,' उसने बताया। 'और तुमको पता है कि जूतों को आपस में बांध कर खूंटी पर टांग देना बुरा शगुन है?'

रशीद खुद इनमें से किसी पर यकीन नहीं करता। उसकी राय में अंधविश्वास सबसे अधिक औरतों की परेशानी थे।

वह उसे सड़कों पर सुनी हुई बातें सुनाता जैसे कि अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने कैसे एक कांड के बाद इस्तीफा दे दिया है।

मरियम ने कभी निक्सन या उस कांड के बारे में कभी नहीं सुना था जिससे वो इस्तीफा देने को मजबूर हुआ था और वो जवाब में रशीद को कुछ भी नहीं कहती। वह रशीद की बातें ख़त्म होने, सिगरेट को बुझाने और वहां से चले जाने का बेकरारी से इंतज़ार करती। जब वह उसे गलियारा पार करके अपना दरवाज़ा खोलते और बंद करते हुए नहीं सुन लेती तब तक उसके पेट को जकड़ी हुई लोहे की मुट्ठी ढीली नहीं पड़ती।

फिर एक रात उसने सिगरेट बुझाई और गुड नाइट कहने की जगह वो चौखटे पर झुक गया।

'क्या तुम उस चीज को कभी खोलोगी भी?' उसने उसके सूटकेस की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। रशीद ने अपने हाथ बांध लिए। 'मेरा अंदाजा है कि तुमको शायद कुछ वक़्त चाहिए। लेकिन यह तो बकवास है। एक हफ्ता गुजर गया है और... खैर मैं उम्मीद करता हूं कि कल सवेरे से तुम बीवियों की तरह बर्ताव करने लगोगी। समझीं?'

64 ख़ालिद हुसैनी

मरियम के दांत बजने लगे।

'मुझे जवाब चाहिए।'

'हां।'

'बढ़िया,' उसने कहा। 'तुम क्या सोचती हो? कि यह कोई होटल है? कि मैं कोई होटलवाला हूं? खैर, यह... ओह... ओह... ला इलाह इलल्लाह। मैंने रोने के बारे में क्या कहा था? मरियम। क्या कहा था मैंने रोने के बारे में तुमसे?'

अगली सुबह रशीद के काम पर जाने के बाद मरियम ने अपने बंधे हुए कपड़े निकाले और उन्हें ड्रेसर में लगा दिया। कुएं से वह एक डोल पानी निकाल लाई और एक चीथड़े के साथ उसने अपने कमरे और नीचे बैठक की खिड़कियों को साफ़ किया। उसने फर्श बुहारा, छत से झूलते मकड़ी के जालों को साफ़ किया। घर में हवा आने के लिए उसने खिड़कियां खोल दीं।

उसने एक बर्तन में तीन प्याली मसूर की दाल को फूलने के लिए डाला, एक छुरी खोजी और कुछ गाजर और दो आलू काटे और उनको भी पानी में डाल कर छोड़ दिया। उसने आटे की तलाश की जो उसे मसाले के गंदे मर्तबानों की कतार के पीछे की कैबिनेटों में मिला। आटे को हथेलियों से दबाते हुए, कोनों से मोड़ते हुए, घुमाते हुए और फिर से दबाते हुए उसने नाना के बताए तरीके से आटे को गूंधा। आटा गूंध लेने के बाद उसने उसे एक गीले कपड़े में लपेटा, फिर एक हिजाब पहनी और एक सामुदायिक तंदूर का इंतज़ाम करने के लिए निकली।

रशीद ने से बताया था कि यह कहां था। सड़क पर आगे जाकर बाईं तरफ़ मुड़ने के फौरन बाद दाहिनी तरफ़ मुड़ना होगा। लेकिन मरियम को बस औरतों और बच्चों के झुंड के साथ-साथ चलते जाना था, जो उसी तरफ़ जा रहे थे। मरियम ने देखा कि अपनी मांओं के आगे-पीछे भाग रहे बच्चों ने जो कमीजें पहन रखी थीं, उनमें पैबंदों के ऊपर पैबंदें लगी थीं। उनके पाजामे या तो बहुत बड़े थे या बहुत छोटे, उनकी चप्पलों में चीथड़ों के फीते लगे थे जो आगे-पीछे झूल रहे थे। वे छड़ियों से साइकिलों के पुराने टायर नचा रहे थे।

उनकी मांएं तीन या चार के झुंडों में चल रही थीं। कुछ ने बुर्के पहन

हजारों दमकते आफ़ताब 65

रखे थे, कुछ ने नहीं। मरियम उनकी तेज गपशप और ऊंचे ठहाकों को सुन सकती थी। अपना सिर झुकाए हुए वह उनके हंसी-मजाक की सुन रही थी जो ऐसा लगता था कि हमेशा ही अपने वीमार और आलसी बच्चों और नाशुक्रे शौहरों के बारे में हुआ करती थी।

मानो खाना खुद बन जाता हो।

वल्लाहो बिल्लाह, एक मिनट का आराम नहीं। और कसम से वो मुझसे कहते हैं, सचमुच में वो मुझसे कहते हैं...

"कभी नहीं ख़त्म होने वाली यह बातचीत, फरियाद का लहजा लेकिन अजीब तरह से चहक़ती हुई बातें घूम-फिर कर चलती रहतीं। रास्तों पर, गलियों में, नुक्कड़ों पर, तंदूर की कतार में यही बातें। जुआ खेलने वाले शौहरों की बातें। मांओं के प्यार में डूबे शौहरों की बातें जो बीवियों पर एक रुपया खर्च नहीं करते। मरियम को हैरानी

हुई कि कैसे इतनी सारी औरतें एक ही बदकिस्मती से गुजर रही हैं कि उन सबकी शादी ऐसे डरावने मर्दों से हुई थी। या यह आटा गूंधने और चावल भिगोने जैसा बीवियों की रोज की कोई रस्म थी, जिसके बारे में वह नहीं जानती थी? क्या वे उम्मीद कर रही थीं वह भी जल्दी ही उनमें शामिल हो जाएगी?

तंदूर की कतार में मरियम ने अगल-बगल से अपने ऊपर पड़ती निगाहें देखीं और फुसफुसाहटें सुनीं। उसकी हथेलियों में पसीने आ गए। उसने कल्पना की शायद वे सब जानती हैं कि वह हरामी थी, जो अपने अब्बा और परिवार के लिए शर्म का सबब थी। वे सब जानती थीं कि उसने अपनी अम्मी को धोखा दिया था और खुद को अपमानित किया था।

अपने हिजाब के कोने से उसने अपने ऊपरी होंठों पर से पसीना पोंछा और अपनी हिम्मत जुटाने की कोशिश करने लगी।

कुछ मिनटों तक सब ठीक चल रहा था।

तभी किसी ने उसके कंधे को थपथपाया। मरियम पीछे मुड़ी और उसने अपनी ही तरह का हिजाब पहने हुए एक हल्के रंग की, मोटी औरत को देखा। उसके छोटे, कड़े बाल थे और हंसमुख, कमाल का गोल चेहरा था। उसके होंठ मरियम से भी ज़्यादा उभरे हुए थे, जिसमें नीचे कां होंठ थोड़ा लटका हुआ था मानों उसे होंठों के ठीक नीचे के बड़े, काले तिल ने अपनी तरफ़ खींच रखा हो। उसकी आंखें हरी-सी थीं जो मरियम को दावत देती हुई सी चमक रही थीं।

66 ख़ालिद हुसैनी

'तुम रशीद जान की नई बीवी हो, है न?' औरत ने खुल कर मुस्कुराते हुए कहा। 'हरात वाली। तुम कितनी छोटी हो! तुम्हारा नाम मरियम जान है म? मेरा नाम फरीबा है। मैं तुम्हारी गली में ही रहती हूं, तुम्हारे घर से बाएं, पांच घरों के बाद हरे दरवाजे वाला घर मेरा है। ये मेरा बेटा है नूर।'

उसकी बगल में खड़ा बच्चे का चिकना, खुशनुमा चेहरा और अपनी अम्मी की तरह ही कड़े बाल थे। उसके बाएं कान के ली पर कांले बालों' का एक गुच्छा था। उसकी आंखें शरारत से भरी थीं और उनमें एक बेचैन रोशनी थी। उसने अपना हाथ उठाया। 'सलाम खाला जान।'

'नूर दस साल का है। इससे बड़ा मेरा एक और बेटा है, अहमद।'

'वो तेरह का है,' नूर ने कहा।

'चौदहवां लग रहा है।' फरीबा हंसी। 'मेरे शौहर का नाम हक़ीम है,' उसने कहा। 'वे यहां देह माजंग में टीचर हैं। तुम हमारे यहां कभी- कभार आओ, हम मिल कर चाय-'

और तभी अचानक फरीबा के पीछे की औरतें आगे आ गईं और मरियम को घेर कर खड़ी हो गईं, मानों अचानक उनमें साहस आ गया हो।

'तो तुम हो रशीद जान की छोटी बीवी-'

'काबुल तुम्हें कैसा लगा?'

'मैं हेरात में रही थी। वहां मेरा एक चचेरा भाई रहता है।'

'तुम पहला बच्चा क्या चाहती हो? लड़का या लड़की?'

'मीनारें! ओह क्या खूबसूरत हैं! क्या शानदार शहर है!'

'लड़का मायने रखता है, मरियम जान। उनसे खानदान चलता है-'

'अरे नहीं! लड़के शादी करते हैं और चले जाते हैं। लड़कियां साथ रह जाती हैं और बुढ़ापे में वही देखभाल करती हैं।'

'हमने तुम्हारे आने के बारे में सुना था।'

रहेगा।' 'जुड़वां पैदा करो! एक लड़की, एक लड़का! फिर तो हर कोई खुश

मरियम पीछे हटी। उसका दम फूल गया था। उसके कान बज रहे थे, उसकी नब्ज़ तेज़ चल रही थी और उसकी आंखें एक चेहरे से दूसरे पर उड़ रही थीं। वह फिर से पीछे हटी लेकिन जाने के लिए कोई राह नहीं थी वह

हजारों दमकते आफ़ताब 67

एक घेरे के बीच में थी। उसने फरीबा को तलाशा जो मन ही मन गुस्सा हो रही थी। उसने देखा कि मरियम तनाव में है।

'जाने दो उसे!' फरीबा कह रही थी। 'चलो हटो, जानो दो उसे! तुम लोग उसे डरा रही हो!'

मरियम ने गुंधा हुआ आटा अपने सीने से लगा लिया और अपने चारों ओर की भीड़ को धकेलते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करने लगी।

'तुम कहां जा रही हो हमशीरा?'

किसी तरह खुले में आने तक वह उनको धकेलती रही और फिर वह सड़क की तरफ़ दोड़ चली। जब तक वो चौराहे तक नहीं पहुंच गई तब तक उसे इसका एहसास नहीं हुआ कि वह गलत रास्ते पर जा रही थी। वह मुड़ी और वापस दूसरी दिशा में दौड़ी। उसके पांव लड़खड़ाए और वो गिर पड़ी। उसका घुटना बुरी तरह छिल गया। वह उठी और फिर पीछे की औरत को झटका देते हुए दौड़ने लगी।

'तुमको क्या परेशानी है?'

'तुमसे खून बह रहा है हमशीरा!'

मरियम एक नुक्कड़ पर मुड़ी और फिर दूसरे पर। उसे सही गली तो मिल गई लेकिन फौरन वो याद नहीं कर सकी कि रशीद का घर कौन है। वह पूरी सड़क पर हांफते हुए दौड़ती रही। उसे रुलाई आ रही थी। अब वो आंख मूंद कर एक एक दरवाज़ा देख रही थी। कुछ में ताले लगे थे, दूसरे खुले थे जिनके पार पराए आंगन, भौंकते हुए कुत्ते और भौंचक बच्चे मिले। उसने कल्पना की कि रशीद काम से लौटेगा तो वो उसके घुटने से खून बहते हुए और अपनी सड़क पर खोए हुए और उसे अभी भी अपना घर खोजते हुए पाएगा। अब वो रोने लगी। वह तब तक आंसुओं से नम अपने चेहरे और खुली आंखों के साथ दरवाज़ों को धक्का देती रही और खौफजदा फरियादें करती रही जब तक कि उसे आउटहाउस, कुआं और औजार रखने वाला छप्पर नहीं दिख गया। उसे सुकून मिला। उसने धड़ाक से दरवाज़ा बंद किया और चिटखनी चढ़ाई। और फिर वो कुएं के पास हाथों-पैरों के बल झुकी उल्टी करने लगी। जब वो इससे उबरी तो रेंगते हुए वो कुएं से टिक कर बैठी और अपने पांव सामने फैला दिए। अपनी जिंदगी में उसने खुद को इतना अकेला कभी महसूस नहीं किया था।

68 ख़ालिद हुसैनी

रात में घर लौटते हुए रशीद अपने साथ बादामी रंग का कागंज का थैला लेकर आया। मरियम के इससे निराशा हुई कि उसने साफ़ खिड़कियों, बुहारे हुए फर्श और हटाए जा चुके मकड़ी के जालों की तरफ़ गौर नहीं किया। लेकिन वह इससे खुश दिखा कि मरियम ने बैठक के फर्श पर एक साफ़ सोफरे पर उसके लिए रात का खाना तैयार रखा है।

'मैंने दाल बनाई है,' मरियम ने कहा। 'बढ़िया। भूख से मेरी जान जा रही है।'

उसने रशीद के हाथ धोने के लिए के लिए अफ्तवा से पानी उंड़ेला। जब वो तौलिए से अपने हाथ पोंछ रहा था, मरियम ने उसके लिए भाप छोड़ती दाल का कटोरा और खिले हुए सफ़ेद चावल परोस दिया। यह मरियम द्वारा उसके लिए बनाया गया पहला खाना था और मरियम ने चाहा था कि इसे बनाते वक़्त वो अच्छी हालत में रही होती। खाना बनाते हुए भी वो तंदूर के पास घटी घटनाओं से कांप रही थी और पूरे वक़्त वो दाल के गाढ़ेपन और इसके रंग को लेकर परेशान रहीं. था। वो फिक्र कर रही थी कि कहीं रशीद ये न सोचे कि उसने ज़्यादा अदरक डाल दी है या कम हल्दी डाली है।

उसने सुनहरी दाल में अपनी चम्मच डुबोई।

मरियम थोड़ी हिली। क्या हो अगर वो इससे निराश या गुस्सा हो जाए? क्या हो अगर नाराजगी में वो प्लेट को दूर हटा दे?'

'देख कर,' उसने कुछ कहने की कोशिश की। 'गर्म है।'

रशीद ने होंठ सिकोड़े और फूंका, फिर चम्मच को मुंह में डाल लिया। 'अच्छी है,' उसने कहा। 'थोड़ा नमक कम है, लेकिन अच्छी है। बल्कि अच्छी से भी बढ़िया है।'

इससे मिली राहत के साथ मरियम उसे खाती हुई देखती रही। गर्व की एक लहर उसमें दौड़ गई। उसने अच्छे से किया था। बल्कि अच्छे से भी बढ़िया। और इससे उसे हैरानी हुई थी। रशीद की छोटी सी तारीफ से वो रोमांचित हो गई थी। उस दिन की उसकी परेशानियां थोड़ी हल्की हो गई।

'कल जुमा है,' रशीद ने कहा। क्या कहती है, मैं तुम्हें घुमाने ले चलूंगा।'

'काबुल के पास?'

'नहीं कलकत्ता ।'

'हजारों दमकते आफ़ताब 69

बात को नहीं समझते हुए मरियम ने पलकें झपकाईं।

'मजाक था। बेशक काबुल में ही। और कहां?' उसने बादामी काग़ज़ की तरफ़ हाथ बढ़ाया। 'लेकिन पहले मैं तुमको कुछ बताना चाहता हूं।' उसने थैले से एक आसमानी रंग का एक बुर्का निकाला। जब उसने बुर्के को उठाया तो तह किए हुए कपड़े उसके घुटनों पर बिखर गए। उसने बुर्के को लपेटा और मरियम की तरफ़ देखा।

'मेरे मर्द ग्राहक़ हैं मरियम जो अपनी बीवियों को दुकान पर लाते हैं। बिना पर्दे वाली औरतें मुझसे सीधे बात करती हैं, मेरी आंखों में बिना शर्म के देखती हैं। वे मेकअप करती हैं और ऐसे स्कर्ट पहनती हैं जिनमें उनके घुटने दिखते हैं। कभी कभी वे अपने पांव भी मेरे सामने नापने के लिए रख देती हैं और वहीं उनके शौहर खड़े देखते रहते हैं। वे इसकी इजाजत देते हैं। वे इसके बारे में कुछ नहीं सोचते कि पराए मर्द उनकी बीवियों के नंगे पांव छूते हैं! मेरा अंदाज़ा है कि वो सोचते हैं कि वो अपनी तालीम की वजह से मॉडर्न और दानिशमंद लोग हैं। वे नहीं देखते कि इस तरह वे अपने नंग-ओ-नामूस को, अपनी इज़्ज़त और मर्यादा को ख़राब कर रहे हैं।'

रशीद ने अपना सिर झटका।

'अधिकतर ऐसे लोग काबुल के अमीरों वाले इलाकों में रहते हैं। मैं तुमको वहां ले चलूंगा। तुम देखोगी। लेकिन ऐसे नर्म लोग यहां ठीक हमारे पड़ोस में भी रहते हैं। इसी गली में एक टीचर रहता है। हाकिम उसका नाम है। और मैं उसकी बीवी फरीबा को हर समय गली में बिना किसी काम के अकेले चलते हुए देखता हूं। उसके सिर पर दुपट्टे के सिवा कुछ नहीं होता। साफ़ बोलूं तो ऐसे आदमी को देख कर मुझे शर्म आती है जिसका अपनी बीवी पर से कावू न रह गया हो।'

उसने मरियम पर तीखी निगाह डाली।

'लेकिन मैं अलग किस्म का आदमी हूं मरियम। मैं जहां से आया हूं वहां एक नामुनासिब निगाह, एक नामुनासिब बात पर खून बह जाता है। जहां से

मैं आया हूं वहां औरत का चेहरा सिर्फ उसके शौहर के लिए होता है। मैं चाहता हूं कि तुम इसे याद रखो। समझीं?'

मरियम ने सहमति में सिर हिलाया। जब उसने अपना थैला मरियम की तरफ़ बढ़ाया तो उसने उसे ले लिया।
70 ख़ालिद हुसैनी

खाना बनाने पर मिली तारीफ से पैदा हुई खुशी मिट गई थी। इसकी जगह समेटने के भाव ने ले लिया था। मरियम को यह आदमी गुल दामन में फैले हुए सफ़ेद-कोह पहाड़ों की तरह दूसरों पर खुद थोपने वाला और अडिग लगा।

रशीद ने उसे कागज का थैला थमा दिया। 'तो फिर हम इस पर राजी हैं। अब मुझे थोड़ी और दाल दो।'

ग्यारह

मरियम ने कभी बुर्का नहीं पहना था। रशीद ने उसे पहनने में मदद की। सिर वाला गद्देदार हिस्सा उसे सिर पर कसा हुआ और भारी लगा और उसके जालीदार पर्दे के भीतर से दुनिया को देखना अजीब था। उसने बुर्का पहन कर अपने कमरे में चल कर जब इसका अभ्यास किया तो उसके पांव उसके किनारे पर पड़ जाते और वो लड़खड़ा जाती। अगल-बगल के दृश्य बुर्के से ढक जा रहे थे और यह परेशान करने वाला था। उसे यह भी पसंद नहीं आया कि बुर्के का तहदार कपड़ा उसका मुंह दबा रहा है और उससे उसका दम घुट रहा है।

'तुमको इसकी आदत हो जाएगी,' रशीद ने कहा। 'मैं शर्त लगा सकता हूं समय के साथ तुम इसे पसंद भी करने लगोगी।'

उन्होंने एक जगह के लिए बस पकड़ी जिसे रशीद शार-ए-नौ पार्क कह रहा था। बच्चे वहां झूलों पर झूल रहे थे और पेड़ के तनों से बंधे चीथड़े हो आई जाली के ऊपर वॉलीबॉल उछाल रहे थे। वे साथ-साथ टहलते रहे और बच्चों को पतंगें उड़ाते देखते रहे। अपने बुर्के के किनारे में उलझती हुई मरियम रशीद की बगल में चल रही थी। दोपहर के खाने के लिए रशीद उसे मस्जिद के करीब कबाब की एक छोटी-सी दुकान में ले. गया। मस्जिद का नाम उसने हाजी यागूब मस्जिद बताया। दुकान का फर्श चिपचिपा था और हवा में धुआं भरा हुआ था। दीवारों से कच्चे गोश्त की हल्की गंध आ रही थी और तेज आवाज़ में संगीत बज रहा था, जिसके बारे में रशीद ने बताया कि वो लोगारी

72 ख़ालिद हुसैनी

संगीत है। खाना बनानेवाले दुबले-पतले छोकरे थे, जो एक हाथ से सींखों पर पंखे से हवा कर रहे थे और दूसरे हाथ से उड़ती हुई मक्खियों को भगा रहे थे। मरियम कभी किसी रेस्टोरेंट के भीतर नहीं गई थी और उसे ऐसी भीड़ भरी जगह में, इतने अजनबियों के बीच बैठना और मुंह में निवाले डालने के लिए बुर्का उठाना अजीब लगा। ऐसी ही घबराहट उसे उस दिन तंदूर के पास महसूस हुई थी, लेकिन रशीद की मौजूदगी उसे थोड़ी राहत दे रही थी। और कुछ देर के बाद उसे संगीत, धुआं और लोगों पर से भी उसका ध्यान हट गया। और उसे हैरानी हुई कि बुर्का भी उसे राहत दे रहा था। यह एकतरफा खिड़की की तरह था। इसके भीतर से वह सबकुछ देख सकती थी लेकिन पराए लोगों की भेदती हुई नज़रों से बची हुई थी। अब उसे इसकी फिक्र नहीं थी कि लोग एक ही नज़र में उसके पिछले अतीत के शर्मनाक राजों को जान जाएंगे।

सड़कों पर चलते हुए रशीद ने उसे अनेक सरकारी इमारतों के नाम वताए : यह अमेरिकी दूतावास है, यह विदेश मंत्रालय है। उसने कारों की तरफ़ इशारा किया, उनके नाम और उन जगहों के नाम बताए जहां वो बनी थीं सोवियत वोल्गा, अमेरिकी शेवर्ले, जर्मन ओपेल ।

'तुमको कौन पसंद आई?' रशीद ने पूछा।

मरियम ने हिचकिचाते हुए वोल्गा की तरफ़ इशारा किया और रशीद हंस पड़ा।

काबुल उस थोड़े-से हेरात से जिसे मरियम ने देखा था कहीं ज़्यादा भीड़ भरा था। यहां उससे कम पेड़ थे और कहीं कम गाड़ियां घोड़ों से चलती थीं। यहां हेरात से ज़्यादा कारें, ऊंची इमारतें, अधिक ट्रैफिक बत्तियां और ज़्यादा पक्की सड़कें थीं। और हर कहीं मरियम ने शहर की अजीव-सी बोली सुनीः प्रिय के लिए जो की जगह जान, बहन के लिए हमशीरे की जगह हमशीरा, और इसी तरह दूसरे शब्द ।

सड़क पर एक फेरीवाले से रशीद ने मरियम के लिए आइसक्रीम ख़रीदी। उसने पहली बार आइसक्रीम खाई और मरियम ने कभी इसकी कल्पना नहीं की थी कि जीभ पर ऐसी तरकीबें आजमाई जा सकती हैं। वह पूरा कटोरा जल्दी से खा गई- गिरी के बुरादे बाला ऊपर का हिस्सा, तले में छोटी-छोटी

सेवइयों जैसा हिस्सा, सब कुछ। उसे मुग्ध करने वाली छुअन और मिठास पर। मर मिटी।

हजारों दमकते आफ़ताब 73

चे कूचा-मुर्ग यानी चिकन स्ट्रीट नामक जगह से होकर गुजरे। यह संकरा, भीड़ भरा बाजार उस मुहल्ले में था, जिसे रशीद ने अमीरों वाला इलाके में से एक बताया।

'इसके आसपास विदेशी कूटनीतिज्ञ, अमीर कारोबारी, शाही परिवार के सदस्य- इसी तरह के लोग रहते हैं। यहां मेरी-तुम्हारी तरह के लोग नहीं रहते।'

'मुझे यहां कोई मुर्गा नहीं दिख रहा,' मरियम ने कहा।

'यही वह चीज़ है जो तुमको चिकन स्ट्रीट में नहीं मिलेगी,' रशीद हंसा।

सड़क की दोनों तरफ़ भेड़ की खाल की टोपियों और सतरंगे चापन की दुकानों और छोटे खोखों की कतारें थीं। एक दुकान में रशीद चांदी के कामवाली छुरी देखने के लिए रुका और दूसरी में एक पुराना राइफल देखने के लिए, जिसके बारे में दुकानदार ने उसे यकीन दिलाया कि वो ब्रिटिशों के ख़िलाफ़ पहली जंग के दौरान की एक तारीखी बंदूक थी।

'और मैं मोशे दयान हूं,' रशीद बुदबुदाया। वो हल्के से मुस्कुराया और मरियम को लगा कि यह मुस्कान उसी के लिए थी। एक निजी, शादीशुदा आदमी की मुस्कान ।

वे कालीनों, हैंडीक्राफ्टों, मिठाइयों, फूलों की दुकानों और उन दुकानों से होकर गुज़रे जिनमें मर्दों और औरतों के लिए कपड़े बिक रहे थे। मरियम ने उनमें लेस के पर्दे के पीछे नौजवान लड़कियों को बटन सीते और कॉलर प्रेस करते हुए देखा। समय-समय पर रशीद जान-पहचान के दुकानदारों से दुआ-सलाम करता। कभी वे फ़ारसी में बोलते और कभी पश्तो में। जब वे हाथ मिलाते और गालों पर चूमते, मरियम कुछ क़दम दूर खड़ी रहती। रशीद ने कभी उसे पास नहीं बुलाया और न ही उसको किसी से मिलवाया।

उसने मरियम को कसीदाकारी की दुकान के बाहर इंतजार करने को कहा। 'मैं इसके मालिक को जानता हूं,' उसने कहा। 'मैं बस दुआ-सलाम करने कुछ मिनटों के लिए जा रहा हूं।'

मरियम ने बाहर भीड़ से भरे फुटपाथ पर इंतजार किया। उसने चिकन स्ट्रीट में चलती कारों को देखा जो रास्ते पर खड़े सामान बेचने वालों और पैदल चलने वालों की भीड़ के बीच राह बनाती हुई चल रही थीं और बच्चों और अपनी जगह पर अडिग बंदरों पर हॉर्न बजा रही थीं। उसने छोटे खोखों में ऊबे हुए दिख रहे व्यापारियों को देखा जो सिगरेट पी रहे थे और तांबे की चिलमचियों

74 ख़ालिद हुसैनी

में थूक रहे थे। आने-जाने वालों को कपड़ा और फर के कॉलर वाले पुस्तीन कोट दिखाते हुए उनके चेहरे साए में जब-तब उभर आते थे।

लेकिन मरियम की निगाहें सबसे ज़्यादा औरतों पर गईं।

काबुल के इस हिस्से में औरतें उन गरीब मुहल्लों की औरतों से अलग किस्म की थीं, जिनमें वो और रशीद रहते थे। उन इलाकों में तो इतनी सारी औरतें पूरी तरह ढकी रहती थीं। जबकि इस इलाके में औरतें... रशीद ने कौन-सा शब्द इस्तेमाल किया था? 'आधुनिक' थीं। हां, ये आधुनिक अफ़ग़ानी औरतें जिन आधुनिक अफ़ग़ानी मर्दों से ब्याही गई थीं, उनको इस पर कोई आपत्ति नहीं थी कि वे मेकअप करके बिना सिर पर कुछ डाले परायों के बीच चलती थीं। मरियम उनको सड़क पर मनचाहे तरीके से तेज़-तेज चलते हुए देख रही थी। कभी-कभी वे मर्दों के साथ होतीं, कभी अकेली और कभी चमकते हुए जूते और घड़ी और चमड़े की पट्टियां पहने हुए, गुलाबी गालों वाले बच्चों के साथ। ये बच्चे ऊंची हैंडल और सुनहरे तारों वाली साइकिल पकड़े हुए रहते। इसके उलट देह माजंग के बच्चों के गालों पर मच्छरों के डंक के निशान होते और वे छड़ियों से साइकिल के पुराने टायर नचाते फिरते थे।

ये औरतें हैंडबैग झुलाती और अपनी स्कर्ट फड़फड़ाते चलतीं। मरियम ने एक को तो कार की स्टीयरिंग के पीछ सिगरेट पीते हुए तक देखा। उनके नाखून लंबे थे, वे गुलाबी या नारंगी रंग के रंगे हुए थे और होंठ ट्यूलिपों की तरह लाल। वे ऊंची हील में तेज़ी से चल रही थीं मानों वे हमेशा जल्दी में रहती हों। उन्होंने धूप के चश्मे पहन रखे थे और जब वे पास से गुज़रतीं तो मरियम को परफ्यूम की खुशबू आती। मरियम ने कल्पना की कि उन सबके पास यूनिवर्सिटी की डिग्री

होगी, कि वे सभी इमारतों में दफ्तरों में अपनी डेस्क के पीछे काम करती होंगी जहां वे टाइप करती होंगी, सिगरेट पीती होंगी और अहम लोगों से फोन पर बातें करती होंगी। इन औरतों ने मरियम को रहस्य के फंदे डाल दिया। उन्होंने मरियम को अपने अकेलेपन, अपने साधारण रूप-रंग,' चाहतों की कमी और इतनी सारी चीज़ों से अनजानेपन से अवगत कराया।

तभी रशीद ने उसके कंधे पर थपथपाया और उसके हाथ में कुछ पकड़ाया।

'ये लो।'

यह एक काली, कत्थई रंग की रेशमी चादर थी जिसके किनारों पर फुंदने लगे थे और सोने के तार की कसीदाकारी की हुई थी।

हतारों दमकते आफ़ताब

75

'पसंद आया?'

मरियम ने ऊपर देखा। रशीद ने तब कुछ ऐसा किया जो मरियम के दिल को छू गया। उसने पलकें झपकाई और नजर हटा ली।

मरियम ने जलील के बारे में सोचा, किस जोरदार तरीके से खुश होकर वो उसके गहने पकड़ाता था, उसकी छलकती हुई खुशी को देखते हुए एक भौन कृतज्ञता के अलावा कहने को कुछ बचता ही नहीं था। नाना जलील के तोहफ़ों के बारे में हमेशा सही कहती थी। वे अपने गुनाह, से निकलने के लिए आधे मन से दिए गए रस्मी तोहफ़े होते। वो ऐसा बेईमान, भ्रष्ट नाटक था, जिसका मकसद मरियम को तसल्ली देने से अधिक खुद को तसल्ली देना होता। यह चादर एक सच्चा तोहफ़ा था, इसे मरियम ने देख लिया था।

'यह खूबसूरत है,' उसने कहा।

उस रात रशीद फिर से उसके कमरे में आया। लेकिन दरवाजे पर खड़े रह कर सिगरेट पीने के बजाए वह कमरे में दाखिल हुआ और बिस्तर पर जहां बो सोई थी, उसकी बगल में बैठ गया। बिस्तर उसकी तरफ़ दबा और स्प्रिंग बज उठी।

हिचक से भरा हुआ एक पल आया और फिर उसका हाथ मरियम की गर्दन पर था। उसकी मोटी उंगलियां उसकी गर्दन के पीछे उभरी हुई गोल हड्डियों को दबा रही थीं। उसका अंगूठा नीचे फिसलने लगा और उसकी कॉलरबोन के ऊपर गड्ढे से होते हुए वो उसके नीचे के मांस को सहलाया। मरियम कांपने लगी। रशीद के सधे हुए हाथ नीचे की तरफ़ सरके और उसके नाखुन मरियम के ब्लाउज़ के कपड़े में अटक रहे थे।

'मैं नहीं कर सकती,' फटी हुई आवाज़ में वह चिल्लाई। उसने चांद की रोशनी में चमकते रशीद के एक तरफ़ के चेहरे को, उसके मोटे कंधों और चौड़ी छाती को, खुले गले से झांकते स्याह बालों के गुच्छों को देखा।

अब रशीद के हाथ मरियम की दाहिनी छाती पर थे और उसे ब्लाउज़ के ऊपर से ही सख्ती से दबा रहे थे। वह नाक के जरिए रशीद की तेज़-तेज़ सांसों की आवाज को सुन सकती थी।

वह उसकी बगल में कंबल के भीतर सरक आया। वो रशीद के हाथों को अपनी बेल्ट और उसकी सलवार का नाड़ा खोलते हुए महसूस कर सकती

76 खालिद हुसैनी

थी। मरियम ने मुट्टियों में चादर भींच ली। वह लुढ़क कर उसके ऊपर आ गया, कसमसाया और हिला। मरियम सुबक पड़ी मानी रोना शुरू करनेवाली हो।

दर्द अचानक उठा और उसे स्तब्ध कर गया। मरियम की आंखें फट पड़ीं। उसने अपने भिंचे हुए दांतों के जरिए सांस ली और अपने अंगूठे का जोड़ दांतों से काट लिया। उसने अपनी खाली बांह रशीद की पीठ पर फेंकी और अपनी उंगलियां उसकी कमीज पर गड़ा दीं।.

रशीद ने अपना चेहरा उसके तकिए में गड़ा दिया और होंठों को भींचे हुए, कांपती हुई मरियम फटी हुई आंखों से उसके कंधों के ऊपर से छत देखती रही और रशीद की तेज सांसों की गर्माहट को महसूस करती रही। उनके बीच की हवा तंबाकू, प्याज और भुने हुए भेड़ के गोश्त की गंध से भरी हुई थी, जिसे उन्होंने खाया था। जब-तब रशीद के कान मरियम के गालों पर रगड़ जाते और खरोंच से वो जान जाती कि उसने अपने कानों के बाल शेव किए हैं।

जब यह ख़त्म हुआ तो रशीद उस पर से हांफते हुए उठा। उसने अपनी बांह अपनी भौंहों पर रख दी। अंधेरे में मरियम उसकी घड़ी की नीली सुइयों को देख सकती थी। वे इसी तरह बिना एक दूसरे को देखते हुए पीठ के बल कुछ देर तक पड़े रहे।

'इसमें शर्म की कोई बात नहीं है मरियम,' उसने थोड़ा लड़खड़ाते हुए कहा। 'शादीशुदा लोग यही करते हैं। खुद नबी और उनकी बीवियों ने भी यह किया है। इसमें कोई शर्म की बात नहीं है।'

कुछ पलों के बाद रशीद ने कंबल हटाया और मरियम को उसके तकिए पर अपने सिर से बने गड्ढे के साथ छोड़ दिया। उसने मरियम को उसके दर्द के मंद पड़ने का इंतजार करने के लिए छोड़ दिया। उसके पीछे अकेली रह गई मरियम आसमान में जमे हुए सितारों और एक बादल को देखती रही जिसने शादी के बुर्के की तरह चांद का चेहरा ढक लिया था।

बारह

उस साल यानी 1974 में रोज़े पतझड़ में पड़े। अपने जीवन में पहली बार मरियम ने देखा कि कैसे महज एक चांद का दिख जाना पूरे शहर का रंग-ढंग बदल सकता है, कैसे इसकी चाल-ढाल में हेर-फेर ला सकता है।
उसने गौर किया. कि एक उनींदी चुप्पी पूरे काबुल शहर पर छा गई है। ट्रैफिक मंद, कम या नहीं के बराबर था। दुकानें खाली हो गई थीं। रेस्टोरेंटों ने अपनी रोशनी बुझा दी और अपने दरवाजे बंद कर लिए।
मरियम ने देखा कि गलियों में अब धुआं नहीं उठता और न ही खिड़कियों के आले परं भाप छोड़ती चाय की प्यालियां दिखती हैं। और इफ्तार के वक़्त जब सूरज पश्चिम में डूब रहा होता और शीर दरवाज़ा पहाड़ों पर तोपं दगती तो शहर के साथ मरियम भी रोटी और खजूरों से रोजे तोड़ती। वह पंद्रह साल की उम्र में पहली बार सामूहिक रूप से मिल बांट खाने की मिठास का मज़ा ले रही थी।

थोड़े से दिनों को छोड़ कर रशीद रोज़े नहीं रहता था। कुछ दिन जब वो रोज़े रहता तो उखड़े हुए मिजाज़ के साथ घर लौटता। भूख उसे रूखा, चिढ़ा हुआ और बेसब्र बना देती। एक रात मरियम को रात का खाना तैयार करने में कुछ मिनटों की देरी हो गई तो वो मूलियों के साथ रोटी खाने लगाया। मरियम के उसके सामने भात और भेड़ का गोश्त और ओकरा कोरमा रखने के बाद भी उसने उन्हें नहीं छुआ। उसने कुछ नहीं कहा और रोटियां चबाता गया। उसकी कनपटी चल रही थी, और ललाट पर उभरी हुई नसें गुस्से से भरी हुई

78 ख़ालिद हुसैनी

थीं। वह चबाता रहा और सामने देखता रहा और जब मरियम उससे बोली तो उसने बिना मरियम का चेहरा देखे उसकी तरफ़ निगाह की और रोटी का एक और टुकड़ा अपने मुंह में रख लिया।

जब रोजे ख़त्म हुए तो मरियम को राहत मिली।

कोल्बा में रमजान के बाद आने वाली ईद-उल-फितर के तीन दिनों तक चलने वाले जश्न के पहले दिन जलील मरियम और नाना से मिलने आता। सूट और टाई में सजा हुआ जलील ईद के तोहफ़े लाता। एक साल उसने मरियम को ऊनी स्कार्फ दिया था। वे तीनों बैठ कर चाय पीते और फिर जलील जाने की इजाजत लेता।

'चला गया अपने असली परिवार के साथ ईद मनाने,' जब वो धारा को पार करके हाथ हिलाता तो नाना कहती ।

मुल्ला फैजुल्ला भी आते। वे मरियम के लिए पन्नियों में लिपटे चॉकलेट, उबले हुए अंडों से भरी टोकरी और बिस्कुट लाते। जब वे चले जाते तो मरियम अपने तोहफ़ों के साथ बेदमजनूं के एक पेड़ पर चढ़ जाती। एक ऊंची डाली पर बैठ कर वो मुल्ला फैजुल्ला के चॉकलेट खाती और उसकी पन्नियां तब तक गिराती जब तक कि वो पेड़ के तने के आसपास चांदी के फूलों की तरह नहीं खिल जातीं। जब चॉकलेटें ख़त्म हो जातीं तो वो बिस्कुट शुरू करती और एक पेंसिल की मदद से वो मुल्ला के लाए अंडों पर चेहरे बनाती। लेकिन उसको इसमें कम ही मज़ा आता था। मरियम इस तरह की ईद के लिए तरसती थी जिसमें ऐसी मेहमाननवाजी और धूमधाम होती थी, परिवार सबसे अच्छे कपड़ों में सज-संवर कर एक दूसरे से मिलने जाते। वह अंदाज़ा लगाती कि हेरात की हवा खुशियां फूटी पड़ रही हैं और जोश से भरे हुए चमकते चेहरे वाले लोग एक दूसरे पर बधाइयों और दुआओं की बौछार कर रहे हैं। उसके ऊपर एक बेचारगी कफन-सी छा जाती और तभी हटती जब ईद गुज़र जाती।

इस बरस पहली बार मरियम ने अपनी आंखों से वह ईद देखी, जिसकी कल्पना वह बचपन से करती आ रही थी।

रशीद और मरियम गलियों में गए। मरियम कभी भी इतनी जीवंतता के बीच नहीं चली थी। कड़कड़ाती सर्दी से विचलित हुए बिना परिवार अपने रिश्तेदारों से मिलने के लिए शहर में भर गए थे। अपनी गली में

मरियम ने फरीबा और उसके बेटे नूर को देखा जो सूट पहने हुए था। फरीबा ने. एक

हजारों दमकते आफ़ताब 79

सफ़ेद स्कार्फ डाल रखी थी और छोटे कद के एक शर्मीले से दिख रहे चश्मे पहने आदमी की बगल में चल रही थी। उसका बड़ा बेटा अहमद भी वहां था- मरियम को पहले दिन तंदूर के पास फरीबा का बताया हुआ नाम किसी तरह याद रह गया था। उसकी गहरी, विचार में डूबी हुई आंखें थीं और उसका चेहरा अपने छोटे भाई से अधिक विचारमग्न, ज़्यादा गंभीर दिख रहा था। उसका चेहरा परिपक्व होने के शुरुआती दौर के संकेत देता था जबकि उसके छोटे भाई के चेहरे पर बचपना अभी भी मौजूद था। अहमद के गले में अल्लाह लिखा हुआ पेंडेंट झूल रहा था।

फरीब ने भी उसे रशीद की बगल में बुर्का पहने हुए देख लिया था।
उसने हाथ हिला कर कहा, 'ईद मुबारक!'

बुर्के के भीतर से मरियम ने हल्के-से सिर हिलाया।

'तो तुम उस औरत को जानती हो, टीचर की बीवी को?' रशीद ने कहा।

मरियम ने कहा कि वो नहीं जानती।

'बेहतर रहेगा कि तुम उससे दूर रहो। वह औरत बड़ी अफवाहें फैलाती है। और उसका मर्द खुद को बड़ा पढ़ा-लिखा दानिशमंद आदमी समझता है। लेकिन वह एक चूहा है। देखो उसे। क्या वो एक चूहे जैसा नहीं दिख रहा?'

वे शार-ए-नौ पहुंचे जहां बच्चे नई कमीजों और लड़ियों वाली, चमकदार बंडियों में उछल-कूद रहे थे और एक दूसरे के ईद के तोहफ़ों की तुलना कर रहे थे। औरतें मिठाइयों की थालियां फिरा रही थीं। मरियम ने दुकानों की खिड़कियों से लटकते सजावटी लालटेनों को देखा। उसे लाउडस्पीकर पर बजता तेज संगीत भी सुनाई दिया। अनजान लोग पास से गुज़रते हुए उसे 'ईद मुबारक' कह रहे थे।

उस रात वे चमन गए और रशीद की बगल में खड़ी होकर मरियम ने आसमान में चमकती आतिशबाजी देखी, हरे, गुलाबी और पीले रंग की चमकती हुई रोशनियां देखीं। उसे कोल्बा के बाहर मुल्ला फैजुल्ला के साथ बैठ कर दूर हेरात के आसमान में हो रही आतिशबाजी को देखना याद आया।

अचानक बिखर गए रंगों की चमक उसे पढ़ानेवाले उस्ताद के मोतियाबिंद की मारी आंखों में झलकती। लेकिन सबसे ज़्यादा उसे नाना की याद आई। मरियम ने चाहा कि उसकी अम्मी यह देखने के लिए जिंदा रहतीं। इन सबके बीच उसे देखने के लिए जिंदा रही होतीं। यह देखने के लिए कि वैसी संतुष्टि

80 ख़ालिद हुसैनी

और खूबसूरती ऐसी चीजें नहीं थीं जिनको हासिल नहीं किया जा सकता हो। यहां तक कि उन जैसे लोगों के लिए भी।

ईद पर रशीद के दोस्त उनसे मिलने आए। वे सारे मर्द थे। जव दरवाजे खटखटाए जाने लगे तो मरियम जानती थी कि उसे ऊपर अपने कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर लेना है। नीचे जब तक मर्द रशीद के साथ चाय की चुस्कियां लेते रहे, सिगरेटें पीते हुए बातें करते रहे, तब तक मरियम ऊपर ही रही। रशीद ने मरियम को कह रखा था कि जब तक मिलने वाले लौट नहीं जाते तब तक बो ऊपर ही रहे।

मरियम ने इसका बुरा नहीं माना। सच में उसने तो इसके लिए खुशामद ही की थी। रशीद ने इसी में दोनों की पाकीज़गी देखी। मरियम की इज़्ज़त, उसका नामूस ऐसी चीज़ थी जो रशीद की हिफाजत करता था। मरियम को भी रशीद के हिफाज़ती रवैए से खुशी हासिल होती थी। उसे लगता कि रशीद के लिए उसका कोई मोल और अहमियत है।

ईद के तीसरे और आख़िरी दिन, रशीद कुछ दोस्तों से मिलने उनके घर गया। मरियम के पेट पूरी रात ठीक नहीं था, इसलिए उसने अपने लिए थोड़ा पानी उबाला और इलायची डाल कर ग्रीन टी बनाई। बैठक में उसने पिछली रात की ईद की दावत के बची-खुची चीजें को समेटा- उलटे हुए प्याले, दरियों के बीच छितराए हुए अधखाए कद्दू के बीज, रात के खाने की पपड़ी से भरी हुई प्लेटें। मरियम ने इस पर हैरान होते हुए सारे बिखरे हुए सामान को साफ़ किया कि मर्द कितने आलसी हो सकते हैं।

रशीद के कमरे में जाने का उसका इरादा नहीं था। लेकिन सफाई की जरूरत उसे बैठक से सीढ़ियों तक ले गई और फिर ऊपर के गलियारे से होते हुए वो उसके दरवाजे तक पहुंची। वो जानती थी कि इसके बाद वो पहली बार रशीद के कमरे में जाएगी, जहां वो उसके बिस्तर पर एक घुसपैठिए के रूप में बैठी होगी।

उसने भारी, हरे पर्दों को साफ़ किया, पालिश किए हुए जूतों की जोड़ियों को दीवार से एक कतार में लगाया। अलमारी के दरवाजे पर भूरी पेंट की पपड़ियां उखड़ रही थीं और नीचे की लकड़ी दिख रही थी। उसे बिस्तर की बग़ल में ड्रेसर के ऊपर सिगरेट का एक पैकेट दिखा। उसने एक सिगरेट अपने होंठों

हकमों दमकते आफ़ताब 81

में दबाई और दीवार से टंगे एक छोटे-से शीशे में खुद को देखा। उसने शीशे पर हवा फूंकी और कश लेने का नाटक किया। उसने सिरगेट वापस रख दी। वह कभी काबुल की औरतों की तरह सिगरेट पीने के अनंत मजे के बारे में नहीं सोच पाई। यह उसे बुरा और अजीब दिखता था।

खुद को कसूरवार महसूस करते हुए उसने रशीद के ड्रेसर की ऊपरी दराज खोली ।

सबसे पहले उसे बंदूक दिखी। यह काली, छोटी नली वाली थी और इसकी मूंठ लकड़ी की थी। उसे उठाने से पहले उसने याद कर लिया कि यह कैसे रखी हुई थी। उसने उसे अपने हाथों में उलटा-पलटा। यह जितनी दिखती थी उससे भारी थी। उसके हाथों में उसकी पकड़ चिकनी लग रही थी और नली ठंडी थी। यह सोच कर उसे बेचैनी हुई कि रशीद के पास ऐसी एक चीज़ थी,, जिसका अकेला मकसद दूसरे इंसान की जान लेना था। लेकिन यकीनन उसने हिफाज़त के ख़याल से इसे रखा होगा। मरियम की हिफाजत के लिए।

बंदूक के नीचे मुड़े हुए कोनों वाली कई पत्रिका थीं। मरियम ने एक पत्रिका खोली। उसमें से कुछ नीचे गिरा। हैरानी में उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

हरेक पन्ने पर औरतों की तस्वीरें थीं। ये औरतें खूबसूरत थी और उन्होंने कुछ भी नहीं पहना हुआ था, न कमीजें, न पतलून, न मोज़े और न अंडरपैंटें। उन्होंने कुछ भी नहीं पहना हुआ था। वे अस्त-व्यस्त चादर पर लेटी हुई थीं और अधखुली आंखों से पीछे, मरियम की तरफ़ देख

रही थीं। अधिकतर तस्वीरों में उनके पैर फैले हुए थे और मरियम को उनके बीच की काली जगह पूरी-पूरी दिख रही थी। कुछ में औरतें इस तरह औंधे मुंह पड़ी थीं मानों इस ख़याल के लिए खुदा माफ़ करे... सजदे में गिरी हुई हों। वे अपने कंधों के ऊपर से पीछे की तरफ़ एक ऊबी हुई नाफरमानी के साथ देख रही थीं।

मरियम ने जल्दी से पत्रिका वहां रख दी जहां उसने उठाई थी। उसने बेहोशी जैसा महसूस किया। कौन थी ये औरतें? वे ऐसी तस्वीरें खिंचवाने के लिए तैयार कैसे हो गईं? नफ़रत से उसका पेट मरोड़ उठा। तो जिन रातों में वो मरियम के पास नहीं आता था उनमें वो यही करता था? क्या इस ख़ास मामले में मरियम ने रशीद को निराश किया था? और फिर इज्जत और जायदाद के बारे में उसकी बातों और ग्राहक़ औरतों की शिकायतों का क्या मतलब

82 ख़ालिद हुसैनी

है, जो अधिक से अधिक उसे जूतों की फिटिंग के लिए अपने नंगे पांव ही तो दिखाती थीं। उसने कहां था, एक औरत का चेहरा सिर्फ़ उसके शौहर के लिए होता है। यकीनन इन पन्नों में दिख रही औरतों के शौहर होंगे, उनमें से कुछ के तो जरूर ही होंगे। नहीं भी हुए तो कम से कम उनके भाई तो होंगे। अगर ऐसा था तो रशीद उसे, मरियम को पर्दा करने पर ज़ोर क्यों देता था जबकि वह खुद दूसरे मर्दों की बीवियों और बहनों के निजी अंगों को देखने के अलावा कुछ और नहीं सोच पाता था?

शर्मिंदा और चकराई हुई मरियम बिस्तर पर बैठ गई। उसने अपने चेहरे को हथेलियों में छुपा लिया और अपनी आंखें बंद कर लीं। वो तब तक गहरी सांसें लेती रही जब तक वह शांत नहीं हो गई।

खुद से इसके लिए एक सफाई उसके मन में उठी। जो भी हो, वह एक मर्द था जो मरियम के आने के पहले इतने बरसों तक अकेले रह रहा था। उसकी जरूरतें मरियम की जरूरतों से अलग थीं। इतने महीनों के बाद भी मरियम के लिए प्यार करने का मतलब दर्द को बर्दाश्त करना था। दूसरी तरफ़. रशीद की भूख तेज़ थी जो हिंसक हो उठती थी। जिस तरह वह उसे दबाता था, उसकी छातियां दबोचता था, जिस तरह उसके उत्तेजित कूल्हे काम करते थे। वह एक मर्द था। इतने बरस तक औरत के बिना रहा था। क्या

वह उसे उस काम के लिए कसूरवार ठहरा सकती थी, जिसके लिए खुदा ने उसे बनाया था?

मरियम को पता था कि वो इसके बारे में रशीद से कभी बात नहीं कर पाएगी। इसका तो जिक्र भी नहीं किया जा सकता। लेकिन क्या इसे भुलाया जा सकता है? उसने अपनी जिंदगी के दूसरे मर्दों के बारे में सोचा। जलील के बारे में जो तीन बीवियों और नौ बच्चों का पिता है और जिसने बिना शादी किए नानां से संबंध बनाए। इनमें से बदतर क्या था, रशीद की पत्रिका या जलील की करतूत? और उस जैसी एक गंवार, हरामी को दूसरों के बारे में फैसला करने का अधिकार कैसे मिला?

भरियम ने ड्रेसर की निचली दराज खोली।

यहां उसे एक बच्चे की तस्वीर मिली। यह युनूस था। यह एक ब्लैक एंड व्हाइट फोटो था। बच्चा चार का या शायद पांच का था। उसने धारीदार कमीज़ और बो टाई पहन रखी थी। वह एक खूबसूरत लड़का था, जिसकी

हजारों दमकते आफ़ताब 83

नाक लंबी, काले बाल और गहरे रंग की हल्की धंसी हुई आंखें थीं। उसका ध्यान कहीं और था, मानो कैमरे के फ्लैश की चमक के साथ ही उसकी नज़र किसी और चीज पर चली गई थी।

उसके नीचे मरियम को एक और फोटो मिला। यह भी ब्लैक एंड व्हाइट फोटा था और यह ज़्यादा दानेदार था। यह एक बैठी हुई औरत का फोटो था जिसके पीछे काले बालों वाला दुबला, नौजवान रशीद खड़ा था। औरत खूबसूरत थी। शायद यह पत्रिकाओं की औरतों जितनी खूबसूरत तो नहीं थी, लेकिन खूबसूरत थी। मरियम से तो यकीनन ही अधिक खूबसूरत थी। उसकी एक नाजुक ठोढ़ी और लंबे, काले बाल थे जिनको बीच से बांट कर संवारा गया था। उसके गालों की हड्डी ऊंची थी और भली सी ललाट थी। मरियम ने अपने चेहरे, अपने पतले होंठों और लंबी ठोढ़ी की कल्पना की और जलन के एक एहसास से भर गई।

वह इस फोटो को देर तक देखती रही। जिस तरह औरत पर रशीद तना हुआ था, वह मरियम को कुछ-कुछ परेशान कर रहा था। रशीद के हाथ उसके कंधों पर थे। रशीद की मज़ेदार, कसे हुए होंठों वाली मुस्कान और उसका बिना मुस्कान वाला उदास चेहरा। जिस तरह से उस औरत की देह थोड़ा आगे की ओर झुकी हुई थी, उससे लगता था मानों वह रशीद के हाथों से निकलने की कोशिश कर रही हो।

मरियम ने हर चीज़ जहां से उठाई थीं वहां रख थी।

बाद में, जब वो कपड़े धो रही थी तो उसे इस पर अफसोस हुआ कि वह रशीद के कमरे में क्यों गई। किसलिए? उसे रशीद के बारे में ढंग की क्या बात पता लगी? कि उसके पास बंदूक थी, कि उसमें वही जरूरतें थीं, जो मर्दों में होती हैं? और उसे रशीद और उसकी बीवी का फोटो उतनी देर नहीं देखना चाहिए था जितनी देर उसने देखा। उसकी आंखें एक पल के लिए कैमरे में यों ही कैद हो गई उनकी देहों की स्थिति में से मतलब निकाल रही थीं।

कपड़ों से भरी हिलती हुई रस्सी के सामने खड़ी मरियम को अब रशीद के लिए दुख महसूस हो रहा था। उसको भी एक मुश्किलों से भरा जीवन जीना पड़ा था, जिसमें उसे नुक्सान उठाने पड़े थे और किस्मत के उलट-फेर सहने पड़े थे। उसका मन युनूस पर लौट जा रहा था जिसने कभी इसी आंगन में

84 ख़ालिद हुसैनी

बर्फ़ का इंसान बनाया था, जिसके पैर ठीक इन्हीं सीढ़ियों पर धमक पैदा करते थे। झील ने उसे रशीद से छीन कर निगल लिया था जैसे कुरान के मुताविक व्हेल इसी लड़के के नाम वाले एक नबी को निगल गई थी। रशीद को झील के किनारे खौफजदा और लाचार भागते हुए और उससे अपने बेटे को वापस कर देने की फरियाद करते हुए कल्पना करके मरियम को दर्द हुआ, उसे काफ़ी दर्द हुआ। पहली बार उसे अपने शौहर से खानदानी जुड़ाव महसूस हुआ। उसने खुद से कहा कि उनकी जोड़ी अच्छी जमेगी।

तेरह

घर से डॉक्टर के यहां जाने के बस के सफ़र में मरियम के साथ सबसे अजीब घटना घटी। जहां भी उसकी नज़र जाती उसे चमकीले रंग दिखाई देते : फीकी, त्याह पक्की इमारतों पर, टिन के छप्परों वाले घरों पर, खुले दरवाज़ों वाली दुकानों पर, गटर में बह रहे कीचड़ भरे पानी में। ऐसा था मानों उसकी आंखों में इंद्रधनुष घुल गया हो।

रशीद अपने दस्तानों से ढंकी उंगलियों को थपथपाते हुए कोई गीत गुनगुना रहा था। हर बार बस जब किसी गड्ढे में हिचकोले खाती तो रशीद का हाथ बचाव में मरियम के पेट पर चला जाता।

'जल्मे कैसा रहेगा?' उसने कहा। 'यह एक अच्छा पश्तो नाम है।'

'और अगर लड़की हुई तो?' मरियम ने कहा।

'मुझे लगता है यह लड़का है। हां। ये लड़का है।'

बस में एक भुनभुनाहट फैल गई। कुछ सवारियां किसी चीज़ की तरफ़ इशारा कर रही थीं और दूसरी सवारियां सीटों से झुक कर देखने की कोशिश कर रही थीं।

'देखो,' रशीद ने शीशे पर उंगलियां खटखटाते हुए कहा। वो मुस्कुरा रहा था। 'वहां। देखा?'

मरियम ने देखा कि सड़क पर लोग झुक कर खड़े हैं। ट्रैफिक की बत्ती के पास कारों की खिड़कियों से चेहरे निकल कर ऊपर से गिरती हुई नर्मी को

86 ख़ालिद हुसैनी

देख रहे थे। यह सब मौसम की पहली बर्फबारी को लेकर हो रहा था। मरियम को हैरानी हुई कि क्या यह इतनी सम्मोहक चीज है। एक नए मौसम की अस्थायी खूबसूरती को, इसकी प्यारी सी शुरुआत को इसके ख़त्म हो जाने और भ्रष्ट हो जाने से पहले देख लेने के लिए यह सारा तामझाम?

'अगर ये लड़की हुई तो,' रशीद ने कहा, 'और ये लड़की नहीं है, लेकिन अगर यह एक लड़की हुई तो तुम जो चाहे वो नाम चुन लेना।'

मरियम की अगली सुबह आरी से काटने और पीटने की आवाजों से नींद खुली। एक शाल लपेट कर वो बर्फ से ढंके हुए आंगन में निकली। पिछली रात की भारी बर्फबारी रुक गई थी। अब केवल हल्के, नाचते हुए नन्हें टुकड़ों की फुहार उसके गालों को छू रही थी। हवा ठहरी हुई थी और उसमें जले हुए चारकोल की गंध भरी थी। यह काबुल की एक डरावनी, खामोशी से भरी हुई सुबह थी, जिसमें यहां-वहां से सफ़ेद छल्लों के रूप में धुआं उठ रहा था।

उसने रशीद को औजार रखने वाले छप्पर में लकड़ी के एक पटरे पर कीलें ठोंकते हुए पाया। जब उसने मरियम को देखा तो उसने अपने मुंह में दबी कील को हटा लिया।

'मैं तुमको एक सरप्राइज देने जा रहा था। उसको पालने की जरूरत होगी। तुमको इसे तब तक नहीं देखना चाहिए था, जब तक यह बन नहीं जाता ।'

मरियम ने चाहा था कि वह ऐसा नहीं करे। उसने अपनी उम्मीदें इस पर टिका रखी थीं कि उसे बेटा होने जा रहा है। वह मरियम के गर्भवती होने से उतना ही खुश था, जितनी मरियम थी, लेकिन रशीद की आकांक्षा मरियम के लिए बोझ बन गई थी। कल रशीद बाहर गया और बच्चे के लिए एक सर्दियों के लिए चमड़े का कोट लेकर आया, जिसके भीतर भेड़ की नर्म खाल का अस्तर लगा था। उसकी बांहों पर रेशम के बारीक लाल और पीले धागों । से कसीदाकारी की हुई थी।

रशीद ने एक लंबा, पतला तख्ता उठाया। उसे दो टुकड़ों में काटते हुए । वो बोला कि सीढ़ियों से उसे फिक्र हो रही है। 'बच्चा जब चढ़ने लायक हो जाएगा तो उनका कुछ करना होगा।' उसने बताया कि चूल्हे को लेकर भी उसे फिक्र हो रही थी। छुरियों और कांटों को उसकी पहुंच से दूर संभाल कर रखना होगा। 'आप उतने सांवधान नहीं रह सकते। लड़के तो बेचैन जीव होते हैं।'

हजारों दमकते आफ़ताब 87

मरियम ने सर्दी में शाल को अपने ऊपर खींच लिया।

अगली सुबह रशीद ने कहा कि वह जश्न मनाने के लिए अपने दोस्तों को दावत देना चाहता है। सारी सुबह मरियम मसूर की दाल और गीले चावल साफ़ करती रही। उसने बोरानी के लिए बैंगन के टुकड़े किए, हरी प्याज़ (लीक) पकाई और औशाक के लिए गाय का गोश्त तैयार किया। उसने फर्श बुहारी, पर्दे झटक कर साफ़ किए और फिर से शुरू हो गई बर्फ़ के बावजूद खिड़कियों को हवा आने के लिए खोल दिया। उसने बैठक में चटाइयों और दरियों को सजा कर लगाया, मिठाई और भुने हुए बादाम के कटोरे टेबल पर सजाए ।

शाम ढलने से पहले जब पहला मेहमान आया तो वह अभी अपने कमरे में ही थी। नीचे के कमरे से जब हो-हल्ला, ठहाकों और हंसी-मजाक की आवाजें आनी शुरू हुईं तब भी वह बिस्तर में पड़ी थी। वह अपने हाथों को अपने पेट की तरफ़ जाने से नहीं रोक पा रही थी। वह सोच रही थी कि वहां क्या हो रहा होगा और फिर खुशी ऐसे दाखिल हुई जैसे चौड़े खुले हुए दरवाज़े से हवा का झोंका अंदर आता है। उसकी आंखें भर आईं।

मरियम ने रशीद के साथ पश्चिम में ईरान से लगी हुई सरहद के पास हेरात से साढ़े छह सौ किलोमीटर लंबे बस के सफ़र के बारे में सोचा। वे छोटे और बड़े शहरों से गुज़रे, छोटे गांवों के झुंडों से गुज़रे जो एक के बाद एक उभर कर सामने आ रहे थे। वे पहाड़ों से, जले हुए रेतीले इलाकों से, एक के बाद दूसरे सूबे से होकर गुज़रे। और अब वो यहां है। उन चट्टानों और सूखे पहाड़ों के ऊपर अब उसका अपना एक घर है। अपना एक पति है। और अब वो एक आखिरी, प्यारी सी दुनिया में दाखिल होने जा रही है: वो मां बनने जा रही है। इस बच्चे के बारे में, अपने बच्चे के बारे में, उनके बच्चे के बारे में सोचना कितना सुहावना था। यह जानना कितना सुखद था कि इस बच्चे को लेकर उसका प्यार ने एक इंसान के रूप में उसने जो कुछ भी महसूस किया था, उन सबको बौना कर दिया था। कि अब कंकड़-पत्थरों से खेले जाने वाले खेलों की जरूरत नहीं रही थी।

नीचे कोई हारमोनियम के सुर मिला रहा था। इसके बाद हथौड़ी से तबले को ठोकने की आवाज आई। किसी ने गला साफ़ किया। और फिर सीटी

88 ख़ालिद हुसैनी

और तालियां और तीखी आवाज़ और फिर गाना।

मरियम ने अपने पेट की नर्मी को छुआ। नाखुन से बड़ा नहीं, डॉक्टर ने कहा था।

मैं मां बनने जा रही हूं, उसने सोचा।

'मैं मां बनने जा रही हूं,' उसने कहा। इसके बाद वो खुद ही हंस पड़ी और बार-बार इन शब्दों को मज़े ले लेकर कहने लगी।

जब मरियम बच्चे के बारे में सोचती तो उसका दिल हिलकोरें लेने लगता। यह तब तक हिलकोरें लेता जब तक उसमें उसकी जिंदगी का सारा दुख, अकेलापन और अनमनापन बह नहीं जाता। इसीलिए खुदा उसें यहां देश के दूसरे सिरे पर लाया है। अब वो यह जानती थी। उसने मुल्ला फैजुल्ला की पढ़ाई हुई कुरान की एक आयत याद आई अल्लाह ही पूरब है और पश्चिम है, इसलिए तुम जिधर भी रुख करो अल्लाह की हिक़मत है। वह जानेमाज बिछा कर नमाज पढ़ती। नमाज पढ़ कर वह हाथ बांध कर खुदा से दुआ मांगती कि वह उसकी जिंदगी की सारी खुशकिस्मती को बह न जाने दे।

हम्माम जाने का ख़याल रशीद का था। मरियम कभी भी हम्माम नहीं गई थी लेकिन उसने कहा कि उसमें क़दम रख कर ठंडी हवा को पहली बार सांस में भरने और चमड़ी से उठती गर्मी को महसूस करने से बेहतर कुछ नहीं है।

जनाना हम्माम में मरियम के चारों तरफ़ भाप में आकृतियां चल-फिर रही थीं। कभी यहां किसी कूल्हे की झलक मिलती तो कभी वहां किसी के कंधों के उठान की। नौजवान लड़कियों की किलकारियां, बूढ़ियों की घुरघुराहटें और पीठों को रगड़ते तथा बालों में साबुन लगाते हुए दीवारों के बीच पानी के गिरने की आवाजें आ रही थीं। मरियम ने खुद ही एक दूर का कोना चुना था जहां वो अपनी एड़ियां पत्थर से रगड़ कर साफ़ कर रही थी। भाप वहां से गुजर रही आकृतियों को उससे अलग कर रही थी।

तभी खून दिखा और वो चीख पड़ी।

परों की आवाजें आई। लोग गीले पत्थरों पर थपथपा रहे थे। भाप के पार से चेहरे उसकी तरफ़ झांक रहे थे। चीर्भे चट्-चट् कर रही थीं।

उस रात बाद में बिस्तर पर फरीबा ने अपने पति को बताया कि जब

हजारों दमकते आफ़ताब

89

उसने चीख सुनी और उधर दौड़ी तो उसने रशीद की बीवी को कोने में कांपते हुए देखा। वो अपने घुटनों को गले से लगाए हुए थी और उसके पांवों के पास खून का एक तालाब बना हुआ था।

'तुम उस बेचारी लड़की के दांतों की किटकिटाहट सुन सकते थे हाकिम । वो इतने ज़ोर से कांप रही थी।'

उसने बताया कि जब मरियम ने उसको देखा तो उससे तेज़, मिन्नत' करती हुई आवाज़ में पूछा, यह सामान्य है, है न? है कि नहीं? क्या यह सामान्य नहीं है?

रशीद के साथ बस एक और सफ़र। फिर से बर्फबारी। इस बार भारी बर्फ़ गिर रही थी। यह फुटपाथों, छतों पर ढेर की ढेर जमा हो रही थी, छितराए हुए पेड़ों की छालों पर पैबंदों की तरह दिख रही थी। मरियम

ने कारोबारियों को अपनी दुकानों के बाहर से बर्फ़ को हटाते हुए देखा। बच्चों का एक समूह एक काले कुत्ते का पीछा कर रहा था। खेल करते हुए वे बस के पीछे भी दौड़े। मरियम ने रशीद की तरफ़ देखा। उसकी आंखें बंद थीं। वह गुनगुना नहीं रहा था। मरियम ने अपना सिर झुका लिया और अपनी आंखें भी बंद कर लीं। वह अपने ठंडे मोज़ों और नम ऊनी स्वेटर को निकालना चाहती थी जो उसकी त्वचा में चुभ रही थी। वो इस बस से भी दूर जाना चाहती थी।

घर पर जब वो पलंग पर लेटी तो रशीद उसे एक कंबल से ढक दिया लेकिन उसके हाव-भाव में एक रूखापन और लापरवाही थी।

'यह कैसा जवाब है?' उसने फिर कहा। 'ऐसी बात की तो एक मुल्ला से उम्मीद की जाती है। जब आप डॉक्टर को फीस देते हैं तो आप उससे 'खुदा की मर्जी' से बेहतर एक जवाब की उम्मीद करते हैं।'

मरियम ने कंबल के नीचे अपने घुटने मोड़े और बोली कि रशीद को आराम करना चाहिए।

'खुदा की मर्जी,' भीतर ही भीतर वह सुलग रहा था। पूरे दिन वह अपने कमरे में बैठा सिगरेट पीता रहा।

मरियम पलंग पर पड़ी, अपने हाथों को घुटने में दबाए खिड़की के बाहर नीचे गिरती, गोल-गोल घूमती बर्फ़ को देखती रही। उसे याद आया कि नाना ने एक बार बताया था कि बर्फ़ का हरेक टुकड़ा दुनिया में कहीं किसी दुखी

90 ख़ालिद हुसैनी

औरत की आह होता है। कि सारे आहें आसमान में उठती हैं, बादलों के रूप में जमा होती हैं और फिर छोटे टुकड़ों में बंट कर लोगों पर चुपचाप गिरती हैं।

वे याद दिलाती हैं कि हम जैसी औरतें कितना दुख उठाती हैं, उन्होंने कहा था। कैसे हम अपने ऊपर आ पड़े सारे दुख को चुपचाप सहती रहती हैं।

चौदह

मलाल मरियम को देर तक हैरान करता रहा। उसके टूलशेड में अधूरे बने पालने या रशीद की अलमारी में रखे चमड़े के कोट के बारे में सोचने भर की देर थी कि यह शुरू हो जाता। बच्चे ने जन्म लिया और वह फिर वो उसकी आवाज सुन सकती थी, उसकी भूखी घुरघुराहटें सुन सकती थी, उसकी गलगलाहट और उत्तकी यों ही निकाली गई आवाजें सुन सकती थी। वह महसूस करती कि बच्चा उसके सीने में सांसें ले रहा है। मलाल ने उसे घेर लिया और उस पर छाई रही। मरियम इस पर सुन्न सी पड़ गई थी कि वो जीव उससे ऐसी लाचारगी से खो भी गया था जिसे उसने देखा तक नहीं था।

फिर ऐसे दिन आए जब नीरसता काफ़ी हद तक मरियम के लिए निर्मम नहीं लगती थी। ऐसे दिन जब जीवन जीने के पुराने तौर-तरीके को वापस ले आने का महज ख़याल ही इतना थकाऊ नहीं लगता था, वे दिन जब उसे बिस्तर से उठने, नमाज पढ़ने, धोने और रशीद के लिए खाना बनाने के काम के लिए उसे इतना जोर नहीं लगाना पड़ता था।

मरियम बाहर जाने को तरस गई। एकाएक उसे मुहल्ले की औरतों और उनके बच्चों से जलन होने लगी। कुछ औरतों के तो सात-आठ बच्चे थे और वे नहीं समझती थीं कि वे कितनी खुशकिस्मत थीं, कितनी नसीब वाली थीं कि उनके बच्चे उनके कोख में फले-फूले, उनके बाहों के झूलों में कसमसाए और उनकी छातियों से उन्होंने दूध पीए। ऐसे बच्चे जो साबुन वाले पानी और

92 ख़ालिद हुसैनी

अजनबियों के शरीर की गंदगी के साथ हम्माम के नाले में बहा नहीं दिए गए। मरियम उनको पसंद नहीं करती जब वो सुनती कि वे अपने शरारती बेटों और आलसी बेटियों की शिकायत कर रही हैं।

उसके भीतर एक आवाज़ उसे तसल्ली दिलाने की कोशिश करती। उसका इरादा तो नेक होता लेकिन उसकी तसल्ली की दिशा भटकी हुई होती।

तुमको और बच्चे होंगे, इंशाअल्लाह। तुम अभी जवान हो। यकीनन तुमको कई मौके मिलेंगे।

लेकिन मरियम के मलाल का एक मकसद था, उसका एक मरकज़ था। वो अपने बच्चे के लिए दुखी थी, अपने उस बच्चे के लिए जिसने उसे कुछ देर के लिए खुशियां दी थीं।

कुछ दिनों तक वो मानती रही कि वह बच्चा एक अनचाही सौगात था। कि उसने नाना के साथ जो किया था उसे इसकी सज़ा मिली थी। क्या यह सही नहीं था कि उसने खुद अपनी अम्मी के गले में फंदा डाला था? धोखेबाज़ बेटियों को मां बनने का हक़ नहीं। और यह एक जायज़ सजा थी। उसे ऐसे सपनों के दौरे पड़ने लगे जिनमें नाना का जिन रात में उसके कमरे में दाखिल होता, अपने नाखुनों से भरे पंजे से मरियम की कोख को खोद कर उसका बच्चा चुरा लेता। इन सपनों में नाना खुशी से और पुष्टि में खिलखिलाती।

दूसरे दिनों में मरियम गुस्से से भर गई। समय से पहले जश्न मना कर रशीद ने ही गलती की। उसके इस बेवकूफ़ी से भरे भरोसे के लिए वह गुस्सा होती कि वो सोचता कि मरियम के पेट में बेटा है। जिस तरह उसने बेटे का नाम रखा था, इस पर गुस्सा होती। उसने खुदा की मंशा को पहले से ही अपने मनमाफिक मान लिया था। यह उसका कसूर था कि उसने मरियम को हम्माम जाने के लिए कहा। वहां कुछ ऐसा था, वहां का नाला, गंदा पानी, साबुन, कुछ ऐसा था जिसकी वजह से यह हादसा हुआ। नहीं। रशीद नहीं। कसूर मरियम का था। वह इतनी जल्दबाज़ थी कि वह गलत तरीके से सोती थी, बहुत मसालेदार खाना खाती थी, खूब सारे फल नहीं खाती थी और खूब सारी चाय पीती थी।

यह खुदा की ही ग़लती थी कि उसने मरियम को ऐसा बनाया था। यह खुदा की ग़लती थी कि उसने दूसरी औरतों को जो दिया था उससे मरियम को महरूम रखा था। कि वो जानता था कि जो चीज उसे बहुत बड़ी खुशी
हजारों दमकते आफ़ताब 93

देने वाली थी, उसे ललचाने वाले अंदाज में उसके सामने झुलाया और फिर वापस खींच लिया।

लेकिन कसूरवारों की तलाश से कुछ भी अच्छा नहीं हो सका। तोहमतें उसके दिमाग में उमड़-घुमड़ रही थीं। ऐसी बातें सोचना कुक्र है। अल्लाह डाह नहीं करता। वह कोई मामूली खुदा नहीं है। मुल्ला फैजुल्ला के शब्द उसके कानों में फुसफाए: शुक्र है उस अल्लाह का जिसके हाथों में कायनात है और सारी चीज़ों पर जिसकी हुक्मरानी हैं, जिसने जिंदगी और मौत बनाई है ताकि वह तुम्हें आजमा सके।

कसूर के अहसास से लुटी-पिटी मरियम ने घुटने टेकते हुए नमाज़ पढ़ी और अपने विचारों के लिए माफ़ी मांगी।

इस बीच हम्माम वाली घटना के बाद रशीद के रवैए में भी बदलाव आया। जब वो घर आता तो वह मुश्किल से ही कोई बात करता। वह खाता, सिगरेट पीता और बिस्तर पर चला जाता। कभी कभी वह आधी रात को थोड़ी देर के लिए प्यार करने मरियम के पास आता। इन दिनों वह ज़्यादा तुनकमिजाज हो गया था और उसके खाना बनाने की गलतियों पर खीझता, आंगन में अस्त-व्यस्तता पर शिकायत करता और घर में सफाई की थोड़ी सी भी कमी की तरफ़ ध्यान दिलाता। कभी-कभार वह जुमे को मरियम को शहर में ले जाता जैसा कि वह पहले करता रहा था, लेकिन अब वह फुटपाथों पर चुपचाप चलते और रशीद मरियम से कुछ क़दम आगे चलता। तब वह मरियम से कुछ नहीं बोलता, उसकी तरफ़ से लापरवाह रहता, जिसको रशीद के साथ क़दम मिला कर चलने में लगभग दौड़ना पड़ता था। वह इस घूमने फिरने में कभी हंसता नहीं था। वह उसके लिए मिठाइयां या तोहफ़े नहीं ख़रीदता और पहले की तरह जगहों के नाम बताने के लिए नहीं रुकता था। ऐसा लगता था कि मरियम के सवाल उसे खिझा देते थे।

एक रात वे बैठक में रेडियो पर ख़बरें सुन रहे थे। सर्दियां जा रही थीं। बर्फ़ के थपेड़ों वाली तेज हवा जो आंखों में पानी ला देती थी अब शांत हो गई थी। बर्फ़ के नर्म रुपहले टुकड़े जंगली पेड़ों की टहनियों से पिघल रहे थे और कुछ ही हफ़्तों में गोल-मटोल फीकी हरी कोंपलें उनकी जगह लेने बाली थीं। रशीद हमआहंग गाने के तबले की ताल पर खोया हुआ अपने पैर

94 ख़ालिद हुसैनी

हिला रहा था और उसकी आंखें सिगरेट के धुएं पर सिकुड़ रही थीं।

'तुम मुझ पर गुस्सा हो?' मरियम ने पूछा।

रशीद ने कुछ नहीं कहा। गीत ख़त्म हुआ और ख़बरें आने लगीं। एक औरत की आवाज बता रही थी कि सदर दाऊद खान ने एक और सोवियत सलाहकार को मॉस्को लौटा दिया है और क्रेमलिन के साथ नाराज़गी बढ़ रही है।

'मुझे फिक्र है कि तुम मुझ पर गुस्सा हो।'

रशीद ने गहरी सांस ली।

'क्या तुम गुस्सा हो?'

रशीद की आंखें मुड़ीं। 'मैं गुस्सा क्यों होऊंगा?'

'मुझे नहीं पता लेकिन जब से बच्चा ।'

'क्या तुम मुझे ऐसा आदमी समझती हो, तुम्हारे लिए इतना कुछ करने के बावजूद?'

'नहीं। बिल्कुल नहीं।'

'तो मुझे तंग करना बंद करो।'

'मुझे दुख है। रशीद। मुझे इसके लिए दुख है।'

रशीद ने अपनी सिगरेट तोड़ दी और दूसरी जलाई। उसने रेडियो की आवाज़ तेज़ कर दी।

'हालांकि मैं सोचती रही हूं,' मरियम ने अपनी आवाज़ ऊंची करते हुए कहा ताकि गीत में उसकी आवाज सुनी जा सकें।

रशीद ने फिर से गहरी सांस ली। इस बार वह ज़्यादा चिढ़ा हुआ लग रहा था। उसने रेडियो की आवाज कम की। इसके बाद उसने थके हुए अंदाज में अपनी ललाट रगड़ी। 'अब क्या है?'

'मैं सोचती रही हूं कि हमें मुनासिब तरीके से दफनाना चाहिए था। मेरा मतलब है कि बच्चे को। बस अपने लिए कुछ नमाजें और इससे ज़्यादा कुष्ठ नहीं।'

मरियम ने कुछ देर इस पर सोचा। वह बच्चे को भूलना नहीं चाहती थी। यह सही नहीं लगता था कि उसके खो जाने को हमेशा-हमेशा के लिए एक निशानी न दी जाए।

'किस लिए? यह तो बेवकूफ़ी है।'

हजारों दमकते आफ़ताब 95

'इससे मुझको लगता है कि मुझे अच्छा लगेगा।'

'तो तुम करो,' उसने तीखे लहजे में कहा। 'मैं पहले ही एक बेटा दफना चुका हूं। मैं दूसरे को नहीं दफनाऊंगा। अब तुमको अगर एतराज़ न हो तो मैं रेडियो सुनने की कोशिश कर रहा हूं।'

उसने रेडियो की आवाज़ फिर से ऊंची कर दी और पीठ के बल टिक कर आंखें बंद कर लीं।

उस हफ़्ते धूप से भरी हुई एक सुबह मरियम ने आंगन में एक जगह चुनी और एक गड्डा खोदा।

'अल्लाह के नाम पर और अल्लाह के साथ, और अल्लाह के रसूल के नाम पर जिन पर अल्लाह का सारा रहम और शांति हो,' फावड़ा जब ज़मीन पर पड़ा तो मरियम होंठों ही होंठों में बुदबुदाई। उसने रशीद द्वारा बच्चे के लिए लाए गए कोट को गड्ढे में रखा और फावड़े से उस पर मिट्टी डाल दी।

'तुम्हीं रात को दिन में बदलते हो और दिन को रात में। और तुम्हीं मौत से जिंदगी को लाते हो और जिंदगी को मौत से, और बिना सामथ्र्य वालों पर खुश हो जाने पर तुम्हीं उनको सहारा देते हो।'

उसने मिट्टी को फावड़े की दूसरी तरफ़ से थपथपाया। उस छोटे से टीले के पास वह झुकी और उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।

अल्लाह मुझे सहारा दो सहारा दो मुझे।

पंद्रह

अप्रैल, 1978

मरियम जिस साल उन्नीस की हुई, उसी साल यानी 1978 की 17 अप्रैल को मीर अकबर खैबर नाम के एक आदमी का कत्ल हुआ। दो दिन बाद काबुल में एक बहुत बड़ा प्रदर्शन हुआ। मुहल्ले में हरेक आदमी सड़क पर इसी के बारे में बातें कर रहा था। खिड़की से मरियम ने पड़ोसियों की भीड़ को जोर-शोर से बातें करते हुए और रेडियो को कान पर लगाए हुए देखा। उसने फरीबा को अपने घर की दीवार से लग कर खड़ी एक औरत के साथ बातें हुए देखा जो देह-माजंग में नई-नई थी। गर्भवती फरीबा मुस्कुरा रही थी और उसकी हथेलियां उसके उभरे हुए पेट पर थीं। दूसरी औरत, जिसका नाम मरियम नहीं सुन पाई, फरीबा से ज़्यादा उम्र की लग रही थी। उसके बाल अजीब से जामुनी रंगत लिए हुए थे। उसने एक छोटे-से बच्चे का हाथ पकड़ रखा था। मरियम जानती थी कि उस बच्चे का नाम तारिक़ है क्योंकि उसने सड़क पर उस औरत को यही नाम लेकर बच्चे को पुकारते सुना था।

मरियम और रशीद पड़ोसियों से नहीं मिलते थे। उन्होंने रेडियो पर सुना कि दस हज़ार लोग सड़क पर उत्तर आए और काबुल के सरकारी हिस्से में जुलूस निकाला। रशीद ने बताया कि मीर अकबर खैबर एक मशहूर कम्युनिस्ट था और उसके हिमायती उसके कत्ल के लिए राष्ट्रपति दाऊद खान की सरकार को कसूरवार ठहरा रहे थे। उसने यह बात बताते हुए मरियम की तरफ़ नहीं देखा। इन दिनों वह मरियम की तरफ़ देखते हुए बातें नहीं करता था और
हजारों दमकते आफ़ताब 97

मरियम को कभी पक्के तौर से नहीं लगता कि बात उसी से की जा रही है।

'कम्युनिस्ट क्या है?' उसने पूछा।

रशीद ने नाक साफ़ की और दोनों भौंहें उठाईं। 'तुम नहीं जानतीं कि कम्युनिस्ट क्या होता है? ऐसी सीधी-सी बात। हर कोई जानता है। यह तो एक आम जानकारी है। तुम नहीं... धत। मुझे नहीं पता कि मुझे हैरानी क्यों हो रही है।' उसने टेबल पर अपनी एड़ियों को एक दूसरे के ऊपर रखा, 'और ये वे लोग होते हैं जो कार्ल मार्क्सिस्ट को मानते हैं।

'कार्ल मार्क्सिस्ट कौन है?' रशीद ने गहरी सांस ली।

रेडियो पर एक औरत बता रही थी कि अफ़ग़ानी कम्युनिस्ट पार्टी पीडीपीए की खल्क शाखा का नेता तारकी सड़कों पर प्रदर्शन करने वालों को भड़काऊ भाषण दे रहा था।

'मेरा मतलब था कि वे क्या चाहते हैं?' मरियम ने पूछा। 'ये कम्युनिस्ट किस बात में यकीन करते हैं?'

रशीद खुशी से हंसा और अपना सिर हिलाने लगा। लेकिन मरियम को लगा कि रशीद के हाथ बांधने और आंखें मोड़ने के तरीके से ज़ाहिर है कि उसे पक्के तौर पर मालूम नहीं है। 'तुम कुछ नहीं जानतीं, है न? तुम बच्चों की तरह हो। तुम्हारा दिमाग तो खाली है। इसमें कोई जानकारी नहीं है।'

'मैंने पूछा क्योंकि...'

'चुप ।'

मरियम चुप हो गई।

रशीद के इस रवैए को बर्दाश्त करना आसान नहीं था, न ही उसकी डॉट, उसके मज़ाक, उसका अपमान किया जाना, उसके पीछे पालतू बिल्ली की तरह चलना सहने लायक था। लेकिन शादी के चार बरसों के बाद मरियम ने साफ़-साफ़ देख लिया था एक डरी हुई औरत कितना कुछ बर्दाश्त कर सकती है। वह लगातार उसके बदलते मिजाज़, उसके अस्थिर स्वभाव और ऐसी दुनियावी वातों में भी जबरन खुद को आगे रखने की रशीद की आदत कं डर में जीती थी। ऐसी बातें टकराव की शक्ल अख्तियार कर लेतीं और

98 ख़ालिद हुसैनी

अक्सर मुक्कों, थप्पड़ों, लातों और कभी-कभी बेईमान माफियों के रूप में सामने आतीं। कई बार तो ये बेईमान माफियां भी नहीं होतीं।

हम्माम वाले उस दिन के बाद के चार वरसों में और छह बार उम्मीदों का सिलसिला शुरू हुआ था। लेकिन हर वार यह चकनाचूर हो गया था।

हरेक नुक़सान, हरेक तबाही, डॉक्टर तक जाने का हर सफ़र मरियम के लिए पिछली बार के मुकावले ज़्यादा तकलीफदेह होता। हर निराशा के बाद रशीद और ज़्यादा दूर और नाखुश होता गया। अब मरियम का कोई काम उसे खुश नहीं कर पाता। वह घर साफ़ करती, यह सुनिश्चित करती कि उसको साफ़ धुली हुई कमीजें मिलें, उसके पसंदीदा खाने वनाती। एक बार तो वो मेकअप का सामान भी लेकर आई और सजी-संवरी, लेकिन इससे तो तवाही ही आ गई। घर आने के बाद जब रशीद ने उसे एक निगाह देखा और बुरे तरीके से चौंक गया तो मरियम भागी हुई वाथरूम गई और उसने सब कुछ धो डाला। शर्म के मारे निकल आए आंसू सावुन वाले पानी, रूज और काजल में घुल गए।

अब मरियम शाम को उसके घर आने की आहट से डर जाती। चाभी का कड़कड़ाना, दरवाज़े के जोड़ों का वजना ऐसी आवाजें हो गई थीं जिनसे उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता। अपने बिस्तर से वह रशीद के जूतों की क्लिक-क्लैक और फिर उसे पांवों से जूते निकालने की घुटी हुई आवाज़ सुनती। अपने कानों से वह उसकी गतिविधियों का जायजा लेती; फर्श पर कुर्सी घसीटने की आवाज़, रशीद के बैठने पर वेंत की कुर्सी का कराहना, प्लेट पर चम्मच का वजना, अखवार के पन्नों की फड़फड़ाहट, पानी का तेज़ आवाज़ के साथ गिरना। और धड़कते दिल के साथ मन में वह सोचती कि आज रात उस पर चिल्लाने के लिए रशीद क्या

बहाना चुनेगा? हमेशा कुछ न कुछ होता, कोई छोटी-सी बात उसे गुस्सा दिला देती क्योंकि भले ही मरियम उसे खुश करने के लिए कुछ करे, भले ही वो रशीद की इच्छाओं और मांगों के आगे खुद की पूरी तरह सौंप दे, लेकिन हर चीज़ बेकार थी। इसलिए कि वह उसको बेटा नहीं लीटा सकती थी। इस बुनियादी जरूरत के लिहाज़ से मरियम ने रशीद को निराश किया था, सात बार निराश किया था उसने, और अब वो रशीद के लिए बोझ भर थी। वह इसे उसकी निगाह में देख सकती थी, जब वो उसे देखता था, जब वो कभी उसको देखता। वो उसके लिए बोझ थी।

'क्या होने वाला है?' अब उसने रशीद से पूछा।

हजारों दमकते आफ़ताब 99

रशीद ने उसे तिरछी निगाह से देखा। उसने आह और गुर्राने के बीच की कोई आवाज निकाली। उसने अपने पांव टेवल से नीचे रख लिए और रेडियो को बंद कर दिया। वह उसे अपने कमरे में लेता गया और अपना दरवाज़ा बंद कर लिया।

27 अप्रैल को चटखने की आवाज़ों और तेज़ गरज ने मरियम के सवाल का जवाब दिया। वो नंगे पांवों बैठक में भागी आई और पाया कि रशीद पहले ही खिड़की के पास अपनी हथेलियां शीशे पर टिकाए हुए खड़ा है। वो बनियान में था और उसके बाल बिखरे हुए थे। मरियम ने खिड़की के पास उसकी बग़ल में जगह बनाई। ऊपर वो फौजी जहाज़ों को तेज़ी से उत्तर और पूरब की ओर जाते हुए देख सकती थी। उनका बहरा कर देने वाला शोर मरियम के कानों में चुभ रहा था। दूर धमाकों की तेज़ आवाज़ गूंजी और आसमान में धुएं का बादल उठा।

'क्या हो रहा है, रशीद?' उसने पूछा। 'यह सब क्या है?'

'खुदा ही जानता है,' वो बुदबुदाया। उसने रेडियो चलाने की कोशिश की जो सिर्फ खड़खड़ा कर रह गया।

'हम क्या करें?'

रशीद ने बेताबी से जवाब दिया, 'हम इंतज़ार करते हैं।'

उस दिन बाद में भी रशीद रेडियो चलाने की कोशिश करता रहा और मरियम ने रसोई में जाकर चावल और पालक का शोरवा बनाया। मरियम को वो दिन याद आए जव उसे रशीद के लिए खाना बनाने में मज़ा आता था। तव तो वो

इसकी ताक में रहा करती थी। अब उसके लिए खाना बनाना एक भारी चिंता वाला काम हो गया था। रशीद को अब कोरमा या तो ज़्यादा नमक वाला लगता या ज़्यादा बेस्वाद। चावल को या तो बेहद गीला बताता या फिर ज़्यादा सूखा हुआ। रोटी या तो ज़्यादा ही नर्म लगती या फिर ज़्यादा खस्ता । रशीद के मीन-मेख निकालने की वजह से रसोई को लेकर मरियम का आत्मविश्वास ख़त्म हो गया था।

जव वो रशीद का खाना लेकर आई, उस समय रेडियो पर राष्ट्र गान वज रहा था।

100 ख़ालिदहुसैनी

'मैंने सब्जी बनाई है,' उसने कहा।

'रख दो और चुप रहो।'

गीत ख़त्म होने के बाद रेडियो पर एक आदमी ने बोलना शुरू किया। उसने खुद को एयर फोर्स कर्नल, अब्दुल कादिर बताया। उसने ख़बर दी कि उस दिन बागी फोर्थ आर्मर्ड डिवीज़न ने हवाई अड्डे और शहर के मुख्य चौराहों पर कब्ज़ा कर लिया था। काबुल रेडियो, संचार और गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय की इमारत पर भी कब्ज़ा कर लिया गया था। उसने पूरी शान से बताया कि काबुल अब अवाम के हाथों में है। बागी मिग जहाजों ने सदर के महल पर हमला किया है। तोपें उसके परिसर में दाखिल हो चुकी हैं और वहां घमासान लड़ाई जारी है। अब्दुल कादिर ने तसल्लीबख्श लहजे में बताया कि दाऊद की सारी वफादार फौजें हरा दी गई हैं।

कई दिनों के बाद जब कम्युनिस्टों ने दाऊद खान की हुकूमत से जुड़े हुए लोगों को चटपट सजाएं देनी शुरू कीं और जब आंखें निकाले जाने और पोलेह चरखी जेल में जननांगों को बिजली के झटके दिए जाने की अफवाहें काबुल में फैलने लगीं तब जाकर मरियम ने उस कत्लेआम के बारे में सुना जो सदर के महल में हुआ था। दाऊद खान मार दिए गए थे, लेकिन उसके पहले कम्युनिस्ट उनके परिवार के बीस लोगों को मार चुके थे, जिनमें औरतें और उनके पोतें भी शामिल थे। ऐसी भी अफवाहें थीं कि दाऊद ने अपनी जान खुद ले ली थी, या वो लड़ाई के बीच मारे गए थे। अफवाहें ऐसी भी थीं कि उनको आख़िर तक बचाए रखा गया था और उनके सामने उनके परिवार के लोगों का कत्लेआम किया गया और फिर उनको गोली मार दी गई।

रशीद ने रेडियो की आवाज़ ऊंची कर दी और उसके करीब झुक आया।

'हथियारबंद सेनाओं की एक इन्कलाबी काउंसिल बनाई गई है और हमारा वतन अब से डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ अफ़ग़ानिस्तान के नाम से जाना जाएगा,' अब्दुल कादिर ने बताया। 'निरंकुशता, परिवारवाद और गैरबराबरी का जमाना ख़त्म हुआ हमवतनों। हमने दशकों पुराने निरंकुशता के राज को ख़त्म कर दिया है। सारी ताकत अब अवाम और आजादीपसंद लोगों के हाथों में है। हमारे वतन की तारीख में एक नया शानदार दौर शुरू हुआ है। एक नया अफ़ग़ानिस्तान पैदा हो चुका है। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि डरने की कोई बात नहीं है हमवतनों। नई हुकूमत इस्लामी और जनवादी दोनों उसूलों को कायम रखेगी

हजारों दमकते आफ़ताब 101

और उनका पूरी तरह आदर करेगी। यह खुशियों और जश्न का मौक़ा है।'

रशीद ने रेडियो बंद कर दिया।

'तो यह अच्छा है या बुरा?' मरियम ने पूछा।

'जैसा यह लग रहा है उससे अमीरों के लिए यह बुरा है,' रशीद ने कहा । 'शायद हमारे लिए उतना बुरा न हो।'

मरियम का मन उड़ते हुए जलील की तरफ़ चला गया। उसके मन में जानने की इच्छा जगी कि क्या कम्युनिस्ट जलील के पीछे पड़ेंगे। क्या वो उसे जेल में डाल देंगे? उसके बेटों को भी? क्या वो उसके कारोबार और सारी जायदाद को अपने हाथ में ले लेंगे?

'क्या यह गर्म है?' रशीद ने चावल को देखते हुए पूछा।

'मैंने अभी देगची में से निकाला है।'

वो भुनभुनाया और उससे बोला कि उसे एक प्लेट लाकर दे।

* उस रात सड़कों पर जब लाल और पीली रोशनियां जगमगाने लगीं, थकी हुई फरीबा कुहनियों का सहारा लेकर लेटी रही। उसके बाल पसीने में चिपके हुए थे और उसके ऊपरी होंठ के किनारे पर नन्हीं बूंदें उभर आई थीं। बिस्तर पर उम्रदराज़ दाई वाज्मा ने फरीबा के शौहर और बेटों को अभी-अभी पैदा हुई बच्ची दिखाई। वे बच्ची के हल्के बालों,

गुलाबी गालों और सिकुड़े हुए गुलाबी होंठों, फूली हुई पलकों के नीचे नाचती हरी आंखों पर मुग्ध थे। जब उन्होंने बच्ची की आवाज़ पहली बार सुनी तो वे एक दूसरे को देख कर मुस्कुराए। बिल्ली की आवाज़ की तरह शुरू हुई उसकी यह रुलाई जल्दी ही एक पूरे गले की चिल्लाहट में बदल गई थी। नूर ने कहा कि उसकी आंखें किसी जवाहर की तरह थीं। अहमद अपने परिवार का सबसे मज़हबी सदस्य था और उसने अपनी बहन के कानों में अज़ान पढ़ी और उसके चेहरे पर तीन बार फूंका।

'तो इसका नाम लैला है?' हाकिम ने बेटी को उछालते हुए कहा।

'लैला,' फरीवा ने थकी हुई मुस्कान के साथ कहा। 'रात की खूबसूरती । यह सबसे अच्छा नाम है।'

रशीद ने अपनी उंगलियों से भात का एक गोला बनाया। उसने उसे मुंह में रखा, एक बार और फिर दोबारा चबाया और फिर मुंह बनाते हुए उसे थूक दिया।

'क्या हुआ?' मरियम ने अपनी आवाज़ में झलकते माफ़ी के लहजे को

102 ख़ालिद हुसैनी

छुपाते हुए पूछा। उसे लगा कि उसकी नब्ज तेज हो गई है और उसकी चमड़ी सिकुड़ रही है।

'क्या हुआ?' उसकी नकल करता हुआ वो मिमियाया। 'हुआ ये कि तुमने फिर वही गलती की है।'

'लेकिन मैंने पांच मिनट ज़्यादा उबाला है।'

'यह सरासर झूठ है।'

'मैं कसम खाती हूं।'

रशीद ने अपनी उंगलियों से चावल को झाड़ा और सॉस और चावल को बिखराते हुए प्लेट हटा दी। मरियम उसे तेजी से कमरे से बाहर जाते हुए देखती रही। धड़ाम से दरवाज़ा बंद करते हुए वो घर से बाहर चला गया।

[illegible] [illegible] [illegible] [

'अच्छा,' रशीद ने कहा। उसके गाल कांप रहे थे। 'अब तुमको पता लगेगा कि तुम्हारे बनाए चावलों का स्वाद कैसा होता है। अब तुमको पता लगेगा कि तुमने मुझे इस शादी में क्या दिया है। ख़राब खाना और कुछ नहीं।'

फिर वो चला गया और अपने पीछे कंकड़, खून और टूटे हुए दो दांतों के टुकड़ों को थूकती हुई मरियम को छोड़ गया।

सोलह

काबुल, बसंत, 1987

अधिकतर सुबहों की तरह उस सुबह भी नौ साल की लैला विस्तर से उठी तो अपने दोस्त तारिक़ की झलक पाने को बेताब थी। हालांकि वो जानती थी आज वो तारिक़ को नहीं देख पाएगी।

'तुम कितने दिन के लिए जा रहे हो?' उसने तारिक से पूछा था जव तारिक़ ने उसे यह बताया था कि उसके अम्मी-अब्बू उसे दक्षिण के शहर गज़नी में चाचा के घर ले जा रहे हैं।

'तेरह दिन ।'

'तेरह दिन?'

'इतने लंबे भी नहीं हैं। तुम मुंह बना रही हो लैला।'

'नहीं, मैं नहीं बना रही।'

'तुम रोने नहीं जा रही हो, नहीं क्या?'

'मैं रोने नहीं जा रही! तुम पर तो नहीं रोऊंगी। हज़ार बरसों में भी नहीं।' लैला ने उसके घुटनों पर मारा। नकली घुटने पर नहीं बल्कि असली घुटने के ऊपर और तारिक ने मज़ाक में उसके सिर के पीछे जा चपत मारी। तेरह दिन। पूरे दो हफ़्ते। और बस पांच दिनों में ही लैला ने वक़्त के वारे में यह बुनियादी तथ्य जान लिया कि तारिक़ के अब्बा के अकॉर्डियन की तरह, जिस पर वे कभी-कभी पुराने पश्तो गीत बजाया करते थे, वक़्त भी तारिक़ की मौजूदगी और गैर मौजूदगी में खिंचता- सिकुड़ता है।

108 ख़ालिद हुसैनी

नीचे उसके अम्मी अब्बू लड़ रहे थे। फिर से। लैला रोज की इस आदत को जानती थी; उसकी मम्मी उग्र, नहीं दबने वाली, तेज़-तर्रार और ज़ोर-ज़ोर से बोलती थीं। बाबी भेड़ की तरह ऊंघते बैठे रहते और आज्ञाकारी की तरह सिर हिलाते रहते और आंधी के गुजर जाने का इंतज़ार करते। लैला अपना दरवाजा बंद कर कपड़े बदलने लगी। लेकिन तब भी वो उनकी आवाजें सुन सकती थी। वो अब भी अम्मी को सुन सकती थी। आखिरकार एक दरवाज़ा ज़ोर से बंद हुआ। सीढ़ियों पर धम-धम चलने की आवाजें आईं। मम्मी का बिस्तर जोर से बजा। ऐसा लगा कि बाबी एक और दिन देखने के लिए बच गए थे।

'लैला!' बाबी ने अब पुकारा। 'मुझे काम के लिए देर हो रही है!'

'एक मिनट!'

लैला ने जूते पहने और जल्दी से अपने कंधों तक लंबे घुंघराले सुनहरे बालों को शीशे में देखते हुए कंघी की। मम्मी हमेशा लैला से कहती थी कि उसे अपने बालों का रंग और इसके साथ-साथ मोटी बरौनियों वाली फिरोज़ी आंखें, गालों में पड़नेवाले गड्डे, गालों की ऊंची हड्डियां और उभरा हुआ निचला होंठ विरासत में मिले हैं-लैला ने इन्हें अपनी मम्मी की परदादी से हासिल किया है। वो एक परी थीं, मम्मी बतातीं। उनकी खूबसूरती के चर्चे पूरी घाटी में होते थे। यह खूबसूरती हमारे खानदान में बाद की दो पीढ़ियों तक किसी भी औरत को नहीं मिली, लेकिन यकीनन तुमको वह हासिल हुई है, लैला। मम्मी जिस घाटी की बात कर रही थीं, वो पंजशेर घाटी थी जो काबुल से सौ किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित फ़ारसी बोलने वाले ताजिक लोगों का इलाका थी। मम्मी और बाबी दोनों पंजशेर में ही जन्मे और पले- बढ़े। वे पहले रिश्ते में चचेरे भाई-बहन थे। वे 1960 में नई-नई शादी के बाद उम्मीद से भरे हुए काबुल आए, जहां बाबी ने काबुल यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया।

लैला सीढ़ियों पर तेज़ी से उतरते हुए उम्मीद कर रही थी कि मम्मी दूसरे दौर के लिए फिर अपने कमरे से बाहर न आ जाएं। उसने बाबी को स्क्रीन वाले दरवाजे के पास घुटने तक झुके पाया।

'तुमने यह देखा लैला?'

स्क्रीन में कई हफ़्तों से दरारं-सी बनी हुई था। लैला ने उनके बगल में जाते हुए कहा। 'नहीं। नया होगा।'

:

हजारों दमकते आफ़ताब 109

'मैंने भी फरीबा से यही कहा था।' वे भीतर से हिले हुए, सिकुड़ गए से लग रहे थे जैसा मम्मी के बरसने के बाद हमेशा लगते थे। 'वो कह रही धी कि इससे मधुमक्खियां आती रही हैं।'

लैला का दिल उनके लिए भर आया। बाबी एक छोटे कद के, दुबले कंधों वाले और पतले, नाजुक, लगभग औरतों जैसे हाथों वाले आदमी थे। रात में जब लैला बाबी के कमरे की तरफ़ जाती तो हमेशा उनके चेहरे को किसी किताब में डूबे हुए पाती। उनका चश्मा उनकी नाक की नोक पर टिका रहता। कभी-कभी वो इस पर ध्यान भी नहीं देते कि लैला वहां है। जब वो ध्यान देते तो अपने पन्ने पर निशान लगा कर बंद होंठों से दोस्ताना तरीके से मुस्कुरा देते। बाबी ने रूमी और हाफिज की गज़लों को जज़्ब कर लिया था। वे अफ़ग़ानिस्तान को लेकर ब्रिटेन और जारशाही रूस के बीच संघर्ष के बारे में गहराई से बातें कर सकते थे। वे पत्थर के आरोही और अवरोही निक्षेपों के बारे में भी जानते थे और यह बता सकते थे कि धरती और सूरज के बीच को दूरी काबुल और गज़नी के बीच पंद्रह लाख बार सफ़र करने के बराबर है। लेकिन अगर लैला को मिठाई का एक मर्तबान जोर लगा कर खुलवाना होता तो उसे मम्मी के पास जाना पड़ता। बाबी दरवाजों को चरमरा कर खुलते-बंद होते देखते रहते लेकिन उनके कब्ज़ों में कभी तेल नहीं लगाते। छतें जब से लगी थीं, तब से चू रही थीं। किचन के कैबिनेटों में फफूंद चुनौतियां देती हुई पनपती रहती। मम्मी बतातीं कि 1980 में नूर के साथ सोवियतों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए जिहाद में शामिल होने जाने से पहले अहमद इन चीज़ों पर पूरे फर्ज़ के साथ गौर करता था।

'लेकिन अगर तुम्हारे पास कोई किताब हो जिसे पढ़ा जाना ज़रूरी हो,' वो कहतीं, 'तो फिर हाकिम तुम्हारे गुलाम हैं।'

अब भी लैला इस बात को भूल नहीं पाई थी कि कभी ऐसा भी वक़्त था जव बाबी की किताबों से मुहब्बत को मम्मी भी अच्छा मानती थीं। यह अहमद और नूर के सोवियतों के ख़िलाफ़ जंग पर जाने से पहले का वक़्त था- बाबी द्वारा उनको जंग पर जाने देने से पहले का वक़्त जब वो भी बाबी के भूल जाने की आदत और अकुशलता पर रीझ जाती थीं।

'तो आज कौन-सा दिन है?' बाबी ने नखरे से मुस्कुराते हुए पूछा। 'पांचवा? या छठा दिन?'

110 ख़ालिद हुसैनी

'मुझे क्या परवाह है? मैं गिन कर नहीं रखती,' लैला ने झूठ बोलते हुए कंधे झटके लेकिन बाबी का याद रखना उसे अच्छा लगा। मम्मी को पता नहीं था कि तारिक़ चला गया था।

'खैर उसकी फ्लैशलाइट तुम्हारे पता लगने से भी पहले बुझ जाएगी,' बाबी ने लैला और तारिक़ के रातों में सिग्नल के खेल की तरफ इशारा करते हुए कहा। वे यह खेल इतने अरसे से खेलते आ रहे थे कि अब यह रातों को सोने से पहले दांत में ब्रश करने जैसी आदत बन गई थी।

बाबी ने स्क्रीन की दरार पर उंगलियां फेरीं। 'मौक़ा मिलते ही मैं इसे ठीक करा दूंगा। अब चलना बेहतर होगा।' उन्होंने अपनी आवाज़ ऊंची कर ली और सिर उठा कर कहा, 'अब हम जा रहे हैं फरीबा! मैं लैला को स्कूल ले जा रहा हूं। उसे वापस ले आना मत भूलना!'

बाहर बाबी की साइकिल के कैरियर पैक पर सवार होते हुए लैला ने सड़क पर एक कार को देखा जो उस घर के सामने खड़ी थी जहां जूते बनाने वाला रशीद अपनी तन्हा-तन्हा बीवी के साथ रहता है। यह नीले रंग की एक बेंज़ थी जिस पर एक मोटी सफ़ेद पट्टी इसके हुड, छत और ट्रंक को बराबर-बराबर हिस्सों में बांट रही थी। इस मुहल्ले में ऐसी कार गैर मामूली बात थी। लैला देख सकती थी कि भीतर दो मर्द बैठे हैं। एक स्टीयरिंग व्हील के पीछे और दूसरा पीछे की सीट पर।

'वे कौन हैं?' लैला ने पूछा।

'यह हमारा काम नहीं है,' बाबी ने कहा। 'बैठ जाओ। क्लास के लिए तुम्हें लेट हो जाएगी।'

लैला को एक और लड़ाई याद आई और इस बार मम्मी बाबी के सिर पर सवार थीं और दांत भींचते हुए में कह रही थीं, यही तुम्हारा काम है कि तुम्हारा कोई काम नहीं है, है न भाईजान? यहां तक कि तुम्हारे अपने बेटे जंग पर चले गए। कैसे मैंने तुमसे फरियाद की थी। लेकिन तुमने अपनी नाक उन मरी किताबों में घुसा ली और हमारे बेटों को हरामियों के जोड़ों की तरह चते जाने दिया।

बाबी साइकिल में पैडल मारने लगे और पीछे बैठी लैला ने अपने हाथों को उनके पेट के गिर्द लपेट लिया। नीली बेंज के पास से गुज़रते हुए लैला को पिछली सीट पर बैठे आदमी की एक झलक मिली। वो पतला, सफ़ेद

हज़ारों दमकने आफ़ताय ।।।

बालों वाला एक आदमी था जिसने गहरे भूरे रंग का सूट पहन रखा था और तिकोना रूमाल सीने वाली जेब में लगा रखा था। जिस दूसरी बात पर बो गौर कर पाई वो ये थी कि कार में हेरात 'की लाइसेंस वाली नंवर प्लेट लगी थी।

बाक़ी रास्ते वे चुपचाप चलते रहे, बस मोड़ पर सावधानी से ब्रेक लगाने हुए बाबी कहते थे, 'पकड़े रहो लैला। धीरे। धीरे। हां।'

उस दिन तारिक़ की गैर मौजूदगी और अम्मी-अब्बू की लड़ाई के बीच लैला को क्लास में मन लगाने में मुश्किल हो रही थी। इसलिए रोमानिया और क्यूबा की राजधानियों के नाम बताने के लिए टीचर ने जब लैला का नाम पुकारा तो वह पकड़ी गई कि उसका ध्यान कहीं खोया हुआ था।

टीचर का नाम शानजई था लेकिन टीचर की पीठ पीछे वच्चों उसे खाला रंगमाल कहते थे। इस नाम के ज़रिए वे पिटाई के टीचर के पसंदीदा तरीके की तरफ़ इशारा करते। जब वो किसी बच्चे को थप्पड़ मारती तो पहले हथेली से, फिर पीछे की तरफ़ से, फिर सामने से और फिर पीछे से। मानों कोई पेंटर (रंगमाल) ब्रश फेर रहा हो। खाला रंगमाल तीखे चेहरे और घनी भौंहों वाली एक नौजवान औरत थी। स्कूल के पहले दिन ही उसने क्लास में बड़ी शान से ऐलान कर दिया था कि वो खोश्त के एक गरीब किसान की बेटी है। वो सीधी खड़ी थी और उसके गहरे काले बाल कस कर पीछे की ओर जूड़े में बंधे हुए थे। इसलिए जब भी खाला रंगमाल मुड़ती तो लैला उसकी गर्दन पर खड़े नन्हें बालों को देख सकती थी। खाला रंगमाल ने न मेकअप किया था और न ही गहने पहने थे। उसने न लड़कियों को पर्दा करने को कहा और न इससे रोका। उसने कहा कि औरत और मर्द हर तरह से बराबर होते हैं और अगर मर्द पर्दा नहीं करते तो किसी औरत के पर्दा करने की कोई वजह नहीं थी।

उसने कहा कि अफ़ग़ानिस्तान के साथ सोवियत संघ दुनिया का सबसे अच्छा कौम था। यह अपने कामगारों को लेकर रहमदिल था और इसके सारे लांग बराबर थे। सोवियत संघ में हरेक आदमी खुश और दोस्ताना था।

इसके उलट अमेरिका में जुर्म के डर से लोग घर छोड़ कर भाग रहे थे। उसने कहा कि अफ़ग़ानिस्तान में भी तरक्की के मुखालिफ, पिछड़े हुए डाकुओं को एक वार हरा दिए जाने के बाद हर कोई खुश रहेगा।

112 ख़ालिद हुसैनी

'इसीलिए 1979 में हमारे सोवियत कॉमरेड यहां अपने पड़ोसी का हाथ बंटाने आए। वो उन जंगलियों को हराने के लिए आए जो चाहते थे कि हमारा देश पिछड़ा हुआ, कबीलाई कौम बना रहे। और बच्चों तुमको भी हाथ बंटाना चाहिए। अगर कोई इन बागियों के बारे में कुछ जानता हो तो तुम इसकी ख़बर दो। यह तुम्हारा फर्ज है। तुम सुनो और सुन कर ख़बर दो। अगर ऐसे लोग तुम्हारे अपने अम्मी-अब्बू हों, अपने चाचा- चाची हों तब भी ख़बर दो। क्योंकि उनमें से कोई भी तुम्हें उतना प्यार नहीं करता जितना तुम्हारा देश तुमसे प्यार करता है। तुम्हारा देश पहले आता है, याद रखना! मुझे तुम पर नाज़ होगा और तुम्हारे देश को भी।'

खाला रंगमाल के पीछे दीवार पर एक सोवियत संघ का और एक अफ़ग़ानिस्तान का नक्शा था, मौजूदा कम्यूनिस्ट सदर नजीबुल्लाह का एक फ्रेम किया हुआ फोटो था जिनके बारे में बाबी कहते थे कि वे कभी खतरनाक अफ़ग़ानी खुफिया पुलिस खाद के मुखिया थे। वहां दूसरे कुछ फोटो भी थे, जिनमें मुख्यतः किसानों से हाथ मिलाते, सेब के पौधे रोपते, घर बनाते और मिलनसारिता से मुस्कुराते हुए जवान सोवियत फौजियों को दिखाया गया था।

'खैर,' खाला रंगमाल ने अब कहा। 'क्या मैंने दिन में सपने देखने वाली तुम्हारी इन्कलाबी लड़की को परेशान कर दिया है?'

खाला रंगमाल ने लैला का नाम इन्कलाबी लड़की रख छोड़ा था क्योंकि वो 1978 के अप्रैल तख्तापलट की रात पैदा हुई थी। फ़र्क़ ये था कि अगर कोई तख्तापलट शब्द का इस्तेमाल कर दे तो खाला रंगमाल खफा हो जाती थीं। इस तारीख को जो हुआ था उसे खाला एक इन्कलाब कहती थीं। उनके लिए यह गैरबराबरी के ख़िलाफ़ कामगारों की बगावत थी। इसी तरह जिहाद शब्द के इस्तेमाल पर भी मनाही थी। उनके मुताबिक सूबों में कोई जंग नहीं हो रही थी बल्कि वहां कुछ उपद्रवी लोग छुटफुट लड़ाइयां लड़ रहे थे जिनको कुछ लोग उकसावा दे रहे थे। इन उकसावा देने वाले लोगों को खाला विदेशी उकसावेबाज़ कहतीं। और यकीनन उनकी मौजूदगी में कोई भी, कोई भी इस बढ़ती हुई अफवाह के बारे में बात

नहीं कर सकता था कि आठ साल की लड़ाई के बाद सोवियत जंग हार रहे थे। ख़ास तौर से अब जब अमेरिकी सदर रीगन ने सोवियत हेलीकॉप्टरों को मार गिराने के लिए मुजाहिदीनों को स्टिंगर मिसाइलों से लैस करना शुरू कर दिया है और अब पूरी दुनिया से

हजारों दमकते आफ़ताब 113

मुसलमान इस मकसद के साथ जुड़ रहे हैं; मिस्री, पाकिस्तानी और यहां तक कि रईस सऊदी लोग भी जो अपने पीछे दसियों लाख लोगों को छोड़ कर जिहाद में शामिल होने अफ़ग़ानिस्तान आए हैं।

'बुखारेस्ट । हवाना,' लैला किसी तरह जबाब दे पाई।

'और ये देश हमारे दोस्त हैं या नहीं?'

'वे दोस्त हैं, मुअल्लिम साहिब। वे दोस्ताना देश हैं।'

खाला रंगमाल ने रूखेपन से सिर हिलाया।

जब स्कूल में छुट्टी हुई तो लैला को मम्मी वहां नहीं दिखीं, जिनको वहां होना चाहिए था। लैला घर लौटने के लिए आखिरकार अपनी क्लास में पढ़नेवाली लड़कियों गीती औरीीा के साथ हो ली।

गीती एक खूब मोटी तगड़ी लड़की थी जिसने अपने बालों की दो चोटियां बना कर उनमें रबड़ बैंड लगा रखे थे। वह हमेशा नाक-भौं चढ़ाए रखती और अपनी किताबों को सीने पर ढाल की तरह चिपका कर चलती। हसीना बारह की थी और लैला तथा गीती से तीन साल बड़ी थी लेकिन तीसरे दर्जे में एक बार और चौथे में दो बार फेल हो चुकी थी। वह अक्ल में कमी की भरपाई शरारतों से करती और गीती कहती कि उसका मुंह सिलाई मशीन की तरह चलता है। यह हसीनाही थी जिसने टीचर का नाम खाला रंगमाल रखा था।

आज हसीना मुफ्त में सलाहें बांट रही थी कि शादी के बदसूरत दावेदारों को कैसे भगाया जाए। 'अचूक तरीका है। इसके काम करने की गारंटी है। कसम खाकर कहती हूं।'

'यह बेवकूफ़ी है। रिश्ता आने के लिहाज से मैं बहुत छोटी हूं।'

'तुम उतनी भी छोटी नहीं हो।'

'जो भी हो, कोई भी मेरा हाथ मांगने नहीं आने वाला।' 'ऐसा इसलिए कि तुम्हारी दाढ़ी है, प्यारी।'

गीती का हाथ अपनी ठोढ़ी तक उठा और उसने चौकन्ना होकर लैला की तरफ़ देखा जो दया के साथ उसकी तरफ़ देख रही थी। लैला ने सिर झटक कर उसे तसल्ली दी। लैला अब तक जितने लोगों से मिली थी उनमें गीती सबसे कम मज़ाकिया लड़की थी।

'बहरहाल लड़कियों क्या तुम जानना चाहती हो कि क्या करना चाहिए

114 ख़ालिद हुसैनी

और क्या नहीं?'

'बताओ,' लैला ने कहा।

'सेम। चार कटोरे से कम नहीं। शाम को पोपले मुंह वाला गिरगिट हाथ मांगने आता है। लेकिन सही वक़्त लड़कियों, सही वक़्त ही तो सबकुछ है। जब तक उसे चाय देने का वक़्त न आए तब तक पटाखे को दबाए रखो।'

'मैं याद रखूंगी,' लैला ने कहा।

'और वो भी याद रखेगा ।'

लैला कह सकती थी कि उसे इस सलाह की जरूरत नहीं थी क्योंकि हाल-फिलहाल में बाबी का इरादा उसे दूर करने का नहीं था। हालांकि बाबी काबुल की विशालकाय ब्रेड फैक्टरी सिलो में काम करते थे, जहां वे गर्मी और शोर करती मशीनरी के बीच बड़े-बड़े तंदूरों को धधकाते और चक्कियों को चलाते थे, लेकिन वे एक यूनिवर्सिटी में पढ़े-लिखे इनसान थे। कम्युनिस्टों द्वारा निकाल दिए जाने के पहले वे एक स्कूल टीचर हुआ करते थे यह 1978 के तख्तापलट के फौरन बाद की घटना है, जब सोवियतों को देश पर हमला किए हुए डेढ़ साल हुए थे। बाबी ने लैला के सामने छोटी उम्र से ही यह बहुत साफ़ कर दिया था कि उसकी जिंदगी में उसकी हिफाज़त के बाद सबसे अहम चीज़ पढ़ाई-लिखाई है।

मैं जानता हूं कि तुम अभी बहुत छोटी हो, लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम इसे अभी समझ और सीख लो, उन्होंने कहा था। शादी इंतज़ार कर सकती है, लेकिन पढ़ाई नहीं। तुम एक बहुत, बहुत ही समझदार लड़की

हो। सचमुच में तुम हो। तुम जो चाहो वो बन सकती हो लैला। मैं तुम्हारे बारे में यह जानता हूं। और मैं यह भी जानता हूं कि जब यह जंग ख़त्म हो जाएगी तो अफ़ग़ानिस्तान को अपने मर्दों जितनी ही तुम्हारी भी ज़रूरत होगी, शायद उनसे भी ज्यादा। क्योंकि किसी भी समाज की कामयाबी की तब तक गुंजाइश नहीं होती जव तक उसकी औरतें पढ़ी-लिखी नहीं होतीं, लैला। कोई गुंजाइश नहीं।

लेकिन लैला ने हसीना से नहीं कहा कि बाबी ने उनसे यह वात कही थी, कि वो उनके जैसा अब्बू पाकर कितनी खुश थी, या उसके अब्बा उत्तका जितना आदर करते थे इस पर उसे कैसे नाज़ होता था, या कैसे वह अपनी आगे की पढ़ाई को लेकर अपने अब्बा जितनी ही पक्की थी। पिछले दो बरसों से लैला अव्वल नुमरा सर्टिफिकेट हासिल करती आ रही थी जो सालाना रूप

हजारों दमकते आफ़ताब 115

से हरेक दर्जे में अव्वल आने वालों को दिया जाता था। उसने इनमें से कुछ भी हसीनाको नहीं बताया, हालांकि उसके अब्बा एक बुरे मिजाज़ वाले एक टैक्सी ड्राइवर थे जो अगले दो या तीन बरसों में उसकी शादी कर देने वाले थे। हसीना कभी-कभार ही गंभीर होती थी और ऐसे ही एक मौके पर उसने लैला को बताया था कि यह पहले ही तय हो चुका था कि उसकी शादी अपने एक चचेरे भाई से होगी जो उससे बीस साल बड़ा था और लाहौर में उसकी ऑटो की दुकान थी। मैंने उसे दो बार देखा है, हसीना ने बताया। हर बार वो अपने मुंह खोल कर खाता था।

'सेम, लड़कियों,' हसीना ने कहा। 'याद रखना। बेशक जब तक कि'-शरारत से हंसते हुए उसने लैला को कुहनी मारी-'तुम्हारा एक पैर का बांका नौजवान शहज़ादा दरवाजा न खटखटाएं। तब...'

लैला ने कुहनी को चपत लगा कर परे कर दिया। अगर कोई तारिक़ के बारे में ऐसा कहता तो वह बुरा मान जाती। लेकिन वो जानती थी कि हसीनाबुरा चाहने वाली नहीं थी। वह मज़ाक उड़ाती थी और यही वो करती थी, कोई उसके मज़ाक से बच नहीं पाता था, खुद वह भी नहीं।

'तुमको लोगों के बारे में इस तरह बात नहीं करनी चाहिए!' गीती ने कहा।

'कैसे लोग?'

'जो लोग जंग की वजह से जख्मी हो जाते हैं,' हसीना के मजाक से अनजान गीती ने गंभीरता से कहा।

'मुझे लगता है कि मुल्ला गीती तारिक़ पर फिदा है। मैं जानती हूं! हा! लेकिन तारिन ने तो अपनी जबान दे दी है, जानती नहीं तुम? वही है न लैला?'

'मैं कोई फिदा-विदा नहीं हूं। किसी पर नहीं!'

अपनी गली में मुड़ते हुए वो लैला से अलग हो गईं, लेकिन उनकी बात जारी रही।

लैला तीन ब्लॉकों तक अकेली चलती रही। जब वो अपनी गली में आई तो उसने गौर किया कि नीली बेंज़ अब तक वहीं रशीद और मरियम के घर के बाहर खड़ी थी। भूरे सूट वाला अधेड़ आदमी अब बेंत पर झुका हुआ, हुड से लग कर खड़ा घर को देख रहा था।

तभी लैला के पीछे से एक आवाज ने कहा, 'ऐ। पीले बाल। इधर देखो।' लैला पीछे मुड़ी और उसका स्वागत एक बंदूक की नली ने किया।

सत्रह

बंदूक लाल थी और उसका ट्रिगर गार्ड चमकीले हरे रंग का था। बंदूक के पीछे खादिम का मुस्कुराता चेहरा फैला हुआ था। खादिम तारिक़ की तरह ग्यारह साल का था। वो मोटा, लंबा था और उसके दांत बाहर को निकले हुए थे। उसके अब्बा देह-माजंग में कसाई का काम करते थे और खादिम कभी-कभी बछड़े की अंतड़ियों के टुकड़े रास्ते से गुज़रनेवालों पर फेंकने के लिए जाना जाता था। कभी जब तारिक़ करीब नहीं होता तो खादिम दोपहर के खाने की छुट्टी के दौरान स्कूल के आंगन में लैला के पीछे-पीछे मंडराता रहता, बुरी नज़र से देखता और शिकायती लहजे में आवाजें निकालता। एक बार उसने लैला के कंधे को थपथपाते हुए कहा था, तुम इतनी खूबसूरत हो, पीले बाल। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं।

अब वो बंदूक लहरा रहा था। 'फिक्र मत करो,' उसने कहा। 'यह तुमको दिखेगा नहीं। तुम्हारे वालों पर नहीं।'

'ऐसा मत करो। मैं तुमको चेतावनी दे रही हूं।'

'क्या कर लोगी तुम?' उसने कहा। 'कैसे रोकोगी मुझे? 'ओह तारिन जान। ओह, तुम मुझे इस बदमाश से बचाने क्यों नहीं आते!"

लैला ने पीछे हटने लगी, लेकिन खादिम ट्रिगर को दबा चुका था। एक के बाद एक गर्म पानी की बौछारें लैला के बालों पर और फिर उसकी हथेलियों पर गिरने लगीं, जिनको उसने अपना चेहरा ढंकने के लिए उठा रखा था।

हजारों दमकते आफ़ताब 117

रहे थे। अब तक छुप कर खड़े हुए दूसरे लड़के निकल आए थे और खिलखिला

गली में सुनी गई एक गाली लैला के होंठों पर आ गई। वो इसका मतलब तो नहीं समझती थी और न इसके पीछे के तर्क की कल्पना कर सकती थी, लेकिन इन शब्दों में उग्रता थी और अब उसने यह गाली बच्चों की तरफ़ उछाल दी।

'तुम्हारी अम्मी लंड खाती हैं!'

'कम से कम वो तुम्हारी अम्मी की तरह पागल तो नहीं हैं,' खादिम ने बिना विचलित हुए पलटवार किया। 'कम से कम मेरे अब्बा जनखे तो नहीं हैं! और जो भी हो, तुम अपना हाथ क्यों नहीं सूंघ रहीं?'

दूसरे बच्चों ने बात पकड़ ली। 'अपना हाथ सूंघो! अपना हाथ सूंघो!' लैला ने अपने हाथ सूंघे, लेकिन वो सूंघने से पहले से ही जानती थी कि खादिम की इस बात का मतलब क्या था कि यह तुम्हारे बालों पर नहीं दिखेगा। वो बहुत ज़ोर से चीख पड़ी। इस पर तो बच्चे और ज़ोर से शोर मचाने लगे।

लैला घूमी और तेज़ी से घर की तरफ़ दौड़ी।

उसने कुएं से पानी निकाल कर बाथरूम में एक बेसिन को भरा। उसने अपने कपड़े तेज़ी से उतारे अपने बालों में साबुन लगा कर वो तेज़ी से अपने सिर पर उंगलियां चला रही थी और अपमान के मारे रोती जा रही थी। उसने कटोरे से बाल धोए और उनमें फिर से साबुन लगाया। कई बार उसे लगा कि वो उल्टी कर देगी। रोते और कांपते हुए उसने साबुन लगे कपड़ों से अपने चेहरे और गर्दन को तब तक रगड़ा जब तक कि वो लाल नहीं हो गए।

साफ़ कमीज़ और पाजामा पहनते हुए उसने सोचा कि अगर तारिक़ उसके साथ रहा होता तो यह उसके साथ नहीं हुआ होता। खादिम को तब हिम्मत नहीं होती। बेशक तब भी वो इससे बच जाती अगर मम्मी उसे स्कूल से लाने गई होतीं, जो उनको जाना चाहिए था। कभी-कभी लैला को हैरानी होती कि मम्मी ने उसे पैदा करने की ज़हमत ही क्यों उठाई। अब वो मानती थी कि लोगों को नए बच्चे पैदा करने की इजाजत नहीं होनी चाहिए अगर उन्होंने अपना सारा प्यार अपने पहले बच्चों के नाम कर रखा हो। यह ठीक

118 ख़ालिद हुसैनी

नहीं था। उस पर गुस्से का एक दौरा पड़ गया। लैला अपने कमरे में गई और बिस्तर पर ढह गई।

जब वो इससे उबरी तो गलियारा पार करके मम्मी के दरवाजे पर जाकर उसने खटखटाया। जब वो छोटी थी तो लैला घंटों इस दरबाजे के बाहर बैठी रहती थी। वो इसको खटखटाती और मम्मी का नाम पुकारती रहती मानों इस नाम में कोई जादू हो जो तिलिस्म को तोड़ देता; मम्मी, मम्मी, मम्मी, मम्मी... लेकिन मम्मी कभी दरवाजा नहीं खोलतीं। अब भी उन्होंने नहीं खोला। लैला ने नॉब घुमाया और भीतर चली गई।

कभी-कभी मम्मी के अच्छे मिजाज़ वाले दिन भी आते। वो 1 बेस्तर से चमकती आंखों और खिले मन के साथ उठतीं। उनका लटकता हुआ निचला होंठ मुस्कुराते हुए ऊपर को खिंच आता। वो नहातीं। ताज़े धुले कपड़े पहनतीं और काजल लगातीं। वो लैला से अपने बालों में कंघी करवातीं जिसको लैला बहुत पसंद करती थी। फिर वे अपने कानों में बालियां पहनतीं। इसके बाद वो साथ-साथ मंडाई बाज़ार में ख़रीदारी करने जातीं। लैला सांप-सीढ़ी ख़रीदती और वो काली चॉकलेट की कतरनें खातीं। ये उन कुछ चीज़ों में से थी, जो उन दोनों को पसंद थी। मम्मी के अच्छे दिनों का लैला का सबसे पसंदीदा हिस्सा वो होता जब बाबी घर आते और लैला और मम्मी उनको तख्त से देख कर दांत खोल कर मुस्कुरातीं। कमरे में खुशियां भर जातीं और लैला अपने अम्मी- अब्बा के उस दुलार और प्यार की एक झलक पाती जो उनके जीवन में तव तक भरा-पूरा हुआ करता था जब घर लोगों से, शोर-शराबे से और खुशियों से भरा था।

मम्मी अपने अच्छे मिजाज़ वाले दिनों में पेस्ट्रियां बनातीं और पड़ोस की औरतों को बुला कर चाय और पेस्ट्रियों की दावत करतीं।

मम्मी टेबल पर कप, रूमाल और तश्तरियों के साथ बैठी रहतीं और लैला कटोरे को चाटती। बाद में लैला अपनी प्लेट बैठक की टेबल पर ले कर चली आती और औरतों की बातचीत में दखल देने की कोशिश करती, जो पूरे जोश-खरोश में बातें करते हुए चाय पी रही होतीं और मम्मी की बेकिंग की तारीफ कर रही होतीं। हालांकि कहने को उसके पास कुछ होता नहीं, इसलिए वो चुपचाप बैठ कर सुनना पसंद करती क्योंकि ऐसी बैठकों में उसे एक ऐसी खुशी मिलती थी जो बहुत दुर्लभथी: वो अपनी मम्मी को बाबी के बारे में प्यार भरी बातें बोलते हुए सुनती।

हजारों दमकले आफ़ताब 119

'कितने पहले दर्जे के टीचर थे वो,' मम्मी कहतीं। 'उनके छात्र उनकी पसंद करते थे। और सिर्फ इसलिए नहीं कि दूसरे टीचरों की तरह वो उनको डंडों से मारते नहीं थे। देखो, वो उनका इसलिए आदर करते थे क्योंकि वे अपने छात्रों का आदर करते थे। वे एक शानदार टीचर थे।'

मम्मी यह किस्सा बताना बहुत पसंद करती थीं कि कैसे उन्होनें बाबी के सामने शादी की पेशकश की थी।

'मैं सोलह की थी और वे उन्नीस के। पंजशेर में हमारे परिवार आमने- सामने रहते थे। ओह, मैं उन पर कितनी फिदा थी, बहनों! मैं हमारे घरों के बीच की दीवार फांद जाती और हम उनके अब्बा के बागीचे में खेलते । हाकिम हमेशा डरे रहते कि हम पकड़े न जाएं और मेरे अब्बा उनको थप्पड़ न मारें। 'तुम्हारे अब्बा मुझे पीटने वाले हैं,' वो हमेशा कहते। वो इतने सतर्क थे, इतने गंभीर थे, तब भी। और फिर एक दिन मैंने उनसे कहा, मैंने कहा, 'भाईजान, तो आगे क्या होगा? क्या तुम मेरा हाथ मांगने आ रहे हो या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारा हाथ मांगने आऊं? मैंने बस ऐसे ही कहा। तुम्हें उनका चेहरा देखना चाहिए था!'

औरतें और लैला हंसतीं और मम्मी अपनी हथेलियां पीटतीं ।

मम्मी से ये कहानियां सुनते हुए जैला जानती थी ऐसे भी दिन थे जब मम्मी बाबी के बारे में हमेशा इसी तरह से बातें करती थीं। वो ऐसा समय था जब उसके अम्मी-अब्बू अलग-अलग कमरों में नहीं सोते थे। लैला चाहती कि वो दिन कभी ख़त्म नहीं हुए होते।

मम्मी की शादी की पेशकश वाली कहानी का अंत हमेशा जोड़ियां मिलाने की योजनाओं पर होता। जब अफ़ग़ानिस्तान सोवियतों से आजाद होगा और

लड़के घर लौटेंगे तो उनको दुल्हनों की जरूरत होगी और इसलिए औरतें एक-एक कर मुहल्ले की लड़कियों पर विचार करतीं कि कौन अहमद और नूर के लायक हो सकती है और कौन नहीं। बातचीत जब भी लैला के भाइयों की तरफ़ मुड़ जाती तो वो हमेशा इस बातचीत से खुद को बाहर महसूस करती मानों औरतें अपनी किसी प्यारी फ़िल्म के बारे में बातें कर रही हों, जिसे सिर्फ़ लैला ने ही नहीं देखा हो। वो दो बरस की थी जब अहमद और नूर ने जिहाद के लिए काबुल छोड़ दिया और उत्तर की तरफ़ पंजशेर में कमांडर अहमद शाह मसूद के लड़ाकों में शामिल होने चले गए थे। लैला उनके बारे में मुश्किल

120 ख़ालिद हुसैनी

से ही कुछ याद कर पाती थी। अहमद के गले में लटका अल्लाह का पेंडेंट। नूर के एक कान के पीछे काले बालों का एक गुच्छा। और बस इतना ही।

'आजिता के बारे में क्या ख्याल है?'

'कालीन बनाने वाले की बेटी?' मम्मी ने अपने गालों को पीटते हुए मज़ाकिया गुस्से में कहा। 'उसके तो हाकिम से भी घनी मूंछें हैं!'

'एक अनाहिता भी है। हमने सुना है कि वो जरगूना की अपनी क्लास में सबसे अव्वल आती है।'

'तुमने उस लड़की के दांत देखे हैं? कब्र के पत्थर हैं। अपने होंठों के पीछे उसने कब्रिस्तान छुपा रखी है।'

'वाहिदी बहनों के बारे में क्या ख्याल है?'

'दोनों बौनी लड़कियां? ना, ना, ना। अरे नहीं। मेरे बेटों के लिए नहीं। मेरे सुल्तानों के लिए नहीं। वो इनसे अच्छी लड़कियों के लायक हैं।'

'बातचीत चलती रहती और लैला का मन उड़ते हुए हमेशा की तरह तारिक़ तक पहुंच जाता।

मम्मी ने पीले पर्दे खींच रखे थे। कमरे के अंधेरे में नींद की, बिना धुले हुए कपड़ों. की, पसीने की, गंदे मोज़ों, इत्र और पिछले रात के बासी कोरमे की मिली-जुली गंधों की परतें जमी हुई थीं। लैला

ने आंखों के अंधेरे में देखने लायक होने का इंतजार किया और फिर कमरा पार किया। तब भी उसके पैर फर्श पर बिखरे कपड़ों में उलझ रहे थे।

लैला ने पर्दे हटाए। बिस्तर के पाए के पास एक पुरानी लोहे की कुर्सी थी। लैला उस पर बैठ गई और अपनी अम्मी के ऊपर पड़े कंबलों के ढेर को बिना हिले-डुले देखने लगी।

मम्मी के कमरे की दीवारें पर अहमद और नूर की तस्वीरों से ढंकी हुई थी। जहां भी लैला देखती मुस्कुराते हुए दो अजनबी दिखाई देते। यहां नूर एक तिपहिए साइकिल पर सवार था। यहां अहमद नमाज़ पढ़ रहा था, धूपघड़ी के पास खड़ा तस्वीर खिंचा रहा था, जिसे बाबी और उसने तब बनाया था जब वो बारह साल का था। और वहां उसके भाई आंगन में नाशपाती के पेड़ के नीचे एक दूसरे से पीठ सटाए बैठे हुए थे।

मम्मी के बिस्तर के नीचे लैला अहमद के जूते के बक्से को झांकते हुए

हजारों दमकते आफ़ताब 121

देख सकती थी। समय-समय पर मम्मी इसमें से पुराने, फटे हुए अखबारों की कतरने और पर्चे उसे दिखाती थीं, जिनको अहमद ने पाकिस्तानी मुख्यालयों वाले बागी समूहों और प्रतिरोध कर रहे संगठनों से जमा किया था। लैला ने याद किया कि एक तस्वीर में लंबा सफ़ेद कोट पहने हुए एक आदमी बिना टांगों वाले एक छोटे से बच्चे को लॉलीपॉप दे रहा था। तस्वीर के नीचे कैप्शन था: सोवियत बारूदी सुरंग अभियान का निशाना बच्चे हैं। लेख में कहा गया था कि सोवियत चमकीले रंगों वाले खिलौनों में बम छुपा कर रखना पसंद करते थे। अगर कोई बच्चा उसे उठाता तो खिलौने में धमाका हो जाता, जिसमें उसकी उंगलियां या पूरा हाथ ही उड़ जाता। तब उसके अब्बा जिहाद में शामिल नहीं हो पाते क्योंकि उनको घर पर रह कर बच्चे की देखभाल करनी पड़ती। अहमद के डिब्बे में एक दूसरे लेख में एक नौजवान मुजाहिद बता रहा था कि सोवियतों ने उसके गांव पर गैस छिड़क दी जिसने लोगों की चमड़ी को जला डाला और उन्हें अंधा कर दिया। उसने बताया था कि उसने अपनी मां और बहन को नाले की तरफ़ भागते हुए देखा था और उनके मुंह से खून निकल रहा था।

'मम्मी।'

कंबलों का ढेर हल्के से हिला। एक कराह निकली।

'उठो, मम्मी। तीन बज गए हैं।'

एक और कराह। सतह से उभरती पनडुब्बी के दूरबीन की तरह एक हाथ उठा और फिर गिर गया। इस बार ढेर ज़्यादा साफ़-साफ़ हिला। फिर एक दूसरे के ऊपर सरकते कंबल सरसराए। धीरे-धीरे, कई चरणों में मम्मी प्रकट हुईं; पहले बिखरे हुए बाल, बिगड़ा हुआ मुंह, रोशनी से चुंधियाई हुई आंखें, सिरहाने के तख्ते को टटोलता हुआ एक हाथ, घुरघुराते हुए उनके ऊपर सरकने से खिसक गई चादर। मम्मी ने ऊपर देखने की कोशिश की लेकिन रोशनी से वो चौंधिया गई थीं और फिर उनका सिर सीने पर लटक गया।

'स्कूल कैसा रहा?' वो बुदबुदाईं ।

इस तरह यह शुरू होता। जरूरी सवाल और बेपरवाह जवाब। दोनों नाटक करते। बिना किसी उत्साह के वो दोनों वह पुराना घिसा-पिटा खेल खेलते ।

'स्कूल बढ़िया था।' लैला कहती।

'तुमने कुछ सीखा?'

'हमेशा की तरह।'

122 ख़ालिद हुसैनी

'तुमने खाया?'

'मैंने खाया।'

'अच्छा ।'

मम्मी ने फिर अपना सिर खिड़की की तरफ़ उठाया। उन्होंने आंखें सिकोड़ लीं और उनकी पुतलियां फड़फड़ाईं। उनके चेहरे का दाहिना हिस्सा लाल था और उस तरफ़ के बाल दब गए थे। 'मुझे सिर दर्द है।'

'आपके लिए एस्प्रिन ला दूं?'

मम्मी अपनी कनपटियों को मलते हुए बोलीं, 'अभी नहीं, बाद में। तुम्हारे अब्बा घर पर हैं?'

'अभी तो तीन ही बज रहे हैं।'

'ओ। सही। तुमने बताया तो था।' मम्मी ने जम्हाई ली। 'मैं अभी सपना देख रही थी,' उन्होंने कहा। उनकी आवाज़ चादर पर उनकी नाइटगाउन की सरसराहट से थोड़ी ही ऊंची थी। 'अभी तुम्हारे आने से पहले। लेकिन मुझे अब याद नहीं आ रहा है। क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा होता है?'

'ऐसा सबके साथ होता है मम्मी।'

'अजीब बात है।'

'मुझे आपको बता देना चाहिए कि जब आप सपने देख रही थीं उसी समय एक लड़के ने पानी वाली बंदूक से मेरे बालों पर पेशाब फेंक फेंकी।'

'क्या फेंका? क्या था? माफ़ करना ।'

'पेशाब । पेशाब ।'

'ये तो...ये तो भयानक है। खुदा। माफ़ करना। बेचारी। सुबह सबसे पहले मैं उससे बात करने जाऊंगी या शायद उसकी अम्मी से। हां, मुझे लगता है कि यही बेहतर होगा।'

'मैंने आपको नहीं बताया कि वह कौन था।'

'ओह। खैर, कौन था वो?'

'जाने दीजिए।'

'तुम गुस्सा हो?'

'आप तो मुझको लेने आने वाली थीं।'

'मैं आने वाली थी,' फटी हुई आवाज़ में मम्मी बोलीं। लैला नहीं समझ पाई कि क्या यह कोई सवाल था। मम्मी अपने बाल खींचने लगी। यह लैला

हजारों दमकते आफ़ताब 123

के जीवन के सबसे बड़े रहस्यों में से एक था कि मम्मी अपने वालों को खींचने के बावजूद अंडे की तरह गंजी होने से कैसे बची हुई थीं। 'उसके बारे में... क्या नाम है तुम्हारे उस दोस्त का, तारिक़? हां, क्या यह उसका काम है?'

'वो तो एक हफ़्ते के लिए बाहर गया हुआ है।'

'ओह ।' मम्मी ने अपनी नाक से गहरी सांस ली। 'क्या तुमने धो लिया?'

'हां।'

'यानी तुम साफ़ हो, तब।' मम्मी ने अपनी थकी हुई निगाह खिड़की की तरफ़ मोड़ी। 'तुम साफ़ हो और हर चीज़ ठीक है।'

लैला खड़ी हुई। 'मुझे अब होमवर्क करना है।'

'बेशक तुम करो। जाने से पहले पर्दे खींच दो मेरी जान,' मम्मी ने डूबती हुई आवाज़ में कहा। वो चादर के नीचे दुबक रही थीं।

लैला जब पर्दे के पास पहुंची तो उसने एक कार को अपने पीछे धूल के बादल उड़ाते हुए गुज़रते देखा। यह हेरात की लाइसेंस प्लेट वाली नीली बेंज़ थी, जो आख़िरकार जा रही थी। वह कार को तब तक देखती रही जब तक मोड़ पर गायब नहीं हो गई। उसकी पिछली खिड़की धूप में चमक रही थी।

हूँ।' 'कल मैं नहीं भूलूंगी,' पीछे से मम्मी उससे कह रही थीं। 'वादा करती

'आपने कल भी यह बात कही थी।'

'तुम नहीं जानतीं लैला ।'

'क्या नहीं जानती?' लैला ने अम्मी की तरफ़ अपना चेहरा घुमाया। 'मैं क्या नहीं जानती?'

मम्मी ने अपना हाथ सीने पर रखा और थपथपाया। 'कि यहां, यहां क्या है।' फिर उनका हाथ ढीला पड़ गया। 'तुम बस नहीं जानतीं।'

अट्ठारह

एक हफ़्ता गुज़र गया और तारिक़ का कोई अता-पता नहीं था। फिर एक और हफ़्ता आया और चला गया।

समय काटने के लिए लैला ने दरवाज़े की स्क्रीन को ठीक कर दिया, जिसे बाबी अभी तक नहीं ठीक कर पाए थे। उसने बाबी की किताबें उतारीं, उनकी धूल झाड़ी और फिर उनको नाम के पहले अक्षर के मुताबिक सजाया। वो हसीना, गीती और गीती की अम्मी नीला के साथ चिकन स्ट्रीट गई। नीला दर्जिन थी और कभी-कभी मम्मी के साथ सिलाई करती थी। उस हफ़्ते लैला । इस नतीजे पर पहुंची कि इनसान को जितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, उनमें से कोई उतनी तकलीफदेह नहीं होती जितना इंतजार करना होता है।

एक और हफ़्ता गुज़रा ।

लैला ने खुद को डरावने ख़यालों के जाल में उलझा हुआ पाया।

वह कभी नहीं लौटेगा। उसके अम्मी-अब्बू हमेशा के लिए चले गए हैं, गजनी का दौरा तो एक छल था। यह उन दोनों को परेशान करने वाली विदाई से बचाने के लिए बड़ों की योजना थी।

फिर से एक बारूदी सुरंग ने उसे शिकार बना लिया, जैसा उसने 1981 में किया था। तब वो पांच साल का था और आखिरी बार उसके अम्मी-अब्बू उसे दक्षिण में गजनी ले गए थे। यह लैला के तीसरे जन्मदिन के कुछ ही समय

हज़ारों दमकते आफ़ताब 125

बाद की बात है। तब वो किस्मत वाला था कि उसकी एक ही टांग गई थी और वो बच गया था।

उसके सिर में ये ख़याल उमड़-घुमड़ रहे थे।

तभी एक रात लैला ने सड़क से आती चमकती हुई रोशनी देखी। एक आवाज उसके होंठों से निकली जो चिल्लाहट और हांफते हुए बोलने के बीच की आवाज थी। उसने जल्दी से बिस्तर के नीचे से अपनी फ्लैशलाइट निकाल ली, लेकिन वह काम नहीं कर रहा था। लैला ने उसे अपनी हथेली पर पटका

और उसकी बैटरियों को कोसा। लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। वो लौट आया था। उसके आने पर उसे राहत मिली थी और वो चंचल हो गई थी। अपने बिस्तर के किनारे पर बैठे हुए वो उस खूबसूरत, पीली चमकती हुई रोशनी को जलते-बुझते देख रही थी।

अगले दिन तारिक़ के घर जाते हुए लैला ने सड़क की दूसरी तरफ़ खादिम और उसके दोस्तों के झुंड को देखा। खादिम उकडूं बैठा हुआ धूल में छड़ी से कुछ लकीरें खींच रहा था। जब उसने लैला को देखा तो उसने छड़ी गिरा दी और अपनी उंगलियां हिलाने लगा। उसने कुछ कहा और ठहाकों का दौर उठा। लैला ने सिर झुका लिया और तेज़ी से चलने लगी।

'ये क्या किया तुमने?' तारिक़ ने जब दरवाज़ा खोला तो लैला ने लगभग चिल्लाते हुए पूछा। तभी उसे याद आया कि उसके चाचा एक नाई थे।

तारिक़ ने हाल में गंजे हुए अपने सिर पर हाथ फेरा और मुस्कुराया।
उसके सफ़ेद और थोड़े उबड़-खाबड़ दांत दिखे ।

'अच्छा लगा?'

'ऐसे दिख रहे हो मानों तुमने फौज में नाम लिखा लिया है।'

'तुम इसे महसूस करना चाहती हो?' उसने अपना सिर झुकाया।

लैला को हथेली पर छोटे कड़े बालों का खुरचना अच्छा लगा। तारिक़ दूसरे लड़कों की तरह नहीं था जिनके बालों के नीचे नुकीली खोपड़ी और मांस की गांटें छुपी रहती हैं। तारिक का सिर पूरा गोल था और उसमें कोई गांठ नहीं थी।

जब उसने ऊपर देखा, तो लैला ने देखा कि तारिक़ के गाल और भौंहें धूप में झुलस गए थे।

126 ख़ालिद हुसैनी

'तुमको इतनी देर कैसे लगी?' लैला ने पूछा ।

'मेरे चाचा बीमार थे। आओ, भीतर आओ ।'

वो उसे गलियारे से होता हुआ दालान में ले गया। लैला इस घर की सारी चीजों को पसंद करती थी। दालान में बिछी फटी हुई पुरानी कालीन,

पलंग का कसीदाकारी किया हुआ लिहाफ, तारिक़ के जीवन की सामान्य अस्त-व्यस्तता, उसकी अम्मी के कपड़े के थान, रील में लगा कर रखी हुई सुइयां, पुरानी पत्रिकाएं और बजाए जाने का इंतजार करता हुआ कोने में रखा अकॉर्डियन।

'कौन है?'

यह तारिक़ की अम्मी थीं जो रसोई से पुकार रही थीं।

'लैला,' तारिक़ ने जवाब दिया।

उसने लैला के लिए कुर्सी खींची। दालान में भरपूर रोशनी थी और इसकी दोहरी खिड़कियां आंगन में खुलती थीं। खिड़की के ओटे पर खाली मर्तवान रखे हुए थे जिनमें तारिक़ की अम्मी बैंगन के आचार और गाज़र के मुरख्वे बनाती थीं।

'मतलब हमारी आरूस, हमारी बहू,' तारिक़ के अब्बा ने कमरे में दाखिल होते हुए ऐलान किया। वे एक बढ़ई थे जो सफ़ेद बालों के साथ साठ की उम्र पार कर चुके थे और अब झुक गए थे। उनके सामने के कुछ दांत टूटे हुए थे और उनकी आंखें भेंगी थीं, जो उन लोगों की होती हैं जो अपने जीवन का अधिकतर वक़्त बाहर काम करते हुए गुजारते हैं। उन्होंने अपनी वहिं खोलीं और लैला उनमें समा गई। उसे उनसे आती लकड़ी बुरादों की जानी-पहचानी और अपनेपन से भरी हुई गंध अच्छी लगती थी। उन्होंने लैला के गाल तीन वार चूमे।

'तुम उसे यह कहना जारी रखो और देखना कि वो यहां आना बंद कर देगी,' तारिक़ की अम्मी वहां आते हुए बोलीं। वो एक ट्रे लाई थीं जिसमें एक वड़ा सा कटोरा, एक कलछुल और चार छोटे कटोरे रखे हुए थे। ट्रे उन्होंने टेबल पर रख दी। 'बूढ़े आदमी की बातों का बुरा मत मानना।' उन्होंने अपनी हथेली में लैला का चेहरा थाम लिया। 'तुमको देखकर अच्छा लगता है प्यारी। आओ, वैठो। में अपने साथ कुछ भिगोए हुए फल लाई हूं।'

टेबल वहुत बड़ा था और हल्की, खुरदरी लकड़ी का बना था। तारिक के अब्वा ने इसे और दूसरी कुर्सियां वनाई थीं। इस पर एक हल्की हरी रंग

हजारों दमकते आफ़ताब 127

की मेज़पोश बिछी थी जिसमें गहरे गुलाबी रंग के चांद और तारे बने हुए थे। दालान की अधिकतर दीवार पर अलग-अलग उम्र के तारिक़ की तस्वीरें टंगी हुई थीं। उनमें से कुछ उसके शुरुआती बरसों के थे, जब उसके दोनों पैर सलामत थे।

'मैंने सुना कि आपके भाई बीमार थे,' लैला ने भीगी हुई किशमिश, पिस्ते और खुबानियों के कटोरे में चम्मच डलते हुए तारिक़ के अब्बा से पूछा।

वे सिगरेट जला रहे थे। 'हां, लेकिन अब वो ठीक है। खुदा का शुक्र है।'

'दिल का दौरा। दूसरी बार,' तारिक़ की अम्मी ने अपने शौहर को उलाहने से देखते हुए कहा।

तारिक़ के अब्बा ने सिगरेट जला ली और लैला की तरफ़ देख कर आंख मारी। लैला के मन में अचानक यह बात आई कि तारिक़ के अम्मी-अब्बू को आसानी से उसके दादा-दादी समझा जा सकता था। तारिक़ तब पैदा हुआ था जब उसकी अम्मी चालीस पार कर गई थीं।

'तुम्हारे अब्बा कैसे हैं प्यारी?' तारिक़ की अम्मी ने उसके कटोरे की तरफ़ देखते हुए पूछा।

लैला जब से तारिक़ की अम्मी को जानती थी, वो एक विग पहनती थीं। यह उम्र के साथ फीके जामुनी रंग में बदल गया था। आज यह उनकी भौंहों तक खिंच आया था और लैला उनकी कनपटियों के स्याह बालों को देख सकती थी। कभी-कभी विग उनकी ललाट के काफ़ी ऊपर रहती थी। लेकिन लैला को तारिक़ की अम्मी इसमें कभी भी दयनीय नहीं लगीं। लैला को उस विग के नीचे एक शांत, आत्मविश्वासी चेहरा, समझदार आंखें, खुशनुमा और सुकून से भरे तौर-तरीके दिखते।

'वे अच्छे हैं,' लैला ने कहा। 'बेशक अभी सिलो में ही हैं। वे अच्छे हैं।'

'और तुम्हारी अम्मी?'

'ये उनके अच्छे दिन हैं। कभी-कभी बुरे दिन भी आते हैं। वैसी ही हैं।'

'हां,' तारिक़ की अम्मी ने सोचते हुए कहा। उन्होंने अपनी चम्मच कटोरे में डाली। 'एक मां के लिए अपने बेटों से दूर रहना कितना तकलीफदेह होगा, कितना तकलीफदेह?'

'तुम दोपहर के खाने तक रुक रही हो?' तारिक़ ने पूछा।

128 ख़ालिद हुसैनी

'तुमको रुकना होगा,' उसकी अम्मी ने कहा। 'मैं शोरबा बना रही हूं।'

'मैं बोझ नहीं बनना चाहती।'

'बोझ तारिक़ की अम्मी बोलीं। 'हम हफ़्ते-दो हफ़्ते के लिए क्या गए कि तुम हमसे तकल्लुफ करने लगीं?'

'ठीक है, मैं रुक जाऊंगी,' लैला ने लाल पड़ते हुए मुस्कुरा कर कहा।

'यह तय रहा फिर।'

सच्चाई यह थी कि लैला को तारिक़ के घर खाना उतना ही पसंद था जितना नापसंद उसे अपने घर खाना था। तारिक़ के घर पर खाने का मतलब अकेले खाना नहीं होता, वे हमेशा एक परिवार के बतौर खाते। वे लोग बैंगनी रंग के प्लास्टिक के गिलास इस्तेमाल करते थे और उनकी सुराही में हमेशा नीबू के टुकड़े तैरते रहते थे, यह लैला को पसंद आता था। वे जिस तरह हरेक खाने की शुरुआत ताज़ी दही से करते और जिस तरह हरेक चीज़ पर, यहां तक कि दही पर भी खट्टे संतरे निचोड़ते, और जिस तरह वे सबके बारे में हल्के-फुल्के मज़ाक करते, ये सब लैला को पसंद आते थे।

खाते हुए बातचीत हमेशा जारी रहती। हालांकि तारिक़ और उसके अम्मी- अब्बू पश्तून थे, पर वे लैला की मौजूदगी में फ़ारसी बोलते थे। जबकि लैला उनकी अपनी पश्तो जुबान को कमोबेश समझ सकती थी, उसने स्कूल में इसे सीख रखा था। बाबी बताते थे कि ताजिकों और पश्तूनों में टकराव हुआ करता था। तारिक़ की कौम वाले ताजिक अल्पसंख्यक थे और पश्तून अफ़ग़ानिस्तान का सबसे बड़ा जातीय समुदाय था। ताजिक हमेशा अपमानित महसूस करते थे, बाबी ने बताया था। पश्तून बादशाहों ने ढाई सौ साल इस देश पर राज किया लैला, और ताजिकों ने 1929 में कुल मिला कर बस नौ महीन।

और आप, लैला ने पूछा। आप अपमानित महसूस करते हैं बाबी?

वाबी ने अपनी कमीज़ की किनारी से चश्मे के शीशे साफ़ किए। मेरे लिए यह बकवास है और यह बेहद खतरनाक बकवास है कि मैं ताजिक हूं और तुम पश्तून हो और वो आदमी हज़ारा है और वो औरत उज्बेक है। हम सब अफ़ग़ानी हैं और बस यही बात मायने रखनी चाहिए। लेकिन जब एक समूह दूसरे पर इतने लंबे अरसे तक हुकूमत करती है... तो अपमान जन्म लेता है। रंजिश पैदा होती है। होती ही है। हमेशा से होती रही है।

हजारों दमकते आफ़ताब 129

हो सकता है कि ऐसा हो। लेकिन लैला को तारिक़ के घर पर कभी यह महसूस नहीं हुआ, जहां कभी भी इन बातों का जिक्र नहीं उठता था। तारिक़ के घर पर वो हमेशा सहज महसूस करती, सरल, कबीले या जुबान के फ़र्क़ में या निजी नाराज़गियों और शिकायतों में उलझे बिना, जिन्होंने उसके अपने घर को गंदा कर रखा था।

'ताश का खेल कैसा रहेगा?' तारिक़ ने कहा।

'चलो, ऊपर चलते हैं,' उसकी अम्मी ने अपने शौहर के सिगरेट के धुएं के बादलों को नापसंदीदगी से हटाते हुए कहा। 'मैं शोरबा देखने जा रही हूं।' वो तारिक़ के कमरे में पेट के बल पड़े हुए बारी-बारी से पंजपार खेलते रहे। अपने पैरों को हवा में चलाते हुए तारिक़ ने अपने दौरे के बारे में लैला को बताया। उसने बताया कि कैसे उसने आडू के पौधे लगाने में अपने चाचा की मदद की। कैसे उसने एक धारीदार सांप को पकड़ा।

यह वो कमरा था जहां लैला और तारिक़ अपने होमवर्क करते, ताश के पत्तों से मीनारें बनाते और एक दूसरे की अजीबोगरीब तस्वीरें बनाते। अगर बारिश हो रही होती तो वे खिड़की के ओटे पर झुक कर गर्म, झागदार फैन्टा पीते और शीशे पर नीचे को सरकती फूली हुई बूंदों को देखते ।

'ठीक है, ये लो,' लैला ने पत्ते फेंटते हुए कहा। 'क्या चीज है जो दुनिया भर में घूम आती है लेकिन कोने में पड़ी भी रहती हैं?'

'रुको,' तारिक़ ने खुद को ऊपर खींचा और अपना नकली बायां पांव लटका दिया। दर्द से मुंह बनाते हुए वह कुहनी पर झुका हुआ करवट करके लेट

गया। 'मुझे वो तकिया देना।' उसने उसे अपने पांवों के नीचे रख लिया। 'हां, अब अच्छा है।'

लैला को याद आया जब पहली बार तारिक़ ने अपने कटे हुए पांव उसे दिखाए थे। तब वो छह बरस की थी। उसने तारिक़ के बाएं घुटने के ठीक नीचे उस तंग, चमकदार चमड़ी को एक उंगली से कोंचा था। उसकी उंगलियों को छोटी, सख़्त गांठें महसूस हुई थीं और तारिक ने उसे बताया था कि वे हड्डियों के सिरे हैं जो अंगों को काट कर अलग कर दिए जाने के बाद कभी कभी उग आते हैं। लैला ने पूछा था कि क्या उसका कटा हुआ पांव दुखता है तो उसने बताया था कि जब इसमें चोट लग कर घाव हो गया था और यह सूज गया था तो उसका नकली पांव उसमें नहीं आ रहा था, जैसे उंगली

130 ख़ालिद हुसैनी

दस्ताने में नहीं आती। और कभी कभी यह रगड़ जाता है। खासकर गर्म दिनों में। तब छाले पड़ जाते हैं लेकिन अम्मी क्रीम लगा देती है तो आराम मिलता है। यह उतना बुरा नहीं है।

लैला के आंसू निकल आए थे।

तुम क्यों रो रही हो? तारिक़ ने अपना पांव फिर से बांध लिया था।
तुमने इसे देखने को कहा था, रोतू लड़की! अगर मैं जानता कि तुम रोने लगोगी तो मैं दिखाता ही नहीं।

'एक कटा हुआ पांव,' तारिक़ ने कहा।

'क्या?'

'तुम्हारी पहेली थी। उसका जवाब है एक कटा हुआ पैर। हमें दोपहर के खाने के बाद चिड़ियाघर जाना चाहिए।'

'तुम इस पहेली के बारे में जानते थे। जानते थे ना?'

'बिल्कुल नहीं।'

'तुम धोखेबाज़ हो ।'

'और तुम जलती हो।'

'किससे?''

'मेरी मर्दाना समझदारियों से ।'

'तुम्हारी मर्दाना समझदारियां? सचमुच? बताओ मुझे कि शतरंज में हमेशा कौन जीतता है?'

'मैं तुमको जीत जाने देता हूं।' वो हंसा। दोनों जानते थे कि यह सच नहीं था।

'और हिसाब में कौन फेल हुआ था? हिसाब के होमवर्क के लिए तुम किसके पास मदद के लिए आते हो, जबकि तुम एक दर्जा आगे हो?'

'मैं दो दर्जा आगे होता अगर हिसाब मुझे ऊबा नहीं देता।'

'मेरा अंदाजा है कि भूगोल से भी तुम ऊबते हो।'

'तुम कैसे जानती हो? अब चुप रहो। तो क्या हम चिड़ियाघर जा रहे हैं या नहीं?'

लैला मुस्कुराई। 'हम जा रहे हैं।'

'अच्छा ।'

'मुझे तुम्हारी याद आती थी।'

हजारों दमकले आफ़ताब 131

दोनों चुप रहे। फिर तारिक़ उसकी तरफ़ नापसंदीदगी के साथ आधा मुस्कुराते हुए और आधा मुंह बनाते हुए मुड़ा। 'तुम्हारे भीतर क्या चल रहा

लैला को हैरानी हुई कि कितनी बार उसने, हसीना और गीती ने इन्हीं शब्दों को एक दूसरे को कहा था। जब वो दो या तीन दिनों तक नहीं मिलतीं तो कैसे वो बिना हिचक के एक दूसरे से यह बात कहतीं? मुझे तुम्हारी याद आई हसीना। ओह मैंने भी तुमको याद किया। तारिक़ के मुंह बनाने पर लैला जान गई कि इस मामले में लड़के लड़कियों से अलग होते हैं। वे दोस्ती को जाहिर नहीं करते हैं। वे इस तरह की बातों

की जरूरत, इसका तकाजा महसूस नहीं करते थे। लैला ने महसूस किया कि उसके भाइयों का भी ऐसा ही रवैया था। लैला देख रही थी कि लड़के दोस्ती को उसी तरह लेते थे जैसे वे सूरज को लेते थे, इसके होने में कोई दो राय नहीं थी, इसकी चमक खुशी देती थी लेकिन उसे सीधे देखा नहीं जा सकता था।

'मैं तुमको तंग करने की कोशिश कर रही थी,' लैला ने कहा। तारिक़ ने बगल से उस पर निगाह डाली। 'मैं तंग हुआ।'

लेकिन लैला ने सोचा कि तारिक़ का बना हुआ मुंह नर्म पड़ गया था। उसने सोचा कि शायद तारिक़ की कनपटियों के नीचे के बाल पल भर के लिए यहाँ हो गए थे।

लल्ला का इरादा उसे सबकुछ बताने का नहीं था। असल में उसने फैसला किया था कि उसको बताने का ख़याल बुरा है। किसी को चोट पहुंचेगी क्योंकि तारिक इसे यों ही नहीं जाने देता। लेकिन बाद में जब वे सड़क पर थे और बस स्टॉप की तरफ़ जा रहे थे तो लैला ने फिर से खादिम को दीवार से टेक लगाए हुए देखा। वह बेल्ट के लूपों में अंगूठे टिकाए अपने दोस्तों से घिरा हुआ था। वह लैला को चुनौती देते हुए मुस्कुरा रहा था।

और इसलिए उसने तारिक़ को बता दिया। वह खुद को रोक पाती, इससे पहले पूरी कहानी उसके मुंह से निकल गई।

'क्या किया उसने?'

उसने दोवारा बताया।

तारिक़ ने खादिम की तरफ़ इशारा किया। 'उसने? उसी ने? तुम्हें पूरा

132 ख़ालिद हुसैनी

यकीन है?'

'ज़रूर।'

तारिक़ ने अपने दांत भींचे और पश्तो में कुछ बुदबुदाया जिसे लैला समझ नहीं पाई। 'तुम यहीं रुको,' उसने अब फ़ारसी में कहा।

'नहीं, तारिकं-'

वह सड़क पार कर चुका था।

सबसे पहले उसे खादिम ने देखा। उसकी मुस्कान फीकी उड़ गई और वो दीवार से अलग हुआ। उसने बेल्ट के लूपों में से अंगूठे निकाले सीधा हुआ और खुद को तैयार किया। उसने खतरनाक दिखने की कोशिश की। दूसरों की नज़रें उसकी नज़रों के साथ हिलीं ।

लैला का मन किया कि उसने कुछ नहीं कहा होता। अगर वे सब मिल जाएं तो ? वे वहां कितने थे-दस? ग्यारह? बारह? अगर वे उसे चोट पहुंचा दें तो?

तारिक़ तब खादिम और उसके गिरोह से कुछ फुट पहले रुक गया। कुछ पल सोचने में गुज़रे, लैला ने सोचा कि शायद उसका मन बदल गया हो, और जब तारिक़ झुका तो उसने कल्पना की कि वो यह दिखाएगा कि उसके जूतों के फीते खुल गए हैं और वो उसकी तरफ़ लौट आएगा। तब उसके हाथ काम पर लगे और वो समझ गई।

दूसरे लोग भी समझ गए जब तारिक़ एक पांच पर सीधे खड़ा हुआ। जब खादिम पर अपना खुला हुआ नकली पांव तलवार की तरह ताने वो उसकी तरफ़ उछला ।

लड़के जल्दी से अलग हट गए। उन्होंने उसके लिए रास्ता बना दिया।
इसके बाद तो धूल, मुक्के, लातें और चीखें ही वहां बची थीं।

खादिम ने फिर कभी लैला को तंग नहीं किया।

अधिकतर रातों की तरह उस रात भी लैला ने टेबल पर सिर्फ दो लोगों के लिए दस्तरख्वान लगाई। मम्मी ने कहा कि उसे भूख नहीं थी। ऐसी रातों में बाबी के आने से भी पहले मम्मी अपने कमरे में खाने की प्लेट लेकर चली जाती थी। लैला और बाबी जब खाने बैठते उस समय तक मम्मी या तो सो चुकी होतीं या लेटी रहतीं।

हजारों दमकते आफ़ताब 133

बाबी बाथरूम से बाहर आए। घर लौटने पर उनके आटा लगे हुए बाल काले- सफ़ेद दिखते, जो अब धो कर साफ़ कर दिए गए थे और उनमें कंधी की गई थी।

'आज हम क्या खाने जा रहे हैं लैला?'

'बचा हुआ सूप।'

'लग तो बढ़िया रहा है,' जिस तौलिए से उन्होंने बाल सुखाया था, उसे मोड़ते हुए बाबी बोले। 'तो आज रात हम क्या पढ़ने जा रहे हैं? फ्रैक्शन के जोड़?'

'असल में फ्रैक्शनों को मिश्रित संख्याओं में बदलना सीखेंगे।' -

'आह। ठीक।'

हर रात खाने के बाद बाबी लैला को होमवर्क करने में मदद करते और उसे अपनी तरफ़ से कुछ और होमवर्क देते। उनका मकसद लैला को अपनी क्लास में एक-दो क़दम आगे रखना था, इसलिए नहीं कि वे स्कूल में मिले काम को पसंद नहीं करते थे, भले ही वहां प्रोपेगेंडा वाली पढ़ाई हुआ करती थी। असल में तो बाबी सोचते थे कि कम्युनिस्टों ने एक काम सही किया था-या कम से कम वे यह करना चाहते थे और यह विडंबना ही थी कि यह तालीम का काम था, जिस पेशे से उन्होंने बाबी को निकाला था। हुकूमत ने सारी औरतों के लिए तालीम की क्लासें लगाई थीं। बाबी बताते कि अब काबुल यूनिवर्सिटी के कुल छात्रों का दो तिहाई लड़कियां थीं। ये लड़कियां कानून, डॉक्टरी और इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही थीं।

औरतों को इस देश में काफ़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है लैला, लेकिन अब कम्युनिस्टों की हुकूमत के दौरान वे आजाद हैं और आज उनके पास इतने अधिकार हैं जितने पहले कभी भी नहीं रहे, यह बात बाबी हमेशा आवाज़ को धीमे करते हुए कहते। वे जानते थे कि मम्मी कम्युनिस्टों के बारे मैं अच्छी बातें बर्दाश्त नहीं करती थीं। बाबी कहते, लेकिन यह सही है कि अफ़ग़ानिस्तान में औरतों के लिहाज से यह एक बढ़िया वक़्त है। और तुम इसका फायदा उठा सकती हो लैला। बेशक औरतों को मिली आजादी और बाबी दुख में यहां अपना सिर हिलाते ये भी उन वजहों में से एक है, जिन वजहों से लोगों ने वहां हथियार उठा लिए हैं।

'वहां' से बाबी की मुराद काबुल नहीं था, जो हमेशा दूसरों के मुकाबले

1934 ख़ालिद हुसैनी

ज़्यादा उदार और तरक्कीपसंद हुआ करता था। यहां काबुल में औरतें यूनिवर्सिटी में पढ़ाती थीं, स्कूल चलाती थीं, सरकारी दफ्तरों में अफसर थीं। नहीं, बाबी का मतलब उन कबीलाई इलाकों से था, ख़ास कर दक्षिण में पश्तून इलाकों या पूरब में पाकिस्तानी सरहद से लगे हुए इलाकों से, जहां औरतें सड़कों पर मुश्किल से ही दिखती थीं और अगर कभी दिखती भी थीं तो वो भी बुर्के में और मर्दों के साथ। उनका कहने का मतलब था कि जिन इलाको में लोग पुराने कबीलाई कानूनों के तहत रह रहे थे, वहां के लोगों ने कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ बगावत कर दी थी। वे कम्युनिस्टों के फरमानों के ख़िलाफ़ थे जिनमें औरतों को आजादी दी गई थी, जबरन शादी को ख़त्म कर दिया गया था और शादी की उम्र को लड़कियों के लिए बढ़ा कर सोलह कर दिया गया था। बाबी बताते कि उन इलाकों में मर्दों ने इसे अपने सदियों पुराने रिवाज़ों के अपमान के रूप में देखा था कि सरकार उनको बताए वो भी ऐसी सरकार जो खुदा में यकीन नहीं करती हो कि उनकी लड़कियों को घर छोड़ कर स्कूल जाना होगा और मर्दों के साथ-साथ मिल कर काम करना होगा।

खुदा इससे बचाए! बाबी व्यंग्य में कहते। फिर वे गहरी सांस लेते और कहते, लैला, मेरी प्यारी, एक अफ़ग़ानी सिर्फ एक ही दुश्मन को नहीं हरा सकता, और वो दुश्मन है वो खुद ।

बाबी अपनी कुर्सी टेबल के करीब ले आए और उन्होंने सूप में रोटी डुबोई।

लैला ने फैसला किया था कि फ्रैक्शन पर काम शुरू करने के पहले खाते समय वो बाबी को बता देगी कि तारिक़ ने खादिम के साथ क्या किया था। लेकिन उसे मौक़ा ही नहीं मिला। क्योंकि तभी दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। दरवाज़े की दूसरी तरफ़ खड़ा वो अजनबी एक ख़बर लेकर आया था।

उन्नीस

'मुझे आपके अम्मी-अब्बू से बात करनी है दुख्तर जान,' लैला के दरवाज़ा खोलने पर उस आदमी ने कहा। वह एक तगड़ा, नाटा आदमी था

जिसका चेहरा तीखा और मौसम की मार खाया हुआ था। उसने धूसर रंग का कोट और सिर पर एक भूरा ऊनी पकोल पहन रखा था।

'क्या मैं उनको बता सकती हूं कि आप कौन हैं?'

तभी बाबी का हाथ लैला के कंधे पर पड़ा और हल्के-से उसने लैला को दरवाजे से खींच लिया।

'क्यों नहीं तुम ऊपर चली जातीं लैला? चलो, जाओ।'

सीढ़ियों की तरफ़ जाते हुए लैला ने सुना कि मिलने आने वाला बाबी को बता रहा था कि उसके पास पंजशेर से खबर है। मम्मी भी अब कमरे में आ गई थीं। उन्होंने एक हाथ से अपना मुंह दबा रखा था और उनकी आंखें बावी से होते हुए उस पकोल वाले आदमी पर आ-जा रही थीं।

लैला ने सीढ़ियों के ऊपर से झांका। उसने देखा कि वो अजनबी उसके अम्मी-अब्बू के साथ बैठा हुआ है। वो उनकी तरफ़ झुका। उसने दबी आवाज़ में कुछ कहा। तब बाबी का चेहरा सफ़ेद पड़ गया और सफ़ेद होता जा रहा था। वो अपने हाथों की तरफ़ देख रहे थे और मम्मी बिलख रही थीं और अपने वालों में आंसू बहा रही थीं।

136 ख़ालिद हुसैनी

अगली सुबह, फातिहा के दिन पड़ोस की औरतों का एक झुंड घर में दाखिल हुआ और उसने जनाजे के बाद रात में होने वाली ख़त्म की रस्म के लिए खाने की तैयारियों का जिम्मा उठा लिया। पूरी सुबह मम्मी पलंग पर बैठी रहीं। उनकी उंगलियों में रूमाल उलझा हुआ था और उनका चेहरा सूज गया था। सिसकती हुई औरतों का एक जोड़ा उनको मना रहा था। वो बारी बारी से मम्मी के हाथों पर सावधानी के साथ थपकियां दे रही थीं। मानो वह दुनिया की सबसे दुर्लभ और नाजुक गुड़िया हों। दूसरी तरफ़ ऐसा नहीं लग रहा था कि मम्मी उनकी मौजूदगी पर ध्यान दे रही थीं।

लैला अपनी अम्मी के सामने घुटनों के बल झुकी और उनका हाथ पकड़ लिया। 'मम्मी ।'

मम्मी की निगाह नीची हुई। उन्होंने पलकें झपकाईं।

'हम इनकी देख-भाल कर रही हैं लैला जान,' एक औरत ने खुद को अहमियत देने वाले लहजे में कहा। लैला पहले ऐसी मैयतों में जा चुकी थी जहां ऐसी ही औरतें किसी मौत के बाद घर में होनेवाला सारा काम बड़े मजे में करती थीं, तसल्ली देने के काम में माहिर ऐसी औरतें खुद सारे ज़िम्मे उठा लेती थीं और फिर किसी को भी उसमें हाथ नहीं लगाने देतीं।

'सव कावू में है। लड़की तुम जाओ और कोई दूसरा काम करो। अपनी अम्मी को रहने दो।'

परे हटा दी गई लैला को लगा कि उसकी कहीं ज़रूरत नहीं है। वो एक कमरे से दूसरे में फिरती रही। कुछ देर वो रसोई में मंडराई। हसीना और उसकी अम्मी आई, हसीना गर मामूली तरह से शांत और उदास लग रही थी, जो उसकी फितरत का हिस्सा नहीं था। गीती और उसकी अम्मी भी आईं। जब गीती ने लला को देखा तो वो उसकी तरफ दौड़ पड़ी और अपने पतले हाथों में लैला को लपेट लिया। लेला को हैरान करते हुए वो देर तक उसे कस कर गले लगाए रही। जब वो पीछे हटी जो उसकी आंखों में आंसू भरे थे। 'मुझे बहुत दुख हुआ बेला,' उसने कहा। लैला ने उसको शुक्रिया कहा। लड़कियों वाहर आंगन में तब तक बैठी रहीं जब तक किसी औरत ने उनको गिलासों को धोने और तरियों को टेवल पर सजाने का काम नहीं दे दिया।

बाबी भी वैमकसद घर में आते-जाते रहे मानो वो करने के लिए कोई काम खोज रहे हों।

हजारों दमकते आफ़ताब 137

'उनको मुझसे दूर रखो।' पूरी सुबह में मम्मी वस यही एक वार बोली थीं।

आख़िर में बाबी गलियारे में फोल्डिंग कुर्सी पर बैठ गए। वे उदास, अकेले और छोटे-से दिख रहे थे। फिर एक औरत ने उनसे कहा कि वो लोगों के रास्ते में आ रहे हैं। उन्होंने माफ़ी मांगी और अपने पढ़ने के कमरे में गायव हो गए।

उस दोपहर कारतेह-सेह से वो आदमी आया जिसे बाबी ने फातिहा पढ़ने के लिए बुला रखा था। औरतें घर में आई। लैला ने मम्मी के पास जाकर बैठी। यह बैठक के दरवाजे के पास की जगह थी, जहां रिवाज़ के मुताबिक मरने वालों के परिवार वाले बैठते थे। मातमपुर्ती करनेवालों ने दरवाजे के बाहर जूते उतारे, कमरे से गुज़रते हुए

जान-पहचान वालों को देख कर सिर हिलाए और फिर दीवार से लगा कर रखी गई कुर्सियों पर बैठ गए। लैला ने वाज्मा को देखा। यह वो बूढ़ी दाई थी, जिसने लैला को पैदा कराया था। उसने तारिक़ की अम्मी को भी देखा जिन्होंने अपनी विग के ऊपर काला दुपट्टा ओढ़ रखा था। उन्होंने लैला को देख कर सिर हिलाया और बंद होंठों से उदासी भरी मुस्कान दी।

कैसेट प्लेयर से एक आदमी नाक से निकलती आवाज़ में कुरान की आयतें पढ़ रहा था। बीच बीच में औरतें गहरी सांसें ले रही थीं, पहलू बदल रही थीं और नाक साफ़ कर रही थीं। लोग दबी हुई आवाज़ में खांस रहे थे, बुदबुदा रहे थे और कुछ-कुछ देर पर कोई नाटकीय तौर पर दुख के मारे सिसक उठता था।

रशीद की बीवी मरियम आई। उसने काला हिजाब पहन रखा था। हिजाब के नीचे से बालों की लटें उसकी भौंहों पर लटक रही थीं। वो लैला के सामने दीवार से लगी कुर्सी पर बैठ गई।

लैला की वगल में मम्मी आगे-पीछे हिल रही थीं। लैला ने मम्मी का हाथ अपनी गोद में रख रख कर अपने दोनों हाथों में पकड़ रखा था, लेकिन ऐसा नहीं लगता था कि मम्मी को इसकी ख़बर थी।

'क्या तुमको थोड़ा पानी चाहिए मम्मी?' लैला ने उनके कान में कहा। 'तुम्हें प्यास लगी है?'

138 ख़ालिद हुसैनी

लेकिन मम्मी ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने कुछ नहीं किया, बस आगे- पीछे हिलती रहीं और दरी को एक एकटक बेजान नजर से घूरती रहीं।

तभी मम्मी के पास बैठे हुए, कमरे भर में लोगों की झुकी हुई, उदास निगाहों को देखते हुए लैला को इसका अंदाजा हुआ कि उसके घर पर आई हुई तबाही कितनी बड़ी थी। संभावनाएं ख़त्म हो गई थीं। उम्मीदें मिट गई थीं।

लेकिन यह एहसास देर तक नहीं रहा। मम्मी के नुक़सान को महसूस करना। सचमुच में महसूस करना मुश्किल था। उन लोगों के मर जाने पर दुखी होना, दर्द उठाना लैला के लिए मुश्किल था, जिनके बारे में उसने कभी सचमुच में सोचा ही नहीं था कि वो जिंदा थे। अहमद और नूर उसके

लिए दादी-नानी की कहानियों की तरह थे। वे परीकथाओं के चरित्रों की तरह थे। इतिहास की किताबों के बादशाहों की तरह थे।

उसके लिए तो तारिक़ ही था जो सचमुच का, खून और मांस का बना हुआ इंसान था। जिस तारिक़ ने उसे पश्तो में कसमें खाना सिखाया था, जिसे नमक लगाई हुई लौंग की पत्तियां पसंद थीं, जो उनको चबाते हुए त्योरियां चढ़ाता और धीमी, दर्द भरी आवाजें निकालता, जिसकी कॉलरबोन के ठीक नीचे उल्टी मेंडोलिन की शक्ल का हल्का गुलाबी पैदाइशी निशान था।

इसलिए मम्मी की बगल में बैठी हुई लैला अहमद और नूर के लिए पूरे फर्ज़ के साथ मातम मना रही थी लेकिन उसके दिल में उसका सच्चा भाई ज़िंदा और सलामत था।

बीस

बाद के दिनों में मम्मी का पीछा करने वाली बीमारियों का दौर शुरू हो गया था। सीने और सिर में दर्द, जोड़ों का दुखना और रातों में पसीना आना, कानों को सुन्न कर देने वाला दर्द, ऐसी गांठें जिन्हें कोई पकड़ नहीं पाया। बाबी उनको डॉक्टर के पास ले गए, जिसने खून और पेशाब के नमूने लिए, मम्मी की देह की एक्स-रे कराई लेकिन देह में कोई भी बीमारी नहीं निकली।

मम्मी अधिकतर दिनों में बिस्तर में पड़ी रहतीं। वो काले कपड़े पहनतीं। वो अपने बाल नोचतीं और अपने होंठ के नीचे के तिल को चबातीं। जब मम्मी जगी रहतीं तो लैला को घर हैरानी से भरा हुआ लगता। वो हमेशा लैला के कमरे में आतीं मानो वो उन कमरों में चल कर देर-सबेर उन लड़कों को पकड़ लेंगी जहां कभी वे लड़के सोते थे, हवाएं निकालते थे और तकियों से लड़ते थे। लेकिन उन्हें मिलती केवल उनकी गैरमौजुदगी। और लैला। लैला को लगता कि मम्मी के लिए लैला का होना भी न होने के बराबर हो गया था।

बस मम्मी से उनकी पांचों वक़्त की नमाजें नहीं छूटीं। हर नमाज़ के आखिर में वे अपना सिर झुकाए, हथेलियां बांधे हुए खुदा से मुजाहिदीनों की फतह की दुआ मांगतीं। लैला के कंधों पर घर का ज़्यादा से ज़्यादा काम आ गया था। अगर वो घर की देखभाल नहीं करती तो उसे हर कहीं कपड़े, जूते, चावल के खुल हुए थैले, फलियों के डिब्बे और बासी खाना बिखरा हुआ मिलता। लैला मम्मी के कपड़े धोती और उनकी चादरें बदलती। वो उनको मनुहार कर

140 ख़ालिद हुसैनी

नहाने और खाने के लिए बिस्तर से उठा कर ले जाती। वही बाबी की कमीजें प्रेस करती और उनके पतलूनों को तह लगाती। अब वो दिन पर दिन रसोइया बनती जा रही थी।

कभी कभी घर का काम निबटा कर लैला मम्मी की बगल में उनके बिस्तर में घुस जाती। वो उनको अपनी बांहों में लपेट लेती, वो अपनी उंगलियां उनकी उंगलियों में फंसा लेती, उनके बालों में अपने चेहरे को डुबो देती। मम्मी हिलती-डुलतीं, कुछ बुदबुदातीं। और आख़िर में हमेशा ही वो अपने बेटों के बारे कोई कहानी शुरू कर देतीं।

एक दिन जब वे इसी तरह लेटे हुए थे तो मम्मी ने कहा, 'अहमद एक रहनुमा बनने जा रहा था। उसमें इसका हुनर था। उसकी उम्र से तीन गुना बड़े लोग उसकी बातें आदर से सुनते थे लैला। वह देखने लायक था। और नूर। ओह मेरे नूर। वो हमेशा इमारतों और पुलों के खाके खींचता रहता था। वो एक आर्किटेक्ट बनता, पता है? वो अपनी डिज़ाइनों से काबुल का हुलिया बदल देने वाला था। और अब दोनों शहीद हो गए हैं। मेरे बच्चे, दोनों शहीद हो गए।'

लैला वहां पड़े हुए सुनती रही और चाहती रही कि मम्मी इस पर गौर करें कि वो, लैला शहीद नहीं हुई है। कि वो जिंदा है, यहीं उनके साथ उनके बिस्तर में। कि उसकी अपनी उम्मीदें और भविष्य है। लेकिन लैला जानती थी उसके भविष्य का अपने भाइयों के अतीत से कोई मेल नहीं है। जब तक वो ज़िंदा थे, उस पर छाए हुए थे। मर कर वे लैला को तबाह कर देने वाले थे। मम्मी अब उनकी जिंदगियों के अजायबघर की देखरेख करनेवाली थीं और लैला वहां आने वाली एक तमाशबीन। वो उनके मिथकों को सही जगह पर रखने वाली एक औज़ार थी। वो चमड़े का वो टुकड़ा थी, जिस पर मम्मी का इरादा अपने शहीद बेटों की गाथाएं लिखना था।

'जो आदमी ख़बर लाया था, उसने बताया कि जब वे लड़के कैंप में लाए गए तो अहमद शाह मसूद ने खुद उनके कफन-दफन की देख-रेख की। उन्होंने उनकी कब्रों पर दुआ पढ़ी। तुम्हारे भाई इस कदर बहादुर थे लैला कि कमांडर मसूद ने खुद, पंजशेर के शेर ने, उन पर खुदा का करम हो, उनके कफन-दफन की देख-रेख की।'

मम्मी पीठ के बल लेट गई। लैला भी हिली और अपना सिर मम्मी के

हजारों दमकले आफ़ताब 141

तीने पर रख दिया।

'किसी दिन,' मम्मी ने भर्राई हुई आवाज में कहा, 'मैंने गलियारे में घड़ी की टिक-टिक सुनी। फिर मैंने उन सारी टिक-टिकों के बारे में, उन सारे मिनटों, घंटों, दिनों और हफ़्तों और महीनों और बरसों के बारे में सोचा जो मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। ये सारे दिन मेरे उन बच्चों के बिना आएंगे। और तब मैं सांस नहीं ले सकी लैला, मानो कोई मेरे दिल पर पांव रख कर खड़ा हो। मैं इतनी कमजोर हो गई हूं। मैं इतनी कमजोर हो गई हूं कि बस कहीं गिर जाना चाहती हूं।'

'मैं चाहती हूं कि मैं इसमें कुछ कर सकूं,' लैला ने पूरे दिल से कहा। लेकिन यह बात ऐसें ज़ाहिर हुई मानो यह किसी रहमदिल अजनबी की एक लापरवाह, दिखावे से भरी हुई तसल्ली हो।

'तुम एक अच्छी बेटी हो,' मम्मी ने गहरी सांस भरे के बाद कहा। 'और मैं तुम्हारे लिए अच्छी मां भी नहीं रही हूं।'

'ऐसा मत कहिए।'

'ओह। यह तो सच है। मैं जानती हूं और मुझे इस पर दुख है मेरी जान।'

'मम्मी?'

'म्म ।'

लैला मम्मी को देखती हुई बैठ गई। मम्मी के बालों में अब कुछ स्याह, हल्की काली धारियां भी थीं। और लैला यह देख कर धक से रह गई कि उसकी हमेशा की भारी-भरकम मम्मी का बज़न कितना गिर गया था। उनके गाल खोखले, दुबले दिख रहे थे। जो ब्लाउज़ उन्होंने पहन रखी थी, वो उनके कंधों पर झूल रही थी और उनकी गर्दन और ब्लाउज़ के कॉलर के बीच कितनी खाली जगह थी। इससे भी ज़्यादा लैला ने देखा मम्मी की शादी की अंगूठी उनकी अंगुली से फिसल गई थी।

'मैं आपसे कुछ पूछना चाहती थी, मम्मी।'

'क्या?'

'आप नहीं...' लैला ने बोलना शुरू किया।

उसने हसीना से इस पर बात की थी।हसीना की सलाह पर उन दोनों ने बोतल की सारी एस्प्रिन गटर में फेंक दी थी, रसोई की छुरियां और कबाब की नुकीली सीखें पलंग की दरी के नीचे चुपा दी थीं। हसीना को आंगन में

142 ख़ालिद हुसैनी

एक रस्सी मिली थी। जब बाबी अपना रेजर खोज रहे थे जो उनको नहीं मिल रहा था तो लैला को अपने डर के बारे में बताना पड़ा। वे पलंग के किनारे पर अपने दोनों हाथों को घुटनों में दबाए हुए ढह गए। लैला ने उनकी तरफ़ से किसी तरह के दिलासे का इंतजार किया। लेकिन वे बस खोए हुए, खाली आंखों से देखते रहे।

'आप नहीं... मम्मी मुझे फिक्र है कि-'

'मैंने इसके बारे में उस रात को सोचा था जिस रात हमें ख़बर मिली थी,' मम्मी ने कहा। 'मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगी। मैंने तब से इसके बारे में सोचा है। लेकिन नहीं। फिक्र मत करो लैला। मैं अपने बेटों के सपनों को पूरा होते हुए देखना चाहती हूं। मैं वह दिन देखना चाहती हूं जब सोवियत लोग अपमानित होकर घर लौटेंगे और मुजाहिदीन विजय हासिल करके काबुल में दाखिल होंगे। जब यह होगा, जब अफ़ग़ानिस्तान आज़ाद होगा तो मैं वहां रहना चाहती हूं, ताकि मेरे बेटे इसे देख सकें। वे इसे मेरी आंखों के ज़रिए देखेंगे।'

जल्दी ही मम्मी सो गईं और लैला को जज़्बात से जूझने को छोड़ गईं: उसे दिलासा मिली थी कि मम्मी का इरादा जीने का है, लेकिन उसे यह बात चुभ भी रही थी कि इस इरादे की वजह लैला नहीं है। वो अपनी मम्मी के दिल पर उस तरह से छाप नहीं छोड़ सकेगी जैसी छाप उसके भाइयों ने छोड़ी थी। क्योंकि मम्मी का दिल एक नीरस समुद्र तट जैसा है जहां लैला के पैरों के निशानों को दर्द की लहरें पोंछती-मिटाती हैं, पोंछती-मिटाती हैं।.

इक्कीस

सोवियत जीपों और हथियारबंद गाड़ियों के कारवां को रास्ता देने के लिए ड्राइवर ने अपनी टैक्सी किनारे कर ली। तारिक़ सामने वाली सीट पर ड्राइवर की ओर झुका और चिल्लाया, 'पाजालुस्ता! पाजालुस्ता!'

एक जीप की सीटी बजी और तारिक़ ने जवाब में खुश होकर और हाथ हिलाते हुए सीटी बजाई। 'इतनी प्यारी बंदूकें!' वो चिल्लाया। 'इतनी शानदार जीपें! इतनी शानदार फौज! कितना बुरा है कि तुम लोग गुलेल चलानेवाले किसानों से हार रहे हो!'

कारवां गुज़र गया। ड्राइवर वापस बीच सड़क पर आ गया। 'और कितनी दूर?' लैला ने पूछा। 'ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटा,' ड्राइवर ने बताया। 'अगर कोई कारवां या चेकपोस्ट नहीं मिला तो।'

लैला, बाबी और तारिक़ एक दिन के दौरे पर थे। हसीना भी आना चाहती थी, उसने अपने अब्बा से फरियादें कीं लेकिन उन्होंने इसकी इजाजत नहीं दी। यह दौरा बाबी का आइडिया था। हालांकि वे अपनी तनख्वाह से इसका खर्च मुश्किल से ही उठा सकते थे, लेकिन उन्होंने एक दिन के लिए ड्राइवर को भाड़े पर रखा। उन्होंने लैला को नहीं बताया था कि वो लोग कहां जा रहे हैं। उन्होंने बस इतना ही बताया था कि यह उसकी पढ़ाई के लिए मददगार होगा।

वे लोग सवेरे पांच बजे से सड़क पर थे। खिड़कियों से लैला के सामने

144 ख़ालिदहुसैनी

नजारा बदल रहा था, बर्फ से ढकी चोटियां रेतीली जमीन में बदलीं और फिर सीधी खड़ी वादियों और धूप में झुलसी चट्टानों में। रास्ते भर वे घास-फूस की छतों वाले मिट्टी के घरों और गेहूं के बंडलों से भरे हुए खेतों से होकर गुजरे। लैला ने धूल से भरे मैदानों में यहां-वहां खड़े कूची बंजारों के तंबू देखे। और कभी-कभी उसकी नजरों से सोवियत तोपों और टूटे हुए हेलीकॉप्टरों के अंजर-पंजर गुजरते। उसने सोचा कि यह अहमद और नूर का अफ़ग़ानिस्तान है। यह सूबा बहरहाल ऐसी जगह था जहां जंग लड़ी जा रही थी। यह काबुल नहीं था। काबुल में तो काफ़ी अमन था। उधर काबुल में तो अगर कभी-कभार फायरिंग नहीं हो जाती, सिगरेट पीते हुए सोवियत फौजी फुटपाथों पर नहीं चलते और सड़कों पर सोवियत जीपें नहीं उछलती-कूदतीं तो वहां जंग महज़ एक अफवाह मानी जाती।

दो चेकपोस्टों को पार करने के बाद ढलती सुबह में वे एक वादी में दाखिल हुए। बाबी सीट पर लैला की तरफ़ झुके और उसे दूर खड़ी पक्की ईंटों से बनी पुरानी दीवारों की एक कतार को दिखाया।

'इसे शहर-ए-ज़ोहक़ कहते हैं। यह लाल शहर है। यह एक किला हुआ करता था। नौ सौ साल पहले इसे हमलावरों से वादी की हिफाज़त के लिए बनाया गया था। चंगेज़ खान के पोते ने तेरहवीं शताब्दी में इस पर हमला किया लेकिन वो मारा गया। तब खुद चंगेज़ खान ने इसे तबाह कर दिया।'

'और मेरे नौजवान दोस्तों, यही हमारे देश की कहानी भी है। एक के बाद दूसरे हमलावर ।' ड्राइवर ने खिड़की के बाहर सिगरेट की राख झाड़ते हुए कहा। 'मकदूनियाई, सासानी, अरब, मंगोल। अब सोवियत आए हैं। लेकिन हम वहां खड़ी उन दीवारों की तरह हैं। जर्जर और देखने लायक कोई अच्छी बात हममें नहीं है लेकिन हम अब भी खड़े हैं। क्या यह सच नहीं है, बदर?'

'असल में यही सच है,' बाबी ने कहा।

आधे घंटे बाद ड्राइवर ने गाड़ी किनारे की।

'तुम दोनों आओ,' बाबी ने कहा। 'बाहर निकलो और देख लो।' वे टैक्सी से बाहर निकले। बाबी ने दिखाया। 'वो वहां। देखो ।'

तारिक़ हैरान रह गया। लैला भी। और वो जानती थी कि हो सकता है कि वो सौ बरस जिंदा रहे और ऐसी शानदार चीज फिर से न देख पाए।

हजारों दमकते आफ़ताब 145

दो विशालकाय, आसमान छूते बुद्ध वहां थे। लैला ने उनके फोटो देख कर जैसी कल्पना की थी, वे उससे भी कहीं ऊंचे थे। धूप में धुली हुई एक पहाड़ी चोटी में छेनी से गढ़े हुए वे बुद्ध उनकी ओर उसी तरह देख रहे थे जैसे लैला ने कल्पना की कि वे दो हज़ार साल पहले रेशम मार्ग पर वादी से गुजरते कारवांओं को देखा करते होंगे। उनकी दूसरी तरफ़ एक लटकती हुई चोटी थी जिसमें बड़ी गुफाएं थीं।

'मैं खुद को कितना छोटा महसूस कर रहा हूं।' तारिक़ ने कहा।

'तुम वहां चढ़ना चाहते हो?' बाबी ने कहा।

'मूर्तियों पर?' लैला ने पूछा। 'हम चढ़ सकते हैं?' बाबी मुस्कुराए और उनका हाथ पकड़ लिया। 'चलो, आओ।'

तारिक़ के लिए चढ़ाई मुश्किल थी, जिसे एक गोल, संकरी और हल्की रोशनी बाली सीढ़ी पर चढ़ते हुए बाबी और लैला को पकड़ कर एक एक इंच सरकना पड़ा। उन्होंने रास्ते में चोटी में बनी अंधेरी गुफाएं और मधुमक्खी के छत्तों जैसी सुरंगे देखीं।

'सावधानी से पांव रखना,' बाबी ने कहा। उनकी आवाज़ गूंज गई। 'ज़मीन धोखा दे सकती है।'

बुद्ध के शरीर में बने छेदों पर कुछ हिस्सों में सीढ़ी खुली हुई थी। 'नीचे मत देखो बच्चो। बस सीधे आगे देखते रहो।'

चढ़ते हुए बाबी ने उनके बताया कि बामियान नौवीं सदी में इस्लामी अरब हुकूमत के मातहत आने के पहले एक मज़बूत बौद्ध केंद्र हुआ करता था। पत्थर की यह चोटियां बौद्ध भिक्षुओं का घर हुआ करती थीं जिन्होंने इन चोटियों में गुफाएं खोदीं ताकि वे उनका इस्तेमाल रहने के लिए और थके हुए तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए कर सकें। बाबी ने बताया कि भिक्षुओं ने इन गुफाओं की दीवारों और छतों में खूबसूरत तस्वीरें बनाई हैं।

'एक समय तो,' उन्होंने बताया, 'इन गुफाओं में पांच हजार भिक्षु एकांतवासियों की तरह रह रहे थे।'

ऊपर पहुंचते-पहुंचते तारिक़ का दम फूल गया। बाबी भी हांफ रहे थे। लेकिन उनकी आंखें उत्तेजना से चमक रही थीं।

'हम अब इनके सिर के ऊपर खड़े हैं,' उन्होंने अपनी भौंहों को रूमाल

146 ी

से पोंछते हुए कहा। 'यहां ऐसी जगह है जहां से हम दूर-दूर तक का नजारा देख सकते हैं।"

वे ऊपर की एक चट्टान पर धीरे-धीरे आगे बढ़े और साथ-साथ खड़े हुए। बाबी के दोनों तरफ़ खड़े हुए बच्चे नीचे पसरी हुई वादी को देख रहे थे।

'देखो!' लैला ने कहा।

बाबी मुस्कुराया।

नीचे बामियान की वादी में हरे-भरे खेतों की कालीन बिछी थी। बाबी ने बताया कि वे सर्दियों की गेहूं और अल्फाल्फा की फसलें हैं। उनमें आलू की फसल भी है। खेतों की मेंड़ों पर पोपलार खड़े थे और उनके बीच में नालियां और सिंचाई के लिए गड्ढे बने हुए थे। उनके किनारों पर औरतों बैठी कपड़े धो रही थीं। बाबी ने ढलान पर बिछे हुए धान और जौ के खेतों को दिखाया। यह पतझड़ का मौसम था और लैला चमकीली ट्यूनिक पहने लोगों को मिट्टी की ईंटों वाले घरों की छतों पर सूखने के लिए अनाज डालते हुए देख सकती थी। शहर की तरफ़ जाने वाली मुख्य सड़क के दोनों किनारों पर भी पोपलार की कतारें थीं। गांव के उस पार, नदी और नाले के पार लैला को पहाड़ों का. नंगा और धूसर निचला हिस्सा दिख रहा था। उसके उस पार बर्फ़ से भरा हिंदुकुश था, जो अफ़ग़ानिस्तान की हर चीज़ के उस पार मौजूद था।

इन सबके ऊपर साफ़, बिना धब्बे वाला नीला आसमान था।

'यह इतना शांत है,' लैला ने सांस ली। वो छोटी भेड़ों और घोड़ों को देख सकती थी लेकिन उनका मिमियाना और हिनहिनाना नहीं सुन सकती थी।

'यहां के बारे में यही बात मुझे हमेशा याद रहती है,' बाबी ने कहा।
'खामोशी। इसकी शांति। मैं चाहता था कि तुम भी इसे महसूस करो। लेकिन मैं यह भी चाहता था कि तुम अपने देश की धरोहरों को देखो बच्चों, इसके समृद्ध इतिहास के बारे में जानो। देखो, कुछ चीजें मैं तुम्हें सिखा सकता हूं। कुछ चीजें तुम किताबों से जान सकते हो। लेकिन ऐसी चीजें भी हैं जिन्हें तुमको बस देखना और महसूस करना होता है।'

'देखो,' तारिक़ ने कहा।

उन्होंने एक गांव के ऊपर गोल-गोल ऊड़ते बाज को देखा।

'क्या आप कभी मम्मी को यहां लाए हैं?' लैला ने पूछा।

'ओह, कई बार। लड़कों के पैदा होने के पहले। बाद में भी। तुम्हारी

मां तब जोखिम उठाने वाली हुआ करती थीं, और... इतनी जीवंत। मैं अब तक जितने लोगों से मिला हूं, उनमें वो सबसे जीवंत और खुश रहने वाली इनसान थी।' वे याद करते हुए मुस्कुराए। 'क्या हंसती थी वो। मैं कसम खाकर कहता हूं मैंने इसी बात पर, उसकी हंसी के ऊपर उससे शादी की थी लैला। वह तुमको हिला कर रख देती। तुम उसके आगे टिक नहीं सकतीं।'

स्नेह की एक लहर लैला पर छा गई। इसके बाद उसने बाबी को हमेशा इसी तरह याद किया: चट्टान पर कुहनी टिका कर, अपनी ठोढ़ी को दोनों हथेलियों में थामे, मम्मी की पिछली बातों के बारे में बताते हुए बाबी, जिनके बाल हवा में उड़ रहे थे और आंखें धूप में सिकुड़ी हुई थीं।

'मैं कुछ गुफाएं देखना चाहता हूं,' तारिक़ ने कहा। 'सावधानी से,' बाबी ने कहा। 'मैं सावधान रहूंगा काका जान,' तारिक़ की आवाज़ गूंजी। लैला को नीचे काफ़ी दूर बाड़ से बंधी हुई एक गाय के पास तीन लोग वातें करते हुए दिखे। उनके चारों ओर के पेड़ों का रंग पीला हो रहा था और

संतरे का लाल।

'मुझे लड़के भी याद आते हैं, पता है,' बाबी ने कहा। उनकी आंखें पूरी ऊपर थीं। उनकी ठोढ़ी कांप रही थी। 'हो सकता है कि मैं नहीं... तुम्हारी अम्मी की खुशियां और उदासी दोनों ही चरम पर पहुंच जाती हैं। वो इनको छुपा नहीं पाती। वह कभी ऐसा नहीं कर पाई। मैं, मुझे लगता है कि मुझमें फ़र्क़ है। मेरा रुझान... लेकिन लड़कों की मौत ने मुझे भी तोड़ दिया है। मुझे भी उनकी याद आती है। एक भी दिन ऐसा नहीं गुज़रता कि मैं... यह बहुत मुश्किल है लैला। इतना मुश्किल है।' उन्होंने अपनी आंखों के भीतरी कोनों को उंगली के पोरों और अंगूठे से दबाया। जब उन्होंने बात करने की कोशिश की तो उनकी आवाज़ टूटी हुई थी। उन्होंने अपने होंठों को अपने दांतों पर चढ़ा लिया और इंतज़ार किया। उन्होंने एक लंबी, गहरी सांस ली और उसे देखा। 'लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे पास तुम हो। हर रोज़ मैं तुम्हारे लिए खुदा का शुक्रिया अदा करता हूं। हर रोज़। कभी-कभी जब तुम्हारी अम्मी का मिजाज सचमुच में बहुत ही खराव होता है तो मुझे लगता है कि मेरे पास बस तुम्हीं हो, लैला ।'

लैला उनके करीब चली आई और उसने अपने गालों को उनके सीने

148 ख़ालिद हुसैनी

पर टिका दिया। बाबी थोड़े भौंचक लगे मम्मी के उलट वे अपना लगाव शारीरिक रूप से जाहिर नहीं करते थे। उन्होंने लैला के ललाट पर हल्के से चूम लिया और उसे अटपटे तरीके से गले लगाया। वे कुछ देर तक इसी तरह खड़े रहे और नीचे बामियान की वादी को देखते रहे।

'मैं इस जगह को जितना प्यार करता हूं, कभी-कभी मैं इसे छोड़ कर चले जाने के बारे में सोचता हूं,' बाबी ने कहा।

'कहां जाने के लिए?'

'कहीं भी, जहां भूलना आसान हो। मेरा अंदाज़ा है कि पहले तो पाकिस्तान। शायद एक या दो बरसों के लिए। वहां रह कर आगे जाने के लिए कागुजी कार्रवाई का इंतज़ार करूंगा।'

'और तब?'

'और तव खैर, यह एक बहुत बड़ी दुनिया है। शायद अमेरिका। समंदर के करीब कोई जगह। जैसे कि कैलीफोर्निया ।'

बाबी ने बताया कि अमेरिकी बहुत खुले दिल वाले लोग हैं। वे कुछ समय तक पैसे और खाने से मदद करते हैं जब तक कि हम अपने पैरों पर न खड़े हो जाएं।

'मैं काम खोज लूंगा और कुछ बरसों में जब हम काफ़ी बचत कर लेंगे तो हम एक छोटा-सा अफ़ग़ानी रेस्टोरेंट खोल लेंगे। गौर करना कि ज़्यादा सजावटी नहीं, बस एक छोटी-सी जगह जहां कुछ टेबल, कुछ दरियां होंगी। शायद कावुल की कुछ तस्वीरें भी हों। हम अमेरिकियों को अफ़ग़ानी खाने का मज़ा देंगे। और तुम्हारी अम्मी के बनाए खाने से तो खाने वालों की सड़क पर कतार लग जाएगी।

'और तुम, वेशक तुम स्कूल जाना जारी रखोगी। तुम जानती हो कि मैं इसके बारे में क्या सोचता हूं। यह हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता होगी कि तुमकां अच्छी तालीम मिले। हाई स्कूल के बाद कॉलेज। लेकिन अपने खाली वक़्त में अगर तुम चाहो तो ऑर्डर लेने में, पानी के डिब्बे भरने में, ऐसी ही चीज़ों में हमारी मदद कर सकती हो।'

बाबी ने कहा कि वे रेस्टोरेंट में जन्मदिन की दावतें, सगाइयों का जश्न, नए साल के जमावड़े करेंगे। यह दूसरे अफगानियों के लिए भी मिलने-जुलने का एक अड्डा बन जाएगा जो उनकी तरह जंग की वजह से वहां चले आएंगे।

हजारों दमकते आफ़ताब 149

और देर रातों में सबके चले जाने पर, जगह साफ़ करने के बाद वे तीनों खाली टेबलों के बीच बैठे चाय पीऐंगे। तब वे थके हुए होंगे लेकिन अपनी अच्छी किस्मत के लिए शुक्रगुज़ार भी होंगे।

बात ख़त्म कर बाबी चुप हो गए। वे दोनों ही चुप थे। वे जानते थे कि मम्मी कहीं नहीं जानेवालीं। अफ़ग़ानिस्तान को छोड़ने के बारे में वे तब भी सोच नहीं सकती थीं जबकि अहमद और नूर अभी जिंदा थे। अब जब वे शहीद हो गए थे तो सामान समेट कर चले जाना तो उससे भी बुरा अपमान होता। उनके बेटों ने जो कुरबानी दी थी, यह उनके साथ गद्दारी और बेपरवाही होती ।

तुम इसके बारे में सोच भी कैसे सकते हो? लैला मम्मी को यह कहते हुए सुन सकती थी। क्या उनके मारे जाने का तुम्हारे लिए कोई मतलब नहीं है भाईजान? मुझे बस यही जान कर तसल्ली मिल जाती है कि मैं उसी ज़मीन पर चल रही हूं जिनमें उनका खून जज़्ब है। नहीं। कभी नहीं।

और लैला जानती थी कि बाबी उनके बगैर कभी नहीं जाएंगे। भले ही मम्मी उनके लिए अब बीवी उतनी नहीं रह गई थीं जितनी वो लैला की अम्मी थीं। वो दिन में देखे गए इन सपनों को मम्मी की खातिर उसी तरह झाड़ देते जैसे वे काम से घर लौटने के बाद अपने कोट से आटा झाड़ते थे। और इसलिए वे यहीं रहेंगे। जंग ख़त्म होने तक वे इंतज़ार करेंगे। और जंग के बाद भी जो सामने आएगा उसके लिए वे यहीं रहेंगे।

लैला को याद आया कि एक बार मम्मी बाबी से कह रही थीं कि उन्होंने एक ऐसे आदमी से शादी की थी जो अपने विचारों का पक्का नहीं था। मम्मी नहीं समझी थीं। वो नहीं समझी थीं कि अगर वो शीशे में देखतीं तो पातीं कि वो एक ऐसे आदमी थे जो पूरी जिंदगी एक अडिग और मज़बूत विचार पर टिके हुए थे वो हमेशा मम्मी का ख़याल रखते थे।

उबले हुए अंडों और आलुओं के साथ रोटी खाने के बाद तारिक्त ने शोर मचाती हुई वहती धारा के किनारे एक पेड़ के नीचे झपकी ली। उसने

अपने कोट को सफाई के साथ मोड़ कर तकिया बनाया और सोते हुए उसने अपने हाथ सीने पर बांध लिए। ड्राइवर बादाम ख़रीदने के लिए गांव में चला गया। बाबी मोटे तने वाले अकासिया के पेड़ की जड़ों पर बैठ कर एक पेपरबैक पढ़ने लगे ।

150 ख़ालिद हुसैनी

लैला इस किताब के बारे में जानती थी। यह सांतियागो नाम के एक बूढ़े मछुआरे की कहानी कहती थी जिसने एक बहुत बड़ी मछली पकड़ ली थी। नाव को महफूज जगह पर पहुंचाने तक उसकी मछली का कुछ भी हिस्सा नहीं बचा था। शार्कों ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे।

लैला ने नाले के किनारे बैठ कर अपने पांव उसके ठंडे पानी में उतार दिए। ऊपर मच्छर भनभना रहे थे और भूए नाच रहे थे। एक पतंगे ने पास में ही पर मारे। लैला को घास की एक पत्ती से दूसरी पर उड़ते हुए इसके परों पर चमकती धूप की एक झलक मिली। पहले वे जामुनी लगे, फिर हरे, नारंगी। नाले के पार मुकामी हज़ारा लड़कों का एक झुंड जमीन पर से गाय के सूखे हुए गोबर के टुकड़े बीन कर अपनी पीठ पर बंधी झोली में जमा कर रहा था। कही कहीं गधे घूम रहे थे। एक जेनरेटर चल रहा था।

लैला ने फिर से बाबी के छोटे-से सपने के बारे में सोचा। समंदर के करीब किसी जगह।

कुछ था, जिसे लैला ने बुद्ध के ऊपर खड़े हुए बाबी को नहीं बताया था। वह ये बात थी कि एक तरह से अच्छा ही था कि वे नहीं जा सकते थे। उसे गीती और उसके खुशी से चमकते चेहरे की बहुत कमी महसूस होती, हां और हसीना की भी। उसके साथ की पागलपन से भरी हंसी और निर्मम मज़ाकों की कमी महसूस होती। लेकिन सबसे ज़्यादा लैला को याद आई तारिक़ के बिना बिताए गए उन चार हफ़्तों की बेचैनी जब वो गज़नी चला गया था। उसे याद आया कि किस तरह उसके बिना समय घिसट-घिसट कर बीतता था और कैसे उसे लगता था कि वो भटक गई है, उसने संतुलन खो दिया है। वो हमेशा के लिए तारिक़ से अलग हो जाने को कैसे बर्दाश्त कर पाएगी?

शायद ऐसे देश में किसी के करीब रहने की ऐसी ज़बर्दस्त इच्छा बेतुकी हो, जहां उसके अपने भाइयों को गोलियों ने छलनी कर दिया था। लेकिन लैला को बस वह दृश्य याद करने भर की देर थी जिसमें तारिक़

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सड़क से दूर कर रहे थे। कभी-कभी उनको चेतावनी में गोलियां दागनी पड़तीं।

मम्मी ने अहमद और नूर की एक तस्वीर अपने सिर के ऊपर उठा रखी थी। यह वो तस्वीर थी, जिसमें वे नाशपाती के पेड़ के नीचे पीठ से पीठ सटाए बैठे हुए थे। उनकी तरह दूसरी औरतों ने भी अपने शहीद शौहरों, बेटों, भाइयों की तस्वीरें उठा रखी थीं।

किसी ने लैला और हसीना के कंधे थपकाए। यह तारिक़ था। 'तुम्हें यह चीज़ कहां से मिली?' हसीना जोश में चिल्लाई।

'मैंने सोचा कि मौके के हिसाब से पहन कर जाऊं।' तारिक़ ने कहा। उसने एक बड़ी-सी रूसी फर की टोपी पहन रखी थी। उसमें कान के फीते भी लगे थे जिनको तारिक़ ने खींच रखा था। 'मैं कैसा दिख रहा हूं?'

हजारों दमकते आफ़ताब 153

'अजीब,' लैला हंसी।

'यही तो आइडिया है।'

'तुम्हारे अम्मी-अब्बू ऐसी पोशाक में तुम्हारे साथ आए हैं?'

'वे घर पर हैं, असल में,' उसने कहा।

पिछले पतझड़ में गजनी में तारिक़ के चाचा दिल के दौरे से गुज़र गए और कुछ हफ़्तों के बाद तारिक़ के अब्बा को भी दिल का दौरा पड़ा। इसके बाद वे कमजोर हो गए, जिन पर अब हफ़्तों लंबे उत्तेजना और निराशा के दौरे पड़ते थे। लैला तारिक़ को ऐसे देख कर खुश थी। उसे पुराने, आत्मविश्वांसी तारिक़ को फिर से पाकर अच्छा लगा। अपने अब्बा की बिमारी के बाद हफ़्तों लैला ने उसे फटेहाल, मुंह लटकाए और चुप-चुप सा देखा था।

चे तीनों घूमने-फिरने लगे जबकि मम्मी और बाबी खड़े सोवियतों को देखते रहे। सड़क पर एक फेरी वाले से तारिक़ ने उबली हुई फलियों की एक प्लेट ख़रीदी, जिसके ऊपर धनिए की खूब सारी चटनी लगी थी। दरियों की एक बंद दुकान के सामने बैठ कर उन्होंने उसे खाया। इसके बाद हसीना अपने घर वालों को खोजने चली गई।!

घर लौटने के सफ़र में तारिक़ और लैला उसके अम्मी-अब्बू के पीछे बैठे। मम्मी खिड़की के पास बैठी हुई बाहर देख रही थीं। तस्वीर को उन्होंने अपने सीने से चिपका रखा था। उनकी बगल में बिना कोई भाव लिए बाबी एक आदमी की बातें सुन रहे थे जो यह कह रहा था कि भले ही सोवियत चले गए हों, लेकिन वे नजीबुल्लाह को हथियार भेजते रहेंगे।

'वो उनकी कठपुतली है। वो उसकी ज़रिए जंग को जारी रखेंगे, तुम चाहो तो शर्त लगा सकते हो।'

अगली कतार में किसी ने अपनी दलील शुरू कर दी।

मम्मी खुद से ही बुदबुदा रही थीं। ये एक ही सांस में कही जा रही उनकी दुआएं थीं जिसके आख़िरी के कुछ शब्द छोटी, तेज़ चीखों में बदल जाते थे।

बाद में उस दिन लैला और तारिक़ सिनेमा पार्क गए और एक सोवियत फ़िल्म देखी जो फ़ारसी में डब किए जाने से अनजाने में ही हास्यास्पद हो गई थी। उसमें एक सौदागर जहाज़ दिखाया गया था, जिसका फर्स्ट भेट कैप्टन की बेटी

154 ख़ालिद हुसैनी

के प्यार में पड़ जाता है। लड़की का नाम अल्योना है। फिर एक भयानक तूफान आता है, बिजली कड़कती है और बारिश होने लगती है, जिससे जहाज समुद्र में हिलकोरें खाने लगता है। डरे हुए जहाजी चीखते हुए कुछ कहते हैं, जिसका अनुवाद करते हुए एक शांत अफ़ग़ानी आवाज कहती है: 'मेरे प्रिय महाशय, क्या आप रस्सी हमें देंगे?'

यहां तारिक्त की खिलखलाहट फूट पड़ी। और जल्दी ही वो दोनों हंसी के निर्बाध हमले की गिरफ्त में थे। जब एक थक जाता कि तभी दूसरे की नाक से आवाज उठती और फिर हंसी का दूसरा दौरा शुरू हो जाता। दो कतार आगे बैठा एक आदमी उनकी तरफ मुड़ा और उसने उनको चुप रहने का इशाग किया।

अंत में एक शादी का सीन था। कैप्टन ने इल्योना को फर्स्ट मेट से शादी करने की इजाजत दे दी थी। नया-नया शादीशुदा जोड़ा एक दूसरे को देखते हुए मुस्कुरा रहा था। हर कोई वोदका पी रहा था।

'मैं कभी शादी नहीं करूंगा,' तारिक़ फुसफुसाया ।

'मैं भी नहीं,' लैला ने कहा, लेकिन यह बात वो पल भर के लिए असहज हुए और हिचके बगैर नहीं कह पाई। उसे फिक्र हुई कि उसकी आवाज़ से तारिक़ की बात पर उसकी निराशा जाहिर न हो जाए। बैठ रहे दिल के साथ उसने यह बात जोड़ी, 'कभी नहीं।' इस बार उसने बात पर ज़्यादा ज़ोर दिया।

'शादियां बेवकूफ़ी हैं।'

'पूरी बकवास ।'

'इतना सारा पैसा खर्च होता है।'

'किस पर?'

'ऐसे कपड़ों पर जिन्हें आप फिर कभी नहीं पहनेंगे।'

'हा!'

'अगर मैं कभी शादी करूंगा,' तारिक़ ने कहा, 'तो लोगों को शादी के स्टेज पर तीन लोगों के लिए जगह बनानी पड़ेगी। मेरे लिए, मेरी दुल्हन के लिए और एक उस आदमी के लिए जो मेरे सिर में गोली मारेगा।'

सामने की कतार वाले उस आदमी ने उस पर गुस्से से भरी हुई निगाह डाली।

पर्दे पर अल्योना और उसके नए शौहर एक दूसरे को होंठों पर चूम रहे

हजारों दमकते आफ़ताब 155

थे।

चुंबन को देखते हुए लैला को एकबारगी लगा कि अजीव तरह से वो सबके सामने जाहिर हो गई है। वह अपने उछलते हुए दिल और कानों में शोर मचाते खून और अपनी बगल में बैठे हुए तारिक़ के प्रति सचेत हो गई। वो तन कर स्थिर बैठा हुआ था। चुंबन लंबा खिंच गया। लैला को अचानक यह बात बेहद जरूरी लगने लगी कि वो हिले नहीं और न ही कुछ बोले । उसने महसूस किया कि तारिक़ उसे उसी तरह देख रहा था, जैसे वो तारिक़ को देख रही थी। तारिक़ की एक आंख चुंबन पर थी और दूसरी

लैला पर। उप्तने जानना चाहा कि क्या वो उसकी नाक से ज़ोर-ज़ोर से निकलती हवा को सुन रहा था और किसी हल्की-सी गलती का, किसी अनियमितता का इंतजार कर रहा था जो उसके मन में उमड़ रहे ख़यालों को ज़ाहिर कर देती।

और तारिक़ को चूमना, अपने होंठों पर उसके होठों के ऊपर के नर्म घुंघराले बालों को महसूस कहना कैसा होगा?

तब तारिक़ अपनी सीट पर बेचैनी से हिला। तनाव से भरी हुई आवाज़ में उसने कहा, 'क्या तुम जानती हो कि अगर तुम साइबेरिया में गुलेल से पत्थर छोड़ो तो धरती पर गिरने से पहले वह जम कर बर्फ़ हो जाएगा?'

वे दोनों हंस पड़े लेकिन इस बार की हंसी कम देर की और असहज थी। और जब फ़िल्म ख़त्म हुई और वे बाहर निकले तो लैला ने यह देख कर राहत महसूस की कि आसमान में अंधेरा छा गया था और उसे दिन की जगमगात्ती रोशनी में तारिक़ से आंखें नहीं मिलानी पड़ेंगी।

तेईस

अप्रैल, 1992

तीन साल गुज़र गए।

इस बीच तारिक़ के अब्बा को एक के बाद एक दौरे पड़े। इससे उनका बायां हाथ बेजान हो गया और उनकी आवाज़ में हल्की-सी लड़खड़ाहट आ गई। जब उनका मिज़ाज़ ख़राब होता, और उनका मिजाज अक्सर ही ख़राब होता, तो उनकी लंड़खड़ाहट बेहद बढ़ जाती ।

तारिक़ का नकली पांव फिर से छोटा पड़ गया था और उसे रेड क्रॉस से नया पैर मिल गया था। हालांकि इसके लिए उसे छह महीने तक इंतज़ार करना पड़ा था।

जैसा हसीना को डर था, उसका परिवार उसे लाहौर लेकर गया, जहां उसके ऑटो की दुकान वाले उसके चचेरे भाई से उसकी शादी कर दी गई। जिस सुबह वो काबुल से रवाना हो रहे थे, लैला और गीती हसीना के घर उसे विदा कहने गई थीं। हसीना ने उनको बताया कि उसके चचेरा भाई, यानी उसका. होने वाला शौहर जर्मनी जाने की तैयारियां शुरू कर चुका है, जहां उसके भाई रहते थे। उसने लगा था कि साल भर के भीतर वे फ्रैंकफर्ट में होंगे। इसके बाद वे तीनों गले मिल कर रोई थीं।

लैला ने हसीना को आखिरी बार तब देखा जब हसीनाके अब्बा उसे एक भरी हुई टैक्सी की पिछली सीट पर बैठा रहे थे।

सोवियत संघ इतनी जल्दी बिखर गया कि लोग हैरान रह गए। लैला

हज़ारों दमकते आफ़ताब 157

को ऐसा लगता कि हर कुछ हफ़्ते में बाबी आज़ादी का ऐलान करने वाले हालिया गणतंत्रों की ख़बरों के साथ आते थे। लिथुआनिया। एस्टोनिया। यूक्रेन। केमलिन पर से सोवियत झंडा उतार लिया गया। रूसी गणराज्य का जन्म हुआ ।

काबुल में नजीबुल्लाह ने चालें बदलीं और खुद को एक ईमान वाले मुसलमान के रूप में पेश करने की कोशिश की। 'यह काफ़ी नहीं है और बहुत देर हो चुकी है,' बाबी ने कहा। 'ऐसा नहीं हो सकता कि आप एक दिन खाद के मुखिया रहें और अगले दिन मस्जिद में जाकर उन लोगों के साध नमाज़ पढ़ें जिनके रिश्तेदारों को आपने यातनाएं दी हों और मार डाला हो।' काबुल के गिर्द कस रहे फंदे को महसूस करते हुए नजीबुल्लाह ने | मुजाहिदीनों के साथ एक समझौता करने की कोशिश की लेकिन मुजाहिदीनों ने इसे ठुकरा दिया।

अपने बिस्तर पर से मम्मी ने कहा, 'उनके लिए अच्छा हुआ।' वे रात-रात भर मुजाहिदीनों के लिए जागतीं और उनकी परेड का इंतजार करतीं। वे अपने बेटों के दुश्मनों की हार का इंतज़ार कर रही थीं।

और आखिरकार वे हारे। यह अप्रैल, 1992 में हुआ, जब लैला चौदह साल की हुई।

'नजीबुल्लाह ने आखिरकार आत्मसमर्पण कर दिया और उसे शहर के दक्षिण में दारुलामान महल के करीब संयुक्त राष्ट्र के परिसर में पनाह मिली।

जिहाद पूरा हो गया था। लैला के पैदा होने वाली रात के बाद से जितनी कम्युनिस्ट हुकूमतें आई थीं, वो सारी हराई जा चुकी थीं। मम्मी के हीरो, अहमद और नूर के जंगी भाई जीत गए थे। और अब हरेक चीज को कुर्बान कर चुकने, अपने परिवारों को पहाड़ों में जीने के लिए छोड़ने और अफ़ग़ानिस्तान की संप्रभुता के लिए अपनी लड़ाई के एक दशक के बाद मुजाहिदीन काबुल आ रहे थे।

मांस, खून और जंग में थकी हुई हड्डियों के साथ सचमुच के मुजाहिदीन । मम्मी उन सबको उनके नाम से जानती थी।

उनमें शानदार उज़्बेक कमांडर दोस्तम थे जो जुंबिश-ए-मिल्ली गुट के रहनुमा थे। उनको अपनी वफादारियां बदलते रहने की शोहरत हासिल थी। उग्र और वदमिजाज़ गुलबुद्दीन हिक़मतियार थे जो हिज़्ब-ए-इस्लामी गुट के नेता

158 ख़ालिद हुसैनी

थे। वे एक पश्तून थे, जिन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी और एक बार एक माओवादी छात्र की हत्या कर दी थी। उनमें जमात-ए-इस्लामी गुट के ताजिक नेता रब्बानी थे जो बादशाहत के दिनों में काबुल यूनिवर्सिटी में इस्ताम पढ़ाया करते थे। पगमान के एक पश्तून सय्याफ थे, जिनके रिश्ते अरव दुनिया से भी जुड़ते थे। वे मोटे थे और इत्तेहाद-ए-इस्लामी गुट के नेता था। अब्दुन अली मजारी भी उनमें थे, जो हिज़्ब-ए-वहदत गुट के नेता थे। वे अपने साथी हज़ारा लोगों में बाबा मज़ारी के नाम से भी जाने जाते थे। उनके ईरान के शियाओं से पुख्ता संबंध थे।

और बेशक उनमें मम्मी के हीरो, रब्बानी के साथी, भयानक, करिश्माई ताजिक कमांडर, पंजशेर के शेर अहमद शाह मसूद भी थे। मम्मी ने उनका एक पोस्टर अपने कमरे में लगा रखा था। मसूद का खूबसूरत, ख़यालों में डूबा हुआ चेहरा, तनी हुई भौंहें और उनकी पहचान बन गई झुकी हुई पकोल काबुल में हर जगह मौजूद थे। उनकी जानदार काली आंखें बड़े- बड़े बोडों, दीवारों, दुकानों की सामने की खिड़कियों, टैक्सियों के ऊपर एंटीना में लगे हुए छोटे से झंडों में से लोगों को देखतीं ।

मम्मी के लिए यह वो दिन था, जिसके लिए वो अरसे से तरस रही थीं। यह उनके बरसों के इंतज़ार का फल था।

आख़िरकार अब वे अपने रतजगे ख़त्म कर सकती थीं और उनके बेटे चैन की नींद सो सकते थे।

नजीबुल्लाह के आत्मसमर्पण करने के अगले दिन मम्मी बिस्तर से उठीं तो वो एक नई ही औरत थीं। पांच बरस पहले अहमद और नूर के शहीद होने के बाद से पहली बार उन्होंने काले कपड़े नहीं पहने। उस दिन मम्मी ने गहरे नीले रंग की लिनेन की पोशाक पहनी जिस पर सफ़ेद पोल्का

डॉट्स थीं। उन्होंने खिड़कियां साफ़ कीं, फर्श बुहारी, घर में ताजी हवा के लिए पर्दे हटाए और उस दिन देर तक नहाईं। उनकी आवाज़ में खुशी भरी हुई थी।

'एक दावत ज़रूरी है,' उन्होंने ऐलान किया।

लैला को उन्होंने पड़ोसियों को दावत देने के लिए भेजा। 'उनसे कहना कि हम कल दोपहर में एक बड़ी दावत कर रहे हैं।'

रसोई में कूल्हों पर हाथ रखे खड़ी हुईं और चारों तरफ़ का जायजा लिया।

हज़ारों दमकते आफ़ताब 159

फिर दोस्ताना लहजे में बोलीं, 'तुमने मेरी रसोई के साथ क्या कर डाला है लैला? पूई। हर चीज अलग जगह पर है।'

उन्होंने इस नाटकीय अंदाज में बर्तनों और तसलों की जगह बदलनी शुरू की मानो वो उन पर नए सिरे से दावेदारी ठोंक रही हों। मानों वे अब लौट कर आ गई हों और अपनी ज़मीन पर फिर से दखल कर रही हो। लैला उनके रास्ते में नहीं आई। यह अच्छा ही था। मम्मी खुशियों के जोश में भी उतनी ही अजेय हुआ करती थीं जितनी गुस्से के आवेग में। बेकरारी से भरी हुई ऊर्जा के साथ मम्मी ने खाने की तैयारी की राजमा और सूखा हुआ सोआ डला अउश सूप, कोफ्ता, ताज़ा दही मिला कर बनाया हुआ गरमागरम मंटू जिसके ऊपर पुदीने से सजावट की जाएगी।

'तुम अपनी भौंहों के बाल नोच रही हो,' मम्मी ने रसोई के ओटे पर चावल का बड़ा सा थैला खोलते हुए कहा।

'बस थोड़ा-बहुत ।'

मम्मी ने थैले से ढेर सारा चावल निकाल कर पानी से भरे एक बड़े काले भगोने में डाला। उन्होंने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाईं और उसे चलाने लगीं।

'तारिक़ कैसा है?'

'उसके अब्बा बीमार चल रहे हैं,' लैला ने कहा।

'वैसे कितनी उमर होगी उसकी?'

'पता नहीं। साठ पार कर गए होंगे, शायद ।'

'मैं तारिक़ की उमर पूछ रही हूं।'

'ओह। सोलह ।'

'वो अच्छा लड़का है। तुमको नहीं लगता?'

लैला ने कंधे झटक दिए।

'हालांकि अब वो लड़का नहीं रहा। है न? सोलह। लगभग एक पूरा मर्द। तुमको नहीं लगता?'

'तुम क्या जानना चाह रही हो मम्मी?'

'कुछ नहीं,' मम्मी ने मासूमियत से मुस्कुराते हुए कहा। 'कुछ नहीं। बस ये कि तुम...अह, कुछ नहीं। अच्छा होगा कि कुछ न कहा जाए।'

'मैं देख रही हूं कि तुम कहना चाहती हो,' मम्मी जिस तरह घुमा-फिरा कर, मजाक में उस पर आरोप लगा रही थीं, लैला उससे चिढ़ गई थी।

160 ख़ालिद हुसैनी

'खैर,' मम्मी ने भगोने की रिम पर हाथों को मोड़ा। उन्होंने जिस तरह से 'खैर' कहा था, और अपने हाथ मोड़े थे, उसमें लैला को एक असहजता की झलक मिली, मानो इसे कितनी बार मन ही मन दोहराया गया होगा। उसे डर लगा कि अब वो भाषण देंगी।

'बचपन में तुम लोगों का साथ-साथ भाग-दौड़ करना एक बात थी। उसमें कोई नुक़सान नहीं था। यह खूबसूरत था। लेकिन अब । अब। मैंने देखा कि तुम अब ब्रा पहनने लगी हो लैला ।'

लैला भौंचक रह गई।

'और जो भी हो, तुम मुझे ब्रा के बारे में बता सकती थीं। मैं नहीं जानती थी। मैं निराश हूं कि तुमने मुझे नहीं बताया।' अपना असर होते देख मम्मी और जोर देकर बोलने लगीं, 'बहरहाल, मैं अपने या ब्रा

के बारे में बात नहीं कर रही थी। मैं तुम्हारे और तारिक़ के बारे में बोल रही थी। देखो, यो एक लड़का है, और उस तरह से मान-मर्यादा से उसे क्या लेना-देना? लेकिन तुम? एक लड़की की मान-मर्यादा, ख़ास कर तुम्हारी जैसी खूबसूरत लड़की की मान-मर्यादा तो बहुत नाजुक चीज़ होती है। लैला। यह तुम्हारे हाथ में एक मैना चिड़िया की तरह है। तुम्हारी पकड़ थोड़ी सी भी हल्की हुई और चिड़िया फुर्र ।'

'और तुम्हारा वो सब दीवार पर चढ़ना और बागीचे में बाबी के चारों ओर मंडराना?' लैला जल्दी से उबर जाने पर खुश होती हुई बोली।

'हम तो रिश्ते में चचेरे भाई-बहन थे। और हमने शादी की। क्या इस लड़के ने तुम्हारा हाथ मांगा है?'

'वो एक दोस्त है, रफीक है। हम लोगों के बीच वैसा कुछ नहीं है,' लैला अब बहुत मज़बूत लगने के बजाए अपना बचाव करती लग रही थी। 'वो मेरे लिए भाई की तरह है,' उसने थोड़ा भटकतें हुए यह भी जोड़ा। और इस पर मम्मी के चेहरे पर एक भाव के आने और गुज़र जाने और उनका चेहरा गंभीर ही जाने के भी पहले वो जान गई थी कि उसने एक गलती कर दी है।

'जो कि वो नहीं है,' मम्मी ने सीधे-सीधे कहा। 'तुम उस बढ़ई के एक टांग वाले बेटे को अपने भाइयों में मत मिलाओ। तुम्हारे भाइयों जैसा कोई नहीं है।'

'मैंने यह नहीं कहा कि वो... मेरा ये मतलब नहीं था।'

हजारों दमकते आफ़ताब 161

मम्मी ने नाक से गहरी सांस ली और अपने दांत भींचे।

'जो भी हो,' उन्होंने अपनी अधूरी बात पूरी की, लेकिन इस बार उनकी बातों में कुछ पल पहले का छिपा हुआ खुशी से भरा अंदाज़ नहीं था। 'मैं जओ कहने की कोशिश कर रही हूं वो ये है अगर तुम सावधान नहीं रहोगी हो लोग बातें बनाएंगे।'

लैला ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला। ऐसा नहीं था कि मम्मी की बात में सच्चाई नहीं थी। लैला जानती थी कि तारिक़ के साथ सड़कों पर मासूम, बेरोक-टोक हंसी-खेल के दिन गुज़र गए थे। कुछ समय से एक साथ

बाहर निकलने पर लैला एक नए तरह के अजनबीपन को महसूस करने लगी थी। उसे लगता कि लोग उन्हें देख रहे हैं, उनकी निगाहें उन दोनों को परख रही हैं, उनके बारे में फुसफुसा कर बातें की जा रही हैं। लैला ने ऐसा पहले कभी महसूस नहीं किया था। और अब भी उसने महसूस नहीं किया होता अगर उसने यह बुनियादी तथ्य नहीं जान लिया होता वह तारिक़ पर फिदा हो गई थी। वो उसको लेकर हताश और बेकरार रहती थी। जब भी वो करीब होता तो वो उसको लेकर बुरे ख्यालों में उलझ जाती कि कैसे तारिक़ की खुली हुई दुबली देह लैला की देह से लिपटी हुई है। रातों में बिस्तर पर पड़े हुए वो कल्पना करती कि तारिक़ उसके पेट को चूम रहा है। वो उसके होंठों की कोमलता के बारे में जानना चाहती। वो जानना चाहती कि जब तारिक़ के हाथ उसकी गर्दन, उसकी छाती, उसकी पीठ और फिर उससे भी नीचे जाएंगे तो लैला को कैसा महसूस होगा। जब वो तारिक़ के बारे में इस तरह से सोचती तो वो गुनाह के एहसास से भर जाती लेकिन साथ ही उसके पेट के निचले हिस्से से एक अजीब सी गर्म सनसनाहट ऊपर उठती और फिर वो महसूस करती कि उसका चेहरा गुलाबी हो गया है।

नहीं। मम्मी की बात में दम है। असल में वो जितना जानती हैं, उससे भी ज़्यादा। लैला को संदेह हो रहा था कि उसके सारे नहीं तो कुछ पड़ोसी तो जरूर उसके और तारिक़ के बारे में बातें करने लगे थे। लैला ने छुपी हुई मुस्कानों पर गौर किया था। वो मुहल्ले में चल रही इस कानाफूसी के बारे में जानती थी कि लोग कहते थे कि वो दोनों एक जोड़े थे। मिसाल के लिए उस दिन वो और तारिक़ सड़क पर साथ साथ चल रहे थे और जब वे जूता वनाने वाले रशीद और बुर्के में ढंकी उसकी बीवी मरियम के पास से गुज़रे ।

162 ख़ालिद हुसैनी

उनके पास से गुजरते हुए रशीद ने कहा, 'क्या लैला और मजनूं हैं।' उगका इशारा बारहवीं शताब्दी के शायर नेजामी की मशहूर फ़ारसी शायरी की तरफ था। बाबी ने बताया था कि यह रोमियो एंड जूलियट की तरह फ़ारसी की अपनी प्रेम कहानी है। फ़र्क यह है कि, उन्होंने यह भी जोड़ा था, नेजामी ने अपने बदकिस्मत प्रेमियों की यह दास्तान शेक्सपीयर से चार सदी पहले लिखी थी।

मम्मी की बात में दम था।

लैला को गुस्सा इस बात पर आ रहा था कि मम्मी को यह कहने का हक़ नहीं था। अगर बाबी ने यह मामला उठाया रहता तो वात अलग थी। लेकिन मम्मी? इतने बरसों की उदासीनता के बाद, इसने बरसों तक खुद को दड़बे में बंद किए रहने के बाद और लैला कहां गई, किससे मिली और उसने क्या सोचा, इसकी परवाह भी नहीं करने के बाद... यह तो नाइंसाफ़ी थी। लैला को लगा कि उसकी हैसियत इन बर्तनों और तसलों से बेहतर नहीं है, कि जब भी जी चाहे, उनसे नज़रें फेर ली जाएं और फिर जब मर्जी हो उन पर दावा ठोंक दिया जाए।

लेकिन यह उन सबके लिए एक बड़ा और अहम दिन था। उसे इन बातों के लिए ख़राब करना अच्छी बात नहीं होती। इसी जज़्बे में लैला ने बात की ख़त्म करना चाहा।

'मैं तुम्हारी बात समझ गई,' उसने कहा।

'अच्छा!' मम्मी ने कहा। 'तो तय रहा। अव हाकिम कहां हैं? कहां, ओह मेरे वो प्यारे, नन्हे शौहर कहां हैं?'

यह एक विना बादलों का, चौंधिया देने वाला दिन था, जो एक दावत के लिहाज से पूरी तरह माकूल था। मर्द आंगन में जर्जर फोल्डिंग कुर्सियों पर बैठे। उन्होंने चाय पी, सिगरेटें फूंकीं और मुजाहिदीनों के मंसूबों के बारे में जोर-जोर से हंसी-मजाक किया। लैला को बाबी से मंसूबे का खाका पता लगा था: अफ़ग़ानिस्तान को अब इस्लामिक स्टेट ऑफ अफ़ग़ानिस्तान कहा जा रहा था। कई मुजाहिदीन गुटों ने पेशावर में एक इस्लामी जिहाद काउंसिल बनाई थी, जो दो महीनों के लिए सारी चीज़ों की देखभाल करनी थी। इसके रहनुमा सिबगतुल्लाह मोद्दिदी थे। इसके बाद रब्बानी की रहनुमाई में एक रहनुमा

हज़ारों दमकते आफताब 163

काउंसिल आनी थी जो चार महीनों के लिए हुकूमत का जिम्मा लेने वाली थी। इन छह महीनों के दौरान एक लोया जिरगा होनी थी जो रहनुमाओं को वृजुर्गो की सबसे बड़ी काउंसिल है। यह लोया जिरगा ही दो बरसों के लिए एक अंग्मि हुकूमत बनाने वाली थी। इसके बाद जम्हूरी चुनाव होने थे।

एक आदमी कामचलाऊ भट्टी के ऊपर भुने जा रहे भेड़ के सीख कवाव को पंखा झल रहा था। बाबी और तारिक़ के अब्बा पुराने नाशपानी के पेड़

के नीचे शतरंज के खेल में जुटे थे। खेल में गहराई से डूबे होने की वजह से उनके चेहरे सिकुड़े हुए थे। तारिक़ भी एक तख्त पर बैठा हुआ वारी-बारी से उनका खेल देख रहा और बगल की टेबल पर चल रही सियासी बातचीत सुन रहा था।

औरतें बैठक, गलियारे और रसोई में जमा हुई थीं। बातचीत करने के साथ-साथ वे अपने बच्चों को उछालतीं और हल्के से कूल्हे खिसका कर उन्हें लपक रही थीं। बच्चे पूरे घर में एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे। कैसेट प्लेयर पर उस्ताद सरहंग की गज़लें बज रही थीं।

रसोई में लैला गीती के साथ मिल कर गिलासों में दोघ भर रही थी। गीती अब पहले की तरह उतनी शर्मीली या उतनी गंभीर नहीं रह गई थी। पिछले कई महीनों से उसकी भौंहों पर हमेशा बनी रहने वाली त्यौरियां अब गायब हो गई थीं। इन दिनों वो अब अक्सर खुल कर और अदा के साथ हंसती, जिस पर लैला ने गौर किया। अब उसने नीरस चोटियों से छुटकारा पा लिया था और अपने बालों को खुला रखती थी, जिनको वो लाल धारियों से सजाए रखती थी। लैला ने आखिरकार जान ही लिया कि उसमें आए इस बदलाव की वजह एक अट्ठारह साल का लड़का था, जिस पर गीती मोहित थी। उसका नाम साबिर था और वो गीती के बड़े भाई की फुटबॉल टीम में गोलकीपर था।

'ओह, उसकी मुस्कान सबसे अच्छी है और उसके मोटे, मोटे काले बाल!' गीती ने लैला को बताया। कोई उनके आपसी आकर्षण के बारे में नहीं जानता था। गीती उससे चाय के बहाने दो बार छिप कर मिल चुकी थी। हर बार वे शहर के दूसरे सिरे पर तैमानी में एक छोटे से चायखाने में पंद्रह-पंद्रह मिनट साथ रहे थे।

'वो मेरा हाथ मांगने जा रहा है, लैला! हो सकता है इन्हीं गर्मियों में ही। तुम यकीन करोगी? मैं कसम खा कर बता रही हूं कि मैं इसके बारे में

164 ख़ालिद हुसैनी

सोचना बंद ही नहीं कर पाती।'

'और स्कूल का क्या होगा?' लैला ने पूछा। गीती ने अपना सिर एक तरफ झुका लिया और उसने लेला को इस तरह देखा जिसका मतलब था कि हम दोनों ही अच्छी तरह जानती हैं कि उसका क्या होगा।

हमारे बीस के होने तक, हसीना कहा करती थी, गीती और मैं, हममें से हरेक चार-पांच बच्चे इस पेट से निकाल चुके होगा। लेकिन तुम, लैला, हम दोनों का सिर ऊंचा करोगी। तुम कुछ बनने जा रही हो। मैं जानती हूं कि एक दिन मैं अखबार उठाऊंगी और पाऊंगी कि उसके पहले पन्ने पर तुम्हारी तस्वीर है।

गीती अभी लैला की बगल में खड़ी खीरे काट रही थी। उसका चेहरा खोया हुआ-सा, सपनों में डूबा हुआ दिख रहा था।

पास ही में गर्मियों की अपनी सबसे बेहतरीन पोशाक में सजी हुई मम्मी दाई वाज्मा और तारिक़ की अम्मी के साथ मिल कर उबले हुए अंडे छील रही थीं।

'मैं कमांडर मसूद को अहमद और नूर की तस्वीर देने जा रही हूं,' मम्मी वाज्मा को बता रही थीं। वाज्मा ने यह दिखाने के लिए सिर हिलाया कि वो इस बात में रुचि ले रही है और ईमानदारी से सुन रही है।

'उन्होंने खुद उनके कफन दफन की देख-रेख की थी। उन्होंने उनकी कब्रों पर दुआ पढ़ी थी। मैं यह उनकी शराफत का शुक्राना होगा।' मम्मी ने एक अंडा तोड़ा। मैंने सुना कि वो एक सोच-समझ वाले, इज़्ज़तदार इनसान हैं। मुझे लगता है कि वे इसे कबूल करेंगे।'

उनके आसपास औरतें रसोई में आ-जा रही थीं। वो कारमे के कटोरे, मस्तवा की प्लेटें, रोटियों के टुकड़े ले जाकर बैठक की फर्श पर बिछी हुई दस्तरख्वान पर सजा रही थीं।

हर कुछ देर में तारिक़ भीतर टहलते हुए आता। वह वहां पड़े सामान में से इसे उठाता, उसे कुतरता ।

'मर्दों को इजाजत नहीं है,' गीती ने कहा।

'बाहर, बाहर जाओ,' वाज्मा चिल्लाई।

औरतों द्वारा हंसी-मज़ाक में इस तरह भगाए जाने पर तारिक़ मुस्कुरा देता। ऐसा लगता कि वो इसके मजे ले रहा था कि कोई यहां उसका स्वागत

हजारों दमकले आफ़ताब 165

नहीं कर रहा था। वो मानो इस औरताना माहौल को अपनी हल्की मुस्कान वाली मर्दाना अनादर पर खुश हो रहा था।

लैला पूरी कोशिश कर रही थी कि उसकी ओर न देखे ताकि इन औरतों को बातें बनाने का कुछ और मसाला न मिल पाए। इसलिए वो अपनी आंखें झुकाए रही और उससे कुछ नहीं बोली। लेकिन उसे कुछ रात पहले देखे गए एक सपने की याद आई, जिसमें उसे एक नर्म, हरी नकाब के नीचे एक शीशे में अपना और तारिक़ का चेहरा साथ में दिखाई दिया था। उसके बालों में से चावल के कुछ दाने शीशे पर गिरते हुए टिंक की आवाज़ कर रहे थे।

तारिक़ ने आलू के साथ पके बछड़े के गोश्त का जायका लेना चाहा। 'हो बच्चा!' गीती ने उसके हाथ के पीछे मारा। लेकिन तारिक़ ने किसी तरह उसे छीन ही लिया और हंसने लगा।

वो अब लैला से लगभग एक फुट लंबा हो गया था। उसने दाढ़ी शेव कर रखी थी। उसका चेहरा झुका हुआ, तिकोना था। उसके कंधे चौड़े थे। तारिक़ को प्लेटेड पतलून, काले चमकते जूते और छोटी आस्तीन की कमीजें पहनना अच्छा लगता था, जिनमें उसकी युचा मांसल बांहें दिखतीं। उसे ये भरी हुई बांहें एक जोड़े पुराने, जंग लगे बारबेल से हासिल हुई थीं, जिन्हें वो रोज़ अपने आंगन में उठा कर अभ्यास करता था। इधर उसके चेहरे पर चंचलता से भरे हुए झगड़ालू होने का भाव दिखने लगा था। जब वो बोलता तो उसका सिर सचेत रूप से एक तरफ़ झुके हुए तन जाता, और जब वो हंसता तो उसकी एक भौंह मेहराब की शक्ल अख्तियार कर लेती। उसने अपने बाल बढ़ा लिए थे और लटके हुए गुच्छों को अक्सर यों ही झटकते रहने की आदत डाल ली थी। तिरछी मुस्कान भी नई चीज़ों में शामिल थी।

आखिरी बार जब तारिक़ को रसोई से भगाया जा रहा था, तो उसकी अम्मी ने लैला को उसे छुप कर देखते हुए पकड़ लिया। लैला का दिल उछला और उसकी कसूरवार आंखें फड़फड़ाईं। फुर्ती के साथ वो कटे हुए खीरे को उस सुराही में डालने में लग गई, जिसमें पहले से नमक और पानी में फेंटी हुई दही डाल दी गई थी। लेकिन वो तारिक़ की अम्मी की समझदारी से भरी हल्की मुस्कान को महसूस कर पाई।

मर्दों ने अपनी तश्तरियां और गिलासें भर लीं और उन्हें लेकर आंगन में चले गए। मर्दों के अपना हिस्सा लेकर चले जाने के बाद औरतें और बच्चों

166 ख़ालिद हुसैनी

दस्तरख्वान पर बैठे और उन्होंने खाना शुरू किया

। दस्तरख्वान साफ़ किया जा चुका था और प्लेटें रसोई में जमा कर दी गई थीं और इसके बाद यह याद करने का सिलसिला चल रहा था कि कौन ग्रीन टी लेगा और कौन काली चाय, कि तभी तारिक़ ने अपना सिर हिला कर इशारा किया और दरवाजे से बाहर चला गया।

लैला ने पांच मिनटों तक इंतजार किया और फिर वो भी चली गई।

तारिक़ उसे गली में तीन घरों के बाद मिला। वो एक दो घरों के बीच में एक संकरी सी गली के मुहाने पर एक दीवार से टेक लगाए खड़ा था। वो उस्ताद अव्वल मीर का गाया एक पुराना पश्तो गीत गुनगुना रहा था;

दा जे मा जिबा वतन
दा जे मा दादा वतन
ये हमारा खूबसूरत वतन
ये हमारा महबूब वतन

और वो सिगरेट पी रहा था। यह उसकी नई आदत थी। उसे सिगरेटें लिए घूमते लड़कों से सिगरेटें लेते लैला ने देखा था। लैला तारिक़ के नए दोस्तों को पसंद नहीं करती थी। वो सारे एक ही तरह से कपड़े पहनते; प्लेटों वाली पतलून और चुस्त कमीजें जो उनकी बाहों और सीने पर तन जाती थीं। वो सब बहुत ज़्यादा कोलोन लगाते और सारे के सारे सिगरेटें पीते। वो टोलियों में पूरे मुहल्ले में मज़ाक करते, ज़ोर-ज़ोर से हंसते और कई बार तो लड़कियों पर फब्तियां कसते घूमते रहते। उन सबके चेहरों पर एक सी बेवकूफ़ भरी, आत्म-संतुष्ट मुस्कुराहट रहती। तारिक़ का एक दोस्त लोगों से खुद को रैंबो कहलाने पर जोर देता, इसकी वजह बस यह थी कि वो सिल्विस्टर स्टैलॉन से कुछ-कुछ मिलता था।

'तुम्हारी अम्मी अगर जान गईं कि तुम सिगरेट पीते हो तो वो तुम्हें मार डालेंगी,' लैला ने कहा। उसने पहले एक तरफ़ और फिर दूसरी तरफ़ निगाह डाली और गली में घुस गई।

'लेकिन वो नहीं जानतीं,' तारिक़ ने कहा। लैला के लिए जगह छोड़ते हुए बोला।

'लेकिन वो जान भी सकती हैं।' 'कौन बताएगा उन्हें? तुम?'

हजारों दमकते आफ़ताब 167

लैला ने अपने पांव थपथपाए। 'अपने राज हवाओं को बताओ लेकिन उन पर इसका इल्जाम मत लगाओ कि उन्होंने वह राज़ पेड़ों को बता दिया।

तारिक़ एक भौंह को मेहराब की तरह तानते हुए मुस्कुराया। 'किसने कही है यह बात?'

'खलील जिब्रान ।'

'बस तुम यों ही दिखा रही हो।'

'मुझे एक सिगरेट दो।'

तारिक़ ने सिर झटक कर मना कर दिया और अपने हाथ बांध लिए। यह तरीका भी उसने हाल में सीखा था; पीठ दीवार से सटी हुई, हाथ बंधे हुए, मुंह के कोने में लटकती हुई सिगरेट, अच्छी टांग हल्की-सी मुड़ी हुई।

'क्यों नहीं?'

'तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है,' उसने कहा।

'और क्या यह तुम्हारे लिए बुरी नहीं है?'

'मैं यह लड़कियों के लिए पीता हूं।'

'लड़कियों के लिए क्यों?'

नखरे दिखाते हुए वो मुस्कुराया। 'वो इसे सेक्सी मानती हैं।'

'ऐसा नहीं है।'

'नहीं?'

'यकीन मानो ।'

'सेक्सी नहीं है?'

'तुम बेवकूफ़ लग रहे हो।'

'इस बात से दिल पर चोट लगी,' वो बोला।

'वैसे किन लड़कियों के लिए पीते हो?'

'तुम जल रही हो।'

'मैं बस यों ही पूछ रही हूं।'

'तुम यों ही नहीं पूछ सकतीं।' तारिक़ ने एक और कश लिया और धुएं की वजह से आंखें सिकोड़ीं। 'मैं शर्त लगा सकता हूं कि वहां लोग अब हमारे बारे में बातें कर रहे होंगे।'

लैला के दिमाग में मम्मी की आवाज गूंज रही थी। यह तुम्हारे हाथ में एक मैना चिड़िया की तरह है। तुम्हारी पकड़ थोड़ी सी भी हल्की हुई और चिड़िया

168 ख़ालिद हुसैनी

फुर्र । अपराध बोध लैला को चुभने लगा। तब लैला ने मम्मी की आवाज़ को दबा दिया। इसकी जगह वो उस लहजे का मजा लेने लगी जिसमें तारिक ने हम कहा था। उससे यह सुनना कैसा रोमांचक, कितना साजिशभरा लगा। और उसे यह कहते हुए सुनना कितना भरोसा देने वाला था। हम । इसमें उनके जुड़ाव की कबूलियत थी। उनका जुड़ाव इनमें घनीभूत हो गया था।

'और वे क्या कर रहे होंगे?'

'कि हम गुनाहों की नदी में तैर रहे हैं,' वो बोला। 'कि हम वो हलवा खा रहे हैं, जिसे खाना मना है।'

'पागलपन के रिक्शे पर सवार हैं?' लैला चहक़ी।

'हराम कोरमा बना रहे हैं।'

वे दोनों हंसे। फिर तारिक़ ने कहा कि लैला के बाल लंबे होते जा रहे हैं। 'यह अच्छा है,' उसने कहा।

लैला की इच्छा हुई कि वो लाल न पड़ जाए। 'तुमने विषय बदल दिया।'

'किससे?'

'वो खाली दिमाग वाली लड़कियां जो सोचती हैं कि तुम सेक्सी हो।'

'तुम जानती हो।'

'क्या जानती हूं?'

'कि मेरी नज़र सिर्फ़ तुम्हारे लिए है।'

भीतर ही भीतर लैला बेसुध हो गई। उसने तारिक़ का चेहरा पढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसको ऐसा चेहरा दिखा जिसको पढ़ पाना नामुमकिन था; उसकी खुशी से भरपूर हल्की मुस्कान का उसकी सिकुड़ी हुई आंखों की कुछ-कुछ बकरारी भरी निगाह से कोई मेल नहीं था। एक चालाक सधी हुई नज़र, जो चाहती थी कि उसे मज़ाक और ईमानदारी के बीच की कोई चीज़ माना जाए।

तारिक़ ने अपने अच्छे पैर के जूते की एड़ी पर अपनी सिगरेट बुझाई। 'तो तुम इन सबके बारे में क्या सोचती हो?'

'दावत?'

'अब बताओ कि बुद्ध कौन है? मेरा मतलब मुजाहिदीनों से है, लैला। वा काबुल आ रहे हैं।'

'ओह।'

उसने बाबी से सुनी हुई यह बात बताना शुरू ही किया था कि बंदूक

हज़ारों दमकते आफ़ताब 169

और अहं का एक परेशान कर देने वाला गठबंधन हो गया है, कि नमी उसने घर से आता शोरगुल सुना। लोग ज़ोर से चिल्ला रहे थे।

लैला दौड़ पड़ी। तारिक़ उसके पीछे लंगड़ाता हुआ चला।

आंगन में हंगामा हो रहा था। दो लोग आपस में झगड़ते हुए ज़मीन पर लोट रहे थे और उनके बीच में एक छुरी थी। लेला ने पहचाना कि उनमें से एक आदमी कुछ देर पहले सियासत पर बातें कर रहा था। दूसरा वो था जो कबाब के सीखों को पंखा झल रहा था। कई लोग उनको अलग करने की कोशिश कर रहे थे। बाबी उनमें नहीं थे। वो इस झगड़े से दूर, एक दीवार से लग कर खड़े थे। उनके साथ ही तारिक़ के अब्बा खड़े थे जो चिल्ला रहे थे।

अपने आस-पास उत्तेजित आवाज़ों के बीच लेला ने टुकड़ों-टुकड़ों में जो देखा-सुना उनको एक साथ रखने पर उसे बात कुछ इस तरह समझ आई: टेबल के पास सियासत की बातें करने वाला वो पश्तून अहमद शाह मसूद को गद्दार बता रहा था। उसका कहना था कि मसूद ने 1980 की दहाई में सोवियतों के साथ 'समझौता किया था'। कबाब के पास वाला एक ताजिक था और उसने इसे बेइज़्ज़ती के रूप में लिया और बात को वापस लेने की मांग की। पश्तून ने मना कर दिया। ताजिक ने कहा कि मसूद नहीं बल्कि अब भी उस पश्तून की बहनें सोवियत फौजियों के 'हवाले की जाती हैं'। वो भिड़ गए। तब उनमें से एक ने छुरी भांजनी शुरू की और इस पर लोगों की राय अलग-अलग थी कि छुरी किसने निकाली थी।

लैला ने आतंकित होते हुए देखा कि तारिक़ इस हाथापाई के बीच में कूद पड़ा था। उसने यह भी देखा कि अमन लाने की कोशिश कर रहे कुछ लोगों ने भी मुक्के चलाने शुरू कर दिए थे। उसे लगा कि उसने एक दूसरी ठुरी भी चलते हुए देखी है।

बाद में उस शाम को लैला ने सोचा कि कैसे वो हंगामा ख़त्म हुआ था। लोग एक दूसरे पर गिरे पड़ रहे थे, चीखें-चिल्लाहटें उठ रही थीं और मुक्के चल रहे थे। इन सबके बीच तारिक़ मुंह बनाते हुए अपने बालों को झटक रहा था। उसका पांव खुल गया था और वो उसे पहनने की कोशिश कर रहा था।

जिस तरह से फौरन हर चीज़ सुलझ गई थी, यह चक्कर में डालने वाली बात थी।

170 ख़ालिद हुसैनी

रहनुमा काउंसिल वक़्त से पहले ही वन गई थी। इसने ग्त्वानी को सदर चुना। दूसरे गुटों ने परिवारवाद की चीख-पुकार मचाई। मसूद ने अमन और सब्र की अपील की।

इन सबसे अलग कर दिए गए हिक़मतियार भीतर ही भीतर सुलग रहे थे। उत्पीड़न और उपेक्षा के लंबे इतिहास के साथ हज़ारा लोग भी खौल रहे थे।

गालियां दी गईं। इशारे किए गए। तोहमतों का रेला बह निकला। गुस्से में बैठक ख़त्म कर दी गई और दरवाज़े धड़ाम से बंद किए गए। शहर सांभरोके हुए था। पहाड़ों में भरी हुई मैगजीनें कलाश्निकोवों में खड़खड़ाईं।

हथियारों से सजे हुए मुजाहिदीनों के पास अब कोई साझा दुश्मन नहीं था, तो उन्होंने आपस में ही एक दूसरे को दुश्मन बना लिया।

आखिरकार अब काबुल को भी अपना हिसाब अदा करना था।

और जब काबुल पर रॉकेटों की बारिश शुरू हुई तो लोग पनाह मांगते हुए भागे। मम्मी भी, सचमुच भागी। उन्होंने फिर से काले कपड़े पहने, अपने कमरे में जाकर पढ़ें खींचे और खुद को सिर तक कंबल से ढक लिया।

चौबीस

'फिर सीटी बज रही है,' लैला ने तारिक़ से कहा। 'मुई सीटी से मुझे सबसे ज्यादा नफ़रत है।' तारिक़ ने समझदारी से सिर हिलाया।

लैला ने बाद में सोचा कि केबल सीटी का बजना ही बुरा नहीं लग रहा था। बल्कि जिस पल वो शुरू होती और जब तक उसका असर रहता उसके बीचं का पूरा समय ही बुरा लगता। ऊहापोह से भरा वह संक्षिप्त लेकिन अपार समय। जब आप कुछ नहीं जानते। जब आप इंतज़ार कर रहे होते हैं। मानो कोई मुलजिम अदालत में फैसले का इंतज़ार करता है।

अक्सर यह रात के खाने के वक़्त होता था जब लैला और बाबी टेबल पर होते। जब यह शुरू होता तो वे टेबल से सिर उठा कर सीटी को सुनने लग जाते। कांटे हवा में ही उठे रह जाते और बिना चबाया हुआ खाना मुंह में ही रुक जाता। लैला को काली खिड़की में अपने और बावी के आधे रोशन चेहरों के प्रतिबिंब दिखते। दीवार पर उनकी परछाइयां हिल-डुल नहीं रही थीं। सीटी फिर बजी। इसके बाद एक धमाका होता और उनको खुशी होती कि यह धमाका कहीं और हुआ है और रुकी हुई सांसें छोड़ते हुए वे यह जान कर खुश होते कि आज के लिए वे बख्श दिए गए हैं। जबकि कहीं दूसरी जगह चीख-चिल्लाहटों और धुएं के दमघोंटू वादलों के बीच सब

कुछ तहस-नहस हो गया होता। उन्माद से भरे हुए लोग खाली हाथों से खोदते हुए मलबा हटा रहे होने। वहां बस किसी की बहन, भाई या पोते के बचे-खुचे अंग पड़े

172 ख़ालिद हुसैनी

होते ।

लेकिन जो लोग बचे नहीं रह पाए, उनके बारे में जानने की इच्छा बख्श दिए जाने के अहसास से जुड़ी हुई थी। लैला दुआ पढ़ती हुई गली में भागती हई जानी। यकीनन. इस बार तो यकीनन ही तारिक़ मलवे में दफ्न हो गया होगा।

गन में बिस्तर में पड़े हुए लैला अपनी खिड़की पर चमकती सफ़ेद रोशनियों को देखती रहती। वो ऑटोमेटिक बंदूकों से होने वाली गोलीबारी की आवाजें सुननी और उन रॉकेटों को गिनती जिनके घर के ऊपर से गुजरने से घर हिलन लगता और छत से प्लास्टर के टुकड़ों की बारिश होती। कुछ रातों में रॉकेट से निकलती रोशनी इतनी तेज़ होती कि उसमें किताब पढ़ी जा सकती थी। उन गनों में नींद नहीं आती। और अगर आती भी तो लैला के सपनों में आग और बिखरे हुए हाथ-पैर और जख्मियों की कराहें भरी रहतीं।

सुबह भी कोई राहत नहीं लाती। मुअज्जिन की अज़ान गूंजती तो मुजाहिदीन अपनी बंदूकें रख देते। अपने चेहरे पश्चिम की तरफ़ मोड़ कर वे नमाज़ पढ़ते। इसके बाद वे जानेमाज़ मोड़ते, बंदूकें भरते और फिर पहाड़ियों और काबुल के बीच गोलीबारी का सिलसिला शुरू हो जाता। लैला और पूरा शहर इते बेचारगी से देखता रहता, जैसे बूढ़ा सांतियागो अपनी मछली के टुकड़े टुकड़े होता देखता रहा था।

बत्ता जहां भी जाती उसे मसूद के लोग दिखते। वो उनको गलियों में घूमते और हर पांच सौ गज पर कारों को रोक कर पूछताछ करते देखती। अपनी बदीं और अपनी पहचान बन गई पकोलें पहने हुए वो तोपों के ऊपर बैठे सिगरेटें फूंकते। चौगहों पर ग्त से भरी बोरियों के पीछे से वे राहगीरों को देखते रहते।

अब लैला उतना बाहर नहीं जाती थी। और जब जाती तो हमेशा तारिक़ के साथ जानी, जो इसे अपना बहादुरी भरा फर्ज़ समझता था।

'मैंने एक बंदूक खरीदी है,' एक दिन तारिक ने कहा। वे लैला के घर के बाहर आंगन में नाशपाती के पेड़ के नीचे जमीन पर बैठे थे। उसने बंदृक लैला को दिखाई। नारिक़ ने बताया कि यह सेमी ऑटोमेटिक बेरेट्टा बंदूक है। लला को यह वस काली और डरावनी लगी।

'मुझे यह पसंद नहीं है,' उसने कहा। 'बंदूकें मुझे डराती हैं।'

हज़ारों दमकते आफताब 173

तारिक़ ने मैगजीन हाथ में उलटी-पलटी ।

'पिछले हफ़्ते कारतेह सेह में एक घर से तीन लाशें मिलीं, उसने कहा। 'सुना तुमने वो बहनें थीं। उन सबके साथ बलात्कार किया गया था। उनके गले काट दिए गए थे। किसी ने उनकी अंगुलियों से अंगूठी निकालने के लिए उन्हें दांतों से काट डाला था। तुम देख कर ही बता सकती हो, उन पर दांतों के निशान थे।'

'मैं यह सुनना नहीं चाहती।'

'मैं तुमको घबराना नहीं चाहता,' तारिक़ ने कहा। 'लेकिन मैं बस... मुझे लगता है कि इसे लेकर चलना अच्छा है।'

लैला अब तारिक़ से ही जानती कि सड़कों पर क्या हो रहा है। वो जो कुछ भी सुनता, उसे लैला को बताता । मिसाल के लिए तारिक़ ने ही उसे बताया था कि मीलिशिया के लोग पहाड़ों में ठहरे हुए हैं। वहां वो अपने निशानेबाज़ों को और तेज़ बना रहे हैं। उन्होंने निशानेबाज़ों से कह रखा है कि नीचे मर्दों, औरतों, बच्चों या जिनको भी वे चुन लें, उन पर गोली दाग कर वे अभ्यास कर सकते हैं। उसने लैला को बताया कि वो कारों पर रॉकेट दागते हैं लेकिन कुछ वजहों से टैक्सियों को छोड़ देते हैं, जिससे लैला को समझ में आया कि क्यों लोगों में अपनी कारों को पीले रंग में रंगने की होड़ लगी हुई है।

तारिक़ ने उसे उन धोखेबाज़ों के बारे में बताया जो काबुल में अपनी वफादारियां बदल रहे हैं। मिसाल के लिए लीला को उससे पता लगा कि इसी सड़क पर बाईं तरफ़ दूसरे अकासिया पेड़ के साथ लगा हुआ घर एक सेनापति का है, कि गिरा दी गई फार्मेसी के बाद बेकरी के पास ख़त्म हो रहे आगे के चार ब्लॉक एक और सेनापति के सेक्टर हैं। और अगर वो सड़क पार करके आधा मील पश्चिम की तरफ़ जाए तो वो खुद जिस जमीन पर

पाएगी, वो एक और सनापति की है। और इस तरह वो निशानेबाज़ों की गोलियों की जद में आ जाएगी। मम्मी के जांवाज़ अब इसी नाम से पुकारे जाते थे। सेनापति । लैला ने उनको तोफंगदार कहे जाते भी सुना था। राइफलमैन। दूसरे लोग अब भी उनको मुजाहिदीन कहते थे लेकिन बोलते वक़्त उनके चेहरे से लगता कि वे मज़ाक उड़ा रहे हैं। नापसंदगी जाहिर करने वाले अपने चेहरे के साथ वो गहरी नफ़रत भरी और अपमानित करने वाली बातें कहते। मानों वो उनको जलील कर रहे हीं।

174 ख़ालिद हुसैनी

तारिक़ ने मैगजीन को बंदूक में लगा दिया। 'क्या ये तुममें है?' लैला ने कहा।

'क्या?'

'तुम इसके इस्तेमाल करोगे? लोगों को मारोगे?'

तारिक़ ने अपनी डेनिम की कमर में बंदूक खोंस ली। इसके बाद उसने एक प्यारी और डरावनी बात कही। 'तुम्हारे लिए,' उसने कहा। 'मैं इससे तुम्हारे लिए लोगों को मार सकता हूं, लैला ।'

वो उसके करीब सरक आया और उनके हाथ आपस में रगड़ खा गए। एक बार और फिर दोबारा । जब तारिक़ की उंगलियां यों ही उसकी उंगलियों में सरकने लगीं तो लैला ने ऐसा होने दिया। और जब तारिक़ एकाएक उसके ऊपर झुक आया और अपने होठों से उसके होंठों को दबाने लगा तो एक बार फिर लैला ने उसे ऐसा करने दिया।

उस पल लैला को लगा कि मम्मी की मान-मर्यादा और मैना चिड़िया की सारी बातें बेकार थीं। यहां तक कि वे उसे बकवास लगीं। इस सारे कत्लेआम और लूट के बीच, इस सारी बदसूरती के बीच एक पेड़ के नीचे बैठ कर तारिक़ को चूमने में कोई नुक़सान नहीं था। यह तो एक छोटी सी बात थी। इसे माफ़ किया जा सकता था। इसलिए उसने तारिक़ को चूम लेने दिया और जब वो पीछे हटा तो लैला झुकी और उसने तारिक़ को चूमा। तब उसका दिल गले तक आ रहा था, चेहरा सिहर रहा था और उसकी पेट की गहराइयों में आग जल रही थी।

उस साल, 1992 के जून महीने में पश्चिमी काबुल में सेनापति सय्याफ के पश्तून बलों और हजाराओं के बहदत गुट के बीच भारी गोलीबारी हुई। गोलियों की बजह से बिजली के तार टूट कर गिर गए, दुकानों और घरों के

पूरे के पूरे ब्लॉक ज़मींदोज़ हो गए। लैला ने सुना कि पश्तून मिलीशिया हजारा घरों पर हसले कर रही है और पूरे के पूरे परिवारों को गोलियां मार रही है। तुंरत-फुरत सजाएं दे रही है। उसने यह भी सुना कि हजारा लोग पलटवार करते हुए आम पश्तून लोगों को अगवा कर रहे हैं, पश्तून लड़कियों का बलात्कार कर रहे हैं और पश्तून मुहल्लों पर गोलियां बरसा रहे हैं और कत्लेआम कर रहे हैं। हर रोज़ पेड़ से बंधी हुई लाशें मिलतीं। कभी कभी वो इतनी जली हुई होतीं कि

हज़ारों दमकते आफताब 175

पहचानना नामुमकिन होता। अवरार उनके सिर में गोली मारी गई होती और उनकी आंखें निकाल ली गई होतीं, उनकी जयानें कटी हुई होतीं।

बाबी ने काबुल छोड़ कर चले जाने के लिए गम्मी को मनाने की कोशिश की।

'वो कर लेंगे,' मम्मी ने कहा। 'यह लड़ाई तो कुछ वक़्त के लिए है। वो लोग बैठ कर कुछ उपाय निकाल लेंगे।'

'फरीवा, ये लोग बस जंग लड़ना ही जानते हैं,' बाबी ने कहा। 'उन्होंने एक हाथ में दूध की बोतल और दूसरे में बंदूक लेकर चलना सीखा है।'

'तुम कौन होते हो कहने वाले?' मम्मी ने उनकी बात काट दी। 'क्या तुमने जिहाद लड़ी है? क्या तुमने अपनी कोई चीज छोड़ दी है और अपनी जिंदगी जोखिम में डाली है? अगर मुजाहिदीन नहीं होते तो हम अब भी सोवियतों के गुलाम होते, याद रखना। और अब तुम चाहते हो कि हम उनको धोखा दे दें।'

'उनको हम धोखा नहीं दे रहे हैं, फरीबा ।'

'तो जाओ। अपनी बेटी को साथ लेकर भाग खड़े होओ। मुझे पोस्टकार्ड लिखना। लेकिन अमन आ रहा है और मैं अकेले ही इसका इंतजार करूंगी।'

सड़कें इतनी असुरक्षित हो गई थीं कि बाबी ने एक ऐसा काम किया जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता थाः उन्होंने लैला का स्कूल जाना बंद करा दिया।

पढ़ाने की जिम्मेदारी उन्होंने अपने ऊपर ले ली। लैला सूरज डूबने के बाद उनके पढ़ने के कमरे में जाती। जब हिक़मतियार शहर के

दक्षिणी इलाकों से मसूद पर रॉकेटें दागना शुरू करता तो बाबी और लैला हाफिज की गजलों और पसंदीदा अफ़ग़ानी शायर खलीलुल्लाह खलीली की शायरी पर बहस करना शुरू करते। बावी ने उसे क्वाड्रेटिक इक्वेशन निकालना सिखाया। उसे दिखाया कि पॉलिनोमियल कैसे निकालें और पैरामीटरिक कर्व कैसे बनाएं। जब वो पढ़ा रहे होते तो चाबी वदल जाते। वो अपनी किताबों के बीच लैला से लंबे दिखते । उनकी आवाज़ एक शांत, गहरी जगह से आती हुई लगती और वो पलकें लगभग नहीं झपकाते । लैला कल्पना करती कि एक समय वे टीचर के रूप में ब्लैकबोर्ड झाड़ते हुए और बच्चों को पिताओं की तरह चौकस निगाहों से देखते हुए कैसे लगते होंगे।

176 ख़ालिद हुसैनी

लेकिन उनकी बातों को ध्यान से सुनना आसान नहीं था। लैला का ध्यान बार-बार भटक जाता।

'पिरामिड का एरिया क्या है?' बाबी के पूछने पर लैला बस तारिक़ के होंठों की संपूर्णता के बारे में, उसकी सांसों और उसके मुंह की गर्माहट के बारे में, उसकी धुंधली आंखों में अपनी परछाई के बारे में ही सोच पाती। उसने तारिक़ को उस पुराने पेड़ के नीचे चूमने के बाद दो बार और चूमा था। और बाद का यह चूमना ज़्यादा लंबा, ज़्यादा जोश से भरा हुआ था और उसे लगा था कि इस बार कम अनाड़ीपन था। दोनों बार वो उस अंधेरी गली में छिप कर मिले थे, जहां मम्मी के दोपहर के दावत वाले दिन तारिक़ सिगरेट पी रहा था। दूसरी बार जब वे मिले थे तो लैला ने उसे अपनी छातियां छूने दी थीं।

'लैला?'

'हां, बाबी ।'

'पिरामिड। एरिया । तुम कहां हो?'

'सॉरी, बाबी। मैं, उंह... देखते हैं। पिरामिड। पिरामिड। आधार के एक तिहाई में ऊंचाई से गुणा करते हैं।'

बाबी गैरयकीनी के साथ सिर हिलाते। उनकी निगाह लैला पर ठहरी रहती और लैला के ख़यालों में तारिक़ का हाथ होता, जो उसकी छातियों को दबा रहा होता, उसकी पीठ सहला रहा होता और वे दोनों एक दूसरे को चूम रहे होते।

उसी जून महीने में एक दिन गीती अपनी क्लास की दो लड़कियों के साथ घर लौट रही थी। गीती के घर से बस तीन ब्लॉक पहले लड़कियों को एक रॉकेट आकर लगा। बाद में उसी भयानक दिन, लैला को पता लगा कि जिस सड़क पर गीती मारी गई थी, उस पर गीती की अम्मी लीला उन्माद में चीखते हुए, अपनी बेटी के मांस के टुकड़ों को एक एप्रन में बटोर रही थीं। गीती का जर्जर दाहिना पांव दो हफ़्तों के बाद एक छत पर मिला। उसमें अभी भी नायलॉन के मोज़े थे।

हत्याओं के अगले दिन, गीती के फातिहा पर रोती हुई औरतों से भरे कमरे में लैला सुन्न सी बैठी थी। यह पहली बार था जब कोई ऐसा मरा था जिसे लैला जानती थी, जिसके करीब रही थी, जिसे उसने प्यार किया था। वो

हज़ारों दमकते आफ़ताब 177

इस अथाह हक़ीकत को कबूल नहीं कर पा रही थी कि गीती अब जिंदा नहीं थी। वो गीती जिसके साथ लैला ने क्लास में खुफिया नोट्स माझा किए थे, जिसके नाखूनों को उसने पॉलिश किया था, जिसकी ठोढ़ी के बालों को वो चिमटी से उखाड़ती थी। वो गीती जो गोलकीपर साविर से शादी करने वाली थी। वही गीती मर चुकी थी। मर चुकी थी। उसके चीथड़े उड़ गए थे। आखिर में लैला अपनी दोस्त के लिए रोने लगी। और वे सारे आंसू जो उसके भाइयों के दफन होने पर नहीं बहे थे, वे सारे निकल पड़े।

पच्चीस

लैला को हिलने में मुश्किल हो रही थी, मानो उसके हर जोड़ में सीमेंट जम गया हो। बातचीत चल रही थी और लैला जानती थी कि बात उसी से की जा रही है। लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि उसे वहां से हटा दिया गया है और मानो वो छिप कर बातें सुन रही है। तारिक बोल रहा था और लैला को लग रहा था कि उसकी जिंदगी एक सड़ी हुई रस्सी है, जो टूट रही है, उधड़ रही है और जिसके रेशे रेशे बिखर रहे हैं।

वो 1992 के अगस्त की एक गर्म, उमस से भरी हुई दोपहर थी। वो लोग लैला के घर की बैठक में थे। मम्मी को पूरे दिन पेटदर्द था और कुछ ही मिनटों पहले बाबी दक्षिण से हिक़मतियार द्वारा छोड़े जा रहे रॉकेटों के बावजूद उनको डॉक्टर के पास ले गए थे। और अब यहां

तारिक़ था जो पलंग पर लैला की वगल में बैठा हुआ ज़मीन पर देख रहा था। उसने अपने हाथ घुटनों में दवा रखे थे।

वो कह रहा था कि वो जा रहा है।

मुहल्ले से नहीं। काबुल से भी नहीं। बल्कि अफ़ग़ानिस्तान से।

जा रहा है।

लैला की आंखों के आगे अंधेरा छा गया था।

'कहां? कहां जाओगे तुम?'

'पहले तो पाकिस्तान । पेशावर। इसके बाद मैं नहीं जानता। शायद

हजारों दमकते आफ़ताब 179

हिंदुस्तान । ईरान ।'

'कितने दिनों के लिए?'

'मुझे नहीं पता।'

'मेरा मतलब है कि तुम यह बात कब से जानते थे?'

'कुछ दिनों से। मैं तुमको बताने ही जा रहा था लैला, कसम से। लेकिन मैं हिम्मत नहीं जुटा पाया। मैं जानता था कि तुम कितनी परेशान हो जाओगी।'

'कब?'

'कल ।'

'कल?'

'लैला मुझे देखो।'

'कल ।'

'अब्बा की वजह से। उनका दिल अब और यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकता, यह सारा लड़ाई-झगड़ा, हत्याएं।'

लैला ने अपने हाथों में अपना चेहरा छुपा लिया। उसके सीने में डर का एक बुलबुला फूल रहा था।

उसने सोचा कि वो पहले ही देख सकती थी यह होने वाला है। जितने लोगों को वो जानती थी, लगभग सारे लोग अपना सामान समेट कर चले गए थे। मुहल्ले में अब जाने-पहचाने चेहरे नहीं रहे थे। मुजाहिदीनों के गुटों की चार महीनों की लड़ाई में ही ऐसी हालत हो गई थी कि सड़क पर कोई पहचान वाला मिलना मुश्किल था। हसीना का परिवार मई में ही तेहरान चला गया था। बाज्मा और उसका खानदान उसी महीने इस्लामाबाद चला गया था। गीती के मारे जाने के फौरन बाद जून में उसके अम्मी- अब्बू और भाई-बहन चले गए थे। लैला नहीं जानती थी कि वो कहां गए थे। उसने अफवाह सुनी थी कि वो ईरान में मशहद की ओर गए थे। लोगों के जाने के बाद घर कुछ दिन तक खाली पड़े रहते। फिर या तो मिलीशिया वाले कब्ज़ा कर लेते या अजनबी लोग रहने लगते ।

हर कोई जा रहा था। और अब तारिक 'भी।

'और मेरी अम्मी भी नौजवान औरत नहीं रहीं,' वो कह रहा था। 'वो लोग हमेशा डरे रहते हैं। लैला मुझे देखो।'

'मुझे बताना चाहिए था।'

180 खालिद हुसैनी

'प्लीज, मेरी तरफ देखो ।'

लैला ने एक आह भरी। और वो बिलख पड़ी। जब वो रो रही थी और लारिक अपने अंगूठे से उसके गालों पर के आंसू पोंछने के लिए बढ़ा तो लैला ने उसका हाथ हटा दिया। यह मतलबपरस्ती और बेवकूफ़ी थी, लेकिन वो इस बात को लेकर तारिक्त पर गुस्सा थी कि वो उसे छोड़ रहा था। वो तारिक़ जो उसी का एक हिस्सा था, जिसकी परछाईं हर याद में उसके साथ जुड़ी हुई थी। वो उसे कैसे छोड़ सकता है? उसने तारिक्त को एक थप्पड़ लगाया। उसने उत्प्से दोबारा थप्पड़ मारा और उसके बाल खींचे। तब तारिक को उसकी कलाइयां पकड़नी पड़ीं और वो कुछ कह रहा था जिसे लैला नहीं समझ पाई। वो नभीं और समझदारी से बोल रहा था। और फिर आख़िर में किसी तरह उनकी भौंहों से भौंहे मिलीं, नाक से नाक

और ऐसा हुआ कि लैला अपने होंठों पर फिर से उसकी सांसों की गर्मी महसूस कर सकती थी।

और एकाएक जब वो उसकी तरफ़ झुका, तो वो भी झुक गई।

बाद में जो हुआ था, उसको याद रखने के लिए कई दिनों और हफ़्तों तक लैला को अपनी यादें कुरेदनी पड़ीं। किसी जलते हुए अजायबघर ने निकल रहे किसी कला प्रेमी की तरह जो भी चीज वो बटोर सकती थी, बटोर लेती, ताकि उसे मिट जाने से बचा सके, ताकि उसे सहेज कर रख सके। लेकिन वक़्त आग के लिए सबसे निर्मम चीज़ होता है और आख़िर में वो हर चीज़ को नहीं बचा सकी। अब भी उसके पास ये सारी चीजें थीं; नीचे उठी दर्द की वो पहली टीस। दरी पर तिरछी धूप। तारिक़ के ठंडे, सख़्त पैर पर रगड़ती लैला की एड़ी। पास-पास लेटे हुए जल्दी-जल्दी कपड़ों का खोलना। लैला के हाथों में तारिक़ की कोहनी। तारिक़ के कॉलरबोन के नीचे उल्टी मेंडोलिन की शक्ल का पैदाइशी निशान और उसका दमकता हुआ लाल रंग। लैला के चेहरे के ऊपर मंडराता उसका चेहरा। लैला के होंठों और ठोढ़ी को गुदगुदाती हुई उसकी काली लटें। वो आतंक जो उन लोगों ने खोज निकाला था। उनकी अपनी निर्भीकता और साहस में भरोसे की कमी। दर्द में लिपटा हुआ वो अजीब-सा आनंद जिसे बयान नहीं किया जा सकता था। और तारिक़ पर वो निगाह, अनगिनत निगाहें, जिनमें तारीफ, प्यार, माफ़ी, शर्मिंदगी भरी होती लेकिन सबसे ज़्यादा, सबसे ज़्यादा होती भूख ।

हजारों दमकते आफ़ताब 18।

इसके बाद बस उन्माद था। जल्दी-जल्दी कमीजें खोली गई, बेल्ट निकाले गए, बालों में उंगलियां धंस गईं। जब यह ख़त्म हुआ तो वे बैठे। पास पास बैठे हुए वे एक दूसरे को सूंघते रहे। उनके चेहरे गुलाबी हो गए थे। अभी-अभी जो हुआ था, अभी अभी जो उन्होंने किया था, उसकी विशालता के आगे वे दोनों ही स्तब्ध और अवाक ही गए थे।

लैला ने दरी पर अपने खून की तीन बूंदें देखीं। उसने सोचा कि जो गुनाह उसने कर दिया था, उससे बेख़बर उसके अम्मी-अब्बू बाद में इसी पलंग पर बैठेंगे। और तब शर्म और कसूरवार होने के एहसास का दौर आया। ऊपर बजती हुई घड़ी लैला के कानों में ज़ोर-ज़ोर से आवाज कर रही थी। मानों एक जज की हथौड़ी उसको गुनाहगार साबित करती हुई बार-बार बज रही है।

तब तारिक़ ने कहा, 'मेरे साथ चलो।'

कुछ पलों के लिए लैला को भी लगा यह मुमकिन है। वो, तारिक़ और उसके अम्मी-अब्बू एक साथ तैयारियां कर रहे हैं। सामान पैक करते हुए, बस में चढ़ते हुए, इस सारे खून-खराबे को पीछे छोड़ते हुए वो सुकून की तलाश में जा रहे थे। हो सकता है उन्हें मुसीबतों का सामना करना पड़ता, लेकिन जो भी हो, एक साथ मिल कर वो उसका सामना करते। एक उदास अलगाव, एक हत्यारा अकेलापन उसकी ताक में बैठे थे। तब तो ऐसा नहीं हुआ होता।

वो जा सकती है। वो साथ रह सकते हैं। तब बहुत सारी ऐसी दोपहरें आएंगी।

'मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं लैला ।'

जब वे फर्श पर थे, तव से पहली बार लैला ने अपनी आंखें उठा कर तारिक़ की आंखों में देखा। उसने तारिक़ के चेहरे में कुछ तलाशा। इस बार उसके चेहरे पर मज़ाक का कोई निशान नहीं था। उसकी निगाह इरादों की पक्की और निष्कपट लग रही थी, तब भी उसकी ईमानदारी पर लोहे की परत चढ़ी हुई थी।

'तारीख'

हैं।' 'मुझे तुमसे शादी करने दो लैला। आज। हम आज ही शादी कर सकते

मस्जिद जाकर मुल्ला तलाशने, एक जोड़ी गवाहों को तैयार करने और जल्दी से निकाह पढ़ा लेने के बारे में वो बताने लगा...

182 ख़ालिद हुसैनी

लेकिन लैला मम्मी के बारे में सोच रही थी, जो मुजाहिदीनों की तरह ही जिद्दी और अड़ियल थीं। लैला के चारों ओर की हवा विद्वेष और निराशा से भर गई। और वो बाबी के बारे में सोच रही थी जिन्होंने बहुत पहले ही अम्मी के आगे हार मान ली थी। वो मम्मी के विरोधी के रूप में उदास कर देने वाले एक दयनीय इन्सान थे।

कभी-कभी... मुझे महसूस होता है कि बस तुम्हीं मेरी सब कुछ हो, लैला। ये थे उसकी ज़िंदगी के हालात और इन हालातों की सच्चाइयां, जिनसे भाग पाना नामुमकिन था।.

'मैं हाकिम काका से तुम्हारा हाथ मांगूंगा। वो हमें दुआएं देंगे, मैं जानता हूं लैला ।'

वो सही था। बाबी ऐसा ही करेंगे। लेकिन इससे वो बिखर जाएंगे।

तारिक़ अब भी बोले जा रहा था। उसकी आवाज़ पहले तो दबी-दवी थी, फिर ऊंची हुई और फिर मिन्नतें करने लगा और फिर उसने तर्क का सहारा लिया। उम्मीद से भरेपूरे उसके चेहरे पर दुख उभर आया।

'मैं नहीं कर सकती,' लैला ने कहा।

'ऐसा मत कहो। मैं तुमको प्यार करता हूं।'

'मुझे माफ़ करो।'

'मैं तुम्हें प्यार करता हूं।'

इन शब्दों को सुनने के लिए उसने कितना इंतज़ार किया था। कितनी बार उसने इन अबोले शब्दों के बारे में सपने देखे थे? आखिरकार अब वो यहां उसके आगे बोल दिए गए थे, और इस वक़्त की विडंबना ने लैला को तोड़ कर रख दिया।

'मैं अपने अब्बा को नहीं छोड़ सकती,' लैला ने कहा। 'उनके पास बस मैं ही बची हूं। उनका दिल भी इसे बर्दाश्त नहीं कर पाएगा।'

तारिक़ यह जानता था। वो जानता था कि तारिक़ की ही तरह लैला भी अपनी जिंदगी की जिम्मेदारियों से हाथ नहीं झटक सकती थी। लेकिन यह सिलसिला जारी रहा। वो फरियादें करता रहा, वो इन्कार करती रही। वो प्रस्ताव रखता रहा और लैला माफ़ी मांगती रही। दोनों आंसू बहाते रहे।

आख़िर में लैला ने उसे वापस लौटा दिया।

दरवाजे पर उसने तारिक़ से वादा लिया कि वो उसे अलविदा कहे बगैर

हजारों दमकते आफ़ताब 183

चला जाएगा। उसने तारिक़ के पीछे दरवाजा बंद कर दिया। लैला ने उससे अपनी पीठ टिका ली। दरवाजे पर बजती तारिक़ की मुट्ठियों के बीच

कांपती हुई लैला ने एक हाथ से अपना पेट पकड़ रखा था और दूसरे हाथ से अपना मुंह दबा रखा था। दरवाजे की दूसरी तरफ़ से तारिक़ वादा कर रहा था कि वो उसके लिए लौट आएगा। तारिक़ के थक कर चुप हो जाने तक वो वहीं खड़ी रही। वो उसके लड़खड़ाते हुए कदमों की दूर जाती आहट को सुनती रही जो अंत में एक़दम ख़त्म हो गई। बची रही पहाड़ियों पर गोलीबारी की आवाजें और उसके पेट में, उसकी आंखों में, उसकी हड्डियों में दिल का तेज़-तेज़ धड़कना ।

छब्बीस

यह साल का अब तक का सबसे गर्म दिन था। पहाड़ हड्डियों को झुलसाने वाली

गर्मी में घिरे हुए थे और शहरों पर गर्मी धुएं की तरह छाई हुई थी। बिजली कई

दिनों से गायब थी। पूरे काबुल में बिजली के पंखे मुंह चिढ़ाते हुए बेजान पड़े थे। लैला बैठक के पलंग पर सुस्त पड़ी थी। उसकी ब्लाउज़ से पसीना बह रहा। हरेक छोड़ी गई सांस उसकी नाक के ऊपरी सिरे को जला रही थी। वो जानती थी कि मम्मी के कमरे में मम्मी-बाबी बात कर रहे हैं। दो रात पहले और पिछली रात भी वो जग पड़ी थी और उसे लगा था कि उसने नीचे उनकी आवाजें सुनी हैं। जब से एक गोली ने दरवाज़े में नया छेद किया था, तब से हर रोज़ अब वो बातें करने लगे थे।

बाहर दूर कहीं तोपखाना गरज रहा था। और कहीं पास में एक के बाद एक गोलियां चल रही थीं।

लैला के भीतर भी एक जंग लड़ी जा रही तीः एक तरफ़ शर्मिंदगी से भरा हुआ अपराधबोध था तो दूसरी तरफ़ यह पक्की राय थी कि उसने और तारिक़ ने जो किया था वो गुनाह नहीं था। उसे लग रहा था कि यह एक कुदरती, अच्छा, खूबसूरत और अपरिहार्य काम था, जिसके 'पीछे यह भावना थी कि वो शायद फिर कभी एक दूसरे को न देख पाएं।

लैला ने करवट ली और कुछ याद करने की कोशिश करने लगी: उस वक़्त, जव वो और तारिक़ फर्श पर थे और तारिक़ ने अपनी ललाट उसकी

हजारों दमकते आफ़ताब 185

तरफ झुका रखा थी। तब हांफते हुए तारिक़ कुछ कह रहा था। शायद क्या मैं तुम्हें दर्द पहुंचा रहा हूं? या क्या इससे तुम्हें दर्द हो रहा है?

लैला नहीं तय कर सकी कि उसने क्या कहा था।

क्या मैं तुम्हें दर्द पहुंचा रहा हूं?

क्या इससे तुम्हें दर्द हो रहा है?

उसे गए हुए केवल दो हफ़्ते ही हुए हैं और यह शुरू हो गया था। यादों के धारदार किनारों को वक़्त कुंद कर रहा था। लैला दिमागी रूप बेचैन हो जाती। उसने क्या कहा था? यह बात उसे एकाएक अहम लगने लगती, जिसे वो जानती थी।

लैला ने अपनी आंखें बंद कर लेती। खुद को एकाग्र करती।

वक़्त गुज़रने के साथ वो धीरे-धीरे इससे ऊब गई। वो पाती कि जो म्मर चुका था उसे फिर तरोताज़ा करना, उसकी धूल झाड़ना और उसे फिर से जिंदा करना दिन पर दिन थकाऊ होता जा रहा था। असल में बरसों बाद एक दिन ऐसा आएगा जब उसको खो देने पर इतना नहीं पछताएगी। या इतनी बेचैन से, इतनी नज़दीकी से नहीं पछताएगी। एक दिन आएगा जब उसके चेहरे के छोटे-छोटे ब्योरे यादों की पकड़ से फिसलने लग जाएंगे। जब सड़क पर कोई मां तारिक़ नाम के अपने बच्चे को पुकारेगी तो उसका ध्यान नहीं भटकेगा। वो उसकी कमी उस तरह से महसूस नहीं करेगी, जैसी अभी कर रही है। आज, जब उसकी गैरमौजूदगी का दर्द उसका अनवरत साथी बना हुआ है मानो किसी कटे हुए अंग का भुतहा दर्द हो।

बस बहुत दिनों में कभी-कभार जब एक सयानी औरत हो चुकी होगी तो किसी कमीज़ का इस्तिरी करना या अपने बच्चे को झूले पर झुलाना या कोई हल्की सी बात, किसी गर्म दिन पांवों के नीचे की दरी की गर्माहट या किसी अजनवी की ललाट का घुमाव उसे उस दोपहर की याद दिलाएगा, जब वो दोनों साथ थे। और तब सारा कुछ एक साथ सामने आ जाएगा। इसकी स्वतःस्फूर्तता । उनका हैरान कर देने वाला अविवेक। उनकी फूहड़ता। उस काम का दर्द, उसका आनंद, उसकी उदासी। आपस में उलझी हुई उनकी देहों की गर्माहट ।

यह सब उसे बहा ले जाएगा। वो सांस लेना भूल जाएगी।

लेकिन फिर यह भी गुज़र जाएगा। वह पल गुजर जाएगा। पीछे रह जाएगी दवी-कुचली लैला, जो बस एक धुंधली सी बेचैनी भर महसूस कर रही होगी।

186 ख़ालिद हुसैनी

उसने तय किया कि तारिक़ ने यही कहा था क्या मैं तुम्हें दर्द देहा हूं? हां। यही था वो। लैला खुश थी कि उसे याद आ गया था।

तभी यात्री गलियारे में आए और सीढ़ियों के ऊपर खड़े होकर उसका नाम लेकर पुकारा, उसे जल्दी से ऊपर आने की कहा।

'यो राजी हो गई हैं।' उन्होंने कहा। दवी हुई खुशी की वजह से उनकी आवाज कांप रही थी। 'हम जा रहे हैं, लेला। हम तीनों। हम काबुल से जा रहे हैं।'

मम्मी के कमरे में वो तीनों बिस्तर पर बैठे थे। बाहर हिक्रर्मातयार और मसूद की सेनाएं आपस में लड़ रही थीं और उनके छोड़े हुए रॉकेट आसमान में सनसनाते हुए गुज़र रहे थे। लैला जानती थी कि शहर में कहीं कोई अभी अभी मरा है, और कोई इमारत अभी धूल में मिली है जिसके ऊपर काले धुएं का एक बादल मंडरा रहा है। सुबह में लाशें निकालनी होंगी। कुछ निकाली जा सकेंगी, कुछ नहीं। फिर काबुल के कुत्ते दाबत उड़ाएंगे, जिनके मुंह इनसानी गोश्त लग गया था।

फिर भी, लैला को सड़कों पर दौड़ने की इच्छा जगी। वो अपनी खुशी की मुश्किल से ज़ब्त कर पाई। खुशी से उछल पड़ने के बदले, बैठने के लिए उसे कोशिश करनी पड़ी। बावी ने बताया कि वे पहले तो पाकिस्तान जाएंगे और वीज़ा के लिए अर्जी दायर करेंगे। पाकिस्तान, जहां तारिक़ था। तारिक्र तो बस सत्रह दिन पहले ही गया है, लैला ने उत्साह के साथ गिना। अगर मम्मी ने अपना मन सत्रह दिन पहले वना लिया होता तो वो साथ-साथ जाते। वो अभी, इस वक्त तारिक्र के साथ होती! लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वी पेशावर जा रहे हैं। वी, मम्मी, बाबी और वो तारिक़ और उसके अम्मी-अब्बू की खोज लेंगे। यकीनन वो खोज लेंगे। वो अपने कागजाती काम साथ-साथ करेंगे। तब, किसे पता है? किसे पता है? यूरोप? अमेरिका? शायद समंदर के किनारे कहीं, जैसा कि बाबी हमेशा कहा करते थे...

मम्मी सिरहाने के तख्त से टिक कर आधा लेटी और आधा बैठी थीं। उनकी आंखें सूजी हुई थीं। वो अपने बाल नोच रही थीं।

तीन दिनों पहले खेला हवा खाने बाहर गई थी। वो सामने के दरवाजे के पास उनसे टिक कर खड़ी थी जब उसने दरकने की एक ज़ोरदार आवाज सुनी। उसके दाएं कान के पास हवा में कुछ सरसराया और उसकी आंखों के

हजारों दमकते आफ़ताब 187

सामने लकड़ी के छोटे टुकड़े उड़ने लगे। गीती की मौत के बाद और हज़ारों राउंड गोलियां चलने और काबुल पर बेहिसाब रॉकेटों को गिरने के बाद अब उनके दरवाजे में बन गए एक छोटे-से छेद का दिखना था, जिसने मम्मी को झकझोर कर जगा दिया था। लैला का सिर जहां था, वहां से महज तीन उंगलियों से भी कम दूरी पर वह छेद बना था। इस छेद ने मम्मी को दिखा दिया था कि एक जंग ने पहले ही उनके दो बच्चों की जान ले ली थी, इस ताजा जंग में उनके बचे हुए बच्चे की जान भी जा सकती है।

कमरे की दीवारों से अहमद और नूर की मुस्कानें उतार ली गईं। लैला ने मम्मी की निगाहों को एक से दूसरी तस्वीर पर कसूरवाराना तरीके से आते-जाते हुए देखा। मानो वो उनकी सहमति मांग रही हों। उनकी दुआ। मानो उनसे माफ़ी मांग रही हों।

'अब हमारे लिए यहां कुछ नहीं बचा,' बाबी ने कहा। 'हमारे बेटे जा चुके हैं, लेकिन हमारे पास अब भी लैला है। हम अब भी एक दूसरे के साथ हैं, फरीबा। हम एक नई जिंदगी की शुरुआत कर सकते हैं।'

बाबी बिस्तर की दूसरी तरफ़ पहुंचे। जब वो मम्मी का हाथ थामने के लिए झुके तो मम्मी ने उन्हें ऐसा करने दिया। मम्मी के चेहरे पर रियायत का भाव था। लग रहा था कि उन्होंने खुद को सौंप दिया हो। उन्होंने एक दूसरे का हाथ हल्के से पकड़े रखा और फिर धीरे-धीरे सरक कर वे गले मिले। मम्मी ने अपना चेहरा बांबी की गर्दन में छुपा दिया। उन्होंने बाबी की कमीज मुट्ठी में थाम ली।

उस रात उत्तेजना ने लैला को घंटों जगाए रखा। वो बिस्तर में पड़ी रही और दूर भड़कीले नारंगी और पीले रंगों में रोशन आसमान को देखती रही। इसी तरह किसी समय भीतर के उल्लास और बाहर में तोपखाने की गरज के बावजूद उसे नींद आ गई।

उसने एक सपना देखा।

वो एक समुद्र तट की पट्टी पर लिहाफ पर बैठे हुए हैं। यह ठंडा, लंबा दिन था लेकिन कंधों पर कंबल लपेटे हुए तारिक़ के पास बैठना गर्माहट से भरा हुआ था। वो उन कारों को देख सकती थी जो हवा में हिल रहे खजूर के पड़ों के नीचे, उखड़ी हुई सफ़ेद पेंट से रंगी एक नीची बाड़ के पीछे खड़ी थीं। हवा से उसकी आंखों में पानी आ रहा था और जूतों में रेत भर रही थी।

188 ख़ालिद हुसैनी

हवा रेत के एक टीले से दूसरे पर सूखी हुई घास की गांठें उछाल रही थी। वो दूर बहती नावों का डोलना देख रहे थे। उनके आस-पास सीगल चीख रही थी और हवा में हिल-डुल रही थी। हवा उथली ढलानों पर से रेत उड़ा रही थी। फिर वहां ऐसा मंत्रों के गाने जैसा शोर था। लैला ने तारिक़ को वह वात बताई जो बाबी ने उसे गानेवाली रेत के बारे में बताई थी।

तारिक़ ने उसकी भौंहों को सहलाया और उसमें से रेत के टुकड़े झाड़े।

लैला की निगाह तारिक़ की उंगली की अंगूठी पर पड़ी। यह उसकी अपनी अंगूठी जैसी ही थी-सोने के छल्ले पर जाली जैसी लकीरें खींची हुई थी।

यह सही है, उसने तारिक से कहा। यह दाने से दाने का घिसना है। सुनो।
उसने सुना। उसने त्यौरियां चढ़ाईं। उन्होंने इंतजार किया। उन्हें यह फिर से सुनाई दिया। हवा जब हल्की होती तो एक कराहती हुई आवाज़ आती, और जब यह तेज होती तो ऊंचे कोरस की मिमियाती हुई आवाज़ आती।

बाबी ने कहा कि उन्हें सिर्फ़ वही सामान साथ लेना चाहिए जो बहुत ज़रूरी हो। बाक़ी को वो बेच देंगे।

'इससे हमारे पेशावर में रहने का खर्च निकल आएगा। तब तक मैं काम देखूंगा।'

अगले दो दिनों तक वो बेचा जाने वाला सामान जमा करते रहे। उन्होंने उनके ढेर लगा दिए।

अपने कमरे में लैला ने पुरानी ब्लाउज़ों, पुराने जूतों, किताबों और खिलौनों को परे रख दिया। बिस्तर के नीचे देखने पर उसे पीले रंग की शीशे की एक छोटी-सी गाय मिली, जो उसेीीा ने पांचवे दर्जे में छुट्टियों के दौरान दी थी। एक छोटा सा फुटबॉल का चाबी का छल्ला मिला जो गीती का तोहफ़ा था। लकड़ी का छोटा-सा पहियों वाला जेब्रा। सेरामिक का एक छोटा-सा एस्ट्रोनॉट जो लैला और तारिक़ को एक गटर में मिला था। तब वो छह साल की थी और वो आठ का। लैला को याद आया कि इस पर उनमें छोटी-सी तकरार भी हुई थी कि वो किसको मिला था।

मम्मी भी चीजें जमा कर रही थीं। उनकी गतिविधियां हिचक से भरी हुई थीं। उनकी आंखें सुस्त और खोई-खोई सी लगतीं। उन्होंने अपनी अच्छी प्लेटें, रूमालें, अपने सारे गहने और अपने अधिकतर पुराने कपड़े अलग कर दिए। बस उन्होंने अपनी शादी की अंगूठी अपने पास रखी।

हजारों दमकते आफ़ताब 189

'आप ये बेच नहीं रही हैं, बेच रही हैं क्या?' लैला ने मम्मी की शादी का जोड़ा उठाते हुए कहा। वो उसकी गोद में सरसराते हुए खुल गया। उसने उसके गले में लगी लेस और रिबन को छुआ। आस्तीनों पर हाथ से टांके गए नन्हें मोतियों पर उंगलियां फेरीं।

मम्मी ने कंधे झटके और उससे जोड़ा ले लिया। उन्होंने रुखाई से उसे कपड़ों के ढेर पर फेंक दिया। मानो एक झटके में बैंड-एड को अलग कर रही हो. लैला ने सोचा।

सबसे दर्दनाक काम बाबी को करना था।

लैला ने उनको अपने पढ़ने के कमरे में पाया जहां वे विषाद से भरा चेहरा लिए किताब रखने के खानों को देख रहे थे। उन्होंने एक सेकंडहैंड टी-शर्ट पहन रखी थी, जिस पर सान फ्रांसिस्को के लाल पुल का फोटो था। सफ़ेदी से ढंके हुए पानी में से निकले घने कोहरे ने पुल के टावरों को अपने में समा लिया था।

'तुम वो पुरानी कहानी जानती हो?' बाबी ने कहा। 'तुम एक उजाड़ द्वीप पर हो। तुम पांच किताबें ले सकती हो। तुम किनको चुनोगी? मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे सचमुच ऐसा करना पड़ेगा।'

'हमें एक नया संग्रह बनाना पड़ेगा, बाबी।'

'म्म।' वो मुस्कुराए। 'मैं यकीन नहीं कर सकता कि मैं काबुल से जा रहा हूं। मैं यहां स्कूल गया, यहां मैं पहली नौकरी पाई, इसी शहर में बाप बना। यह सोचना अजीब लगता है कि जल्दी ही मैं किसी दूसरे शहर के आसमान के नीचे सो रहा होऊंगा।'

'मेरे लिए भी ये अजीब है।'

'सारे दिन काबुल पर लिखी गई यह नज़्म मेरे दिमाग में उमड़ती रही है। मुझे लगता है कि साइब-ए-तबरीज़ी ने इसे सत्रहवीं शताब्दी में लिखा था। कभी मुझे यह पूरी नज़्म याद थी, लेकिन अब मैं बस इसकी दो लाइनें ही याद कर पाता हूं:

"इसकी छतों पर चमकते माहताबों को नहीं गिना जा सकता है

और न गिने जा सकते हैं इसकी दीवारों के पीछे छुपे हजारों दमकते आफ़ताब"

लैला ने निगाह ऊपर की तो देखा कि वो रो रहे थे। उसने अपनी एक

190 ख़ालिद हुसैनी

बांह उनकी कमर में लपेटी। 'ओह, वावी। हम लौटेंगे। जब ये जंग खत्म हो जाएगी। इंशाअल्लाह हम काबुल लौट आएंगे। देखना।'

तीसरी सुबह लैला ने सामान के ढेरों को आंगन में लाकर सामने के दरवाज़े के पास रखना शुरू कर दिया। इसके बाद वो एक टैक्सी बुला कर उसे गिरवी रखने वाली दुकान में ले जाने वाले थे।

लैला घर और आंगन में दौड़ते हुए कपड़ों, बर्तनों के ढेर और बाबी की किताबों के बक्से ढोती रही। दोपहर तक उसे थक जाना चाहिए था, जब सामने के दरवाज़े के पास सामान का ढेर उसकी कमर जितनी उंचाई तक आ गया। लेकिन वो जानती थी कि हर चक्कर के साथ ही वो तारिक़ को फिर से देखने के और करीब होती जा रही है। और हर चक्कर उसके पांवों को और ज़्यादा फुर्ती से भर देता था और उसके हाथ और अधिक तरोताज़ा होते जा रहे थे।

'हमें एक बड़ी टैक्सी की ज़रूरत पड़ेगी।'

लैला ने ऊपर देखा। ऊपर अपने सोने के कमरे से मम्मी बोल रही थीं।

वो खिड़की से झुकी हुई थीं और अपनी कोहनियां उन्होंने ओटे पर टिका रखी थीं। चमकती गर्म धूप उनके स्याह बालों से उलझी हुई थी और उनके मुर्झाए हुए पतले चेहरे पर चमक रही थी। मम्मी ने वही गहरी नीली पोशाक पहनी थी जिसे उन्होंने चार महीने पहले की दोपहर वाली दावत के दिन पहना था। यह एक नौजवान औरत की खूबसूरत पोशाक थी लेकिन लैला को एक पल । के लिए मम्मी एक बूढ़ी औरत लगीं। पतली बांहों और धंसी हुई कनपटियों वाली एक बूढ़ी औरत, जिसकी धीमी आंखों के गिर्द थकान से भरे हुए स्याह घेरे थे। ये तो शादी के पुराने फोटो में दिखती उस मोटी, गोल चेहरे वाली, चमकती हुई औरत से अलग ही कोई जीव थीं।

'दी बड़ी टैक्सियां,' लैला ने कहा।

लैला बाबी को भी देख सकती थी। वो बैठक में किताबों के बक्से एक

के ऊपर एक सजा रहे थे।

'जब ये पूरा हो जाए तो ऊपर आना,' मम्मी ने कहा। 'हम दोपहर के खाने के लिए बैठेंगे। उबले हुए अंडे और बची हुई फलियां ।'

'मेरे पसंदीदी,' लैला ने कहा।

एकबारगी उसने अपने सपने के बारे में सोचा। लिहाफ पर बैठे हुए वो

और तारिक। समंदर। हवा। टीले।

हजारों दमकले आफ़ताब 191

उसका मन यह जानने को कर रहा था कि गाती हुई रेत की आवाज़ कैसी लग रही थी?

लैला रुक गई। उसने ज़मीन की दरार के निकलते एक भूरे गिरगिट को देखा। इसका सिर अगल-बगल में डोल रहा था। इसने पलकें झपकाई और एक चट्टान के नीचे उछल कर घुस गया ।

लैला ने फिर से समुद्र तट की कल्पना की। अब बस गीत की आवाज़ ही आ रही थी। और ऊंची हो रही थी। हर पल के साथ 'वो तेज़ होती जा रही थी, तेज़ और तेज। बाढ़ के पानी की तरह वो उसके कानों में भर थी। उसने हर दूसरी चीज़ को बहा दिया था। परों से ढकी सीगल अब उसकी नकल भर कर

रही थीं और बिना आवाज निकाले बस अपनी चोंच को खोल-बंद कर रही थीं।
बिना गरज के लहरें झाग और बौछारों के साथ उठ रही थीं। रेत गाए जा रही थी। अब वो चिल्ला रही थी। एक आवाज़ जैसे कि... खनखनाहट ।

खनखनाहट नहीं। नहीं। बल्कि सीटी।

लैला ने किताबें अपने पैरों पर गिरा लीं। उसने आसमान में देखा।
अपनी आंखों पर हाथ से ओट बना लिया।

तभी एक भयानक गरज आई। उसके पीछे सफ़ेद चमक उभरी।

उसके पैरों के नीचे ज़मीन लरज उठी।

पीछे से कुछ गर्म और ज़ोरदार चीज़ ने उसे धक्का दिया। उसके पांवों की चप्पल निकल गई। वो हवा में उठ गई। और अब वो उड़ रही थी, हवा में बल खाते हुए, घूमते हुए उसने आसमान को देखा, फिर ज़मीन को, फिर आसमान को और फिर ज़मीन को। लकड़ियों के जलते हुए ढेर सारे टुकड़े आसमान में उछले। इसी तरह शीशे के हज़ारों टुकड़े भी। और लैला को लगा कि वो उनमें से एक एक टुकड़े को अपने आसपास उड़ते हुए देख सकती थी। वी देख सकती थी कि वो धीरे-धीरे उलट-पलट रहे हैं और उनमें से हरेक में धूप चमक रही है। नन्हें, खूबसूरत, इंद्रधनुष ।

तभी लैला दीवार से टकराई। फिर वो जमीन पर आ गिरी। उसके चेहरे और वांहों पर धूल और कंकड़ और शीशे की बौछारें थीं। जो आख़िरी चीज उसे पता थी, वो ये था कि अपनी बगल में जमीन पर एक धमाके को उसने देखा है। खून से तरबतर टुकड़ों का एक ढेर। और इसके सबसे ऊपर घने कोहरे में से एक लाल पुल झांक रहा था।

भाग 3

सत्ताईस

मरियम,

तुम्हें पता है कि मैं कौन हूं?

लड़की की आंखें हिलीं।

'तुम्हें पता है कि क्या हुआ है?'

लड़की का मुंह कांपा। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। उसने कुछ निगला । उसके हाथ ने अपने बाएं गाल को सहलाया। उसने कुछ कहा।

मरियम करीब झुक आई।

'इस कान से,' लड़की ने सांस ली। 'मैं सुन नहीं सकती।'

पहले हफ्ते में लड़की उन गुलाबी गोलियों की मदद से बस सोती रही, जिनके लिए रशीद ने अस्पताल को पैसे चुकाए थे। वो नींद में बड़बड़ाती । कभी-कभी वो बस यों ही कुछ कहती, चिल्लाती, ऐसे नाम लेती जिनको मरियम नहीं जानती थी। सोते हुए वो रोती, गुस्सा हो जाती, कंबल को लात मार क़र हटा देती और तब मरियम को उसे पकड़ना पड़ता। कभी-कभी उसे उबकाई आती और मरियम का खिलाया सारा कुछ बाहर निकाल देती।

जब वो गुस्सा नहीं होती तो वो लड़की बस उदास आंखों का जोड़ा हुआ करती थी, जो कंबल के नीचे से घूरती रहतीं। मरियम और रशीद के कुछ पूछने पर वो बहुत छोटे जवाब देती। कुछ दिन जब मरियम और फिर रशीद उसे खिलाने की कोशिश करते तो वो बच्चों की तरह सिर को अगल-बगल

196 ख़ालिद हुसैनी

हिला कर मना करती। मरियम जब उसके पास चम्मच लिए आती तो वो अड़ जाती। लेकिन वो जल्दी ही थक जाती और मरियम की नियमित मनुहार के आगे हार मान लेती। इसके बाद इसके बाद देर तक वो रोती।

रशीद ने मरियम से कहा कि वो लड़की के चेहरे और गरदन पर कटे हुए जख्मों और कंधे के गहरे घावों तथा पूरी बांहों और निचले पैरों पर एंटीबायोटिक मलहम लगा दे। मरियम उसकी दवाओं की पट्टियां बदलती, जिनको वो धो-धोकर इस्तेमाल में लाती। जब लैला को उबकाई आती तो मरियमं उसके बालों को पीछे पकड़े. रखती ।

'वो कब तक रहने जा रही है?' उसने रशीद से पूछा। 'जब तक वो ठीक नहीं हो जाती। उसे देखो। वो कहीं जाने लायक नहीं है। बेचारी।'

वो रशीद को मिली थी। उसने मलबे से उसे खोद कर बाहर निकाला था।

'किस्मत की बात है कि मैं घर पर था,' उसने लड़की से कहा। वो मरियम के बिस्तर की बगल में एक फोल्डिंग चेयर पर बैठा हुआ था, जहां वो

लेटी थी। 'मेरा मतलब है कि तुम्हारी किस्मत थी। मैंने तुम्हें अपने हाथों से खोद कर निकाला। वहां इतना बड़ा लोहे का कबाड़ था-' उसने अपना अंगूठा और तर्जनी अंगुली फैला कर बताया। मरियम का अंदाज़ा था कि वो असली आकार को दोगुना बढ़ा कर बता रहा है। 'इतना बड़ा। तुम्हारे कंधे से चिपका हुआ था। वो सचमुच वहां घुस गया था। मुझे लगा कि मुझे प्लायर्स लगा कर निकालना पड़ेगा। लेकिन तुम अब ठीक हो। तुम्हें फिर से भली-चंगी बन जाने में देर नहीं लगेगी।'

रशीद ने ही हाकिम की कुछ किताबें बचा ली थीं।

'उनमें से अधिकतर राख हो चुकी थीं। मुझे डर है कि बाकियों को लोगों ने लूट लिया।

पहले हफ़्ते उसने लड़की की देखभाल करने में मरियम की मदद की। एक दिन वो अपने काम पर से लौटते वक़्त नया कंबल और तकिया लेकर आया।
एक दूसरे दिन गोलियों की एक शीशी ।

'विटामिन,' उसने कहा।

राशिद ने ही लैला को बताया कि उसके दोस्त तारिक़ के घर पर कब्जा

हजारों दमकते आफ़ताब 197

कर लिया गया है।

'एक तोहफ़ा,' उसने कहा। 'सय्याफ के कमांडरों में से एक ने अपने तीन आदमियों को उसे तोहफे में दे दिया है। तोहफ़ा। हा!'

वो तीनों आदमी असल में अभी लड़के ही थे, जिनके जवान चेहरे धूप में झुलस गए थे। मरियम जब उधर से गुज़रती तो उनको देखती, वो हमेशा वर्दी में होते, तारिक़ के घर के सदर दरवाज़े के सामने बैठ कर ताश खेलते, सिगरेटें पी रहे होते। उनके कलाश्निकोव दीवार से टिका कर रखी गई होतीं। अपमानजनक रवैए वाला, भूरे रंग का लड़का उनका नेता था, जो अपने में संतुष्ट दिखता था। सबसे छोटा सबसे चुप रहता था। यही वो लड़का था, जो अपने दोस्तों के छुट्टे रवैए को खुले दिल से कबूल करने में हिचक दिखाता था। जब मरियम उधर से गुज़रती तो वो मुस्कुराता और सिर हिलाकर सलाम करता । जब वो ऐसा करता तो उसकी आत्मसंतुष्टि चली जाती और मरियम को उसकी दीनता की एक झलक मिल जाती, जो अब भी नापाक नहीं हुई थी।

तभी एक सुबह उस घर पर रॉकेट आकर गिरे। बाद में अफवाह चली कि वहदत के हज़ारा लोगों ने वो रॉकेट छोड़े थे। कुछ समय तक पड़ोसी मलबे में से लड़कों के टुकड़े बीनते रहे।

मरियम सोचती कि रॉकेट ने जिस तरह उसके घर को धुएं से घिरे हुए मलबे में बदल दिया था, ऐसे में लड़की गैर मामूली तौर पर किस्मत वाली थी कि उसे बहुत छोटे जख्म आए थे। और धीरे-धीरे लड़की ठीक हो गई। वह अब ज़्यादा खाने लगी और अपने बालों को कंधा करने लगी थी। वो खुद से नहा लेती। अब रशीद और मरियम के साथ खाना खाने नीचे आने लगी।

लेकिन तब बिना बुलाए कुछ यादें उभरतीं और एक पथरीली खामोशी फैल जाती या रूखाई छा जाती। वो चुपचाप बैठ जाती या फिर ढह पड़ती। फीकी नज़रों से देखती। डरावने सपने आते और एकाएक अथाह गम में डूब जाती।
वो उल्टियां करती।

और कभी कभी पछताती ।

'मुझे यहां होना भी नहीं चाहिए,' उसने एक दिन कहा।

मरियम चादरें बदल रही थी। लड़की फर्श पर से उसे देख रही थी। अपने जख्मी घुटने उसने सीने से लगा रखे थे।

198 ख़ालिद हुसैनी

'मेरे अब्बा डिब्बे बाहर निकालना चाहते थे। किताबें। उन्होंने कहा कि वो डिब्बे मेरे लिहाज के काफ़ी भारी थे। लेकिन मैंने उनको ढोने नहीं दिया। मैं इतनी बेकरार थी। जब घर के साथ ये हादसा हुआ तो मुझे उसके भीतर होना चाहिए था।

मरियम ने साफ़ चादर झटकी और इसे बिस्तर पर स्थिर होने दिया। उसने लड़की को देखा। उसने उसके भूरे घुंघराले बालों को, उसकी छरहरी गरदन और हरी आंखों को, उसकी ऊंची गालों की हड्डियों को और मोटे होंठों को देखा। उसे याद आया कि लड़की जब छोटी थी तो वो सड़कों पर दिखती-तंदूर जाती हुई अपनी अम्मी के आगे-पीछे डगमगाते हुए चल रही होती, अपने भाई के कंधों पर सवार होती, वो उसका छोटा भाई होता जिसके कानों पर बालों का एक गुच्छा था। बढ़ई के लड़के के साथ कंचे खेल रही होती ।

लड़की मरियम को देख रही थी मानो वो उससे इच्छाशक्ति के कुछ टुकड़े मांग रही हो, मानो चाहती हो कि वो उसका हौसला बढ़ाते हुए कुछ कहे। लेकिन मरियम उसे क्या समझदारी, दे सकती थी? कैसा हौसला? मरियम को याद आया कि नाना को दफनाए जाने के दिन उसे कितनी कम राहत मिली थी, जब मुल्ला फैजुल्ला ने उसे कुरान की लाइनें पढ़कर सुनाई थींः शुक्रिया उसका. जिसके हाथों में जहान है और जिसकी सारी चीज़ों पर हुक्म चलता है, जिसने मौत और जिंदगी बनाई है वह एक दिन तुमको आजमा सकता है।' कुरान ने सच्ची बात कही है। हमारे कंधों पर आ पड़ी हरेक आज़माइश और हरेक दुख के पीछे खुदा की हिक़मत होती है। या फिर जब उन्होंने उसके अपराधबोध के बारे में बताया था, ऐसे ख़याल सही नहीं मरियम जो। वो तुमको तबाह कर देंगे। इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं था। यह तुम्हारी गलती नहीं थी।

वो इस लड़की से क्या कहती, जो उसके बोझ को हल्का कर सके। लेकिन हुआ ये कि मरियम को कुछ कहना नहीं पड़ा। क्योंकि लड़की का चेहरा सिकुड़ गया था और वो हाथों-पैरों के बल पड़ कर बोलने लगी कि वो बीमार पड़ने वाली है।

'रुको! रोके रखो। मैं तसला लाती हूं। फर्श पर नहीं करो। मैं बस अभी साफ़ किया है... ओह... ओह... खुदाया।'

तब उस धमाके से, जिसने लड़की के अम्मी-अब्बू की जान ले ली थी, महीने

हजारों दमकते आफ़ताब 199

भर बाद एक दिन एक आदमी ने दस्तक दी। मरियम ने दरवाजा खोला। उस आदमी ने अपने आने का मकसद बताया ।

'एक आदमी तुमसे मिलने आया है,' मरियम ने कहा।

लड़की ने तकिए से अपना सिर उठाया।

'वो कहता है उसका नाम अब्दुल शरीफ है।'

'मैं किसी अब्दुल शरीफ को नहीं जानती।'

'खैर, वो तुम्हें तलाशते हुए यहां आया है। नीचे ओकर उससे तुम्हारा मिलना ज़रूरी है।'

अट्ठाईस

लैला

लैला अब्दुल शरीफ के सामने बैठी थी। शरीफ एक दुबला-सा, छोटे सिर वाला आदमी था, जिसकी गोल नाक उसके गालों के जख्मों के निशानों के बीच से झांक रही थी। उसके बाल छोटे और स्याह थे और पिनकुशन पर लगे पिनों की तरह उसके सिर पर तन कर खड़े थे।

'तुमको मुझे माफ़ करना होगा हमशीरा,' उसने अपना ढीला कॉलर ठीक करते हुए और रूमाल से भौंहें पोंछते हुए कहा। 'मुझे डर है कि मैं भी पूरी तरह उवर नहीं पाया हूं। अभी पांच दिन और मुझे लेनी पड़ेंगी, क्या कहते हैं उन्हें... सल्फा गोलियां ।'

लैला ने अपनी सीट पर स्थिति बदली ताकि वो अपना दाहिना अच्छा कान उसके करीब ला सके। 'क्या आप मेरे अम्मी अब्बू के दोस्त थे?' 'नहीं, नहीं,' अब्दुल शरीफ ने जल्दी से कहा। 'माफ़ कीजिए।' उसने एक उंगली उठाई और मरियम द्वारा सामने रखे गए पानी से एक लंबी घूंट 'भरी।

'मेरा अंदाज़ा है कि मुझे शुरू से बताना चाहिए।' उसने अपने होंठों और फिर से भींहों की सुखाया। 'मैं एक कारोबारी हूं। मेरी कपड़े की एक दुकान है, जहां अधिकतर मर्दों के कपड़े विकते हैं। चापन, टोपियां, तुंबन, सूट, टाई-जो भी नाम लो। काबुल में दो स्टोर थे एक तैमानी में और दूसरा शार-ए-नौ में। हालांकि अभी-अभी मैंने उन्हें बेच दिया है। और दो पाकिस्तान में हैं, पेशावर

हजारों दमकते आफ़ताब 201

में। वहीं मेरा गोदाम भी है। इसलिए मैं काफ़ी सफ़र करता हूं, आता- जाता रहता हूं। इन दिनों यह'- उसने अपना सिर हिलाया और थकान भरी हंसी हंसा 'बस कहिए कि एक बहादुरी का ही काम है।

'हाल में कारोबार के सिलसिले में, ऑर्डर लेने और स्टॉक देखने जैसे कामों के सिलसिले में मैं पेशावर में था। मैं अपने परिवार से भी मिलने गया था। हमारी तीन बेटियां है अल्हम्दुलिल्लाह। जब मुजाहिद्दीनों ने एक दूसरे का गला काटना शुरू किया तो मैंने अपने

परिवार को पेशावर पहुंचा दिया। मैं नहीं चाहता था कि उनका नाम भी शहीदों की फेहरिश्त में जुड़ जाए। न ही मेरा, ईमानदारी से कहूं तो। जल्दी ही मैं भी उनके साथ ही रहने लगूंगा, इंशाअल्लाह ।

'बहरहाल, मुझे पिछले बुधवार से पहले काबुल लौट आना था। लेकिन जैसा नसीब में था, मैं बीमार पड़ गया। मैं तुमको यह सुना कर ऊबाऊंगा नहीं, हमशीरा। बस इतना कहना काफ़ी है कि जब मैं चलता तो लगता कि टूटे हुए शीशों से गुजर रहा हूं। मैं तो नहीं चाहूंगा कि हिक़मतियार को भी ऐसी बीमारी हो। मेरी बीवी नादिया जान ने, उस पर अल्लाह का करम हो, मुझसे फरियाद की कि मैं डॉक्टर को दिखाऊं। लेकिन मैंने सोचा कि मैं इसे एस्प्रिन और खूब सारे पानी से मात दे दूंगा। नादिया जान जोर देती रहीं और मैंने कहा कि नहीं। हम आगा- पीछा करते रहे। तुमको यह कहावत तो पता ही होगी कि एक बेवकूफ़ गधे को एक बेवकूफ़ हांकने वाला चाहिए होता है। इस बार लगता है कि गधा जीत गया। यानी मैं।'

उसने बाक़ी पानी पीकर गिलास मरियम की तरफ़ बढ़ा दिया। 'अगर आपको ज़्यादा जहमत न हो तो ।'

मरियम ने गिलास लिया और उसे भरने चली गई।

'कहने की जरूरत नहीं है कि मुझे उसकी बात सुन लेनी चाहिए थी। वो हमेशा ज़्यादा समझदार रही है। खुदा उसकी उम्र दराज़ करे। वक़्त गुजरा और मैं अस्पताल में था जहां मैं बुखार में तप रहा था और ऐसे कांप रहा था जैसे हवा में बेद पेड़ कांपता है। मुश्किल से ही मैं खड़ा हो पा रहा था। डॉक्टर ने कहा कि मुझे ब्लड प्वाइजनिंग हो गई है। उसने बताया कि अगर दो या तीन दिनों की देर हो गई रहती तो मैंने अपनी बीवी को बेवा बना दिया
होता।

'मुझे स्पैशल यूनिट में रखा गया जो सचमुच में बीमार लोगों के लिए

202 ख़ालिद हुसैनी

रिर्जव रहता है. ऐसा मेरा अंदाजा है। ओह तशक्कर।' उसने मरियम से गिलास ले लिया और अपने कोट की जेब से एक बड़ी सफ़ेद गोली निकाली। 'इन चीजों का आकार देखो।'

लैला ने उसे गोली निगलते हुए देखा। वो जानती थी कि उसकी सांसें तेज हो गई हैं। उसके पैर भारी लगने लगे हैं मानों उनमें वजन बांध दिया गया हो। उसने खुद को तसल्ली दिलाई अभी तक उसने बात पूरी नहीं की है, कि अभी तक उसने लैला को कुछ बताया नहीं है। लेकिन अगले ही पल वो बतानेवाला है, और लैला को उठ कर चले जाने की जबरदस्त चाहत को दबाना पड़ा। उसे चले जाने की इच्छा हो रही थी, इससे पहले कि वो आदमी उसकी ऐसी चीजों के बारे में बताए, जिनको वो सुनना नहीं चाहती थी।

अब्दुल शरीफ ने गिलास को टेबल पर रख दिया।

'वहीं तुम्हारे दोस्त से मेरी भेंट हुई। मोहम्मद तारिक़ वलीजई।'

लैला का दिल तेज हो गया। तारिक़ अस्पताल में था? स्पेशल यूनिट में? जो सचमुच के बीमार लोगों के लिए होता है?

उसने सूखा हुआ थूक निगला। अपनी कुर्सी पर हिली। उसने खुद अपने से भी चुरा लेना था। अगर वो ऐसा नहीं करती तो उसे डर था कि वो पागल न हो जाए। उसने अपने ख़यालों को अस्पताल और स्पेशल यूनिट से हटाया और इस तथ्य पर सोचने लगी कि उसने तारिक़ का पूरा नाम तबसे नहीं सुना था जब से कई साल पहले उन दोनों ने सर्दियों के फ़ारसी कोर्स में नाम लिखाया था। घंटी के बाद टीचर हाज़िरी के लिए उन सबके नाम पुकारते और उसका नाम इस तरह पुकारते-मोहम्मद तारिक़ वलीजई। तब उसका पूरा नाम सुन कर लैला को हंसी आ जाती थी।

'उसके साथ जो हुआ था, उसके बारे में मुझे एक नर्स से पता लगा,' अब्दुल शरीफ ने बात आगे बढ़ाई। वो अपना सीना थपथपा रहा था मानो गोली के जाने के लिए रास्ता बना रहा हो। 'जितने वक़्त मैं पेशावर में रहा मुझे उर्दू अच्छी-खासी समझ में आने लगी थी। जो भी हो, बातों को जोड़ कर मुझे यह समझ में आया कि तुम्हारा दोस्त पेशावर जा रही रिफ्यूजियों से भरी हुई एक लॉरी में था। उसमें तेईस लोग सवार थे। सरहद के करीब वे दोतरफा गोली बारी में फंस गए। एक रॉकेट लॉरी से आ लगा। शायद वो निशाना चूक गया था, लेकिन इन लोगों के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, कुछ

हजारों दमकते आफ़ताब 203

भी नहीं। महज छह लोग बच सके और उन सबको उसी यूनिट में भर्ती किया गया। तीन तो चौबीस घंटों के भीतर मर गए। उनमें से बचे हुए दो मुझे समझ में आया कि वो दोनों बहनें थीं, को तो अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। तुम्हारा दोस्त वलीजाई उनमें से आख़िरी था। जब मैं वहां पहुंचा तो उसे वहां रहते हुए करीब तीन हफ़्ते हो चुके थे।'

तो वो जिंदा था। कितनी बुरी तरह से उसे चोट पहुंचाई थी उन लोगों ने? लैला ने पागलनपन से सोचा। कितनी बुरी तरह? इतनी बुरी तरह कि उसे आखिरकार स्पेशन यूनिट में रहना पड़ा। लैला जानती थी कि उसके पसीने निकल आए हैं, कि उसका चेहरा गर्म हो उठा है। उसने कुछ और सोचने, की कोशिश की, कोई मजेदार चीज़ जैसे कि बाबी और तारिक़ के साथ बुद्धों को देखने के लिए बामियान के उस सफ़र के बारे में। लेकिन उसकी जगह तारिक़ के अम्मी-अब्बू की तस्वीरें घूम गईंः उल्टी हुई लॉरी में फंसी हुईं तारिक़ की अम्मी धुएं के बीच से तारिक़ को पुकार रही हैं, उनकी बांहें और सीना आग में जल रहे हैं, उनकी खोपड़ी पर विग पिघल रहा है...

लैला को जल्दी-जल्दी सांस लेनी पड़ी।

'वो मेरी बगल वाले बिस्तर पर था। हमारे बीच कोई दीवार नहीं थी, सिर्फ़ एक पर्दा था। इसलिए मैं उसे अच्छी तरह देख सकता था।'

अब्दुल शरीफ को अचानक अपनी शादी की अंगूठी के साथ खेलने की जरूरत महसूस हुई। वो अब ज़्यादा धीरे-धीरे बोल रहा था।

'तुम्हारा दोस्त, वो बुरी तरह बहुत ही बुरी तरह जख्मी था, समझीं। उसकी देह में हर कहीं से रबर ट्यूब लगे हुए थे। पहले तो-' उसने अपना गला साफ़ किया। 'पहले तो मैंने सोचा कि इसी हमले में उसने दोनों पांव खोए हैं, लेकिन नर्स ने बताया कि एसा नहीं था। इस हमले में उसने केवल दाहिना पांव खोया है। बाएं पांव का मामला किसी पुराने जख्म से जुड़ा था। कुछ भीतरी चोटें भी थीं। वो उसका तीन बार ऑपरेशन कर चुके थे। उसकी आंतों के कुछ हिस्से निकाले जा चुके थे और मुझे याद नहीं कि और क्या था। और वो जल गया था। बहुत बुरी तरह से। मैं बस इतना ही बता सकता हूं। यकीनन तुम खुद भी बहुत बुरे ख्वाबों से गुज़री हो हमशीरा। उनमें कुछ और जोड़ने में कोई समझदारी नहीं है।'

तारिक्र के अब पांव नहीं थे। अब वो दो कटे हुए पैरों वाला धड़ भर

204 ख़ालिद हुसैनी

था। बिना पांचों वाला। लैला को लगा कि वो अब शायद ढह जाएगी। जोर लगा कर, भरपूर कोशिश करके उसने अपने दिमाग से सूत्रों को कमरे से बाहर भेजा। इस खिड़की से बाहर, इस आदमी से दूर, सड़क पर, शहर पर, इसकी सपाट छतों वाले घरों और बाजारों के ऊपर, रेत्त की अटारियों में बदल गए इसकी गलियों के भूलभूलैए के ऊपर।

'वो अधिकतर समय बेहोश रहता। दर्द से। लेकिन ऐसा भी वक़्त आता जब बेहोशी दूर हो जाती और वो भला-चंगा रहता। दर्द रहता लेकिन दिमाग सही रहता। मैं उससे अपने बिस्तर से बातें करता। मैंने उसे बताया कि मैं कौन था, कहां से आया था। मुझे लगा कि वो खुश हुआ कि उसकी बगल में एक हमवतन था।

'अधिकतर मैं ही उससे बातें करता। उसके लिए बातें करना मुश्किल था। उसकी आवाज़ बहुत फटी हुई थी और मुझे लगता है कि होठों को हिलाने में उसे दुखता था। इसलिए मैंने उसे अपनी बेटियों और पेशावर में अपने घर के बारे में बताया, जिसके पीछे मैं और मेरे साले मिल कर एक बरामदा बना रहे थे। मैंने उसको बताया कि मैंने काबुल में अपने स्टोर बेच दिए हैं और काग़ज़ी कार्रवाई पूरी करने जा रहा हूं। यह उतना नहीं था, लेकिन इसने उसका दिल भर आया। कम से कम, मुझे तो ऐसा ही लगता है।

'कभी-कभी वो भी बोलता। आधे वक़्त तो मैं समझ नहीं पाता कि वो क्या बोल रहा है। लेकिन मैं काफ़ी बातें समझ लेता। उसने बताया कि वो कहां रहता था। उसने गज़नी में अपने चाचा के बारे में बताया। और अपनी अम्मी के खाने और अब्बा की बढ़ईगीरी और उनके अकार्डियन बजाने के बारे में बताया।

'लेकिन सबसे ज़्यादा वो तुम्हारे बारे में बातें करता था, हमशीरा। उसने बताया कि तुम उसकी सबसे पुरानी याद थीं, उसने ऐसा ही बताया। मुझे लगता है कि यह सही था, हां। मैं बता सकता हूं कि वो तुम्हारी बहुत परवाह करता था। ठीक, यह तो बहुत साफ़ दिखता था। लेकिन उसने कहा कि वो खुश था कि तुम वहां नहीं थीं। उसने कहा कि वो नहीं चाहता था कि वो तुमको वैसे देखे ।'

लैला को फर्श पर टिके अपने पांव फिर से वजनी लगने लगे, मानो उसका सारा का सारा खून नीचे जमा हो गया हो। लेकिन उसका दिमाग कहीं दूर

हजारों दमकते आफ़ताब 205

था. आजाद और उड़ता हुआ, तेजी से भागते हुए मानो कोई मिसाइल काबुल के पार जा रहा हो, उबड़-खाबड़ भूरी पहाड़ियों के पार जा रहा हो, सेज के पेड़ों के झुरमुटों से भरे हुए रेगिस्तानों के पार, नुकीली लाल चट्टानों वाले दरों को पीछे छोड़ता हुआ और बर्फ़ से भरे पहाड़ों के पार जाता हुआ...

'जब मैंने उसे बताया कि मैं काबुल लौट रहा था तो उसने मुझसे कहा कि मैं तुमको ढूंढूं। उसने कहा कि मैं तुमको बताऊं कि वो तुम्हारे बारे में सोच रहा था। कि वो तुम्हें याद कर रहा था। मैंने वादा किया मैं यह करूंगा। देखो, मैं उसे कुछ-कुछ पसंद करने लगा था। वो एक अलग तरह का लड़का था, मैं कह सकता हूं।'

अब्दुल शरीफ ने रूमाल से अपनी भौंहें पोंछीं।

'एक रात मैं जगा,' उन्होंने कहना जारी रखा, शादी की अंगूठी में उनकी दिलचस्पी फिर जग गई थी, 'मुझे लगता है कि रात ही रही होगी। उन जगहों पर इसके बारे में बताना मुश्किल ही है। वहां खिड़कियां नहीं थीं। सूरज उगता, डूब जाता और आपको इसकी ख़बर ही नहीं होती। लेकिन मैं जगा और मेरी बमल के बिस्तर पर शोरगुल जैसा कुछ हो रहा था। तुम्हें समझना होगा कि मैं भी खूब सारी दवाएं खाता था और सोता-जागता रहता था। इसलिए यह बताना मुश्किल होता कि आपने क्या सपने में देखा और क्या हक़ीकत में। मुझे बस इतना याद था कि बिस्तर के चारों ओर डॉक्टर जमा थे और इस या उस को बुला रहे थे, अलार्म बज रहे थे और ज़मीन पर सुइयां पड़ी थीं।

'सवेरे बिस्तर खाली था। मैंने नर्स से पूछा। उसने बताया कि लड़के ने बहादुरी से संघर्ष किया था।'

लैला हल्के-हल्के जानती थी कि वो सिर हिला रही थी। वो जानती थी। बेशक वो जानती थी। वो यह बात तब से ही जानती थी जब से वो इस आदमी * सामने आकर बैठी थी कि वो यहां क्यों आया है। कि वो कौन सी ख़बर अपने साथ लाया है।

'पहले तो, देखो, पहले तो मैं नहीं सोचता था कि तुम्हारा कोई वजूद * भी,' वो अब बोल रहा था। 'मुझे लगा कि वो मॉर्फिन की बेहोशी में बोल रहा है। शायद मैंने यह उम्मीद भी की थी कि तुम सचमुच में नहीं हो। मुझे बुरी खबरें सुनाने में हमेशा डर लगता है। लेकिन मैंने उससे

वादा किया था। और जैसा कि मैंने कहा, मैं उसको पसंद करने लगा था। इसलिए मैं कुछ दिन

206 ख़ालिद हुसैनी

पहले यहां आया। मैंने तुम्हारे बारे में आसपास पूछा, कुछ पड़ोसियों से बात की। उन्होंने इस घर की तरफ़ इशारा किया। उन्होंने यह भी बताया कि तुम्हारे अम्मी-अब्बा के साथ क्या हुआ। जब मैंने इसके बारे में सुना तो, खैर, मैं वापस चला गया। मैं तुमको बताने नहीं जा रहा था। मैंने तय किया कि तुम्हारे लिए यह बहुत ज़्यादा हो जाएगा। किसी के लिए भी।'

अब्दुल शरीफ ने टेबल पार किया और लैला के घुटनों पर एक हाथ रखा। 'लेकिन मैं लौट आया। क्योंकि आखिरकार मैंने सोचा कि वो चाहता था कि तुम जानो। मैं यही मानता था। मुझे बेहद अफसोस है। मैं चाहता...'

लैला अब सुन नहीं रही थी। वो उस दिन को याद कर रही थी जब एक आदमी पंजशेर से उसके भाइयों अहमद और नूर की मौत की ख़बर लेकर आया था। उसे बाबी याद आए जिनका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और वो पलंग में कंधे झुकाए धंस गए थे। मम्मी याद आईं जिनका हाथ यह ख़बर सुनते ही मुंह पर चला गया था। लैला ने देखा था कि मम्मी उस दिन तबाह हो गई थीं और इससे लैला डर गई थी, लेकिन उसे सचमुच में कोई दुख महसूस नहीं हुआ था। वो अपनी अम्मी के नुक़सान की भयानकता को नहीं समझ पाई थी। अब एक और मौत की ख़बर लेकर आया एक और अजनबी । अब वो कुर्सी पर बैठी हुई है। क्या यह इस बात के लिए उसे मिला दंड है, सज़ा है कि वो अपनी अम्मी के दुख से दूर रही थी।

लैला को याद आया कि कैसे मम्मी ज़मीन पर गिर गई थीं, कैसे वो चिल्ला रही थीं, अपने बाल नोच रही थीं। लेकिन लैला वो भी नहीं कर सकी। वो तो हिल-डुल भी सकी। वो अपनी पेशियां तक न हिला सकी।

इसके बजाए वो कुर्सी पर बैठी रही, उसके हाथ गोद में पड़े रहे, आंखें शून्य में ताकती रहीं और उसने अपने दिमाग को उड़ने के लिए खुला छोड़ दिया था। उसने इसे तब तक उड़ने दिया जब तक उसने जगह नहीं खोज ली, एक अच्छी और महफूज़ जगह, जहां जौ के हरे खेत थे, साफ़ पानी बह रहा था और हजारों भुए हवा में उड़ रहे थे। जहां बाबी अकासिया के एक पेड़ के नीचे किताब पढ़ रहे थे और तारिक़ अपने सीने पर हाथ बांधे झपकी ले रहा था, और जहां लैला धारा में अपने पांव

डुबो सकती थी और कदीम, धूप में धुली हुई चट्टानों के खुदाओं की ताकती निगाहों के नीचे सपने देख सकती थी।

उनतीस

'मुझे दुख है,' रशीद ने लड़की से कहा। तब वो मरियम पर बिना नज़र डाले उससे मस्तवा और कोफ्ते का कटोरा ले रहा था। 'मैं जानता हूं कि तुमलोग बेहद नज़दीकी... दोस्त थे... तुम दोनों। हमेशा साथ रहे, बचपन से ही। जो भी हुआ वो बहुत भयानक है। इस तरह कितने अफ़ग़ानी नौजवान मर रहे हैं।'

रशीद ने बेसब्री से हाथ से इशारा किया तो मरियम ने उसे एक रूमाल थमाया। वो अब भी लड़की की तरफ़ देखे जा रहा था।

बरसों से मरियम ने उसे खाते हुए देखा था, चबाते हुए हिलती हुई उसकी कनपटियों की पेशियां, एक हाथ से उसका छोटा सा भात का गोला बनाना, दूसरे हाथ को उलट कर चिकनाई पोंछना, मुंह के कोने में चिपक गए दानों को हटाना। बरसों से वो बिना ऊपर देखे, बिना बोले खाता आ रहा था। अपराधी ठहराती हुई उसकी खामोशी, मानो कोई फैसला सुनाया जा रहा हो, जो फिर एक तोहमत लगाती घुरघुराहट से टूटती, जीभ ऐसे कुटकुटाती मानो नापसंदीदगी ज़ाहिर कर रही हो, और रोटी या पानी के लिए एक शब्द में वो हुक्म सुनाता ।

आज वो एक चम्मच से खा रहा था। रूमाल इस्तेमाल कर रहा था। पानी मांगते हुए उसने लुत्फैन कहा। और बातें कीं। जोश में और लगातार बातें।

'तुम मुझसे पूछो तो अमेरिकियों ने हिक़मतियार को हथियार देकर ग़लती की। सीआईए ने अस्सी की दहाई में सोवियतों से लड़ने के लिए उसे सारी

208 ख़ालिद हुसैनी

बंदूकें दीं। सोवियत तो चले गए, लेकिन उसके पास अब भी बंदूकें हैं और अब उसने उनका रुख तुम्हारे अम्मी-अब्बू जैसे मासूम लोगों की तरफ़ कर दिया है। और वो इसे जिहाद कहता है। क्या मज़ाक है! औरतों

और बच्चों को मारने का जिहाद से क्या लेना देना? बेहतर था कि सीआईए ने कमांडर मसूद जैसों को हथियार दिए।'

मरियम की भौंहें खुद-ब-खुद तन गईं। कमांडर मसूद? अपने दिमाग में वो मसूद के ख़िलाफ़ रशीद के इल्ज़ामों को सुन सकती थी, कि कैसे वो गद्दार और कम्युनिस्ट था। लेकिन फिर मसूद बेशक एक ताजिक था। लैला की तरह।

'अब, एक समझदार आदमी है। एक ईमानदार अफ़ग़ान। ऐसा इन्सान जो शांतिपूर्ण समाधान में ईमानदारी से दिलचस्पी दिखा रहा है।'

रशीद ने कंधे झटके और गहरी सांस ली।

'ऐसा नहीं है कि अमेरिकी उन पर लानत भेज रहे होंगे। उन्हें क्या परवाह कि पश्तून और हज़ारा और ताजिक और उज्बेक एक दूसरे को मार रहे हैं? कितने अमेरिकी एक से दूसरे में फ़र्क़ भी करते होंगे? मैं कहता हूं कि उनसे किसी मदद की उम्मीद मत करो। हम उनके किसी काम के नहीं, अब सोवियत तो तबाह हो गए। हमसे उनका मकसद पूरा हो गया। उनके लिए, अफ़ग़ानिस्तान एक पाखाने का गड्डा है। मेरी जुबान के लिए माफ़ करना, लेकिन सच्चाई यही है। तुम क्या सोचती हो, लैला जान?'

लड़की ने बुदबुदा कर कुछ कहा, जिसे समझना मुश्किल था, और अपने कटोरे में एक कोफ्ते को दबाया।

रशीद ने सोच में डूबे हुए सिर हिलाया मानो लड़की ने कोई ऐसी बात कही हो जो रशीद की अब तक सुनी बातों में सबसे समझदारी की बात थी। मरियम को दूसरी तरफ़ देखते रहना पड़ा।

'पता है, तुम्हारे अब्बा, खुदा उनको चैन अता फरमाए, तुम्हारे अब्बा और मैं इसी तरह की बहसें किया करते थे। बेशक यह तुम्हारी पैदाइश के पहले की बात है। हम लगातार सियासत की बातें करते। और किताबों के बारे में भी। नहीं करते थे, मरियम? याद है तुम्हें?

मरियम ने पानी की एक घूंट लेते हुए खुद को व्यस्त कर लिया। 'जो भी हो, मुझे उम्मीद है कि मैंने सियासत की इन बातों से तुमको

हजारों दमकते आफ़ताब 209

तंग नहीं किया होगा।'

बाद में भरियम रसोई में साबुन के पानी में वर्तनों को भिगो रही थी और उसका पेट ऐंठ रहा था।

उसे रशीद की बातों पर उतना दुख नहीं था। उसके खुलेआम झूठ, उसकी झूठी हमदर्दी या इस तथ्य पर भी उतना दुख नहीं था कि जबसे उसने उस लड़की को ईटों में से खोद कर निकाला था, तबसे उसने मरियम की तरफ़ हाथ नहीं बढ़ाया था।

उसे दुख उसके नाटक पर था। यह किसी की अभिनय जैसा था। यह उस लड़की को प्रभावित करने की, उसे मोह लेने की उसकी एक मक्कारी से भरी हुई दयनीय कोशिश थी।

और अचानक मरियम जान गई कि उसका शक सही था। वो समझ गई और इससे उसे डर भी लगा, जो उसको अंधा कर देने वाले सिर के झटके जैसा था, कि वो जो देख रही थी वो कुछ और नहीं बल्कि एक प्रणय निवेदन था।

जब आखिरकार वो साहस जुटा पाई तो मरियम रशीद के कमरे में गई।

रशीद ने एक सिगरेट जलाई और बोला, 'क्यों नहीं?'

मरियम तभी जान गई थी कि वो हार चुकी है। वो उम्मीद कर रही थी कि शायद रशीद हर बात से इन्कार कर देगा, वो इन सबसे जो मतलब निकाल रही थी, उस पर वो हैरान होने का दिखावा करेगा, शायद गुस्सा भी हो जाए। तब शायद मरियम को थोड़ी बढ़त मिलेगी। तब शायद वो उसे शर्मिंदा कर सकेंगी। लेकिन रशीद के शांति से कबूल लेने और उसके सपाट लहजे ने मरियम का साहस छीन लिया।

'बैठो,' उसने कहा। वो अपने बिस्तर पर, दीवार से टेक लगाए पड़ा था और उसके मोटे पैर दरी पर फैले हुए थे। 'बैठ जाओ, इससे पहले कि बेहोश होकर गिर पड़ो और अपना सिर फोड़ लो।'

मरियम ने खुद को उसकी बिस्तर की बगल में एक फोल्डिंग कुर्सी पर गिरते हुए महसूस किया।

'मुझे एशट्रे दोगी, दोगी क्या?' रशीद ने कहा,

210 ख़ालिद हुसैनी

रशीद साठ या उससे ज़्यादा का होगा-मरियम ने सोचा। और असल में रशीद खुद अपनी सही उम्र नहीं जानता था। उसके बाल सफेद हो गए थे, लेकिन वो हमेशा की तरह मोटे और खुरदरे थे। उसकी पलकों और गर्दन की चमड़ी में अब झोल आ गए थे, जिनमें झुर्रियां पड़ गई थीं। उसके गाल पहले से ज़्यादा लटक गए थे। सवेरे वो थोड़ा झुक जाता था। लेकिन अब भी उसके कंधे चौड़े थे, बदन मोटा, हाथ मज़बूत और पेट उभरा हुआ था, जो उसके कमरे में दाखिल होने पर उसके बाक़ी सारे अंगों से सबसे पहले भीतर दाखिल होता था।

कुल मिला कर मरियम के मुकाबले रशीद पर उम्र की कम मार पड़ी थी, मरियम ने सोचा।

'हमें इस हालात को कानूनी रूप देने की जरूरत है,' उसने अब एशट्रे को अपने पेट पर टिकाते हुए कहा। उसके होंठों पर एक खिलवाड़ से भरी हुई शिकन आ गई। 'लोग बातें बनाएंगे। यह शर्म की बात होगी कि एक गैरशादीशुदा नौजवान औरत यहां रह रही है। यह मेरी इज़्ज़त के लिए बुरा है। और उसकी इज़्ज़त के लिए भी। और तुम्हारी इज़्ज़त के लिए भी, शायद मुझे कहना चाहिए।'

'अट्ठारह बरस,' मरियम ने कहा। 'और मैंने आपसे एक भी चीज़ नहीं मांगी। एक भी चीज़ नहीं। अब मैं मांग रही हूं।'

उसने धुआं खींचा और धीरे-धीरे छोड़ा। 'वो यहां बस रह नहीं सकती, अगर तुम यह सलाह दे रही हो। मैं उसे खाना खिलाने, कपड़े देने और सोने के लिए जगह देने नहीं जा रहा हूं। मैं रेड क्रॉस नहीं हूं, मरियम।'

'लेकिन यह?'

'यह क्या? क्या? वो बहुत छोटी है, तुम सोचती हो? वो चौदह की है।

मुश्किल से ही एक बच्ची है। तुम चौदह की थीं, याद है? मेरी अम्मी तब चौदह की थीं, जब उन्होंने मुझे पैदा किया था। तेरह में उनकी शादी हो गई थी।'

'मैं... मैं यह नहीं चाहती,' मरियम ने अपमान से सुन्न पड़ते हुए और बेचारगी से कहा।

'यह तुम्हारा फैसला नहीं है। यह उसका और मेरा फैसला है।'

'मैं इतनी बड़ी हूं।'

'वो इतनी छोटी है, तुम इतनी बड़ी हो। यह बकवास है।'

हजारों दमकते आफ़ताब 211

'मैं इतनी बड़ी हूं। मेरे साथ तुम्हारे यह सब करने के लिहाज से मैं काफ़ी बड़ी हूं,' मरियम ने अपने कपड़े को इतने जोर से मुट्ठी में कसा कि उसके हाथ कांप उठे। 'कि इतने बरसों के बात तुम मुझे एक अंबाग बना दो।

'इतना नाटक मत दिखाओ। यह आम बात है और तुम यह जानती हो। मेरे ऐसे दोस्त हैं जिनकी दो, तीन, चार बीवियां भी है। तुम्हारे अपने बाप की तीन बीवियां है। इसके अलावा मैं आज जो कर रहा हूं, वो मेरी जानपहचान वाले लोगों ने बहुत पहले कर लिया होता। तुमको पता है कि यही सच है।'

'मैं इसकी इजाजत नहीं दूंगी।'

इस पर रशीद फीके से मुस्कुराया।

'एक दूसरा उपाय भी है,' उसने एक पांव के तलवे को दूसरे पांव की खुरदरी एड़ी से रगड़ते हुए कहा। 'वो जा सकती है। मैं उसके रास्ते में नहीं आऊंगा। लेकिन मुझे शक है कि वो दूर नहीं जा पाएगी। खाना नहीं, पानी नहीं, जेब में एक रुपया नहीं और हर कहीं गोलियां और रॉकेट उड़ रहे हैं। तुम्हें क्या लगता है कि कितने दिन वो अगवा होने से, बलात्कार किए जाने से या गला काट कर सड़क के किनारे गड्डे में फेंक दिए जाने से बची रहेगी?

या एक साथ तीनों से ही?'

वो खांसा और उसने अपनी पीठ के पीछे तकिया ठीक किया।

'बाहर सड़कें निर्मम हैं मरियम। मेरा यकीन करो। हर मोड़ पर खून के प्यासे और डाकू हैं। मुझे नहीं लगता है कि उसे उनसे बचने का मौक़ा मिलेगा, विल्कुल नहीं। लेकिन चलो कहने के लिए मान लेते हैं कि किसी जादू से वो पेशावर पहुंच भी गई तो तुम्हें क्या इसका कुछ अंदाज़ा है कि वहां के कैंप कैसे हैं?'

धुएं के पर्दे के पीछे से वो उसे देख रहा था।

'लांग वहां कार्डवोर्ड के ढेर के नीचे रह रहे हैं। टीबी, पेचिश, अकाल और जुर्म। और यह तो सर्दियों के पहले की बात है। इसके बाद ठंड से सुन्न का देने वाला मौसम आएगा। न्यूमोनिया। लोग बर्फ़ में बदल जाएंगे। वो कैंप जमे हुए लोगों के कब्रिस्तान में बदल जाएंगे।

'बेशक,' उसने एक अपने हाथों से एक मजाकिया अंदाज में घुमाया, 'वो पेशावर के रंडीखानों में खुद को गर्म रख सकती है। मैंने सुना है कि

212 ख़ालिद हुसैनी

वहां ये धंधा फल-फूल रहा है। उसकी जैसी खूबसूरती अपनी थोड़ी-बहुत किस्मत तो बना ही सकती है, तुम्हें नहीं लगता?'

उसने एशट्रे को तिपाई पर रख दिया और बिस्तर की बगल में अपने पांव झुला दिए।

'देखो,' उसने एक ऐसे समझौते के लहजे में कहा जो एक विजेता का लहजा ही हो सकता है। 'मैं जानता हूं कि तुम इसे अच्छे से नहीं लोगी। मैं इसके लिए सचमुच में तुम्हें दोष नहीं दूंगा। लेकिन यही सबसे बेहतर है। तुम देखोगी। इसे इस तरह देखो मरियम। मैं घर में तुम्हारी मदद के लिए एक हाथ और उसे पनाह दे रहा हूं। एक घर और एक शौहर। इन दिनों जैसा वक़्त है एक औरत को एक शौहर की ज़रूरत होती है। क्या तुमने गलियों में सोती बेवाओं पर गौर नहीं किया है? वो तो इस मौके के लिए कत्ल तक कर दें। असल में, यह... खैर, मैं तो कहूंगा कि यह मेरी परोपकारिता है।'

वो मुस्कुराया।

'मैं इसे जिस तरह देखता हूं, मैं एक तमगे के लायक हूं।'

बाद में अंधेरे में मरियम ने लड़की को बताया।

काफ़ी देर तक लड़की ने कुछ नहीं कहा।

'वो सवेरे तक जवाब चाहते हैं,' मरियम ने कहा।

'उन्हें यह अभी ही मिल सकता है,' लड़की ने कहा। 'मेरा जवाब है

हां।'

तीस

लैला

अगले दिन लैला बिस्तर में ही पड़ी रही। सुबह जब रशीद ने झांक कर उसे बताया कि वो नाई के पास जा रहा है उस समय वो कंबल के भीतर थी। जब रशीद दोपहर बीतने के काफ़ी बाद घर लौटा तब भी वो बिस्तर में ही थी। उसने लैला को अपनी नई हजामत और नया सेकेंड हैंड सूट दिखाया। यह नीले रंग का सूट था, जिस पर दूधिया धारियां बनी थीं। रशीद ने लैला के लिए एक शादी की अंगूठी भी खरीदी थी।

रशीद बिस्तर पर लैला की बगल में बैठा और पूरे दिखावे के साथ धीरे- धीरे फीता खोला, फिर डिब्बा खोला और तब अंगूठी को नज़ाकत के साथ बाहर निकाला। उसने बताया कि उसने इसके लिए मरियम की शादी की पुरानी अंगूठी बेच दी है।

'वो परवाह नहीं करेगी। यकीन मानो। वो इस पर गौर तक नहीं करेगी।'

लैला बिस्तर के दूसरे सिरे पर चली गई। वो नीचे मरियम की आवाज़ सुन रही थी, तो अपनी इस्तिरी को फूंक रही थी।

'वैसे भी उसने कभी उसे नहीं पहना था,' रशीद ने कहा।

'मुझे नहीं चाहिए,' लैला ने कमज़ोर आवाज में कहा। 'मुझे यह पसंद नहीं। आपको वापस लेना होगा।'

'वापस ले लूं?' उसके चेहरे पर बेसब्री का एक भाव आकर गुज़र गया। वो मुस्कुराया। 'मुझे कुछ रकम भी इसमें जोड़नी पड़ी थी-असल में खूब सारी ।

214 ख़ालिद हुसैनी

यह बाईस कैरेट सोने की एक बेहतर अंगूठी है। देखो कितनी भारी है? पहन लो, पहन के देखो ना। नहीं?' उसने डिब्बा बंद कर दिया। 'फूल कैसे रहेंगे? यह अच्छा होगा। तुम्हें फूल पसंद है? तुम्हारा पसंदीदा फूल कौन सा है? गुलबहार? ट्यूलिप? लाइलैक? फूल नहीं? अच्छा! मुझे खुद भी इसमें कोई तुक नहीं लगता। मुझे नहीं लगता...अब, मैं यहां देह-माजंग में एक दर्जी को जानता हूं। मैं सोच रहा था कि हम तुम्हें वहां ले जाएं और तुम्हारे लिए एक ढंग की ड्रेस बनवाएं।'

लैला ने सिर हिला कर मना कर दिया।

रशीद ने भौंहें चढ़ाईं।

'मैं बस जल्दी ही' लैला ने कहना शुरू किया।

रशीद ने उसकी गर्दन पर एक हाथ रखा। घबरा कर लैला सिकुड़ कर पीछे हटी। उसकी छुअन ऐसी थी मानो बिना बनियान के गीला, चुभता हुआ पुराना स्वेटर पहन लिया गया हो।

'हां?'

'मैं बस जल्दी ही कर लूंगी, जब हम ये करेंगे।'

रशीद का मुंह खुला और एक पीले दांतों वाली मुस्कान फैल गई। 'फौरन,' उसने कहा।

अब्दुल शरीफ के आने के पहले लैला ने पाकिस्तान चले जाने का फैसला कर लिया था। अब वो सोचती थी कि अब्दुल शरीफ के ख़बर लाने के बाद भी शायद वो चली गई रहती। यहां से कहीं दूर। इस शहर से दामन छुड़ा कर जहां का हर नुक्कड़ एक फंदा था, हर हली अपने भीतर एक भूत छिपाए हुए थी, जो उसके आगे जैक इन द बॉक्स की तरह फूट पड़ता। शायद उसने चले जाने का जोखिम उठा लिया होता।

लेकिन अचानक ही चले जाना एक विकल्प नहीं रह गया।

तब तो नहीं, जब रोज-रोज उल्टियां होने लगी थीं।

उसकी छातियों भरी-भरी लगने लगी थीं।

और वो किसी तरह जान गई थी कि इस सारी उथल-पुथल के बीच उसे माहवारी नहीं हुई थी।

लैला ने खुद की कल्पना एक शरणार्थी कैंप में की, जहां ठंडी, चुभती

हजारों दमकते आफ़ताब 215

हुई हवा के बीच एक सपाट मैदान में प्लास्टिक की हज़ारों चादरें खंभों पर टंगी हुई थीं। उनमें से एक कामचलाऊ तंबू के नीचे उसने अपने बच्चे को देखा-तारिक़ के बच्चे को, उसकी कमज़ोर कनपटियां और शांत जबड़े, नीली-भूरी चित्तीदार चमड़ी देखीं। उसने देखा कि उसकी छोटी सी देह अजनबियों ने धोई, एक पीले तौलिए के कफन में उसे लपेटा और एक गड्ढे में उतार दिया, जो एक तेज हवाओं वाली जगह में गिद्धों की निराश निगाहों के नीचे खुदा हुआ था।

अब वो कैसे भाग सकती थी?

लैला ने अपनी जिंदगी में आए लोगों की एक फेहरिश्त बनाई जो डरावनी थी। अहमद और नूर, मर चुके थे। हसीना जा चुकी थी। गीती, मर चुकी थी। मम्मी, मर चुकी थीं। बाबी, मर चुके थे। अब तारिक़...

लेकिन जादुई रूप से उसके पिछले जीवन में से कुछ बचा रह गया था। यह उस आदमी के साथ उसका आख़िरी सूत्र था, जिसके साथ, अभी पूरी तरह अकेली पड़ जाने के पहले, वो हुआ करती थी। तारिक़ का एक हिस्सा. अब भी उसके भीतर जिंदा था, उसमें से नन्हें हाथ फूट रहे थे, पारभासी हाथ उग रहे थे। अपनी पिछली जिंदगी में से, तारिक़ की अकेली बची रह गई चीज को वो जोखिम में कैसे डाल सकती थी?

फौरन ही उसने फैसला कर लिया था। तारिक़ के साथ बिताए गए दिनों के बाद छह हफ्ते बीत चुके थे। देर हुई तो रशीद को संदेह होने लगेगा।

वो जानती थी कि जो वो कर रही थी वो अनैतिक था। अनैतिक, कपट से भरा हुआ और लज्जाजनक । और यह मरियम के प्रति पूरी तरह नाइंसाफ़ी थी। लेकिन अभी जब उसके भीतर का बच्चा अभी शहतूत से भी बड़ा नहीं था,

लैला ने इसे देख लिया था कि एक मां को किन-किन चीजों की कुर्बानियां देनी पड़ती हैं। शराफत इनमें से पहली चीज़ थी।

उसने अपना हाथ अपने पेट पर रखा। अपनी आंखें बंद कर लीं।

लैला उस दबे हुए जश्न को टुकड़ों-टुकड़ों में याद करती। रशीद के सूट की दूधिया धारियां। उसके बालों के स्प्रे की तीखी महक़। उसके गले की उभरी हुई हड्डी के ठीक ऊपर दाढ़ी बनाते हुए आई एक छोटी सी खरोंच। अंगूठी पहनाते हुए तंबाकू के धब्बों वाली उसकी उंगलियों की खुरदरी गुद्दी। कलम ।

216 ख़ालिद हुसैनी

उस कलम का नहीं चलना। एक नई कलम की तलाश । निकाहनामा । दस्तखत किया जाना, रशीद के सधे हुए हाथ और लैला के कांपते हुए। दुआएं।
शीशे में यह गौर करना कि रशीद ने अपनी भौंहें कतरी हैं।

और कमरे में कहीं खड़ी होकर मरियम यह सब देख रही थी। उसके अस्वीकार से हवा ठहरी हुई थी।

लैला पुरानी बीवी से निगाहें मिलाने की हिम्मत नहीं जुटा पाई।

उस रात रशीद की ठंडी चादरों के नीचे पड़े हुए उसने उसे पर्दे खींचते हुए देखा। रशीद के हाथ अभी लैला की कमीज़ के बटनों को खोलते और उसकी सलवार के नाड़े को झटक कर खींचते, इसके पहले ही वो कांपने लगी थी। रशीद उत्तेजित हो रहा था। उसकी उंगलियां उसकी अपनी कमीज़ और बेल्ट खोल नहीं पा रही थीं। लैला उसके झुके हुए सीने, उसकी उभरी हुई नाभि, उसके बीच में एक छोटी-सी नीली नस को, उसके सीने पर मोटे सफ़ेद बालों के गुच्छे को, उसके कंधों को और कुहनी के ऊपर बांहों को देख पा रही थी। अपनी देह पर वो उसकी आंखों को रेंगते हुए महसूस कर रही थी।

'खुदा मेरी मदद करो, मुझे लगता है कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं,' रशीद ने कहा।

किटकिटाते हुए दांतों से लैला ने बत्तियां बुझा देने को कहा।

बाद में, जब लैला को यकीन हो गया कि रशीद सो गया है, उसने चुपचाप दरी के नीचे से एक छुरी निकाली, जिसे उसने पहले से छुपा रखा था।

उसे उसने अपनी तर्जनी उंगली की गुद्दी में चुभो लिया। फिर उसने कंबल उठाई और अपनी उंगली उस जगह पर रख कर खून बहने दिया, जहां उन्होंने प्यार किया था।

इकतीस

मरियम

दिन में लड़की का कोई निशान नहीं मिलता, बस उसके बिस्तर के स्प्रिंग बजते और ऊपर से कदमों की आहटें आतीं। नहाने के कमरे में वो पानी गिरा रही होती या ऊपर से के कमरे से शीशी में खनखनाते चम्मच की आवाज आती। कभी-कभी वो दिखाई देतीः मरियम की निगाह के दायरे में उसकी लहराती हुई पोशाक का धुंधला सा दृश्य, सीढ़ियों पर भागते हुए चढ़ना, सीने पर बंधे हुए उसके हाथ, एड़ियों पर बजती हुई चप्पलें।

लेकिन उसका आपस में टकरा जाना लाजिमी था। मरियम को लड़की सीढ़ियों पर या पतले गलियारे में या रसोई में या फिर आंगन से आते हुए दरवाज़े में मिल जाती। जब वो इस तरह मिल जाते, एक असहज सा तनाव उनके बीच पसर जाता। लड़की अपनी स्कर्ट समेटती और एक या दो शब्द माफ़ी के कह कर तेजी से चली जाती। मरियम बगल से उसे देखती और उसे लड़की का शर्म के मारे लाल हो जाना दिख जाता। कभी कभी मरियम को उसमें से रशीद की महक़ आती। वो लड़की की चमड़ी पर रशीद के पसीने, उसके तंबाकू, उसकी चाहतों की गंध महसूस कर सकती थी। खुशकिस्मती से सेक्स अब उसकी जिंदगी का बंद हो चुका अध्याय था। इसे ख़त्म हुए कुछ समय हो चुका था और अब रशीद के नीचे पड़े रहने के उन कठिन पलों का खयाल भी उसकी अंतड़ियों में ऐंठन पैदा कर देता।

हालांकि मरियम और लड़की के बीच आपसी सहमति से एक दूसरे से

218 ख़ालिद हुसैनी

बचने का खेल रातों में मुमकिन नहीं था। रशीद कहता कि वो एक परिवार हैं। वो जोर देकर कहता कि वो एक परिवार हैं और परिवारों को एकसाथ ही खाना होता है।

'ये क्या है?' वो उंगलियों की मदद से हड्डी से गोश्त अलग करने की कोशिश करते हुए कहता। प्यार भरे बरताव का दिखावा लड़की से शादी के

एक हफ्ते बाद ही छोड़ दिया गया था। 'क्या मैंने बुतों की जोड़ी से शादी की है? चलो मरियम, उससे कुछ कहो। तुम्हारे शऊर कहां हैं?'

हड्डी से रोगन चूसते हुए उसने लड़की से कहा, 'लेकिन तुम उसे दोष मत देना। वो तो चुप-चुप सी है। ये तो खुदा का करम है, सचमुच में, क्योंकि वल्लाह अगर किसी इन्सान के पास कहने के लिए बहुत कुछ न हो तो उसके शब्द डंक की तरह चुभने वाले भी हो सकते हैं। हम शहरी लोग हैं, तुम और मैं, लेकिन वो तो देहाती है। देहाती भी नहीं। वो एक गांव के बाहर एक मिट्टी के बने कोल्बा में पली-बढ़ी। उसके बाप ने उसे वहां रखा था। क्या तुमने इसे बत्ताया है मरियम, क्या तुमने इसे बताया है कि तुम हरामी हो? खैर, वो हरामी है। लेकिन वो बिना गुणों वाली नहीं है, सारे गुण हैं उसमें। तुम खुद देख लोगी, लैला जान। एक बात तो ये है कि वो मज़बूत है, अच्छी मेहनती है और उसमें छल-कपट नहीं है। मैं तो इसे यूं कहूंगा कि अगर ये एक कार होती तो जरूर ही ये वोल्गा होगी।'

मरियम अब तेतीस साल की थी लेकिन वह शब्द, हरामी, उसे अब भी चुभता था। उससे सुन कर मरियम को महसूस होता कि वो एक कीड़ा है, एक तिलचट्टा है। उसे कलाइयां खींचतीं नाना याद आईं। तुम एक फूहड़, छोटी हरामी हो। जितना कुछ मैंने सहा है, यह उसका इनाम है। विरासत में मिली हुई फूहड़ छोटी हरामी।

'तुम,' रशीद ने लड़की से कहा, 'दूसरी तरफ़ तुम एक बेंज़ होतीं। एक नई-नवेली, पहले दर्जे की चमचमाती बेंज़। वाह वाह। लेकिन। लेकिन।' उसने अपनी चिकनाई से भरी तर्जनी उंगली उठाई। 'बेंज का... ख़ास ख़याल... रखना होता है। इसकी खूबसूरती और इसकी कारीगरी की इज़्ज़त करनी होती है, देखो। ओह, तुम जरूर सोच रही होंगी कि मैं पागल हूं, दीवाना हूं, जो इन सब ऑटोमोबाइल की बात कर रहा हूं। मैं नहीं कह रहा हूं कि तुम कार हो। मैं बस अपनी वात समझा रहा था।'

हजारों दमकले आफ़ताब 219

आगे ये हुआ कि रशीद ने भात का जो गोला बना रखा था उसे प्लेट में रख दिया। उसका हाथ खाने पर झूल गया और उसने नर्म, ख़यालों में डूबा हुआ भाव बनाया।

'मरे हुए लोगों के बारे में बुरी बातें नहीं कहनी चाहिए, शहीदों के बारे में तो और भी नहीं। और जब मैं यह कह रहा हूं तो मेरा इरादा अनादर जताने का नहीं है, लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम इसे जान लो...

जिस तरह से तुम्हारे अम्मी और अब्बू ने-अल्लाह उन्हें माफ़ करें और जन्नत अता फरमाए तुमको लेकर नर्मी बरती उसको लेकर मेरे अपने कुछ... ख़ास ख़यालात हैं। मुझे माफ़ करना ।'

लड़की ने जो ठंडी, हिकारत से भरी निगाह रशीद पर डाली वो मरियम से यह छुपी नहीं रह सकी, लेकिन रशीद नीचे देख रहा था और वो यह जान नहीं सका।

'कोई बात नहीं। मामला यह है कि अब मैं तुम्हारा शौहर हूं और अब यह जिम्मेदारी मुझ पर है कि मैं न केवल तुम्हारी इज़्ज़त बल्कि हमारी इज़्ज़त, हां, हमारे नंग ओ नामूस की हिफाजत करूं। यह एक शौहर की ज़िम्मेदारी होती है। तुमने इसको लेकर मुझे फिक्र में डाल दिया है। मेहरबानी करो। अपने आप में तुम मलिका हो, और यह घर तुम्हारा महल है। तुम्हें कोई काम करवाना हो तो तुम मरियम से कहो और वो इसे तुम्हारी खातिर करेगी। करोगी न. मरियम? और तुम्हें कोई फैंसी चीज़ चाहिए, मैं तुम्हें लाकर दूंगा। देखो, इस तरह का शौहर हूं मैं।

'बस मैं बदले में यही चाहता हूं, खैर, यह एक मामूली-सी चीज है। मैं चाहता हूं कि मेरे बिना तुम घर से बाहर निकलने से बचो। बस यही। मामूली है, नहीं? अगर मैं नहीं रहूं और तुम्हें फौरन कोई चीज चाहिए तो तुम मरियम को भेज सकती हो और वो बाहर जाकर तुम्हारे लिए ला देगी। यकीनन तुमने एक फ़र्क़ पर गौर किया होगा। खैर, कोई वोल्गा और बेंज को एक ही तरह से नहीं चला सकता। यह तो बेवकूफ़ाना होगा, नहीं होगा क्या? ओह, मैं यह भी चाहता हूं कि जब हम साथ-साथ बाहर जाएं तो तुम बुर्का पहना करो। बेशक, यह तुम्हारी अपनी हिफाजत के लिए है। यह सबसे अच्छा है। इतनी फुहश औरतें अब इस शहर में हैं। इतने घिनौने इरादे, एक शादीशुदा औरत को भी बेइज़्ज़त करने की इतनी बेचैनी। इसलिए। बस यही।'

220 ख़ालिद हुसैनी

वो खांसा।

'मुझे बता देना चाहिए जब मैं बाहर रहूंगा तो मरियम मेरी आंख और कान होगी।' उसने कहा और मरियम पर ऐसी उड़ती हुई निगाह डाली, जो कनपटी पर लोहे की नोक वाले जूते की चोट जितनी सख़्त थी। 'ऐसा नहीं है कि

मैं शक कर रहा हूं। बल्कि बात इसकी उल्टी है। साफ़-साफ़ कहूं तो तुम मुझे अपनी उम्र से ज़्यादा होशियार लगती हो। लेकिन तब भी तुम एक जवान औरत हो लैला जान। एक जवान औरत बदकिस्मती से भरे रास्ते भी चुन सकती है। उसका झुकाव बुराई की तरफ़ होता है। जो भी हो, मरियम ज़िम्मेदार होगी। और अगर कभी पांव फिसला...'

वो बोलता रहा। मरियम बैठी अपनी आंख के कोने से लड़की को देखती रही और रशीद उन पर मांगों और फैसलों की बौछार करता रहा मानो काबुल पर रॉकेट बरस रहे हों।

एक दिन मरियम बैठक में रशीद की कमीजें तह कर रही थी, जिनको उसने आंगन में तार पर से उतारा था। उसे नहीं पता था कि लड़की कब से वहां खड़ी थी, लेकिन जब उसने एक कमीज़ उठाई और मुड़ी तो उसने लड़की को दरवाजे में खड़ी पाया। हाथों में उसने चाय से भरा एक गिलास पकड़ रखा था।

'मेरा इरादा आपको चौंका देना नहीं था,' लड़की ने कहा। 'मैं माफ़ी चाहती हूं।'

मरियम ने बस उसे देखा।

धूप लड़की के चेहरे, उसकी बड़ी-बड़ी हरी आंखों और चिकने ललाट पर, उसके ऊंची गाल की हड्डियों और मोहक़, मोटी भौंहों पर पड़ रही थी। उसकी भौंहें मरियम की भौंहों की तरह पतली और बेजान नहीं थीं। आज सवेरे उसने अपने पीले बालों में कंघी नहीं की थी और वे बीच से दो हिस्सों में बांटे गए थे।

लड़की ने जिस तरह से कप को जोर से पकड़ रखा था और उसके कंधे तने हुए थे, उससे मरियम देख सकती थी कि वो घबराई हुई थी। उसने कल्पना की कि वो बिस्तर में बैठी हुई हिम्मत जुटा रही थी।

'पत्तियां मुड़ रही हैं,' लड़की ने दोस्ताना लहजे में कहा। 'देखा आपने?

हजारों दमकते आफ़ताब 221

पतझड़ मेरा पसंदीदा मौसम है। मुझे इसकी महक़ पसंद, है, जब लोग अपने बगीचों में पत्तियां जलाते हैं। मेरी अम्मी को बसंद सबसे ज़्यादा पसंद था। आप मेरी अम्मी को जानती थीं?'

'सचमुच में नहीं।'

लड़की ने अपने हाथ कानों के पीछे बांधे। 'जी, आपने क्या कहा?'

मरियम ने आवाज़ ऊंची की। 'मैंने कहा कि नहीं। मैं तुम्हारी अम्मी को नहीं जानती थी।'

'ओह ।'

'क्या तुम कुछ चाहती हो?'

'मरियम जान, मैं चाहती हूं... उन्होंने उस रात जो बातें कहीं, उनके बारे में-'

'मेरा इरादा भी तुमसे इस पर बात करने का था।' मरियम ने उसे बीच में ही रोक दिया।

'हां, मेहरबानी करके,' लड़की ने ईमानदारी से, करीब-करीब बेकरारीः से कहा। वो एक क़दम आगे बढ़ आई। अब वो राहत में दिख रही थी।

बाहर एक ओरयल गा रही थी। कोई गाड़ी खींचता हुआ जा रहा था। मरियम इसके चूलों की चरचराहट को, पत्थर पर उसके लोहे के पहिए के उछलने और तेज आवाज़ को सुन सकती थी। गोलियों की आवाज आई जो उतनी दूर भी नहीं थी। एक गोली के बाद तीन गोलियां चलीं और फिर सन्नाटा।

'मैं तुम्हारी नौकरानी नहीं बनूंगी,' मरियम ने कहा। 'मैं नहीं बनूंगी।'

लड़की घबरा गई। 'नहीं। बेशक नहीं!'

'तुम महल की मलिका हो सकती हो और मैं एक देहाती, लेकिन मैं तुमसे हुक्म, नहीं लूंगी। तुम चाहो तो उनसे शिकायत कर सकती हो और वो मेरा गला काट सकते हैं, लेकिन मैं यह नहीं करूंगी। सुना तुमने? मैं तुम्हारी नौकरानी नहीं बनूंगी।'

'नहीं! मैं उम्मीद नहीं करती-'

'और अगर तुम सोचती हो कि तुम अपनी नजर का इस्तेमाल कर मुझसे छुटकारा पा लोगी तो तुम गलत हो। यहां पहले मैं थी। मुझे कोई फेंक नहीं सकता। मैं ऐसा नहीं होने दूंगी कि तुम मुझे निकाल बाहर कर दो।'

'यह मैं नहीं चाहती हूं,' लड़की ने कमजोरी से कहा।

222 ख़ालिद हुसैनी

'और मैं देखती हूं कि तुम्हारे घाव अब सूख गए हैं। इसलिए अब इस घर के काम में हांथ बंटाना शुरू कर दो-'

लड़की ने जल्दी से सिर हिला कर हामी भरी। उसकी कुछ चाय छलक गई लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया। 'हां, नीचे आने की एक वजह ये भी थी, कि मेरी देख-रेख करने के लिए आपको शुक्रिया कहूं-'

'खैर, मैंने नहीं किया होता,' मरियम ने गुस्से में कहा। 'मैंने तुम्हें नहीं खिलाया होता, नहलाया होता और तुम्हारी सेवा की होती अगर मुझे पता होता कि तुम पलट कर मेरा शौहर मुझसे छीन कर चुरा लेने वाली हो।'

'चुरा-'

'मैं अब भी खाना बनाऊंगी और बर्तन धोऊंगी। तुम कपड़े धोओगी। और बहारोगी। बाक़ी काम एक दिन मैं करूंगी और एक दिन तुम। और एक और बात। मैं तुम्हारा साथ देने लायक नहीं हूं। मैं यह नहीं चाहती। मैं बस अकेली रहना चाहती हूं। तुम मुझे अकेली छोड़ दो और बदले में मैं तुम्हारा कोई काम कर दूंगी। हम इसी तरह रहेंगी। यही नियम हैं।'

जब उसने बोलना बंद किया तो उसका दिल हथौड़े की तरह बज रहा था और मुंह सूख गया लगता था। मरियम ने कभी भी इस तरह से बात नहीं की थी। अपनी इच्छा को इस तरह ज़ोरदार तरीके से कभी ज़ाहिर नहीं किया था। उसे खुशी तो महसूस होनी ही थी। लेकिन लड़की की आंखें भर आई और चेहरा लटक गया। इससे मरियम ने इस आवेग जो संतुष्टि हासिल की थी, वो उसे छोटी और नामुनासिब महसूस हुई।

उसने लड़की की तरफ़ कमीजें बढ़ा दीं।

'इन्हें अलमारी में रख दो, क्लोजेट में नहीं। ऊपर की दराज में सफ़ेद | उन्हें पसंद है और मोज़ों समेत बाक़ी का कपड़ा बीच की दराज में।'

लड़की ने कप फर्श पर रख दिया और अपने हाथ कमीज़ लेने के लिए बढ़ा दिए। उसकी हथेलियां ऊपर की तरफ़ थीं। 'मुझे इन सबके लिए बहुत दुख है,' वो फटी हुई आवाज़ में बोली।

'तुम्हें होना चाहिए,' मरियम ने कहा। 'तुम्हें दुखी होना चाहिए।'

बत्तीस

लैला

लैला को अपने घर में बरसों पहले हुआ एक जमावड़ा याद आया। वो मम्मी के अच्छे मिज़ाज वाले दिन थे। औरतें बागीचे में बैठी थीं और तश्तरियों से ताजे शहतूत खा रही थीं, जिसे वाज्मा ने अपने आंगन के पेड़ पर से तोड़ा था। मोटे-मोटे शहतूत सफ़ेद और गुलाबी रंग के थे और कुछ तो गहरे जामुनी रंग भी थे जिनमें से कुछ फूट कर वाज्मा की नाक पर लग गए थे।

'तुमने सुना कि उसका बेटा कैसे मरा?' वाज्मा ने अपने दुबले-से मुंह में मुट्ठी भर और शहतूत डालते हुए पूछा।

'वो तो डूब गया, नहीं क्या?' गीती की अम्मी नीला ने कहा। 'गार्गा झील में, वहीं न?'

'लेकिन क्या तुम्हें पता है, तुम्हें पता है कि रशीद...' वाज्मा ने एक उंगली उठाई और सिर हिलाया और मुंह में निगला हुआ शहतूत चबाने तक उनसे इंतजार करवाया। 'क्या तुम्हें पता है कि वो जब शराब पीता था, कि शराब पीकर चिल्लाता फिरता था? यह सच है। मैंने यही सुना है, शराब पीकर चिल्लाता फिरता था। और अभी तो सुबह ही हुई थी। दोपहर तक वो लाउंज कुर्सी पर पड़ा हुआ था। तुम उसके कान के पास दोपहर की तोप दागते तब भी वो आंख नहीं खोलता ।'

आई लैला की याद आया कि कैसे वाज्मा ने अपना मुंह ढंक कर डकार मारी थी, कि कैसे उसकी जीभ दांतों के बीच बचे हुए टुकड़े तलाश रही थी।

224 ख़ालिद हुसैनी

'बाक़ी तो तुम खुद कल्पना कर सकती हो। लड़का पानी में चला गया और किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। कुछ देर बाद लोगों ने उसे पेट के बल पानी पर बहते देखा। लोग मदद को दौड़े, आधे बेटे को होश में लाने की कोशिश कर रहे थे और आधे बाप को। कोई बेटे के ऊपर झुक कर... मुंह से मुंह लगा कर जो करना चाहिए वो करने लगा। लेकिन इसका कोई फायदा नहीं था। वो साफ़-साथ देख सकते थे कि लड़का जा चुका था।'

लैला को वाज्मा का एक उंगली को उठाना और दया से कांपती उसकी आवाज़ याद आई। 'इसीलिए कुराने-पाक ने शराब को हराम बताया है। क्योंकि शराबी के गुनाहों की सजा हमेशा होशवाले भुगतते हैं। ऐसा ही हुआ।'

यही कहानी लैला के दिमाग में चक्कर काट रही थी, जब उसने रशीद को बच्चे की ख़बर सुनाई। फौरन वो कूद कर साइकिल पर सवार हुआ और मस्जिद जाकर बच्चे के लिए दुआ मांगी।

उस रात खाने के दौरान लैला ने देखा कि पूरे वक़्त मरियम अपनी प्लेट में गोश्त का एक टुकड़ा घुमाती रही। जब रशीद ने मरियम को ऊंची, नाटकीय आवाज़ में वच्चे की ख़बर सुनाई थी, तो लैला वहीं थी। लैला ने पहले कभी ऐसी खुशी से भरी हुई क्रूरता नहीं देखी थी।
मरियम ने जब ख़बर सुनी तो उसकी वरौनियां फड़फड़ा उठीं। उसका चेहरा लाल हो उठा। वो बैठी कुढ़ती रही। वो उदास दिख रही थी।

बाद में जब रशीद रेडियो सुनने के लिए ऊपर चला गया और लैला दस्तरख्यान साफ़ करने में मरियम की मदद करने लगी।

'अगर तुम पहले एक वेंज़ थीं,' मरियम ने भात के दानों और रोटी के टुकड़ों को उठाते हुए कहा, 'मैं नहीं सोच पा रही कि तुम अब क्या हो।'

लैला ने खुले दिल से एक तरकीब आजमाई। 'एक ट्रेन? शायद एक बड़ा जंबो जेट।'

मरियम सीधी तन गई। 'उम्मीद करती हूं कि तुम यह नहीं सोचोगी कि इससे तुम्हें घर के काम से फुर्सत मिल जाएगी।'

लैला ने मुंह खोला, लेकिन न बोलना ही बेहतर समझा। उसने खुद को याद दिलाया कि इस मामले में मरियम ही सबसे बेगुनाह इनसान थी। मरियम और बच्चा ।

बाद में बिस्तर पर लैला के आंसू फूट पड़े।

हजारों दमकते आफ़ताब 225

बात क्या थी? रशीद ने उसकी ठोढ़ी उठाते हुए जानना चाहा। क्या वो बीमार थी? क्या इसकी वजह बच्चा था, क्या बच्चे को कुछ हुआ था? नहीं?

क्या मरियम उसके साथ बुरा बर्ताव कर रही थी?

'यही बात है, है न?'

'नहीं ।'

'वल्लाह ओ बिल्लाह, नीचे जाकर उसे सबक सिखा दूंगा। वो क्या सोचती है कि वो क्या है, वो हरामी, तुम्हारे साथ इस तरह-'

'नहीं!'

वो तो पहले ही उठ कर तैयार हो गया था और लैला को उसके हाथ पकड़ कर बैठाना पड़ा। 'ऐसा मत करो! नहीं! वो तो मुझसे काफ़ी नर्मी से पेश आती हैं। मुझे बस एक मिनट चाहिए, बस इतना ही। मैं ठीक हो जाऊंगी।'

वो उसकी बगल में बैठ गया और कुछ बुदबुदाते हुए उसकी गर्दन पर थपकियां देने लगा। उसका हाथ धीरे-धीरे लैला की पीठ पर फिसला और फिर ऊपर आया। वो उसकी तरफ़ झुका और अपने भरे-पूरे दांत चमकाए ।

'तब देखते हैं,' वो गुर्राया, 'कि मैं तुम्हें अच्छा महसूस करा सकता हूं कि नहीं।'

सवसे पहले तो पेड़ों ने जो जलावन के लिए काटे जाने से बच गए थे अपनी चित्तीदार पीली-तांबई पत्तियां गिराईं। फिर आई हवा, जो ठंडी और तेज़ थी और शहर को उधेड़ती हुई गुज़रती रही। उसने बची हुई झूलती पत्तियों को भी गिरा दिया और फीके भूरे पहाड़ों के सामने खड़े पेड़ भुतहा दिखने लगे। मौसम की पहली बर्फबारी हल्की थी और

बर्फ़ के टुकड़े गिरते ही पिघल जाते । फिर तो सड़कें जम गईं और छतों के ऊपर बर्फ़ के ढेर जमा हो गए। पाले की मारी खिड़कियों की आधी ऊंचाई तक बर्फ़ खड़ी हो गई। बर्फ के साथ ही पतंगें बाहर निकल आईं, जिनकी काबुल के आसमान पर कभी हुकूमत चला करती थी। अब तो वो सरसराती रॉकेटों और फाइटर जेटों द्वारा दखल कर लिए गए इलाके के शर्मीली घुसपैठिया थीं।

रशीद ने जंग की ख़बरें घर पर लाना जारी रखा और लैला उन निष्ठाओं पर भींचक हो जाती थी, जिनके बारे में रशीद बताने की कोशिश करता । सय्याफ हज़ाराओं से लड़ रहा था, उसने बताया। हजारा लोग मसूद से लड़ रहे थे।

226 ख़ालिद हुसैनी

'और बेशक मसूद हिक्रमतियार से लड़ रहे थे, जिनको पाकिस्तानियों की हिमायत हासिल थी। कट्टर दुश्मन हैं ये दोनों, मसूद और हिक़मतियार। सय्याफ मसूदं की तरफ़ था। और हिक़मतियार अव हज़ाराओं की हिमायत कर रहा था।'

और जहां तक अप्रत्याशित उज़्बेक कमांडर दोस्तम की बात थी, रशीद का कहना था कि कोई नहीं जानता था कि वो कहां खड़े होंगे। दोस्तम 1980 के दशक में मुजाहिदीनों से मिल कर सोवियतों के ख़िलाफ़ लड़े थे लेकिन सोचियतों के जाने के बाद वो अलग हो गए थे और नजीबुल्लाह की कठपुतली कम्युनिस्ट हुकूमत में शामिल हो गए थे। उन्हें तो एक तमगा भी मिला था जिसे खुद नजीबुल्लाह ने उन्हें दिया था और इसके बाद वो फिर उससे अलग होकर मुजाहिदीनों से आ मिले थे। रशीद ने बताया कि वक़्त बीतने के साथ दोस्तम मसूद की हिमायत कर रहे थे।

काबुल में, खास कर पश्चिमी काबुल में, गोलीबारी चलती और बर्फ़ से ढंकी इमारतों से धुएं के बादल उठते। दूतावास बंद कर दिए गए थे। स्कूल, ढह गए थे। रशीद ने बताया कि अस्पतालों के वेटिंग रूमों में जख्मी लोग पड़े रहते, उनका खून बहता और वे मर जाते। ऑपरेशन रूमों में हाथ-पैर विना एनेस्थिसिया के काटे जा रहे थे।

'लेकिन फिक्र मत करो,' उसने कहा। 'तुम मेरे साथ महफूज़ हो, मेरी. फूल। जो तुम्हें नुक़सान पहुंचाने की कोशिश करेगा, मैं उसका कलेजा फाड़ कर उसे खिला दूंगा।'

उस सर्दियों के मौसम में लैला जिधर भी रुख करती, दीवारें उसका रास्ता रोक देतीं। वो अपने बचपन के चौड़े खुले हुए आसमान को देखने के लिए तरसती, जब वो वावी के साथ बुज़कशी का मुकाबला देखने जाया करती थी और मम्मी के साथ मंडाई में खरीदारी करती। वो उन दिनों के लिए तरसती जब वी गीती और हसीना के साथ लड़कों के बारे में बातें करते हुए गलियों में आज़ादी से फिरा करती थी। जिन दिनों कहीं, धारा के किनारे क्लोवर की सेज पर तारिक़ के साथ बैठी पहेलियां और मिठाई आपस में बाटती और सूरज को ढलते हुए देखती।

लेकिन तारिक़ का खयाल खतरनाक था क्योंकि लैला जब इसके बारे में सोचना बंद करती इससे पहले ही उसके जेहन में तारिक़ की तस्वीर उभर

हजारों दमकते आफताब 227

आाती। वो देखती कि घर से दूर, वो एक बिस्तर पर पड़ा है और उसकी जली हुई देह में नलियां लगी हुई हैं। इन दिनों बन रहे पित्त की तरह जो उसके गही को जलाता रहता है, एक गहरी, सुन्न कर देने वाली वेदना लीला के सीने हसे हलती। उसके पांव पानी की तरह ठंडे हो जाते। उसे कोई चीज पकड़े रहनी पड़ती।

लैला ने 1992 की वो सर्दियां घर बुहारते, उस सोने के कमरे की मरियल पीली दीवारें खरोंचते जिसमें वो और रशीद साथ सोते थे, बाहर तांबे की एक बड़ी सी परात में कपड़े धोते हुए बिताईं। कभी कभी उसे लगता कि वो अपनी खुद की देह के ऊपर मंडरा रही है, वो देखती कि वो परात की रिम के पास बैठी हुई है, कोहनियों तक आस्तीन चढ़ा रखी है, उसके गुलाबी हाथ रशीद को बनियान में से साबुन वाला पानी निचोड़ रहे हैं। तब उसे लगता कि वो खो गई है। एक टूटे हुए जहाज़ के बच गए मुसाफिर की तरह खोई हुई भटक रही है और उसे कहीं किनारा नज़र नहीं आ रहा है। सिर्फ़ मीलों तक पानी दिख रहा है।

जब इतनी ठंड होती कि बाहर जाना मुश्किल होता. तो लैला धीरे-धीरे घर में ही टहलती। दीवार पर नाखुन घसीटते हुए वो गलियारे को पार करती और फिर लौट आती, सीढ़ियों से नीचे उतरती और फिर ऊपर आ जाती। वो अपना मुंह नहीं धोती, बाल में कंघी नहीं करती। वो तब तक टहलती जब तक उसकी भेंट मरियम से नहीं हो जाती, वो उस पर एक बेजान नजर डालते हुए फलियां छुड़ाने और गोश्त में से चर्बी काटने के लिए लौट जाती। एक चोट खाई हुई खामोशी कमरे में भर जाती और लैला मरियम से निकलती शब्दहीन दुश्मनी को लगभग देख सकती थी, जैसे अस्फाल्ट से

गर्मी की लहरें निकलती हैं। वो अपने कमरे में लौट जाती और बिस्तर पर बैठ कर बर्फ़ को गिरते हुए देखती ।

एक दिन रशीद उसे जूतों की अपनी दुकान पर ले गया।

जब वो साथ-साथ बाहर जाते, रशीद लैला की बगल में, एक हाथ से उसकी कोहनी पकड़े हुए चलता। लैला के लिए गलियों में चलना चोट खाने से बचने का एक अभ्यास हो गया था। उसकी आंखें अभी भी बुर्के की सीमित जालीनुमा फांक से देखने की आदत ही डाल रही थीं। चलते हुए उसे हमेशा

228 ख़ालिद हुसैनी

डर लगा रहता कि वो उलझ कर गिर पड़ेगी और किसी गड्ढे में पांव देकर एड़ी तुड़वा लेगी। तब भी बुर्के से हासिल अपनी छुपी हुई पहचान से उसे राहत मिलती थी। अगर उसका कोई जान-पहचान वाला मिल जाए तो इस तरह उसे पहचान नहीं पाएगा। उसे उनकी आंखों में हैरानी या दया या उत्तेजना का भाव नहीं देखना पड़ेगा, कि वो कहां फंस गई थी, कि कैसे उसकी ऊंची आकांक्षाएं कतर दी गई थीं।

रशीद की दुकान उससे बड़ी और रोशन थी, जितनी लैला ने कल्पना की थी। उसने लैला को अपनी भरी हुई बेंच के पीछे बिठा दिया। उसकी बेंच पर पुराने सोल और बचे हुए चमड़े के ढेर पड़े थे। उसने अपनी हथौड़ियां दिखाई, यह दिखाया कि रेगमार कैसे काम करता है। यह बताते हुए उसकी आवाज़ तेज और गर्वीली हो गई थी।

रशीद ने उसके पेट को छुआ, कमीज़ के ऊपर से नहीं, बल्कि उसके नीचे से। उसकी उंगलियों के ठंडे और खुरदरे पोर लैला के उभरे हुए पेट पर खरोंच से रहे थे। लैला को तारिक़ के नर्म लेकिन मज़बूत हाथों की याद आई, जिनके पीछे की तरफ़ उभरी हुई टेढ़ी-मेढ़ी नसें थीं। लैला को हमेशा उनमें मोहक़ मर्दानगी दिखती थी।

'बहुत तेजी से फूल रहा है,' रशीद ने कहा। 'यह एक बड़ा लड़का होने जा रहा है। मेरा बेटा एक पहलवान होगा! अपने बाप की तरह।'

लैला ने कमीज नीचे कर दी। जब वो इस तरह बातें करता था तो वो डर जाती थी।

'मरियम के साथ कैसा चल रहा है?'

उसने बताया कि बहुत अच्छा चल रहा है।

'अच्छा, अच्छा ।'

थी। उसने रशीद को नहीं बताया कि उनमें पहली बार सचमुच लड़ाई हुई

यह कुछ दिनों पहले हुआं था। लैला ने रसोई में जाने पर पाया कि मरियम दराजों की जोर-जोर से खोल और बंद कर रही है। मरियम ने कहा कि वो एक लकड़ी का लंबा चम्मच खोज रही थी, जिससे वो भात चलाया करती थी।

'तुमने कहां रख दिया?' उसने लैला के चेहरे के आगे गुस्से से मुड़ते हुए कहा।

229

'मैंने?' लैला ने कहा। 'मैंने नहीं लिया। मैं तो यहां मुश्किल में ही आती हूँ ॰

'मैंने देखा है।'

'क्या आप इल्ज़ाम लगा रही हैं? ऐसा ही तो आप चाहती थीं, याद कीजिए। आपने कहा था कि आप खाना बनाएंगी। लेकिन अगर आप चाहती हैं कि हम अदला-बदली-'

'तो तुम कह रही हो कि चम्मच के पांव निकल आए वी कीं चला गया? टिप, टिप, टिप। क्या ऐसा हो गया?'

'मैं कह रही हूं...' लैला ने संयत वने रहने की कोशिश करते हुए कहा। अमूमन वो मरियम के ताने और उलाहने सह लेती थी। लेकिन उस दिन उसकी एड़ियां सूजी हुई थीं, उसका सिर दुख रहा था और दिल में तेज जलन हो रही थी। 'मैं कह रही हूं कि आपने कहीं और रख दिया होगा।'

'कहीं और रख दिया?' मरियम ने एक दराज खोली। उसके भीतर रखी छुरियां खनखनाईं। 'कितने दिन से तुम यहां हो, कुछ महीनों से? मैं इस वर में

उन्नीस बरस से रह रही हूं दुख्तर जो। मैं उस चम्मच को तब से इसी दराज में रखती आ रही हूं जब तुम डायपर बदलती होंगी।'

'तब भी;' कगार पर लैला ने दांत भींचते हुए कहा, 'ये मुमकिन है कि आप उसे कहीं और रख कर भूल गई हों।'

'और ये भी मुमकिन है कि मुझे परेशान करने के लिए तुमने उसे कहीं छुपा दिया हो।'

'आप एक चिड़चिड़ी, दयनीय औरत हैं,' लैला ने कहा।

मरियम पहले तो अचकचा गई, लेकिन फिर इससे उबरते हुए अपने होंठ भींच लिए। 'और तुम रंडी हो। रंडी और कुतिया, एक चोर रंडी। यही हो तुम!'

फिर तो वहां चीखना-चिल्लाना था। बर्तन उठाए गए, हालांकि उन्हें फेंका नहीं गया। उन्होंने एक दूसरे को ऐसे-ऐसे नामों से पुकारा, जिन पर लैला को अव शर्म आ रही थी। तब से उन्होंने एक दूसरे से बात नहीं की थी। लैला अव भी इस पर आहत थी कि कैसे आसानी से वो ये सारी बातें कह सकी थी, लेकिन सच तो ये था कि उसके भीतर एक हिस्से को ये अच्छा भी लगा था कि कैसे वो मरियम पर चिल्लाई और उसे कोसा, अपने उबलते हुए गुस्से और दुख का उसको निशाना बना सकी।

230 ख़ालिद हुसैनी

लैला को मानो एक अंतर्दृष्टि की तरह जानने की इच्छा हुई कि क्या मरियम को भी ऐसा ही महसूस नहीं हो रहा था।

इसके बाद, वो ऊपर चली गई थी और खुद को रशीद के बिस्तर पर गिरा लिया था। नीचे मरियम अब भी चीख रही थी, 'तुम्हारे दिमाग में मिट्टी है! तुम्हारे दिमाग में मिट्टी है!' लैला बिस्तर पर पड़ी तकिए में विलाप करती रही। अचानक उसे अपने अम्मी अब्बू की याद आ गई थी और इतनी तेजी से आई, जितनी उस भयानक हमले के बाद से अब तक नहीं आई थी। वो चादर को मुट्ठी में समेटे तब तक वहीं पड़ी रही, जब तक उसकी सांस एकाएक रुक नहीं गए। वो उठ बैठी और अपने हाथ पेट पर फिराए ।

बच्चे ने पहली बार पांव चलाया था।

तैंतीस

मरियम

अगले वसंत में, 1993 में, एक सुबह मरियम ने बैठक की खिड़की के पास खड़े होकर रशीद को सहारा देकर लड़की को घर से बाहर ले जाते हुए देखा । लड़की कमजोरी से' चल रही थी और कमर से झुक आई थी। अपने बाहर निकले हुए पेट की हिफाजत करते हुए उसने एक हाथ उस पर लपेट रखा था। पेट का उभार बुर्के के ऊपर से भी दिख रहा था। रशीद उत्तेजित और गैर मामूली रूप से चौकन्ना था। उसने लैला को कोहनियों से पकड़ रखा था और एक ट्रैफिक पुलिसवाले की तरह उसे आंगन के पार रास्ता दिखा रहा था। उसने वहीं रुकने का इशारा किया और रादर दरवाजे तक दौड़ कर गया फिर लड़की को आने का इशारा किया और एक पैर से दरवाजे को खोले रखा । जब लड़की वहां तक पहुंची तो उसने उसे हाथों से पकड़ा और दरवाजे से निकलने में मदद की। मरियम उसकी आवाज सुन सकती थी, 'क़दम संभाल के, अब, मेरी फूल, मेरी गुल ।'

वो अगली शाम ढलने के वक़्त लौटे।

मरियम ने सबसे पहले आंगन में रशीद को देखा। उसने दरवाजे के पल्ले छोड़ दिए और वो लड़की के चेहरे पर लगभग लग ही गए थे। रशीद ने जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते हुए आंगन पार किया। मरियम ने उसके चेहरे पर एक छाया देखी, जो ढलती हुई शाम के तांबई अंधेरे में दिख रही थी। घर में आकर उसने अपना कोट उत्तारा और पलंग पर फेंक दिया। मरियम पर फुफकारले

232 ख़ालिद हुसैनी

हुए अक्खड़ता से कहा, 'मैं भूखा हूं। खाना तैयार करो।'

घर का बाहरी दरवाजा खुला। गलियारे से मरियम ने लड़की को देखा, उसने बाएं हाथ में एक गठरी पकड़ रखी थी। उसका एक पांव बाहर था और दूसरा भीतर आकर दरवाज़े को बंद होने से रोक रहा था, ताकि वो उससे टकरा न जाए। वो झुक कर कराहते हुए काग़ज़ के उस थैले तक पहुंचने की कोशिश कर रही थी, जिसे उसने दरवाज़ा खोलने के दौरान नीचे रख दिया था। इस कोशिश में उसके चेहरे में शिकन आ गई थी। उसने सिर उठाया और मरियम को देखा।

गई। मरियम पीछे मुड़ी और रशीद का खाना गर्म करने के लिए रसोई में चली

'ये ऐसा है मानो कोई मेरे कान में स्क्रू ड्राइवर घुमा रहा हो,' रशीद ने अपनी आंखें मलते हुए कहा। वो मरियम के कमरे के दरवाजे पर खड़ा था। उसकी आंखें सूजी हुई थीं और उसने एक तुंबन पहन रखी थी और उसे एक ढीली-सी गांठ से बांध रखा था। उसके सफ़ेद बाल बिखरे हुए थे। 'ये रोना। मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

नीचे लड़की बच्ची को लेकर टहल रही थी और उसके लिए गाने की कोशिश कर रही थी।

पिठले दो महीनों से मैं रात में अच्छे से सो तक नहीं सका हूं,' रशीद ने कहा। 'और कमरे से सीवर की तरह बदबू आती है। हर जगह पाखाने में लिपटे कपड़े के टुकड़े पड़े हुए हैं। पिछली रात तो मैं बस एक पर पांव ही रख देता।'

मरियम एक आत्मघाती खुशी से भीतर ही भीतर मुस्कुराई ।

'उसे बाहर ले जाओ!' रशीद ने पीछे मुंह करके कहा। 'तुम उसे बाहर नहीं ले जा सकतीं?' 1

गाना थोड़ी देर के लिए रुका। 'बच्ची को न्यूमोनिया हो जाएगा!'

'ये तो गर्मियों का मौसम है!'

'क्या?'

रशीद ने दांत भींचे और ऊंची आवाज़ में कहा। 'मैंने कहा, बाहर गर्मी है?

हजारों दमकते आफ़्ताब 233

'मैं इसे बाहर नहीं ले जा रही!'

गाना फिर शुरू हो गया।

'कसम से, कभी कभी मैं सोचता हूं कि मैं उम चीज़ को एक डिव्य में रख कर काबुल नदी में बहा आऊं। नन्हें मूसा की तरह।'

लड़की ने बच्ची को अज़ीज़ा नाम दिया था और मरियम ने कभी रशीद को अपनी बेटी का नाम लेते हुए नहीं सुना था। वो हमेशा बच्ची कहता या फिर जब वो सचमुच गुस्सा होता तो उसे वो चीज़ कहता।

कुछ रातों में मरियम उन दोनों को वहसें करती हुई सुनती। वी दवे पांव उनके दरवाज़े के पास जाती और रशीद को बच्ची के बारे में शिकायतें करते हुए सुनती-हमेशा बच्ची उसका लगातार रोना, वदवू, खिलौने जिनमें वी उलझ जाता, जिस तरह से वच्ची हमेशा दूध पीना चाहती और इसने लैला का ध्यान रशीद पर से हटा दिया था, वो डकारती, उसके कपड़े बदलने होते, उसके लेकर टहलना होता, पकड़े रहना होता। बदले में लड़की रशीद से शिकायत करती कि बी कमरे में सिगरेट पीता है और बच्ची को अपने साथ नहीं सोने देता।

दवी हुई आवाज में कुछ दूसरी तरह की बहसें भी होतीं।

'डॉक्टर ने कहा कि छह हफ़्ते।'

'अभी नहीं, रशीद। नहीं। जाने दो। चली। अभी यह मत करो।'

'दो हफ़्ते तो हो गए।'

'श्श्ट। वहां। तुम बच्ची को जगा दोगे।' फिर अधिक तीखी आवाज़ में,

' अब खुश हो?'

मरियम अपने कमरे में लौट आती।

'तुम मदद नहीं कर सकतीं?' रशीद ने अव कहा। 'तुम तो जरूर कुछ कर सकती हो।'

'मैं बच्चों के वारे में क्या जानती हूं?' मरियम ने कहा।

'रशीद! क्या आप एक बोतल ला देंगे? वो अल्मारी में रखी है। वो नहीं पी रही। मैं फिर से बोतल से पिलाने की कोशिश करना चाहती हूं।'

बच्ची का चीखना बढ़ गया था, ये मांस पर चलती छुरी जैसा लग रहा था।

रशीद ने आंखें बंद कर लीं। 'ये चीज़ तो सेनापति है। हिक्रमतियार है। मैं तुम्हें कह रहा हूं, लैला ने गुलबुद्दीन हिक्रमतिवार को पैदा किया है।'

234 ख़ालिद हुसैनी

मरियम देखती रहती और लड़की का पूरा वक़्त बच्ची को दूध पिलाने, हिलाने-डुलाने, उछालने और लेकर टहलने में बीत जाता। यहां तक कि जत्र बच्ची झपकी लेती तो उसके गंदे डायपर रगड़ कर धोने होते और उम डिसइन्फेक्टेंट घोल में डुबो कर रखने होते, जिसे उसने रशीद से ज़िद करके ख़रीदवाया था। उसे रेगमार से नाखुन छोटे करने होते, खोल और पाजामा धोकार सूखने के लिए डालने होते। ये कपड़े भी बच्ची से जुड़ी दूसरी चीज़ों की तरह बहस का मुद्दा वन जाते।

'इनमें क्या दिक्कत है?' रशीद कहता । 'ये लड़कों के कपड़े हैं। बच्चों के।'

'तुम सोचती हो कि वो फ़र्क़ जानती है? मैंने इन कपड़ों पर खासे पैसे खर्च किए हैं। और दूसरी बात है कि मुझे यह लहजा पसंद नहीं है। इसे चेतावनी समझना ।'

हर हफ्ते विना नागा किए लड़की एक काले तंदूर को लपटों पर गर्म करती, उसमें एक चुटकी ब्राह्मी के बीज डालती और बच्ची को बुरी नज़रों से बचाने के लिए उसका धुआं उड़ाती ।

मरियम उस लड़की का यह निरर्थक उत्साह देख कर थक गई और मन ही मन वो लड़की से स्नेह करने लगी। वो इस पर हैरान हो गई कि इबादत के साथ लड़की की आंखों में कैसी चमक आ जाती है, यहां तक कि शाम को भी जव उसका चेहरा कुम्हलाया हुआ होता और उसका रात-रात भर वच्ची को लेकर टहलने से उसकी रंगत मोम की तरह फीकी पड़ गई थी। वच्ची जब हवाएं निकालती तो लड़की को हंसी का दौरा पड़ जाता। वच्ची में आए छोटे-से बदलाव पर भी वो मुग्ध हो जाती और वच्ची जो कुछ करती वो उसके लिए छलानिया तौर पर एक देखने लायक चीज़ होती।

'देखो! वो झुनझुने की तरफ़ बढ़ रही है। कितनी होशियार है।' 'मैं अखवारों को बुलावा भेज दूंगा,' रशीद ने कहा।

हर गत तमाशे होते। जब लड़की रशीद से कुछ देखने का आग्रह करती कि नो वो अपनी ठीढ़ी ऊपर उठा लेता और बेचैनी से अपनी नाक के नीली नसों वाली नीक को तिरछी निगाहों से देखने लगता।

'देखा। देखो जब मैं उंगलियां चटकाती हूं तो वो कैसे देखती है। ये। देखा? देखा तुमने?'

हजारों दमकते आफ़ताब 235

रशीद घुरघुराता और अपनी प्लेट पर लौट जाता। मरियम को याद आता कि महज लड़की की मौजूदगी ही कैसे रशीद पर हावी हो जाया करती। रशीद को खुश करने के लिए कही गई उसकी हर बात उसे चुभ जाती और वो अपने प्लेट पर देखने लगता और सहमति में सिर हिलाने लगता।

सबसे अजीब बात ये थी कि लड़की का मान घटने से मरियम को खुशी होनी चाहिए थी, उसे अपने पक्ष की पुष्टि होनी चाहिए थी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ऐसा नहीं हुआ। इस पर मरियम को भी हैरानी हुई कि उसे लड़की पर दया आने लगी थी।

रात के खाने पर ही यह होता कि लड़की अपनी चिंताओं का पिटारा खोल देती। सबसे ऊपर होता न्यूमोनिया, जिसका शक हर छोटी खांसी पर भी होने लगता। इसके बाद पेचिश का नंबर था, जिसका भूत हर पतले पाखाने ते उद खड़ा होता। हर खराश चेचक या खसरा लगती।

'तुम्हें इतना लगाव नहीं होना चाहिए,' रशीद ने एक रात कहा।

'तुम्हारा मतलब क्या है?'

'उस रात मैं रेडियो सुन रहा था। वॉयस ऑफ अमेरिका। मैंने एक दिलचस्प आंकड़ा सुना। उन्होंने बताया कि चार अफ़ग़ानी बच्चों में से एक पांच साल की उम्र में पहले ही मर जाता है। उन्होंने यही कहा। अब, वो क्या? क्या? कहां जा रही हो तुम? यहां आओ। वापस आओ, फौरन!'

हक्का-बक्का होकर रशीद ने मरियम को देखा। 'इसका मामला क्या है?'

उस गत मरियम बिस्तर में थी, जब कहा-सुनी फिर शुरू हो गई। यह एक गर्म और सूखी गर्मियों की रात थी। यह काबुल में सरातान का आदर्श महीना था। मरियम ने अपनी खिड़की खोली थी, लेकिन जब गर्मी में राहत

देने के लिए हवा आने के बजाए मच्छर आने लगे तो उसने उसे बंद कर दिया। वो पहनूत कर सकती थी कि बाहर ज़मीन से और आंगन में रखे तख्तों की गेहुएं भूरे रंग की खुपच्चियों से, दीवारों से और उसके कमरे में से गर्मी उठ रही थी।

अमूमन कहा-सुनी कुछ मिनटों तक ही चलती थी, लेकिन आधा घंटा बीत गया था और न केवल यह अब भी चल रही थी बल्कि तेज ही हो रही श्री: पश्विम अब रशीद को चिल्लाते हुए सुन सकती थी। उसके नीचे लड़की की अनिश्चय से भरी हुई तीखी आवाज थी। जल्दी ही बच्ची चिल्लाने लगी थी।

236 ख़ालिद हुसैनी

तब मरियम ने दरवाजा खुलने की जोरदार आवाज सुनी। सबेरे उसे गलियारे में दीवार पर नॉव का गोल निशान दिखने वाला था। वो विस्तर में ही थी, जब उसका अपना दरवाजा जोर से खुला और रशीद अंदर आया।

वो सफ़ेद अंडरपैंट और उसी से मिलते रंग की बनियान पहने हुए था, जिसकी कांख पर पसीने का पीला धब्बा था। पैरों में उसने फ्लिप फ्लॉप चप्पल पहन रखी थी। अपने हाथ में उसने एक बेल्ट थाम रखी थी, जिसका छेद वाला सिरा उसकी मुट्टी पर लिपटा हुआ था। यह बादामी रंग की चमड़े की वेल्ट थी, जिसे वो लड़की से निकाह के दिन ख़रीद कर लाया था।

'यह तुम्हारी करनी है। मैं जानता हूं,' मरियम की तरफ़ बढ़ते हुए वो गुर्रा कर बोला।

मरियम अपने बिस्तर से सरक कर उठी और पीछे की तरफ हटने लगी। उसके हाथ सहज रूप से उसके सीने पर गए थे, अक्सर जहां वो पहला बार करता था।

'तुम किसके बारे में बात कर रहे हो?' वो हक़लाते हुए बोली।

'उसका मुझे मना करना। यह तुमने उसे सिखाया है।'

इतने बरसों में मरियम ने उसकी नफ़रत और डांट-फटकार, मज़ाक उड़ाए जाने और घुड़के जाने के आगे सख़्त बने रहना सीख लिया था। लेकिन इस डर पर उसका कोई कावू नहीं था। इतने बरसों में भी वो जब ऐसा बन जाता, कोसता, मुट्ठी में वेल्ट कसता, चमड़ा चरमराता और उसकी लाल आंखें चमकतीं तो मरियम डर से कांप उठती। यह उस बकरी का डर था जिसे

एक बाघ के पिंजड़े में छोड़ दिया गया था और बाघ अपने पंजे उठाता, गुर्राता हुआ उसे देख रहा होता।

थी। अब लड़की अपनी फैली हुई आंखों और विकृत चेहरे के साथ कमरे में

'मुझे पता होना चाहिए कि तुमने उसे बिगाड़ दिया है,' रशीद बरसा।
उसने वेल्ट को अपनी जांघ पर पटक कर उसे परखा। बकल जोर से बजी।

'बस,' लड़की ने कहा। 'रशीद, आप ऐसा नहीं कर सकते।'

'कमरे में जाओ।'

मरियम फिर पीछे हटी।

'नहीं! ऐसा मत कीजिए।'

हजारों दमकते आफ़ताब 237

'अब!'

रशीद ने बेल्ट उठाई और इस बार वो मरियम पर चली।

तभी एक अचंभित कर देने वाली बात हुई लड़की रशीद पर झपटी। उसने दोनों हाथों से उसके हाथ पकड़े और उसे नीचे घसीटने की कोशिश की, वो उन पर झूल कर रह गई। वो मरियम की तरफ़ बढ़ते रशीद की रफ्तार को धीरे कर पाने में कामयाब हुई।

'छोड़ो!' रशीद चीखा।

'आप जीते। तुम जीते। ऐसा मत कीजिए। मेहरबानी कीजिए रशीद, मारिए नहीं! मेहरबानी कीजिए, ये मत कीजिए।'

वो इसी तरह जूझते रहे, झूलती हुई लड़की फरियादें करती रही और रशीद उसे झटके देकर हटाते हुए एक निगाह मरियम पर रखे रहा, जो इस कदर अवाक थी कि समझ नहीं पा रही थी क्या करे।

मरियम जानती थी कि आख़िर में उस रात पिटाई नहीं होगी। उस रात नहीं होगी। रशीद ने अपनी बात रख दी थी। वो कुछ पल उसी तरह हाथ उठाए, सीना लहराते हुए खड़ा रहा। पसीने की एक पतली परत उसके माथे पर जम

गई थी। धीरे-धीरे रशीद ने हाथ नीचे किए। लड़की के पांव जमीन से लगे और तब भी उसने रशीद को नहीं छोड़ा मानो उसे उस पर भरोसा नहीं था। उसे लड़की की पकड़ से छूटने के लिए झटका देना पड़ा।

'मैं तुम लोगों के ऊपर हूं,' उसने बेल्ट को कंधे पर लटकाते हुए कहा। 'मैं तुम दोनों के ऊपर हूं। मैं अपने ही घर में अहमक नहीं बनूंगा।'

आख़िर में उसने मरियम पर एक कातिलाना निगाह डाली और जाते हुए लड़की की पीठ पर धक्का दिया।

उनके दरवाज़े के बंद होने की आवाज सुनने के बाद मरियम अपने बिस्तर पर चढ़ी और अपना सिर तकिए में धंसा लिया और कंपकंपाहट रुकने का इंतजार करने लगी।

उस रात तीन बार मरियम की नींद खुली। पहली बार तो पश्चिम में कारतेह-चार की तरफ से आ रही रॉकेटों की गड़गड़ाहट की वजह से। दूसरी बार नीचे बच्ची के चिल्लाने की वजह से। लड़की शूशु करके उसे चुप करा रही थी और दूध की बोतल में चम्मच के चलने की आवाज़ आ रही थी। आख़िरी

238 ख़ालिद हुसैनी

बार उसे प्यास की वजह से बिस्तर से उठना पड़ा।

नीचे बैठक में अंधेरा था, बस खिड़की से आती चांदनी बिखरी हुई पड़ी थी। मरियम कहीं मक्खी के उड़ने की भनभनाहट सुन सकती थी। अंधेरे में वो कोने में लोहे का स्टोव देख सकती थी, जिसकी बाहर को उभरी हुई ऊपर जाती पाइप छत के नीचे एक तीखा कोण बना रही थी।

रसोई जाने के रास्ते में मरियम किसी चीज से ठोकर खाते बची। उसके पांवों के पास एक आकृति थी। जब उसकी आंखें अंधेरे की आदी हुईं तो उसने देखा कि लड़की और उसकी बच्ची फर्श पर एक लिहाफ के ऊपर लेटी हुई थीं।

लड़की करवट के बल खरटि लेते हुए सो रही थी। बच्ची जगी हुई थी। मरियम ने टेबल पर रखी केरोसिन लैंप जलाई और नीचे बैठ गई। रोशनी में उसने पहली बार बच्ची को करीब से देखा, उसके काले बालों का गुच्छा, मोटी बरौनियों वाली भूरी आंखें, गुलाबी गाल और होंठ जिनका रंग पके हुए अनार से मिलता था।

मरियम को लगा कि बच्ची भी उसे परख रही है। पीठ के बल लेटे और सिर एक तरफ़ झुकाए हुए वो मरियम को खुशी, भ्रम और संदेह से देख रही थी। मरियम को जानने की इच्छा हुई कि क्या उसका चेहरा उसे डरा सकता है, लेकिन तभी बच्ची खुशी से किलक उठी और मरियम जान गई कि फैसला उसके पक्ष में पास हो गया है।

'श्श्श,' मरियम फुसफुसाई। 'तुम अपनी अम्मी को जगा दोगी। वैसे ही वो आधी बहरी है।'

बच्ची ने मुट्ठी बांध ली। उसने उसे अपने मुंह की तरफ़ ले जाने के लिए उठाया लेकिन बीच में ही गिर गया। अपना हाथ मुंह में भरते हुए बच्ची मरियम को देख कर मुस्कुराई और उसकी लार के नन्हें-नन्हें बुलबुले उसके होंठों पर चमक उठे।

'खुद को देखो जरा। क्या गत बनी हुई है तुम्हारी। लड़कों की कपड़े पहन रखे हैं। और इस गर्मी में तुम गठरी बनी हुई हो। इसमें हैरानी की बात नहीं है कि तुम अभी भी जगी हुई है।'

मरियम ने बच्ची के ऊपर से कंबल हटाया तो देख कर डर गई कि नीचे एक और कंबल था। उसने जीभ चटकाई और दूसरा कंबल भी हटा दिया।

हजारों दमकते आफ़ताब 239

राहत पाकर बच्ची खिलखिलाई। उसने चिड़ियों की तरह अपने हाथ लहराए।

'बेहतर है ना?'

मरियम जब वापस लौटने लगी तो बच्ची ने उसकी छोटी उंगली पकड़ ली।
बच्ची की छोटी-सी उंगली खुद ब खुद उसके गिर्द कस गई। वो गर्म, नर्म और लार में लिपटे हुए नम महसूस हो रहे।

'गुनुह,' बच्ची बोली।

'ठीक है, बस, जाने दो।'

बच्ची लटक गई। उसने फिर से अपने पांव मारे।

मरियम ने खींच कर अपनी उंगली छुड़ाई। बच्ची मुस्कुराई और देर तक गले से गड़गड़ की आवाज निकालती रही।

'किस बात पर इतनी खुश हो तुम? एं? किस पर मुस्कुरा रही हो? तुम उतनी होशियार नहीं हो जितनी तुम्हारी अम्मी कहती हैं। तुम्हारा बाप एक जानवर है और मां एक बेवकूफ़। अगर तुम यह जानतीं तो इतना नहीं मुस्कुरातीं। नहीं, तुम नहीं मुस्कुरातीं। चलो, सो जाओ, अब। चलो ।'

मरियम अपने पांवों पर उठी और कुछ क़दम चली कि बच्ची ने ऊंह, ऊंह की आवाज़ निकालनी शुरू की। मरियम जानती थी कि यह एक गहरी रुलाई शुरू होने का संकेत थी।

'क्या बै? मुझसे क्या चाहती हो तुम?' बच्ची की दंतहीन मुस्कान खिल गई।

मरियम ने गहरी सांस ली। वो बैठ गई और उसे अपनी उंगली पकड़ लेने दिया। वो लड़की को किलकारी मारते हुए देखती रही। उसने उसे कूल्हों पर पैर मोड़ कर हवा को लातें मारते देखा। मरियम वहीं बैठी देखती रही जब तक बच्ची ने हिलना बंद नहीं कर दिया और हल्के-हल्के खर्राटे लेने लगी।

बाहर नकलची चिड़िया खुशी से गा रही थीं और जब वो उड़ान भरती तो मरियम को उनके परों पर चमकती नीली चांदनी दिखती जो बादलों के पीछे से चमकते चांद से आ रही थी। और हालांकि उसका गला प्यास से सूख गया था और उसके पांवों में देर तक बैठने से सुइयां चुभ रही थीं, उसे बच्ची की पकड़ से धीरे-धीरे अपनी उंगली छुड़ा कर उठने में लंबा वक़्त लगा।

चौंतीस

लैला

इस दुनिया की सारी खुशियों में सबसे ज़्यादा खुशी लैला को अजीजा के पास सांन में मिलती थी। वो अपनी बच्ची का चेहरा इतना करीब रखती कि वो उसकी पुतलियों का फैलना और सिकुड़ना देख सके। लैला को अजीजा की आनंददायक, कोमल त्वचा, गट्टेदार मुट्टी और कोहनी के मोड़ पर चर्बी की तहों पर उंगलियां फिराना पसंद था। कभी-कभी वो अजीजा को

अपने सीने पर लिटा लेती और उसके सिर के नाजुक तलवे पर फुसफुसाते हुए तारिक़ के बारे में बताती, जी उसका अब्बा था और अजीजा के लिए हमेशा एक अजनबी रहने वाला था। जिसका चेहरा अजीजा कभी नहीं जान पाएगी। लैला तारिक्त की पलियां बुझाने की भूख, उसकी तरकीबों और शरारतों के बारे में उसे बताती । या उसकी सहज हंसी के बारे में बताती ।

'उसकी सबसे खूबसूरत बरीनियां थीं, तुम्हारे जितनी मोटी। एक अच्छी मी ढोढ़ी, पतली नाक और गोल ललाट। ओह, तुम्हारे अब्बा बहुत खूबसूरत थे अजीजा। वो मुकम्मल थे। तुम्हारी तरह मुकम्मल ।'

लेकिन बी सावधानी बरतते हुए कभी उसका नाम नहीं लेती।

कभी कभी वो देखती कि रशीद अजीजा को अजीब तरह से देख रहा है। किसी दूसरी रात को सोने के कमरे की फर्श पर बैठे हुए, जहां वो अपने पांव की गांठ काट रहा था, उसने यों ही कहा, 'तो तुम लोगों के बीच कैसा रिश्ता था?'

हजारों दमकले आफ़ताब 241

लैला ने उलझन के साथ उसे देखा, मानो वो समझ नहीं पाई हो।

'लैला और मजनूं। तुम और यकलंगा, लंगड़ा। तुम्हारा उससे क्या रिश्ता

था, उसमें और तुममें?' 'वो मेरा दोस्त था,' उसने सावधानी बरतते हुए जवाब दिया कि उसकी

आवाज़ बहुत अलग न लगे। उसने बोतल तैयार करने में खुद को मसरूफ कर लिया।

'आप जानते हैं।'

'मुझे नहीं पता कि मैं क्या जानता हूं।' रशीद ने कटे हुए हिस्से को खिड़की के ओटे पर रखा और बिस्तर पर लुढ़क पड़ा। स्प्रिंग ने तेज़ आवाज़ में विरोध किया। उसने पलंग पर अपने पांव फैलाए और जांघों के पास खुजलाया ।

'और बतौर... दोस्त, तुम लोगों ने क्या कभी कोई गैर मुनासिब काम किया था?'

'गैर मुनासिब?'

रशीद ने मज़ाकिया अंदाज में मुस्कुराया, लेकिन लैला उसकी सर्द और चौकन्नी निगाह को महसूस कर सकती थी। 'तो मुझे देखने दो अब। क्या उसने तुमको कभी चूमा था? हो सकता है उसने कभी ऐसी जगह हाथ रखा हो जहां नहीं रखना चाहिए?'

लैला पर गुस्से के साथ-साथ दर्द का भाव आया, ऐसा लैला को महसूस हुआ। वो अपने दिल को गले में धड़कते हुए महसूस कर सकती थी। 'वो मेरे लिए भाई की तरह था।'

'तो वो एक दोस्त था या भाई?'

'दोनों। वो-'

'वो क्या था?'

'वो दोनों ही था।'

'लेकिन भाई और बहनें अनोखे जीव होते हैं। कभी कभी एक भाई अपनी बहन को अपना लिंग भी देख लेने देता है और एक बहन-'

'आपकी बातों से मुझे घिन आ रही है,' लैला ने कहा।

'तो फिर ऐसा कुछ नहीं था।'

'मैं इसपर और बात नहीं करना चाहती।'

रशीद ने अपना सिर झुकाया, अपने होंठ भींचे और सिर हिलाया। 'लोग

242 ख़ालिद हुसैनी

बातें बनाते थे, पता है। मुझे याद है। वो तुम दोनों के बारे में हर तरह की बातें करते थे। लेकिन तुम कह रही हो कि ऐसा कुछ नहीं था।'

लैला ने साहस करके रशीद को घूरा।

रशीद उसकी आंखों में मर्मांतक रूप से देर तक, बिना पलकें झपकाए इस तरह देखता रहा कि बोतल पकड़ी हुई लैला की उंगलियां कमज़ोर पड़ गईं और लैला को लड़खड़ा जाने से बचने के लिए पूरी ताकत लगानी पड़ी।

वो ये सोच कर कांप गई कि रशीद उसके साथ क्या करेगा अगर उसको पता लग जाए कि वो उससे क्या छुपाती आई है। अज़ीज़ा के पैदा होने के बाद से हर हफ़्ते वो रशीद के सो जाने के बाद या उसके आउटहाउस में होने पर उसका पर्स खोल कर एक नोट निकाल लेती। किसी हफ़्ते, अगर पर्स हल्का हुआ तो वो पांच अफ़ग़ानी का केवल एक नोट निकालती। या फिर इस डर से कुछ भी नहीं निकालती कि वो भांप न जाए। जब पर्स मोटा होता तो वो दस या बीस निकाल लेती, एक बार तो उसने बीस-बीस के दो नोट निकाल लिए थे। यह पैसा वो सर्दियों के चारखानेदार कोट की अस्तर में खुद से सिली गई एक जेब में जमा करती।

उसे यह जानने की इच्छा होती कि अगर रशीद जान जाए कि वो अगले बसंत में भाग जाने का मंसूबा बना रही थी तो वो क्या करेगा। अधिक से अधिक अगली गर्मियों तक। लैला को उम्मीद थी कि वो हज़ार या इससे ज़्यादा अफ़ग़ानी जमा कर लेगी, जिसमें से आधा तो काबुल से पेशावर तक बस के किराए में चले जाएंगे। वक़्त करीब आने पर वो अपनी शादी की अंगूठी और वो दूसरे गहने गिरवी रख देगी, जिनको रशीद ने पिछले साल उसे दिए थे, जब वो अभी उसकी महल की रानी हुआ करती थी।

'जो भी हो,' रशीद ने आख़िर अपने पेट पर उंगलियां बजाते हुए कहा, 'मुझे दोष नहीं दिया जा सकता। मैं एक शौहर हूं। ये चीजें शौहर जानना चाहते हैं। लेकिन जो उसने किया था, उसे देखते हुए वो खुशकिस्मत है कि वो मर गया। वरना अभी अगर वो यहां होता, अगर मेरे हाथ उस पर पड़ जाते. ..' उसने दांतों से सांस खींची और अपना सिर झटका।

'मरे हुए लोगों के बारे में बुरा न बोलने के कायदे का क्या हुआ?'

'मेरा अंदाजा है कि कुछ लोग उतने मरे हुए भी नहीं हो सकते,' उसने कहा।

हजारों दमकते आफ़ताब 243

दो दिनों के बाद लैला जगी तो उसे अपने सोने के कमरे के बाहर बच्ची के कपड़ों का एक ढेर मिला, जिन्हें सफाई के साथ तह किया गया था।

उसमें एक तहों वाली ड्रेस थी, जिसके सीने पर छोटी-छोटी गुलाबी मछलियां सिली हुई थीं। एक नीली फूलदार ऊनी ड्रेस और उसी से मिलते- जुलते मोज़े और दस्ताने भी थे। गाजर के रंग के पोल्का धब्बों वाला एक पीला पाजामा था और एक हरी सूती पैंट थी जिसके पांयचों पर छींटों वाले झालर लगे हुए थे।.

'अफवाह है,' रशीद ने उस रात खाने के दौरान कहा। वो होंठों को चटखाते हुए खा रहा था और अजीजा या उसके पाजामे पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था, जिसे लैला ने उसे पहनाया था। 'कि दोस्तम पाला बदल कर हिक़मतियार के साथ जा मिलने वाला है। मसूद को अब उन दोनों से लड़ना होगा और उसे मुश्किल होगी। और हमें हज़ाराओं को नहीं भूलना चाहिए।' उसने बैंगन के अचार से एक चुटकी टुकड़ा उठाया। यह अचार मरियम ने उन्हीं गर्मियों में बनाया था। 'उम्मीद करते हैं कि यह महज़ एक अफवाह हो। क्योंकि अगर ऐसा हो गया, यह जंग,' उसने चिकनाई लगा एक हाथ लहराया, 'पगमान में जुमे की पिकनिक की तरह लगेगी।'

बाद में वो लैला के ऊपर चढ़ा और बिना बोले जल्दी-जल्दी खुद को तनावमुक्त किया। इस दौरान उसने सारे कपड़े पहन रखे थे, बस तुंबन को छोड़ कर जिसे उसने उतारा नहीं बल्कि टखनों तक सरका दिया। जब उत्तेजना ख़त्म हुई तो वो लैला के ऊपर से लुढ़का और चंद मिनटों में ही सो गया।

लैला सोने के कमरे से सरक कर निकली और पाया कि मरियम रसोई में बैठी ट्राउट मछलियों का एक जोड़ा साफ़ कर रही थी। उसकी बगल में भिगोए हुए चावलों का एक बर्तन पहले से पड़ा हुआ था। रसोई में जीरे, धुएं और भुने हुए प्याज़ और मछली की महक़ थी।

वो एक कोने में बैठ गई और अपनी पोशाक का किनारा अपने घुटने पर लपेट लिया।

'शुक्रिया,' उसने कहा।

मरियम ने उस पर ध्यान नहीं दिया। उसने पहली मछली को काटने का काम पूरा कर दूसरी को उठाया। एक दांतेदार छुरी से उसने मछलियों के पर काटे, फिर मछली को उलट कर उसका पेट ऊपर किया और उसे सधे हुए

244 ख़ालिद हुसैनी

हाथ से गलफड़ों से लेकर पूंछ तक चीर दिया। लैला ने देखा कि उसने अपना अंगूठा मछली के मुंह में, निचले जबड़े से ठीक ऊपर रख कर दबाया और एक ही झटके में गलफड़ और बाक़ी का फालतू हिस्सा बाहर निकाल दिया।

'कपड़े प्यारे हैं।'

'मुझे उनका कोई काम नहीं था,' मरियम बुदबुदाई। उसने चिपचिपे, भूरे तरल में डूबी मछली को अखबार पर रखा और उसका सिर काट कर अलग कर दिया। 'वा तो तुम्हारी बेटी के काम आ जाते या कीड़े चाट जाते।'

'आपने इस तरह मछली साफ़ करना कहां से सीखा?'

'जब मैं छोटी थी तो मैं एक धारा के पास रहती थी। मैं तब खुद मछलियां पकड़ती थी।'

'मैंने कभी मछली नहीं पकड़ी।'

'उतना मजेदार भी नहीं है। पूरे वक़्त इंतजार करना पड़ता है।'

बैला ने उसे ट्राउट को तीन-तीन हिस्सो में काटते हुए देखा। 'क्या आपने कपड़े खुद सिले थे?'

मरियम ने सिर हिलाया।

"कब?'

मरियम वे मठली के टुकड़ों को कटोरे में रखे पानी में धोया। 'जब मैं पहली बार पेट से थी। या शायद दूसरी बार। अट्ठारह, उन्नीस बरस पहले। जो भी हो, अरसा हुआ। जैसा मैंने कहा, वो कभी मेरे इस्तेमाल में नहीं आए।'

'आप सचमुच में एक अच्छी खाला हैं। शायद आप मुझे सिखा सकती

मरियम धुले हुए ट्राउट के टुकड़ों को एक साफ़ कटोरे में रखा। पानी की वृदें उसकी उंगलियों के पोरों से टपक रही थीं। उसने अपना सिर उठाया और लैला को देखा, मानो पहली बार देख रही हो।

"उस रात, जब वो... पहले कभी कोई मेरी खातिर खड़ा नहीं हुआ था,' उसने कहा।

लैला ने लटकते हुए गालों, थकान से भरी तहों में दबी पुतलियों और उसके मुंह के चारों ओर गहरी लकीरों को देखा उसने इन चीज़ों को इस तरह देखा मानो वो किसी को पहली बार देख रही हो। और पहली बार, लैला ने एक दुश्मन का चेहरा नहीं देखा था, बल्कि उसने एक अनकही शिकायत को,

हजारों दमकते आफ़ताब 245

बिना विरोध जताए उठाए गए बोझों को, और बर्दाश्त करने के लिए छोड़ दी गई एक नियति को देखा। लैला को जानने की इच्छा हुई कि अगर वो रुकी रहे तो बीस साल बाद क्या यह उसका अपना चेहरा हो सकता है?

'मैं उन्हें नहीं करने देती,' लैला ने कहा। 'मैं ऐसे घर में नहीं पली-बढ़ी हूं जहां लोग ऐसी चीजें करते हों।'

'अब यह तुम्हारा घर है। तुम्हें इसकी आदत डालनी होगी।'

'इसकी नहीं। मैं नहीं डालूंगी।'

'वो तुम्हारे पीछे पड़ेगा, तुम जानती हो,' मरियम ने कपड़े के एक टुकड़े से पोंछ कर हाथ सुखाते हुए कहा। 'जल्दी ही। और तुमने उसे एक बेटी दी है। तो देखो, तुम्हारा गुनाह तो मुझसे भी कम माफ़ी के काबिल है।'

लैला अपने पांवों पर खड़ी हुई। 'मुझे पता है कि बाहर कड़कड़ाती सर्दी है, लेकिन क्या कहती हैं, हम गुनाहगार औरतें आंगन में एक-एक कप चाय पी सकती हैं?'

मरियम हैरान दिखी। 'मैं नहीं पी सकती। अभी मुझे फलियों को काट कर धोना है।'

'मैं सवेरे इसमें आपकी मदद कर दूंगी।'.

'और मुझे यहां सफाई करनी है।'

'हम दोनों इसे मिल कर साफ़ देंगी। अगर मैं गलती नहीं कर रही तो कुछ हलवा बचा हुआ है। चाय के साथ कमाल का रहेगा।'

मरियम ने कपड़े का टुकड़ा ओटे पर रख दिया। जिस तरह उसने अपनी आस्तीनें खींचीं, अपना हिजाब ठीक किया और बालों की एक लट को पीछे धकेला लैला ने उसमें एक उत्तेजना महसूस की।

'चीनी लोग कहते हैं कि एक दिन चाय से महरूम रहने से अच्छा है कि तीन दिन खाने से महरूम रहा जाए।'

मरियम हल्के से मुस्कुराई। 'अच्छी कहावत है।'

'अच्छी ही है।'

'लेकिन मैं देर तक नहीं रुक सकती।'

'बस एक कप ।'

बाहर वो फोल्डिंग कुर्सियों पर बैठीं और एक ही कटोरे से उंगलियों से निकाल कर हलवा खाया। उन्होंने दो-दो कप चाय पी और जब लैला ने तीसरे

246 ख़ालिद हुसैनी

कप के लिए पूछा तो मरियम ने कहा कि उसे चाहिए। पहाड़ियों में गोलीबारी चल रही थी और वो चांद के नीचे सरकते बादलों को और मौसम की आखिरी जुगनुओं को अंधेरे में चमकदार पीले मेहराब बनाते हुए देखती रहीं। और जव अजीजा जग कर चिल्लाने लगी और रशीद ने उसे ऊपर आ कर चुप कराने के लिए बुलाया तो लैला और मरियम ने एक दूसरे को देखा। यह एक खुते दिल की समझदारी भरी निगाह। और मरियम के साथ पहल भर की, बिना शब्दों वाली इस बातचीत में लैला जान गई कि वो अब दुश्मन नहीं रही थीं।

पैंतीस

मरियम

उस रात के बाद मरियम और लैला मिल कर घर का काम करतीं। वो रसोई में बैठ कर आटा गूंधतीं, हरे प्याज़ काटतीं, लीी कूटतीं और खीरे के टुकड़े अज़ीज़ा के आगे पेश करतीं, जो पास ही में चम्मच बजा रही होती और गाजर से खेलती। आंगन में अज़ीज़ा बेंत के पालने में लेटी रहती और कपड़ों की परतों से लैस होती। सर्दियों का एक गुलूबंद उसके गले में चुस्ती से लिपटा होता। कपड़े धोते हुए मरियम और लैला उस पर निगाह बनाए रखतीं। कमीजें और पतलून और बच्ची की लंगोटी रगड़ते हुए मरियम की उंगलियां लैला की उंगलियों से टकरा जातीं।

मरियम धीरे-धीरे इस अनिश्चित लेकिन खुशनुमा साथ की आदी हो गई। वो लैला के साथ आंगन में तीन कप चायों का बेसब्री से इंतजार करती, जो अब रात में उनकी रस्म बन गई थी। सवेरे मरियम सीढ़ियों पर लैला की फटी हुई चप्पलों की आवाज़ सुनने का इंतजार करती, जब वो नाश्ते के लिए उतरती। वो अजीजा की तीखी हंसी की खनक और उसके नन्हें आठ दांतों को देखने का और उसकी चमड़ी से आती दूध की महक़ का इंतजार करती। अगर लैला और अजीजा सो रहे होते तो वो इंतजार करते हुए बेचैन हो जाती। वो उन बर्तनों को धोती जिनको धोने की जरूरत नहीं होती। बैठक में गद्दियों-तकियों को फिर से सजाती। खिड़की के साफ़ ओटों को साफ़ करती। वो खुद को तब तक काम में लगाए रखती जब तक अजीजा को कूल्हों पर

248 ख़ालिद हुसैनी

टिकाए लैला रसोई में नहीं दाखिल हो जाती ।

जब अजीजा सवेरे-सवेरे मरियम को देख लेती, तो हमेशा उसकी आंखें, फैल जातीं और वो अपनी मां की पकड़ में ठुनकने और कसमसाने लगती। वो मरियम की तरफ़ बांहें फैला देती और मांग करती कि वो उसे ले ले। उसके नन्हें हाथ जल्दी-जल्दी खुलते, बंद होते और उसके चेहरे पर प्यार और कंपकंपाहट से भरी बेचैनी का भाव आ जाता।

'क्या तमाशा खड़ा कर रही हो,' लैला उसे मरियम की तरफ़ रेंगते हुए जाने के लिए छोड़ देती। 'क्या तमाशा है! शांत हो जाओ। खाला मरियम कहीं नहीं जा रहीं। वो रहीं, तुम्हारी खाला। दिखीं? जाओ, अब ।'

मरियम की बांहों में जाते ही अज़ीज़ा अपना अंगूठा मुंह में डाल लेती और अपना चेहरा मरियम के गले में धंसा देती ।

मरियम उसे रुखाई से उछालती। उसके होंठों पर आधी हक्की-बक्की और आधी शुक्रगुज़ार मुस्कान तैर जाती। मरियम ने पहले कभी भी ऐसा नहीं चाहा था। मुहब्बत उसे पहले कभी भी इतनी निष्कपटता से, इतने खुले दिल से नहीं मिली थी।

अजीजा ने मरियम में रोने की चाहत जगा दी।

'क्यों तुमने मुझ जैसी बदसूरत बुढ़िया में अपना नन्हा दिल लगा रखा है?' मरियम अजीजा के बालों में बुदबुदाती। 'हूं? मैं तो मामूली हूं, दिखता नहीं तुम्हें? एक देहाती। तुम्हें देने के लिए मेरे पास क्या है?'

लेकिन अजीजा संतोष से बस बुदबुदाती और अपना चेहरा और धंसा लेती। और जब वो ऐसा करती, मरियम निहाल हो जाती। उसकी आंखें भींग आतीं। दिल उड़ानें भरता। और वो इस पर हैरान हो जाती कि कैसे इतने बरसों तक सिर्फ़ खोने के बाद, झूठे रिश्तों से भरी जिंदगी में, इस नन्हें से जीव में उसने पहला सच्चा रिश्ता पाया है।

अगले साल की शुरुआत में, यानी 1994 की जनवरी में दोस्तम ने पाले बदले। वो गुलबुद्दीन हिक़मतियार से आ मिला और बाला हिसार के पास जगह बनाई। ये पुराने किले की दीवारें थीं, जो कोहे-शीरदरवाजा पहाड़ियों से शहर तक फैली हुई थीं। साथ मिल कर वो मसूद और रब्बानी की फौजों पर रक्षा मंत्रालय और राष्ट्रपति के महल पर गोलियां दागते। काबुल नदी के दोनों तरफ़ तोपखाने

हजारों दमकते आफ़ताब 249

एक दूसरे पर दागते। गलियों में लाशें, शीशे और धातुओं के टूटे हुए मलबे भरे पड़े थे। लूट, कत्ल और दिनों दिन बढ़ती बलात्कार की घटनाएं नागरिकों को धमकाने और मिलीशिया के लोगों को ईनाम देने के लिए इस्तेमाल की जा रही थीं। मरियम ने ऐसी औरतों के बारे में सुना था, जो बलात्कार से बचने के लिए खुदकुशी कर रही थीं और मर्द इज़्ज़त के नाम पर अपनी बीवियों और बेटियों को जान से मार डाल रहे थे, अगर उनका मिलीशिया के लोग बलात्कार कर देते ।

अजीजा गोलीबारी की गरज पर ज़ोर-जोर से रोने लगती। उसका ध्यान बंटाने के लिए मरियम फर्श पर चावल के दानों से घर या मुर्गे या सितारा बनाती और अज़ीज़ा को उसे बिखराने को कहती। वो अज़ीज़ा के

लिए एक ही बार में हाथी बनाती, जैसा कि जलील ने उसे सिखाया था, बिना कलम की नोक उठाए हुए।

रशीद बताता कि आम लोग दर्जनों की गिनती में रोज़ मारे जा रहे थे। अस्पताल और दवा सप्लाई करने वाली दुकानों पर गोलीबारी होती थी। वो बताता कि शहर में खाने की आपातकालीन खेप लाने वाली गाड़ियों को दाखिल होने से रोका जा रहा था, उन पर छापा मारा जा रहा था, गोलियां दागी जाती थीं। मरियम को यह जानने की इच्छा होती कि क्या हेरात में भी ऐसी ही लड़ाई चल रही है, और अगर ऐसा है तो मुल्ला फैजुल्ला, अगर वो अब भी जिंदा हों तो, कैसे उसका सामना कर रहे होंगे? अपने सभी बेटों, बहुओं और पोते-पोतियों के साथ बीबी जो कैसे उसे बरर्दाश्त कर रही होंगी। और बेशक जलील । मरियम को जानने का मन किया कि क्या वो भी छुपा हुआ था, जैसे कि वो छुपी हुई थी? या क्या वो अपनी बीवियों और बच्चों को लेकर देश से भाग गया था? उसने उम्मीद की कि जलील कहीं महफूज होगा, और वो इस कत्लगारत से दूर जाने में कामयाब हो गया होगा।

एक हफ़्ते तो लड़ाई इतनी उग्र थी कि रशीद को भी घर बैठना पड़ा। उसने आंगन के दरवाजे पर ताला लगा दिया, फंदे लगा दिए और सदर दरवाजे पर भी ताला लगा दिया और उसके पीछे पलंग लगा कर बैरिकेडिंग कर दी। वो सिगरेट पीते हुए घर भर में घूमता, खिड़की से झांकता, बंदूक साफ़ करता, उसमें गोलियां भरता और बार-बार भरता। दो बार उसने यह दावा करते हुए सड़क पर फायर भी किया कि उसने किसी को दीवार पर चढ़ने की कोशिश

250 ख़ालिद हुसैनी

करते देखा था।

'वो नौजवान लड़कों को जबरन भर्ती कर रहे हैं,' उसने कहा। 'मुजाहिदीन लोग। बंदूक के बल पर, दिन दहाड़े। वो गलियों से लड़कों को पकड़ कर ले जा रहे हैं। और जब मुखालिफ मिलीशिया इन लड़कों को पकड़नी है तो बी उनको यातनाएं देती है। मैंने सुना है कि उनको बिजली के झटके दिए जात हैं मैंने यही सुना है कि वो उनके अंडकोषों को प्लास से फोड़ देते हैं। वो उन बच्चों को अपने घर तक ले चलने के लिए मजबूर करते हैं। इसके बाद दो घर तोड़ कर घुस आते हैं, उनके बाप को मार डालते हैं और वहनों और मांओं के साथ बलात्कार करते हैं।'

उसने सिर के ऊपर बंदूक लहराई। 'देखते हैं कि वे मेरे घर में कैसे बुमते हैं। मैं उनके अंडकोष फोड़ डालूंगा! उनके सिर उड़ा दूंगा! क्या तुम दोनों की पता है कि तुम दोनों मेरे जैसा मर्द पाकर कितनी खुशकिस्मत हो, जो खुद शैतान से भी नहीं डरता?'

उसने नीचे जमीन पर देखा और गौर किया कि अजीजा उसके पैरों के पास है। 'मेरे पैरों के पास से दफा हो जाओ!' उसने बंदूक से जाने का इशारा करते हुए झिड़क कर कहा। 'मेरे पीछे आना बंद करो! और तुम अपनी कलाइयां उस तरह घुमाना भी बंद कर दो। मैं तुम्हें उठाने नहीं जा रहा। चली जाओ! चली जाओ इससे पहले कि मैं तुम्हें पांवों से दबा दूं।'

अज़ीज़ा घबरा कर पीछे हट गई। रेंगती हुई वो मरियम के पास लौट आई। वो आहत और भ्रमित दिख रही थी। मरियम की गोद में वो अपना अंगूठा खुशी के साथ चूसने लगी और रशीद को बुरा मुंह बनाते हुए चिंता के साथ देखने लगी। कभी कभी वो ऊपर भी देख लेती, ऐसा मरियम ने सोचा, मानो वो भरोसा कर लेना चाहती हो।

लेकिन जब बात अब्बाओं की हो, तो मरियम के पास दिलाने के लिए कोई भरोसा नहीं था।

जब लड़ाई फिर से हल्की पड़ी तो मरियम को राहत मिली। ज़्यादातर तो इसलिए कि उन्हें अब और रशीद के साथ बंद रहना नहीं पड़ेगा, जिसकी बदमिज़ाजी पूरे घर पर छाई रहती थी। और उसने अज़ीज़ा के आसपास भरी हुई बंदूक लहरा-लहरा कर उसे डरा दिया था।

हजारों दमकते आफ़ताब 251

उसी सर्दियों के एक दिन लैला ने मरियम से उसके बालों की चोटियां गूंधने के बारे में पूछा।

मरियम चुपचाप बैठी हुई शीशे में लैला की पतली उंगलियों को उसके बालों की तहें बनाते देखती रही। एकाग्र लैला ने चेहरा सिकोड़ लिया था। अज़ीज़ा फर्श पर मुड़ी हुई सो रही थी। उसने अपने हाथों में एक गुड़िया दबा रखी थी, जिसे मरियम ने उसके लिए सिला था। उसमें मरियम ने फलियां भरी थीं और चाय की रंगत वाले कपड़े से उसे बनाया था जिसमें उसने धागों की एक चरखी वाले नेकलेस में तार लगा कर सिला था।

तभी अज़ीज़ा ने सोते हुए हवा छोड़ी। लैला ीीे लगी और मरियम भी इसमें शामिल हो गई। वो शीशे में दिखते एक दूसरे के प्रतिबिंब को देखते हुए हंसते रहे और उनकी आंखों में पानी भर आया। यह पल इतना स्वाभाविक, इतना सहज था कि एकाएक मरियम लैला को जलील, नाना और जिन के बारे में बताने लगी। लैला मरियम के कंधों पर हाथ रखे चुपचाप खड़ी शीशे में मरियम के चेहरे पर नज़रें गड़ाए रही। शब्द झड़ते रहे, जैसे नस से खून निकल रहा हो। मरियम ने उसे बीबी जो, मुल्ला फैजुल्ला, जलील के घर तक के अपमानजनक सफ़र और नाना की खुदकुशी के बारे में बताया। उसने जलील की बीवियों के बारे में बताया और रशीद से अपने हड़बड़ी में करा दिए गए निकाह के बारे में बताया। काबुल का उसका सफ़र, गर्भ ठहरना, उम्मीदों और निराशाओं का अंतहीन सिलसिला और फिर रशीद का उससे मुंह फेर लेना।

बाद में, लैला मरियम की कुर्सी के पाए के पास बैठी थी। खोई हुई-सी उसने अज़ीज़ा के बालों में अटके हुए एक धागे के टुकड़े को हटाया।
चुप्पी छा गई।

'मुझे भी आपसे कुछ बताना है,' लैला ने कहा।

उस राल मरियम सो नहीं सकी। बिस्तर में बैठी हुई वो बर्फ़ को चुपचाप गिरते हुए देखती रही।

मौसम आए और गए, काबुल में सदरों ने गद्दी संभाली और कत्ल किए गए, एक साम्राज्य हरा दिया गया, पुरानी जंगें ख़त्म हुईं और नई शुरू हुईं। लेकिन मरियम ने मुश्किल से ही इन पर गौर किया होगा, इसकी परवाह की होगी। उसने इन बर्सों को अपने दिमाग के किसी दूर-दराज कोने में धकेल

252 ख़ालिद हुसैनी

दिया था। एक सुखी, पड़ती जमीन, चाहतों और जज्बात से परे, सपनों और भ्रमी से परे। यहां भविष्य मायने नहीं रखता। और गुज़रें हुए दीर के बारे में भी यह समझ बनती हैः यो मुहव्वल एक नुक़सानदेह गलनी थी, और उसकी मददगार, उम्मीद एक धोखे से भरा हुआ वहम था। और जब भी ये दोनों जहरीले फूल उस जमीन के सूखे हुए टुकड़े पर खिल उठे, मरियम ने उन्हें जड़ से उखाड़ दिया। उसने जड़ से उखाड़ दिया और फिर से जड़ जमाने से पहले ही उनकी अलग कर दिया था।

लेकिन किसी तरह, इन पिछले महीनों में, लेला और अज़ीज़ा पता चला कि वो उसकी की तरह एक हरामी थी-मरियम का ही एक विस्तार ही गए थे और अब उनके बिना मरियम जिस जिंदगी की बर्दाश्त करनी आई थी, यो नाकाविले बर्दाश्त लग रही थी।

हम इस वसंत में जा रहे हैं, अजीजा और में। हमारे साथ चलिए मरियम। गुर हुए बग्स मरियम के लिए रहर्मादल नहीं रहे थे। उसने सोचा कि लेकिन शायद रहर्मादल बरस उसका इंतज़ार कर रहे थे। एक नई जिंदगी, एक ऐसी जिंदगी जिसमें वी ऐसी सौगात हासिल कर पाएगी जिनके बारे में नाना कहती थीं कि उसकी जैसी हरामी की वी कभी नहीं मिलेगी। उसकी जिंदगी में दो नए फूल अप्रत्याशित तौर से खिल उठे थे और वर्फ को गिरती हुई देखती मरियम की तस्वीर घुमाते मुल्ला फैजुल्ला का ख्याल आया। वो झुके हुए, मद्धिम आवाज में उससे कह गहे थे, लेकिन खुदा ने ही उन्हें रोपा है, मरियम जो। और यह उसी की ख्वाहिश है कि तुम उनकी देखभाल करो।

छत्तीस

लैला

1994 के उस वसंत की सुबह को जव मुबह की रोशनी ने आसमान से अंधेर को धो-पोंछ दिया था, लैला को यकीन हो चला था कि रशीद को पता था कि अब किसी भी पल वो उसे विग्नर से खींच कर पूछेगा कि क्या वो सचमुच उस एक गधा समझती थी कि वो यह बात पना नहीं कर लंगां? लेकिन अजान हुई और सुवह का सूरज छतों पर चढ़ने लगा और मुर्गे बोलने लगे थे और कोई भी गैर मामूली बात नहीं हुई।

वो अव नहाने के कमरे में उसकी आवाजें सुन सकती थी, वो बेसिन के किनारे पर अपना रेज़र ठकठका रहा था। इसके बाद वो नीचे टहलते हुए चाय गर्म कर रहा था। अब वो आंगन पार कर रहा था और फिर साइकिल ये कर जा रहा था।

लैला ने बैठक के पदों की एक दरार में से झांका। उसने उसे साइकिल के पेडल मारने हुए दूर जाते देखा, एक बड़ा सा आदमी एक छोटी सी साइकिल पर, जिसके हैंडलों पर सुबह की धूप चमक रही थी।

'लैला?"

मरियम दरवाज़ में थी। लैला बता सकती थी कि मरियम भी नहीं सोई थी।
उसे जानने का मन किया कि क्या मरियम पर भी रात भर उत्तेजना और मुंह सूखा देने वाली बेचैनी छाई रही थी।

'हम आधे घंटे में चल देंगे,' बेला ने कहा।

254 ख़ालिद हुसैनी

टैक्सी की पिछली सीट पर बैठे हुए उन्होंने कोई बातचीत नहीं कर रही थीं। अजीजा मरियम की गोद में थी और अपनी गुड़िया को पकड़े हुए वो तेज़ी से पीछे छूटते शहर को उलझन भरी फैली आंखों से देख रही थी।

'ओना!' वो रस्सियां कूदती लड़कियों के एक झुंड की ओर दिखाते हुए चिल्लाई। 'मायाम! ओना!'

लैला जिधर भी देखती, उसे रशीद दिखाई देता। उसे वो कोयले की धूल की रंगत वाली खिड़कियों वाले हज्जाम की दुकान से निकलता दिखाई दिया, खिचड़ी बेचने वाली छोटी दुकानों से, टूटे-फूटे खुले दरवाजों वाले स्टोरों से जिनमें पुराने टायर फर्श से लेकर छत कर भरे हुए थे।

वे अपनी सीट पर नीचे धंस गई। उसकी बगल में मरियम दुआ पढ़ रही थी। लैला की इच्छा हुई कि वो उसका चेहरा देख सकती। लेकिन मरियम बुर्के में थी-उन दोनों ने ही बुर्का पहन रखा था और वो बस जाली में से उसकी आंखों की चमक ही देख सकती थी।

अगर पिछले दिन रेहन रखनें वाली दुकान तक के छोटे से सफ़र को छोड़ दें तो कई हफ़्तों में पहली बार लैला घर से निकली थी। वहां अपनी शादी की अंगूठी शीशे के काउंटर पर रखते हुए जानती थी कि लौटने का कोई रास्ता नहीं है। वो उस घड़ी की निर्णयात्मकता से रोमांचित थी।

लैला अब अपने चारों तरफ़ उस लड़ाई के नतीजे देख रखी थी, जिसकी आवाजें वो अपने घर में से सुनती थी। बिना छतों वाले घर ईंट के खंडहरों और नुकीले पत्थरों के मलबे के रूप में खड़े थे। टूटी हुई इमारतों में से गिरी हुई शहतीरें छेदों में से झांक रही थीं, जले हुए, कटे-फटे कारों के चदरे, उल्टे और कभी-कभी एक दूसरे के ऊपर लदे हुए थें, दीवारों में हरेक कल्पनीय गोले के छेद थे, हर कहीं शीशे

के टुकड़े बिखरे पड़े थे। उसने एक मस्जिद की तरफ़ जाती मय्यत को देखा, उसके पीछे चलनेवाली काले कपड़ों में लिपटी औरतें अपने बाल नोच रही थीं। वो एक कब्रिस्तान से होकर गुज़रे जहां पत्थ्रों के ढेर वाली कब्रें और हवा में फड़फड़ाते शहीद परचम के टुकड़े थे।

लैला ने सूटकेस के पार हाथ बढ़ाया और अपनी बेटी के हाथ की नर्मी के गिर्द उंगलियां लपेट दीं।

255

पून्दी कावुत के पोल महम्मद खान के पास लाहौर गेट वस स्टेशन पर पटरी में नगरी हुई वसों की एक कतार खड़ी थी। पगड़ी बांधे हुए मर्द वस की छतों दर मटरियां और पेटियां चढ़ा रहे थे और रस्सियां बांध कर सूटकेसों को महफूज कर रहे थे। स्टेशन के भीतर मर्द टिकट वृय के पास एक लंबी कतार लगा हर खड़े थे। बुर्के में लिपटी औरतें झुंडों में खड़ी वातें कर रही थीं। उनका नानान उनके पैरों के पास जमा था। वच्चे उछल-कूद कर रहे थे और थोड़े बड़े बच्चों को ज़्यादा दूर जाने पर डांट पड़ रही थी।

मुजाहिदीन मिलीशिया मैन स्टेशन और पटरी के किनारे गश्त कर रहे वे. रुखाई से यहां-वहां कुछ चिल्ला रहे थे। उन्होंने वूट, पकोल और धूल भरी हने वर्दी पहन रखी थी। उन सबने कलाश्निकोव ले रखे थे।

नेता को लगा कि उसे देखा जा रहा है। उसने किसी का चेहरा नहीं रेडा. नेकिन उसे महसूस हो रहा था कि यहां मौजूद हरेक आदमी यह जानता या, कि तैला और मरियम जो कर रही थीं उसे वो अस्वीकृत्ति के साथ देख रहे थे।

'आपने किसी को देखा?' लैला ने पूछा।

मरियम ने अजीजा को दूसरे हाथ में लिया। 'मैं देख रही हूं।'

नैना जानती थी कि यह पहला जोखिम भरा हिस्सा है, जिसके तहत एक ऐसे मर्द की तलाश करनी थी जिसके साथ खड़े होकर एक पारिवारिक तदस्य होने का भ्रम पैदा किया सके। 1978 से लेकर 1992 के बीच औरतों को जो आजादी और मौक़ मिले थे वो अव गुज़री हुई बातें हो चुके थे-लैला अब भी वात्री को कम्युनिस्ट हुकूमत के उन बरसों के बारे में बताते हुए याद कर सकती थी, अफ़ग़ानिस्तान में औरत होने के लिहाज से यह अच्छा वक़्त है. बैला। अप्रैल, 1992 में जव से मुजाहिदीनों ने

हुकूमत संभाली है, अफ़ग़ानिस्तान का नाम बदल कर इस्लामिक स्टेट ऑफ अफ़ग़ानिस्तान हो गया है। रब्बानी के मातहत सुप्रीम कोर्ट कट्टरपंथी मुल्लाओं से भरा पड़ा है, जिन्होंने कम्युनिस्टों के दौर के उन फरमानों को रद्द कर दिया है जिनमें महिलाओं को ताकत दी गई थी और उसकी जगह पर सख्त इस्लामी कानून शरिया पर आधारित नियम नागू किए हैं, जिनमें औरतों को पर्दे में रहने को कहा गया है और बिना मर्द रिश्तेदार के सफ़र करने की मनाही की गई है और नाजायज शारीरिक रिश्तों के लिए पत्थर से मारने की सजा का प्रावधान है। तब भी अगर इन कानूनों

256 ख़ालिद हुसैनी

को छिटपुट तरीके से लागू किया जा रहा है, लैला का कहना था कि वो इसे हम पर अधिक सख्ती से लागू करते अगर वो आपस में एक दूसरे को और हमें मारने में मसरूफ नहीं होते ।

इस सफ़र का दूसरा सबसे जोखिम भरा हिस्सा तब आता जब वों वास्तव में पाकिस्तान पहुंच जाते। पहले से ही बीस लाख अफ़ग़ानी शरणार्थियों का बोझ उठा रहे पाकिस्तान ने उस साल जनवरी में अफगानियों के लिए अपनी सरहदें बंद कर दी थीं। लैला ने सुना था कि जिनके पास वीज़ा होगा, सिर्फ उन्हीं को मंजूरी मिलेगी। लेकिन हमेशा की तरह सरहद को कई तरीको से पार किया जा सकता था, और लैला जानती थी कि हज़ारों अफ़ग़ानी अब भी पाकिस्तान में रिश्वत देकर या इनसानी बुनियादों पर पाकिस्तान में दाखिल हो रहे हैं। और फिर तस्कर भी थे, जिनको भाड़े पर लिया जा सकता था। मरियम को उसने बताया था कि जब हम पहुंच जाएंगे तो हम उपाय खोज लेंगे।

'उसके बारे में क्या ख्याल है?' मरियम ने अपनी ठोढ़ी से इशारा किया।

'वो भरोसे के लायक नहीं लग रहा है।'

'और वो?'

'बहुत बूढ़ा है। और वो दो और मर्दों के साथ सफ़र कर रहा है।'

आखिरकार लैला को वो बाहर एक पार्क में बेच पर बैठा हुआ मिला। उसके साथ बगल में बैठी एक नकाबपोश औरत और टोपी पहने एक छोटा-सा लड़का

था, जिसकी उम्र अजीजा जितनी होगी। वो उसके घुटनों पर उछल रहा था।
वो लंबा और दुबला था, उसकी दाढ़ी थी और उसने खुले कॉलर की कमीज और हल्के स्याह रंग का कोट पहन रखा था, जिसके बटन गायब थे।

'यहीं रुकिए,' उसने मरियम से कहा। दूर जाते हुए उसने सुना कि मरियम अब भी दुआ बुदबुदा रही थी।

जब लैला उस नौजवान के पास पहुंची तो उसने सिर उठाया और धूफ् से बचने के लिए आंखों पर हथेली की ओट कर ली।

'माफ़ कीजिएगा, भाईजान, लेकिन क्या आप पेशावर जा रहे हैं?'

'हां,' उसने अधखुली आंखों से देखते हुए कहा।

'मैं जानना चाह रही थी कि क्या आप हमारी मदद करेंगे। क्या आप हमारा एक काम कर देंगे?'

हजारों दमकते आफ़ताब 257

उसने लड़के को अपनी बीवी के हवाले किया। वो और लैला कुछ क़दम आगे बढ़ आए ।

'क्या बात है हमशीरा?'

बढ़ा। उस नौजवान की नर्म आंखें और मेहरबान चेहरा देख कर लैला का हौसला

उसने उसे वो कहानी सुनाई जिसपर वो और मरियम राजी हुई थीं। उसने कहा कि वो एक बेवा थी। वो और उसकी अम्मी और बेटी का काबुल में कोई नहीं बचा था। वो अपने चाचा के साथ रहने के लिए पेशावर जा रही थीं।

'आप मेरे परिवार के साथ चलना चाहती हैं,' नौजवान ने कहा।

'मैं जानती हूं कि ये आपके लिए एक ज़हमत हैं। लेकिन आप एक अलग बिरादर दिखे और मैं-'

'फिक्र मत कीजिए। यह तो सवाब का काम है। खुदा याद रखेगा।'

लैला ने बुर्के के भीतर जेब से एक लिफाफा निकाला और उसे थमा दिया। उसमें ग्यारह अफ़ग़ानी थे। उसने पिछले साल जितनी रकम जोड़ी थी और अंगूठी बेच कर जो रकम हासिल की थी, यह उसकी आधी रकम था। नौजवान ने अपनी पतलून की जेब में लिफाफा रख लिया।

'यहीं रुकिए।'

लौटा। उसने नौजवान को स्टेशन में दाखिल होते देखा। वो आधे घंटे के बाद

'बेहतर यही रहेगा कि आपके टिकट मैं रखूं,' उसने कहा। 'बस घंटे भर में, ग्यारह बजे निकलनी है। हम सब उस पर साथ सवार होंगे। मेरा नाम वकील है। अगर वो पूछें- हालांकि उन्हें पूछना तो नहीं चाहिए-मैं उनको बता दूंगा कि आप मेरी चचेरी बहन हैं।'

लैला ने उसे अपने नाम बताए और उसने कहा कि वो उन्हें याद रखेगा।

'करीब ही रहिए,' उसने कहा।

वो वकील और उसके परिवार के पास वाली बेंच पर बैठे। यह धूप से चमकती हुई गर्म दोपहर थी। आसमान में दूर पहाड़ों के ऊपर कुछेक हल्के बादल मंडरा रहे थे। मरियम अजीजा को कुछ पतले बिस्कुट खिलाने लगी जो वो सामान बांधने की हड़बड़ी के बीच याद से साथ लेती आई थी। उसने लैला

258 ख़ालिद हुसैनी

को भी बिस्कुट पेश किए।

'मैं उल्टी कर दूंगी,' लैला हंसी। 'मैं इतनी उत्तेजित हूं।'

'मैं भी।'

'शुक्रिया मरियम ।'

'किसलिए ।'

'इसके लिए। हमारे साथ आने के लिए,' लैला ने कहा। 'मुझे नहीं लगता कि मैं अकेले यह कर पाती।'

'□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□'

'□□ □□□ □□ □□□□□, □□ □□ □□□□□, □□ □□□□ □□ □□□ □□□?'

□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ '□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□, □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□, □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□'

'□□□!' □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ '□□□, □□□!'

'□□□□□ □□□ □□□□□□ □□,' □□□□□ □□ □□□□ '□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□'

□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□, □□□, □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□

□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □

□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□

□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□

'□□ □□ □□□ □□□,' □□□□ □□ □□□□

वकील आगे आगे चला। वस तक पहुंच कर लैला को खिड़की में दवते नाक और हथेलियां दिखाई दिए। उनके चारों तरफ़ विदाइयों की चीख-पुकार थी।

वस के दरवाजे पर एक नौजवान मिलीशिया टिकट जांच रहा था।

'बोव!' अज़ीज़ा चिल्लाई।

वकील ने फौजी को टिकट दिए, जिसने आधे टिकट फाड़ कर लौटा दिया।
वकील ने पहले अपनी बीवी को सवार होने दिया। लैला वकील और मिलीशियामैन के बीच से गुजरी। वकील ने पहला पांव वस पर रखा और मिलीशियावाले के कान में कुछ कहने के लिए झुका। मिलीशियावाले ने सिर हिलाया।

लैला का दिल बैठ गया।

'बच्चे के साथ आप दोनों बगल में आ जाइए,' फौजी ने कहा।

लैला ने नहीं सुनने का बहाना किया। वो ऊपर चढ़ना चाहती थी लेकिन फौजी ने उसे पीछे से पकड़ लिया और उसे रुखाई से कतार से बाहर कर दिया। 'आप भी,' उसने मरियम से कहा। 'जल्दी! आप लोग लोगों का रास्ता रोक रहे हैं।'

'क्या परेशानी है विरादर?' लैला ने सुन्न पड़े होंठों से कहा। 'हमारे पास टिकट हैं। क्या मेरे भाई ने आपको टिकट नहीं दिए?'

उसने अपनी उंगली से चुप रहने का इशारा किया और एक दूसरे गार्ड से धीमी आवाज़ में बात की। दूसरे गार्ड ने सिर हिलाया। वो एक गोल-मटोल आदमी थी और उसके दाहिने गाल पर एक कटे का निशान था।

'मेरे साथ आइए,' उसने लैला से कहा।

'हमें इस वस पर सवार होना है,' लैला चिल्लाई। वो जानती थी कि उसकी आवाज़ कांप रही है। 'हमारे पास टिकट है। आप हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं?'

'आप लोग इस वस से नहीं जा रहे हैं। आपको शायद इसे कबूल कर लेना चाहिए। आप मेरे साथ आएंगे। अगर आप नहीं चाहते कि आपकी यह नन्ही लड़की आपको घसीटे जाते हुए देखे ।'

जब उनको ट्रक की तरफ़ ले जाया जा रहा था, लैला ने मुड़ कर पीछे देखा। उसे बस के पीछे वकील का बेटा दिखा। लड़के ने भी उसे देखा और खुश होकर हाथ हिलाया।

260

तोरबाज खान चौराहा पुलिस थाने में उनको एक लंबे, भरे हुए गलियारे के दोनों सिरों पर अलग अलग बिताया गया। उनके बीच में एक डेस्क थी, जिसके पीछे एक एक के बाद एक सिगरेटें पी रहा एक आदमी बैठा टाइपराइटर खटखटा रहा था। इसी तरह तीन घंटे बीत गए। अजीजा डगमगाते हुए लैला से मरियम तक गई और फिर लौट आई। वो एक कागज के क्लिप से भी खेली, जिसे डेस्क चाले आदमी ने उसे दिया। उसने बिस्कुट ख़त्म कर दिया। आख़िरकार वो मरियम की गोद में सो गई।

करीब तीन बजे लैला को एक इंटरव्यू रूम में ले जाया गया। मरियम को गलियारे में ही अजीजा के साथ इंतजार करने को कहा गया।

इंटरव्यू रूम में डेस्क की दूसरी तरफ़ बैठा आदमी तीस के करीब का होगा और उसने सादी पोशाक पहन रखी थी-काला सूट, टाई, काले जूते ।
उसकी दाढ़ी साफ-सुथरी कतरी हुई थी और उसकी भौंहें मिल रही थीं।
डेस्क पर पेंसिल के रबर वाले सिरे को पटकता हुआ वो लैला को घूर रहा था।

'हम जानते हैं,' गला साफ़ करते हुए और नर्मी से हथेली से मुंह ढंकते हुए उसने कहा, 'कि आप आज पहले ही एक झूठ बोल चुकी हैं, हमशीरा।

स्टेशन बाला वो नौजवान आपका रिश्ते का भाई नहीं था। ये बात उसने खुद हमें बताई है। सवाल ये है क्या आप आज और झूठ बोलेंगी। निजी तौर पर मैं आपको इसकी उल्टी सलाह दूंगा।'

'हम अपने चाचा के पास रहने जा रहे थे,' लैला ने कहा। 'यह सच

पुलिसवाले ने सिर हिलाया। 'गलियारे में बैठीं वो हमशीरा, आपकी अम्मी

'हां।'

'उनके बोलने में हेराती लहजा है। आपमें नहीं।'

'वो हेरात में पहली बढ़ी हैं, मैं यहीं काबुल में पैदा हुई।'

'बेशक । और आप बेवा हैं? आपने कहा कि आप थीं। मेरी हमदर्दी आपके

साथ है। और ये चाचा, ये काका, वे कहां रहते हैं?'

'पेशावर में।'

हजारों दमकते आफ़ताब 261

'हां, आपने यह बताया था।' उसने पेंसिल की नोक छूकर उसे एक सादे काग़ज़ पर टिकाया। 'लेकिन पेशावर में कहां? किस मुहल्ले में, मेहरबानी होगी? सड़क नंबर, सेक्टर नंबर ।'

लैला ने अपने सीने में उठती हौल को दबाने के कोशिश की। उसने पेशावर की उस अकेली सड़क का नाम बता दिया, जो उसे पता था-जमरूद रोड। इस नाम का जिक्र उसने तब सुना था, जब उसकी मम्मी ने मुजाहिदीनों के पहली बार काबुल आने पर दावत दी थी।

'ओह, हां। वही सड़क, और पर्ल कॉन्टिनेंटल होटल। शायद उसने इसका ज़िक्र किया था।'

हां।' लैला ने हाथ आए मौके को पकड़ा और बोल पड़ी, 'ठीक वही सड़क,

'फ़र्क़ बस ये है कि होटल खैबर रोड पर है।'

लैला को गलियारे में अज़ीज़ा का रोना सुनाई पड़ा। 'मेरी बेटी डर गई है। शायद मैं उसे ले आऊं बिरादर?'

'मैं 'अफसर' सुनना पसंद करूंगा। और आप यहां उसके साथ फौरन लौटिए, क्या आपके पास इन चचा का कोई टेलीफोन नंबर है?'

'मेरे पास है। मेरे पास था। मैं...' उनके बीच में बुर्का था, इसके बावजूद लैला उसकी बेधती हुई आंखों से महफूज़ नहीं थी। 'मैं इतनी परेशान हूं कि लगता है कि मैं यह भूल गई हूं।'

आदमी ने नाक से गहरी सांस ली। उसने चाचा का नाम और उनकी बीवी का नाम पूछा। उनके कितने बच्चे थे? उनके नाम क्या थे? वो कहां काम करते थे? चाचा की उम्र क्या था? उसके सवालों से लैला घबरा गई।

उसने अपनी पेंसिल रख दी, उंगलियां आपस में बांध लीं और इस तरह आगे झुक आया, जिस तरह मां-बाप अपने छोटे बच्चों को कुछ कहने के लिए झुकते हैं। 'आप समझ लीजिए हमशीरा, कि एक औरत का भागना एक जुर्म है। हमने ढेरों मामले देखे हैं। औरतों का अकेले सफ़र करना और यह दावा करना कि उनके शौहर मर चुके हैं। कभी-कभी वो सच बोल रही होती हैं, लेकिन ज़्यादातर नहीं। आपको भागने के लिए कैद किया जा सकता है और मेरा अंदाजा है कि आप यह समझती हैं, है ना?'

'हमें जाने दीजिए, अफसर...' उसने उसकी वर्दी में लगी पट्टी पर उसका

262 ख़ालिद हुसैनी

नाम पढ़ा। 'अफसर रहमान। अपने नाम के मतलब की इज़्ज़त रखिए और रहमदिली दिखाइए। महज दो औरतों को जाने देना आपके लिए क्या मायने रखता है? हमें छोड़ देने में क्या नुक्सान है? हम मुजरिम नहीं हैं।'

'मैं नहीं कर सकता ।'

'मैं भीख मांगती हूं, मेहरबानी कीजिए।'

'यह कानून का मामला है, हमशीरा,' रहमान ने अपनी आवाज़ में गंभीरता और खुद को अहमियत देने वाला अंदाज़ लाते हुए कहा। 'यह मेरी ज़िम्मेवारी है कि मैं सबकुछ दुरूस्त रखूं।'

बावजूद इसके कि लैला घबराई हुई हालत में थी, वो करीब-करीब हंस देती। वो हैरान थी कि मुजाहिदीन जो कर रहे थे, उसके सामने अफसर ने इस शब्द का इस्तेमाल किया-हत्याएं, लूट, बलात्कार, यातनाएं, फांसियां, बमबारी, एक दूसरे पर वो दसियों हज़ार टन रॉकेट दाग चुके थे और उन मासूम लोगों से बेपरवाह थे कि जो उनकी आपसी गोलीबारी में मारे जाएंगे। इंतजाम । लेकिन उसने अपनी जीभ काट ली।

'अगर आप हमें वापस भेज देंगे,' उसने धीरे से आग्रह किया, 'तो वो हमारे साथ क्या करेगा ये कहा नहीं जा सकता।'

लैला ने देखा कि अफसर को अपनी आंखें फेरने के लिए कोशिश करनी पड़ी। 'एक मर्द अपने घर में क्या करता है, ये उसका अपना मामला है।'

'तब कानून का क्या मतलब है अफसर रहमान?' गुस्से के आंसू उसकी आंखों में चुभने लगे। 'क्या आप वहां कायदा बनाए रखने के लिए वहां होंगे?'

'नीति के मुताबिक हम परिवार के निजी मामलों में दखलअंदाजी नहीं करते हैं, हमशीरा ।'

'बेशक आप नहीं करते हैं। जब इससे मर्द को फायदा होता है। और क्या यही वो 'परिवार का निजी मामला' नहीं है, जैसा कि आप कहते हैं? है कि नहीं?'

डेस्क पर से पीछे हटते हुए वो उठा। उसने अपनी जैकेट सीधी की। 'मुझे यकीन है कि यह इंटरव्यू ख़त्म हो गया है। मुझे कहना ही होगा हमशीरा कि आपने अपनी कमज़ोर हिमायत की है। बहुत ही कमजोर, असल में। अब अगर आप बाहर इंतजार करें तो आपकी... वो जो भी हों, उनसे मैं दो बातें कर लूंगा।'

हजारों दमकते आफ़ताब 263

लैला ने इस पर विरोध किया, फिर चिल्लाई और अफसर को उसे अपने दफ्तर से घसीट कर निकालने में मदद करने के लिए दो लोगों को बुलाना पड़ा।

मरियम का इंटरव्यू बस कुछ मिनटों तक ही चला। जब वो बाहर निकली, तो वो विचलित लग रही थी।

'उसने इतने सारे सवाल किए,' वो बोली। 'मुझे दुख है, लैला जो। मैं तुम्हारी जितनी होशियार नहीं हूं। उसने इतने सारे सवाल किए। मुझे जवाब पता नहीं थे। मुझे दुख है।'

'इसमें आपका कसूर नहीं है, मरियम,' लैला ने कमज़ोर आवाज़ में कहा। 'यह मेरी गलती है। पूरी ग़लती मेरी है। हर चीज़ मेरी गलती है।'

छह बज चुके थे जब पुलिस की गाड़ी घर के बाहर रुकी। लैला और मरियम को पिछली सीट पर इंतज़ार करने को कहा गया, जिनकी पहरेदारी सवारी सीट पर बैठा एक मुजाहिद फौजी कर रहा था। गाड़ी से ड्राइवर उतरा और उसने दरवाजा खटखटाया और रशीद से बात की। उसी ने उन दोनों को आने का इशारा किया ।

'घर पर आपका खुशआमदीद,' अगली सीट पर बैठे आदमी ने सिगरेट जलाते हुए कहा।

'तुम,' उसने मरियम को कहा। 'तुम यहीं रुको।'

मरियम चुपचाप पलंग पर बैठ गई।

'तुम दोनों ऊपर चलो।'

रशीद ने लैला को कुहनियों से पकड़ा और उसे धक्का देते हुए सीढ़ियां चढ़ने लगा। वो अब भी वही काम पर जाने वाले जूते पहने हुए थे। उसने अभी तक घर पर पहनी जानेवाली फीतों वाली चप्पल नहीं पहनी थी और न घड़ी उतारी थी, न ही उसने अपना कोट ही उतारा था। लैला ने कल्पना की कि घंटा भर पहले, या शायद कुछ मिनटों पहले वो एक कमरे से दूसरे में भाग रहा होगा, दरवाज़े पटक कर बंद कर रहा होगा, गुस्से और गैर यकीनी में होंठों ही होंठों में कोस रहा होगा।

ऊपर पहुंच कर लैला उसकी तरफ़ मुड़ी।

'वां यह नहीं करना चाहती थीं,' उसने कहा। 'मैंने ही उनको करने के

264 ख़ालिद हुसैनी

लिए कहा। वो नहीं जाना चाहती थीं-'

लैला अपनी तरफ़ आते मुक्के को न देख सकी। एक पल वो बोल रही थी और अगले ही पल वो चारों खाने चित्त पड़ी थी-आंखें फैली हुई, चेहरा लाल और सांस खींचने की कोशिश करती हुई। यह ऐसा था मानो भरपूर गति से आ रही एक कार ने उसे पसलियों और नाभी के बीच की नाजुक जगह में टक्कर मार दी हो। उसे समझ में आया कि अज़ीज़ा उससे गिर गई थी और चिल्ला रही थी। उसने फिर से सांस लेने की कोशिश की और एक भारी, घुटी हुई आवाज़ निकल कर रह गई। उसके मुंह से लार निकल गया।

फिर उसके बाल पकड़ कर उसे घसीटा जा रहा था। उसने अज़ीज़ा को उठाए जाते और उसके चप्पलों को निकाले जाते देखा। उसने देखा कि उसके नन्हें पांवों का घूमना देखा। बाल लैला के सिर से उखड़ रहे थे और उसकी आंखों में दर्द से पानी भर आया था। उसने रशीद को लात मार कर मरियम का दरवाज़ा खोलते और अज़ीज़ा को बिस्तर पर फेंकते देखा। उसने लैला के बाल छोड़ दिए और फिर उसने रशीद के जूते की नोक को

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 265

[illegible]

[illegible]

[illegible]

'[illegible],' [illegible]

[illegible]

छप्पर के दोहरे दरवाजे बंद कर दिए, अपनी जेब से चाबी निकाली और ताला लगा दिया। उसने दरवाज़ों को परखा, फिर छप्पर के पिछवाड़े गया और एक सीढ़ी उठा आया।

कुछ मिनटों के बाद लैला की खिड़की में उसका चेहरा था और उसके मुंह के कोने में कीलें दबी थीं। उसके बाल बिखरे हुए थे। उसके माथे पर खून की लकीर थी। उसे देखते हुए अज़ीज़ा सिहर गई और उसने लैला की वग़ल में अपना मुंह गड़ा लिया।

रशीद तख्तों को खिड़की पर ठोंकने लगा।

बस अंधेरा ही था। अथाह और घना अंधेरा, जिसमें कोई परत या रोशनी की फांक नहीं थी। रशीद ने तख्तों के बीच की दरारों को किसी चीज़ से भर दिया था और दरवाज़े के नीचे कोई बड़ी, स्थिर चीज़ रख दी थी, जिससे उसके नीचे से भी रोशनी नहीं आ सकती थी। चावी के छेद में भी कुछ भर दिया गया था।

लैला ने पाया कि आंखों के सहारे वक़्त के बारे में पता लगा पाना नामुमकिन है, इसलिए यह काम उसने अपने अच्छे कान की मदद से किया। अजान और मुर्गों का बोलना सुवह की निशानी थी। नीचे रसोई में तश्तरियों का खनखनाने और रेडियो के बजने का मतलब शाम होना था।

पहले दिन वो अंधेरे में एक दूसरे को टटोलते, छूते रहे। लैला देख नहीं

266 ख़ालिद हुसैनी

सकती थी कि अजीजा कब रो रही थी, कब वो रेंग रही थी।

'आइशी,' अज़ीजा मिनमिना कर कहती। 'आइशी ।'

'जल्दी ही।' लैला अपनी बेटी के माथे का अंदाज़ा लगाते हुए उसे चूमती और पाती कि यह उसकी खोपड़ी है। 'जल्दी ही हमारे पास दूध होगा। बस तुम सब्र करो। मम्मी के लिए एक अच्छी, सब्र करने वाली लड़की बनो और मैं तुम्हें आइशी ला दूंगी।'

लैला ने उसके लिए कुछ गीत गाए।

दूसरी बार अजान हो चुकी थी और रशीद ने उनको कोई खाना नहीं दिया था और सबसे बदतर यह कि पानी भी नहीं दिया था। उस दिन एक भारी, दमघोंटू गर्मी उन पर हावी थी। कमरा एक प्रेशर कुकर बन गया। लैला बाहर के कुएं और ठंडे-ताजे पानी के बारे में सोचते हुए अपने सूखी जीभ होंठों पर फिराती। अजीजा ने रोना जारी रखा और लैला ने परेशानी के साथ गौर किया कि जब वो उसके गालों को पोंछने के लिए उन पर हाथ फिराती तो उसके हाथ सूखे लौटते। उसने अज़ीज़ा के कपड़े निकाल दिए और उसको हवा झलने के लिए कुछ खोजा और आख़िर में उसको फूंकने लगी जब तक कि वो खुद ही अचेत जैसी न हो गई। जल्दी ही अज़ीज़ा ने रेंगना बंद कर दिया। उसे भी नींद के झोंके आने लगे।

उस दिन कई बार लैला ने दीवारों पर मुक्के मारे, मदद के लिए पूरी ताकत से चीखी। वो उम्मीद कर रही थी कि पड़ोसी सुन लेंगे। लेकिन कोई नहीं आया और हुआ केवल यह कि चिल्लाने से अजीजा डर गई और उसने फिर से रोना शुरू कर दिया। इस बार उसकी कमज़ोर और आवाज़ फटी हुई थी। लैला जमीन पर सरक आई। उसने मार खाई हुई और खून से लथपथ मरियम के बारे में कसूरवाराना तरीके से सोचा, जिसे इस गर्मी में औज़ारों के छप्पर में बंद किया गया था।

किसी समय लैला सो गई। उसकी देह गर्मी में तप रही थी। उसने सपना देखा कि वा और अजीजा तारिक़ की तरफ़ दौड़ रही हैं। वो सड़क के पार एक दर्जी की दुकान के छज्जे के नीचे था। वो रानों के बल बैठा था अंजीर की टोकरियों से नमूने ले रहा था। वो तुम्हारे अब्बा हैं, लैला ने कहा। वहां, वो आदमी, उन्हें देखा तुमने? वो तुम्हारे असली बाबा हैं। उसने उसका नाम लेकर पुकारा लेकिन सड़क के शोरगुल में उसकी आवाज डूब गई और तारिक़

हजारों दमकते आफ़ताब 267

सुन नहीं सका।

ऊपर से सरसरा कर गुज़रते रॉकेटों की सीटी से उसकी नींद खुल गई। कहीं आसमान धमाकों से हिल गया, जिसे वो देख नहीं सकती थी, और एक लंबी, पागलपन से भरपूर मशीनगन से गोली चलने की गरज आ रही थी। लैला ने आंखें बंद कर लीं। गलियारे में रशीद के भारी कदमों का आवाज़ से फिर उसकी नींद खुली। वो दरवाजे तक घिसटती हुई गई और उस पर हथेलियां पीटीं।

'बस एक गिलास राशिद। मेरे लिए नहीं। उसके लिए दे दो। अपने हाथों पर उसका खून मत लगाओ।'

वो चला गया।

वो उससे फरियाद करने लगी। उसने माफ़ कर देने की भीख मांगी, वादे किए। उसे कोसा।

रशीद का दरवाजा बंद हो गया। रेडियो चालू हुआ।

मुअज्जिन ने तीसरी बार अजान पुकारा। फिर से गर्मी। अज़ीज़ा और अधिक अचेत हो गई। उसने रोना और हिलना-डुलना बिल्कुल ही बंद कर दिया था।

लैला हर बार डरते हुए अज़ीज़ा के मुंह पर कान लगाती कि उसे उसके सांस लेने की आवाज़ नहीं सुनाई देगी। इसके लिए थोड़ा सा उठने भर से ही सिर घूमने लगता। वो बेहोश हो गई और उसने सपने देखे, जिसे वो याद नहीं कर सकी। जब वो जगी तो उसने अजीज़ा को टटोला, उसके सूखे होठों की दरारों को महसूस किया, उसकी नब्ज़ का फीका पड़ना महसूस किया और फिर से लेट गई। वो यहीं मर जाएंगे, लैला को यकीन हो गया था। उसे डर इस बात का लग रहा था कि अज़ीज़ा उससे पहले मर जाएगी, वो नन्हीं और नाजुक जीव थी। वो कितना बर्दाश्त कर पाएगी? इसी गर्मी में अजीजा मर जाएगी और अजीजा उसकी अकड़ी हुई नन्हीं देह की बगल में लेटी हुई अपनी मौत का इंतज़ार कर रही होगी। फिर से उसे नींद आ गई। जगी। नींद आ गई। सपने और जगे होने के बीच की लकीर धुंधली हो गई।

इस बार उसे मुर्गे या अजान ने नहीं जगाया बल्कि यह किसी भारी चीज के घसीटे जाने की आवाज़ थी। उसने खरोंचे जाने की आवाज सुनी। अचानक कमरे में रोशनी भर गई। उसकी आंखें सिकुड़ गईं। लैला ने अपना सिर उठाया,

268 ख़ालिद हुसैनी

घबरा कर पीछे हटी और अपनी आंखों पर हाथ से ओट कर ली। अपनी उंगलियों के बीच फांक से उसने एक बड़ी, धुंधली परछाईं को रोशनी के चौखटे में खड़ा 2 पाया। परछाईं हिली। अब एक आकृति उसकी बगल में झुक रही थी, उसके ऊपर फैलती हुई उसके कानों में कह रही थी।

'फिर से तुम ऐसा करो और मैं तुमको खोज निकालूंगा। मैं रसूल के नाम की कसम खाकर कहता हूं कि तुम्हें खोज निकालूंगा। और जब मैं खोज निकालूंगा तो जो मैं तुम्हारा करूंगा उस पर मुझे जिम्मेवार ठहरा सके, ऐसी कोई अदालत इस अभागे देश में नहीं है। पहले मरियम का और इसके बाद आख़िर में तुम्हारा। मैं तुम्हें दिखाऊंगा। समझीं तुम? मैं तुम्हें दिखा दूंगा।'

और इसी के साथ वो कमरे से चला गया। लेकिन जाने से पहले उसने लैला की पेट में बगल से इतने जोर से लात मारी कि अगले कई दिनों तक पेशाब में खून आता रहा।

सैंतीस

मरियम

सितंबर, 1996

ढाई बरस के बाद 27 सितंबर को मरियम एक सुबह उठी तो चिल्लाहट, सीटियों, पटाखों और संगीत की आवाजें आ रही थीं। वो बैठक में भागी और पाया कि लैला पहले से ही खिड़की के पास खड़ी है। अजीजा उसके कंधों पर सवार थी। लैला मुड़ी और मुस्कुराई। 'तालिबान आ गए,' उसने कहा।

मरियम ने पहली बार तालिबान के बारे में दो बरस पहले अक्तूबर, 1994 में तब सुना था, जब रशीद ख़बर लेकर आया था कि उन्होंने कांधार के सेनापतियों को उखाड़ फेंका है और शहर को अपने कब्जे में ले लिया है। उसने बताया कि वो गुरिल्ला संगठन था, जो उन पश्तून नौजवानों से मिल कर बना था, जिनके परिवार वाले सोवियत विरोधी जंग के दौरान पाकिस्तान चले गए थे। उनमें से अधिकतर पाकिस्तान से लगी सरहद पर रिफ्यूजी कैंपों में पले-बढ़े थे और उनमें से कइयों का तो जन्म ही वहां हुआ था। वो वहीं के मदरसों में पढ़े थे जहां उनको मुल्लाओं ने शरिया की तालीम दी थी। उनका रहनुमा एक रहस्यमय, अनपढ़, एक आंख वाला एकांतसेवी मुल्ला उमर था जो, रशीद ने मज़ाक में बताया, खुद को अमीर-उल-मोमिनीन यानी सारे ईमानवालों का रहनुमा कहता था।

'सही है कि इन बच्चों की कोई जड़ नहीं है,' रशीद ने कहा। वो ये

270

बात न तो मरियम से कह रहा था न लैला से। ढाई साल पहले जब उन्होंने भागने की नाकाम कोशिश की थी, तबसे मरियम जानती थीं कि रशीद के लिए लैला और मरियम एक जैसी ही थी, उतनी ही अभागी, उसकी गैरयकीनी, नफ़रत और उपेक्षा की बराबर की भागीदार। मरियम ने महसूस किया था कि जब वो बोलता था तो उसका भाव ऐसा होता था कि वो खुद से बोल रहा ही या फिर कमरे में किसी अदृश्य मौजूदगी से बात कर रहा हो जो मरियम और लैला के उलट, उसकी राय के लायक हो।

'हो सकता है कि उनका अतीत न हो,' धुआं उड़ाते हुए छत की ओर देख कर वो बोला। 'हो सकता है कि वो इस दुनिया या देश के इतिहास के बारे में कुछ नहीं जानते हों। हां। और उनके मुकाबले, मरियम किसी यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर मालूम पड़ेगी। हा! सच है। लेकिन अपने चारों तरफ़ देखो। क्या दिखता है? भ्रष्ट, लालची मुजाहिदीन कमांडर, हथियारों से लैस, हेरोईन से लदे हुए, एक दूसरे के ख़िलाफ़ जिहाद बोल रहे हैं और बीच में आए हर इन्सान को मार रहे हैं-यह क्या है। कंम से कम तालिबान गरीब हैं और वो भ्रष्ट नहीं हो सकते। कम से कम वो भले मुसलिम लड़के हैं। वल्लाह, जब वो आएंगे तो इस जगह को साफ़ कर के रख देंगे। वो अमन और इंतजाम लेकर आएंगे। तब दूध लाने जाते लोग गोलियों का शिकार होकर मरेंगे नहीं। तब और रॉकेट नहीं होंगे! सोचो।'

अब दो बरसों में तालिबान काबुल की राह बनाते रहे थे, उन्होंने मुजाहिदीनों से शहर ले लिए और जहां भी उनका कब्ज़ा हुआ, उन्होंने गुटों की आपसी लड़ाई को बंद करा दिया। उन्होंने हज़ारा कमांडर अब्दुल अली मजारी को पकड़ कर फांसी दे दी। महीनों से वो काबुल के बाहर दक्षिण में जमे हुए शहर पर गोलियां बरसाते रहे थे और अहमद शाह मसूद के साथ रॉकेटों की जंग लड़ते रहे थे। 1996 के उस सितंबर की शुरुआत में उन्होंने जलालाबाद और सरोबी शहरों पर कब्जा कर लिया था।

रशीद का कहना था कि तालिबानों में एक बात हैं जो मुजाहिदीनों में नहीं थी। वो एकजुट हैं।

'उन्हें आने दो,' उसने कहा। 'मैं, अकेला, उन पर गुलाब की पंखुड़ियों की बारिश करूंगा।'

हजारों दमकते आफ़ताब 271

उस दिन वो चारों अपनी नई दुनिया और नए रहनुमाओं का स्वागत करने के लिए बाहर गए। रशीद उन्हें एक बस से दूसरी बस में ले गया। मरियम ने रेखा कि हरेक तबाह मुहल्ले में लोग मलबों से निकल कर जमा हो रहे और सड़कों पर आ रहे हैं। उसने देखा कि एक बूढ़ी औरत अपने चेहरे पर लटकी हुई, दंतहीन मुस्कान लिए हुए मुट्ठी भर चावल रास्ते से गुज़र रहे लोगों पर उछाल रही है। एक गिरी हुई इमारत के पास दो लोग गले मिल रहे थे। उनके ऊपर आसमान में सीटियां बज रही थीं, लोग फुफकार कर बोल रहे थे और छतों पर बच्चों द्वारा छोड़े गए पटाखे फूट रहे थे। कैसेट डेकों में बज रहा कौमी गीत कारों की सीटियों से होड़ लगा रहा था।

'देखो, मायाम!' अज़ीज़ा ने जादेह मेवांड में दौड़ते बच्चों के एक झुंड की तरफ़ दिखाया। वो हवा में मुक्के मार रहे थे और धागों में बंझे जंग लगे लोहे के डिब्बे घसीट रहे थे। वो चिल्लाते हुए कह रहे थे कि मसूद और रब्बानी काबुल से दफा हो गए हैं।

हर जगह शोर थाः अल्लाह-ओ-अकबर!

मरियम ने जादेह मेवांड पर एक खिड़की से बिछाने वाली चादर को लटकते हुए देखा। उस पर किसी ने तीन बड़े, काले अक्षरों में पेंट कर रखा थाः जिंदाबाद तालिबान!

गलियों में चलते हुए मरियम ने यही बात कहते हुए और भी निशान देखें-खिड़कियों पर रंगे हुए, दरवाज़ों पर कीलों से ठोंके हुए, कार के एंटेना पर लगाए हुए।

मरियम ने अपनी जिंदगी के पहले तालिबान को उसी दिन, बाद में पश्तूनिस्तान चौक पर देखा। वो लैला, रशीद और अज़ीज़ा के साथ थी। लोगों की एक भीड़ वहां जमा हो गई थी। मरियम ने लोगों को अपनी गर्दनें तानते हुए देखा। लोग चौराहे के बीच में नीले फव्वारे के चारों ओर जमा थे और इसके सूखे तले पर चढ़े हुए थे। वो चौराहे के एक सिरे पर, पुराने खैबर रेस्टोरेंट के पास की एक झलक लेने की कोशिश कर रहे थे।

रशीद ने अपने कद का इस्तेमाल किया और तमाशबीनों को पीछे धकेलते हुए उन लोगों को उस जगह पर ले गया जहां कोई लाउडस्पीकर पर बोल रहा था।

272 खालिद हुसैनी

जब अजीजा ने देखा तो सिहर उठी और अपना चेहरा मरियम के बुर्के मैं गड़ा लिया।

प्लाउडस्पीकर पर आ रही आवाज एक दुबले, दाढ़ी वाले, नौजवान की थी, जिसने एक काली पगड़ी पहन रखी थी। वो एक जल्दी में बनाए गए मचाननुमा चीज पर खड़ा था। अपने खाली हाथ में उसने एक रॉकेट लॉचर पकड़ रखी थी। उसकी बगल में ट्रैफिक लाइट के खंभे में लटकती रस्सियों में खून से लथपथ दो लोग टंगे हुए थे। उनके कपड़े तार-तार हो गए थे। उनके सूजे हुए चेहरे जामुनी-नीले रंग के हो गए थे।

'मैं उसे जानती हूं,' मरियम ने कहा। 'बाईं तरफ़ वाले आदमी को।' मरियम के आगे की नौजवान औरत पीछे मुड़ी और बोली कि वो नजीबुल्ला था। दूसरा आदमी उसका भाई था, मरियम को नजीबुल्लाह का भरा हुआ, मूंछों वाला चेहरा याद आया, जो सोवियतों के ज़माने में बिलबोर्डों और दुकान की खिड़कियों पर चमकता रहता था।

बाद में उसे यह बात पता लगने वाली थी कि तालिबान नजीबुल्लाह को दारुलअमन पैलेस के करीब संयुक्त राष्ट्र की उसकी पनाहगाह से घसीट कर ले आए थे। उन्होंने उसे घंटों यातनाएं दी थीं, उसके पांवों को एक ट्रक से बांध कर उसकी बेजान देह को घंटों सड़कों पर घसीटते रहे थे।

'उसने अनेक, अनेक मुसलमानों का कत्ल किया था!' नौजवान तालिब लाउडस्पीकर पर चिल्ला रहा था। उसने पश्तो लहजे में फ़ारसी बोली और फिर पश्तो बोलने लगा। अपने हथियार से लाश की तरफ़ इशारा करते हुए उसने शब्द कहे। 'उसके जुर्मों के बारे में सब जानते हैं। वो एक कम्युनिस्ट था और एक काफिर था। बिना ईमान वाले जो लोग इस्लाम के ख़िलाफ़ जुर्म करते हैं उनके साथ हम यही करते हैं!'

रशीद खींसे निपोर रहा था।

मरियम की बांहों में अज़ीज़ा रोने लगी थी।

अगले दिन काबुल में ट्रक ही ट्रक भर गए। खैर खाना में, शारे-नौ में, कारतेह-परवान में, वज़ीर अकबर खान और तैमानी में लाल टोयोटा ट्रक सड़कों पर उड़ते फिर रहे थे। उनकी सीटों पर काली पगड़ी पहने दाढ़ियों वाले लोग बैठे रहते। हरेक ट्रक से एक लाउडस्पीकर शोर करता हुआ पहले फ़ारसी और

हजारों दमकते आफ़ताब 273

किन पक्षलो में ऐलान कर रहा था। यही पैगाम मस्जिदों के ऊपर लगे लाउडस्पीकरों और रेडियो पर भी बजाया जा रहा था, जिसे अब वॉयस ऑफ शरिया के नाम ले जाना जाने लगा था। सड़कों पर बिखेरे गए पर्चों में भी यही पैगाम लिखा हुआ था। ऐसा ही एक पर्चा मरियम को अपने आंगन में मिला।

हमारा वतन अब इस्लामिक अमीरात ऑफ अफ़ग़ानिस्तान के नाम से जाना जाएगा। ये वो कानून हैं, जिनको हम लागू करेंगे और आप उनका पालन करेंगेः

सभी नागरिक पांचों वक़्त की नमाजें पढ़ेंगे। अगर वह नमाज का वक़्त है और आप कुछ और करते हुए पकड़े गए तो आप पीटे जाएंगे।

तभी मर्द अपनी दाढ़ी बढ़ाएंगे। इसकी सही लंबाई कम से कम ठोढ़ी के नीचे बंधी हुई मुट्ठी भर है। अगर आप इसका पालन नहीं करते तो आप पोटे जाएंगे।

तभी लड़के पगड़ी पहनेंगे। पहले दर्जे से छठे दर्जे तक के लड़के काली पराडियां पहनेंगे, इससे ऊंचे दर्जे के लड़के सफ़ेद पहनेंगे।
सभी लड़के इस्लामी कपड़े पहनेंगे। कमीज़ के कॉलर बटनबंद होंगे।

गाने पर पाबंदी है।

नाचने पर पाबंदी है।

ताश खेलने, शतरंज खेलने, जुआ और पतंगबाज़ी पर पाबंदी है। किताबें लिखने, फ़िल्में देखने और तस्वीरें बनाने पर पाबंदी है।

अगर आप तोते रखते हैं तो आप पीटे जाएंगे। आपकी चिड़िया मार दी जाएगी।

अगर आप चोरी करते हैं तो आपके हाथ कलाई से काट दिए जाएंगे। अगर आप दोवारा चोरी करते हैं तो आपके पांवों को काट दिया जाएगा।

अगर आप मुसलमान नहीं हैं तो ऐसी जगह इबादत मत कीजिए, जहां आप मुसलमानों के द्वारा देखे जा सकतें हों। अगर आप ऐसा करते हैं तो

आप पीटे जाएंगे और कैद कर लिए जाएंगे। अगर आप किसी मुसलमान को अपने मजहब में लाने की कोशिश करते हुए पकड़े गए तो आपको मौत की सजा दी जाएगी।

औरतें ध्यान देंः

आप पूरे वक़्त घरों में ही रहेंगी। औरत के लिए विना मकसद सड़कों

274 ख़ालिद हुसैनी

पर घूमना गैर मुनासिब है। अगर आप घर से बाहर जाती हैं तो आपके साथ जरूर से जरूर एक महरम यानी आपका मर्द रिश्तेदार होना चाहिए। अगर आप सड़क पर अकेली पकड़ी गईं तो आपको पीटा जाएगा और घर भेज दिया जाएगा।

किसी भी हालत में आप अपना चेहरा खुला नहीं रखेंगी। जब बाहर निकलेंगी तो उसे बुर्के से ढंकेंगी। अगर आप ऐसा नहीं करतीं तो आपको बुरी तरह पीटा जाएगा।

कॉस्मेटिकों पर पाबंदी है।

गहनों पर पाबंदी है।

आप लुभावने कपड़े नहीं पहनेंगी।

जब आपसे बोला नहीं जाए, आप नहीं बोलेंगी।

आप मर्दों के साथ आंख नहीं मिलाएंगी।

जाएगा। आप सरेआम नहीं हंसेंगी। अगर आप ऐसा करती हैं तो आपको पीटा

आप नाखुन नहीं रंगेंगी। अगर आप रंगेंगी तो आप एक उंगली खो बैठेंगी।

लड़कियों के स्कूल जाने पर पाबंदी है। लड़कियों के सारे स्कूल फौरन बंद किए जाते हैं।

औरतों के काम करने पर पाबंदी है।

अगर आप व्यभिचार की कसूरवार पाई गईं तो आपको संगसार कर मार दिया जाएगा।

सुनिए। अच्छे से सुनिए। पालन कीजिए। अल्लाह-ओ-अकबर ।

रशीद ने रेडियो बंद कर दिया। वो बैठक के फर्श पर बैठे हुए रात का खाना खा रहे थे। नजीबुल्लाह की लाश को रस्सी से लटकते' देखे हुए उन्हें हफ़्ते भर से भी कम वक़्त गुज़रा था।

'वो ऐसा नहीं कर सकते कि आबादी का आधा हिस्सा घर पर बैठ जाए और कुछ नहीं करे,' लैला ने कहा।

'क्यों नहीं?' रशीद ने कहा। कम से कम इस बार मरियम उससे सहमत थी। रशीद ने उसके और लैला के साथ सचमुच में यही तो किया था, नहीं क्या? यकीनन लैला ने यह देखा था।

'ये कोई गांव नहीं है। ये काबुल है। औरतें यहां डॉक्टरी और वकालत

हजारों दमकते आफ़ताब 275

कर रही हैं। सरकारी दफ्तरों में वे अफसर हैं-'

रशीद ने दांत पीसे। 'शायरी पढ़ने वाले यूनिवर्सिटी के मर्द की मगरूर बेटी की तरह बोल ही दीं आख़िर तुम। कैसी भली, कैसी ताजिक हो तुम। तुम सोचती हो कि तालिबान कोई नया, अनोखा उसूल पेश कर रहे हैं? क्या तुम काबुल में अपने छोटे से कीमती खोल से बाहर रही हो मेरी गुल? कभी तुमने असली अफ़ग़ानिस्तान में जाने की ज़हमत उठाई है, दक्खिन में, पूरब में, पाकिस्तान से लगी कबीलाई सरहद के इलाके में? नहीं? मैं गया हूं। और मैं तुम्हें बता सकता हूं कि इस देश में अनेक ऐसी जगहें हैं जहां लोग पहले से ही इसी तरह जीते आए हैं या जो भी हो, करीब-करीब इसी तरह से। उस तरह से नहीं, जैसा तुम जानती हो।'

'मैं मानने से इन्कार करती हूं,' लैला ने कहा। 'वो संजीदा नहीं हैं।' 'तालिबान ने नजीबुल्लाह के साथ जो किया वो मुझे संजीदा लगा,' रशीद ने कहा। 'तुम यह मानोगी कि नहीं?'

'वो एक कम्युनिस्ट था! वो खुफिया पुलिस का मुखिया था।'

रशीद हंसा ।

उसकी हंसी में मरियम को जवाब सुनाई दियाः कि कम्युनिस्ट होने और खतरनाक खाद का रहनुमा होने से नजीबुल्लाह तालिबान की निगाहों में एक औरत से बस थोड़ा ही ज़्यादा घृणित था।

अड़तीस

लैला

तालिबान ने कारनामे शुरू हुए तो लैला को इस बात पर खुशी हुई कि बाबी इसके गवाह बनने के लिए मौजूद नहीं थे। इससे वो टूट कर रह जाते।

फावड़े लिए हुए लोग काबुल म्यूज़ियम में घुस आए और मुजाहिदीनों द्वारा लूटे जाने से बची रहीं, इस्लाम से पहले की मूर्तियों को चूर-चूर कर दिया। यूनिवर्सिटी को बंद करके इसमें पढ़नेवालों को घर भेज दिया गया। पेंटिंगों को दीवारों से उखाड़ दिया गया और ब्लेड से उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। टीवी के पर्दे लात मार कर तोड़ डाले गए। कुरान छोड़ कर सारी किताबों के ढेर लगा कर जला दिए गए। उनको बेचने वाली दुकानें बंद करा दी गईं। खलीली, पजवाक, अंसारी, हाजी दहक़ान, अशराकी, बेताब, हाफिज, जामी, निज़ामी, रूमी, खय्याम, बेदिल और दूसरे बहुत सारे धुएं की नज़र चढ़ गए।

लैला ने लोगों के नमाज़ छोड़ने के इल्ज़ाम में सड़कों से घसीट कर मस्जिदों में धकेले जाने के बारे में सुना। उसने जाना कि चिकन स्ट्रीट के करीब मार्को पोलो रेस्टोरेंट को एक पूछताछ केंद्र में बदल दिया गया है। कभी कभी इसकी काले रंग में रंगी खिड़कियों के पीछे से चीखें सुनाई पड़ती हैं। हर कहीं टोयोटा ट्रकों पर दाढ़ी गश्ती दल क्लीन शेव चेहरों को लहूलुहान करने की ताक में घूमता रहता ।

उन्होंने सिनेमा घरों को भी बंद करा दिया। सिनेमा पार्क। आरियाना। अर्युब । प्रोजेक्शन रूमों को लूट लिया गया और फ़िल्म रीलों में आग लगा

हजारों दमकले आफ़ताब 277

दी गई। लैला को वो वक़्त याद आया जब वो और तारिक उन थिएटरों में बैठ कर हिंदी फ़िल्में देखते थे, वो सारी अतिनाटकीय कहानियां याद आईं जिनमें प्रेमी नसीब के किसी त्रासद मोड़ पर बिछड़ जाते थे, कोई किसी दूर दराज के इलाके में भटकता फिरता, तो दूसरे को शादी करने पर मजबूर कर दिया जाता और वो रोते हुए गेंदे के खेतों में गीत गाता, मिलन के लिए तरसता । उसे याद आता कि किस तरह उन फ़िल्मों पर उसे रोते देख तारिक़ हंसता था।

'मुझे जानने का मन करता है कि उन्होंने मेरे अव्या के सिनेमा घर के साथ क्या किया,' मरियम ने एक दिन उससे कहा। 'क्या वो अव भी है। या क्या वो अब भी उनके पास है।'

काबुल की पुरानी संगीत बस्ती ख़राबात को चुप करा दिया गया। संगीतकारों को पीटा गया और जेल में डाल दिया गया। उनके रुवाय, तंबूरा और हारमोनियम को तोड़ डाला गया। तालिवान तारिन के सबसे पसंदीदा संगीतकार अहमद जाहिर की कब्र पर गए और उसमें गोलियां दागीं।

'उन्हें मरे हुए करीब बीस बरस हो चुके हैं,' लैला ने मरियम से कहा । 'मर जाना ही काफ़ी नहीं है?'

रशीद को तालिबान से बहुत परेशानी नहीं थी। उसे वस दाढ़ी ही तो बढ़ानी थी, जो उसने बढ़ा ली थी और मस्जिद जाना था। वो यह भी करने लगा था। रशीद ऐसी रहमदिली और नासमझी से पैदा हुए लगाव के साथ तालिबान का आदर करता जैसे कोई अपने चंचल स्वभाव के रिश्ते के भाई का आदर करता हो, जिसका रुझान चुहल और बदनामी पैदा करने वाले अप्रत्याशित कारनामे करने का हो।

हंग्क बुधवार की रात को रशीद वॉयस ऑफ शरिया सुनता जब तालिबान मज़ा देने के लिए चुने गए लोगों के नामों का ऐलान किया करते थे। इसके बाद जुम को यो गाज़ी स्टेडियम जाता, पेप्सी खरीदता और फिर पूरा तमाशा देखता। विस्तर में वो लैला को एक बीमार खुशी के साथ पूरा ब्योरा सुनाता कि उसने कैसे कटे हुए हाथ, कोड़े, लोगों को लटकाए जाते और सिर कलम किए जाते देखा।

'आज मैंने एक आदमी को देखा जिसने अपने भाई के कातिल का गला

278 ख़ालिद हुसैनी

रेता,' एक रात उसने धुआं उड़ाते हुए कहा।

'वो जंगली हैं,' लैला ने कहा।

'तुम सोचती हो?' उसने कहा। 'किनके मुकाबले में? सोवियतों ने दसियों लाख लोगों को मारा। तुम्हें पता है कि इन चार बरसों में मुजाहिदीनों ने अकेले काबुल में कितने लोगों को मारा है? पचास हजार लोगों को। पचास हजार लोग! इसके मुकाबले कुछ चोरों का हाथ काट दिया जाना क्या इतनी ज़्यादा असंवेदनशीलता है? आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत। यह कुरान में है। इसके अलावा मुझे एक बात बताओ। अगर कोई अज़ीज़ा का कत्ल कर दे, तो क्या तुम उसका बदला नहीं लेना चाहोगी?'

लैला ने उसे नफ़रत से देखा।

'मैं बस एक बात कह रहा था,' उसने कहा।

'तुम भी बस उन्हीं के जैसे हो।'

'अज़ीज़ा की आंखों का रंग दिलचस्प है। तुम्हें नहीं लगता? न तुम्हारी आआंखें वैसी हैं न मेरी।'

रशीद ने उसके चेहरे के रूबरू आने के लिए करवट ली, अपनी तर्जनी उंगली के टेढ़े नाखुन से उसकी जांघों को हल्के से खरोंचा।

'मुझे समझाने दो,' उसने कहा। 'अगर मुझे सूझे-मैं नहीं कह रहा है सूझेगा, लेकिन सूझ सकता है-ऐसा हो सकता है-तो अज़ीज़ा को अपने से दूर कर देना मेरे अधिकार में होगा। तुम्हें यह कैसा लगेगा? या मैं एक दिन तालिबान के पास जाऊंगा, बस जाऊँगा और तुम्हारे बारे में अपने संदेहों को बता दूंगा। बस इतना ही करना होगा। तुम्हें क्या लगता है कि वो किसकी बातों पर भरोसा करेंगे? तुम्हें क्या लगता है कि वो तुम्हारा क्या करेंगे?'

लैला ने अपनी जांघ उसके पास से हटा ली।

'वो मैं नहीं करूंगा,' रशीद ने कहा। 'मैं नहीं करूंगा। ना। शायद नहीं। तुम मुझे जानती हो।'

'तुम नीच हो,' लैला ने कहा।

'यह एक बड़ी बात है,' रशीद ने कहा। 'तुम्हारी यह बात मुझे हमेशा नापसंद रही है। यहां तक कि तुम जब छोटी थीं, जब तुम उस लंगड़े के साथ दौड़ती फिरती थीं, तो तुम्हें लगता था कि तुम अपनी किताबों और शायरी के साथ बहुत होशियार हो। तुम्हारी वो सारी समझदारी अब तुम्हारा क्या भला

हजारों दमकते आफ़ताब 279

कर रही है? तुम्हें सड़कों से दूर कौन रख रहा है, तुम्हारी समझदारी या मैं? मैं नीच हूं? मेरे जैसा शौहर पाने के लिए इस शहर की आधी औरतें जान ले लेंगी। वो इसके लिए जान ले लेंगी।'

वो वापस लेट गया और छत की तरफ़ धुआं उड़ाने लगा। 'तुम्हें बड़ी बातें पसंद हैं? मैं भी एक बात कहूंगाः नजरिया। मैं यहां यही कर रहा हूं लैला। मैं यह पक्का कर रहा हूं कि तुम अपना नज़रिया न खो बैठो ।'

लैला का पेट रात भर रशीद की उन बातों पर ऐंठता रहा जो उसने कही थीं, उसकी हर आख़िरी बात सही थी।

लेकिन सवेरे और आनेवाली अनेक सुबहों में उसके पेट की वो मतली बनी रही और फिर उससे भी बदतर हो गई। वो जाने-पहचाने डर जैसी किसी चीज़ में बदल गई।

एक सर्द, लंबी दोपहर के बाद लैला सोने के कमरे के फर्श पर लेटी हुई थी। मरियम अपने कमरे में अज़ीज़ा के साथ सो रही थी।

लैला के हाथों में लोहे का एक तार था, जिसे उसने एक बेकार साइकिल के पहिए से प्लायर के सहारे निकाला था। यह उसे उसी गली में मिला था, जिसमें बरसों पहले उसने तारिक़ को चूमा था। देर तक लैला फर्श पर पड़ी अपने दांतों के बीच से सांस लेती रही। अपने पांव उसने फैला रखे थे।

वो अज़ीज़ा को उसी पल से प्यार्र करती आई थी, जब वो उसके वजूद से वाकिफ हुई थी। ऐसा कोई आत्म-संदेह या ऐसी गैर यकीनी नहीं थी। लैला अब सोच रही थी कि एक मां के लिए इसका डर कितनी भयावह बात है कि वो अपने खुद के बच्चे को प्यार नहीं कर सकेगी। कैसी अस्वाभाविक बात है। और तब भी फर्श पर पड़े-पड़े, तार संभालने के लिए पसीने में

डूबे हाथ को संतुलित किए हुए, उसे जानने का मन कर रहा था कि क्या वो असल में रशीद के बच्चे को प्यार कर पाती, जैसा उसने तारिक़ के बच्चे को किया था।

आखिर में लैला यह नहीं कर सकी।

खून वहने से मर जाने का डर नहीं था, जिसने उससे तार को रखवाया, न ही इस ख्याल ने कि यह काम निंदनीय है जिसके बारे में उसे संदेह था।

280 ख़ालिद हुसैनी

लैला ने तार को रखा क्योंकि वो उस बात को कबूल नहीं कर सकती थी जिसे मुजाहिदीन बेधड़क करते थेः कि जंग में कभी कभी बेगुनाह जानें भी लेनी पड़ती हैं। उसकी जंग रशीद के साथ थी। बच्ची का कोई कुसूर नहीं था। और फिर पहले ही इतनी जानें जा चुकी थीं। लैला ने दुश्मनों की दोतरफा गोलीबारी में बेगुनाहों की काफ़ी हत्याएं देखी थीं।

उनतालीस

मरियम

सितंबर, 1996

'इस अस्पताल में अब औरतों का इलाज नहीं होता,' गार्ड चिल्लाते हुए बोला। वो सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर खड़ा था और मलालाई अस्पताल के सामने जमा हो आई भीड़ की तरफ़ सर्द निगाहों से देख रहा था।

भीड़ में से लंबी आह निकली।

'लेकिन यह औरतों का अस्पताल है!' मरियम के पीछे से एक औरत चिल्लाई।
इसकी हिमायत में कई और आवाजें उठीं।

मरियम ने अज़ीज़ा को एक हाथ से दूसरे हाथ में लिया। अपने खाली हाथ से उसने लैला को सहारा दिया, जो कराह रही थी और जिसने अपनी बांह रशीद की गर्दन में लपेट रखी थी।

'अब नहीं,' तालिब ने कहा।

'मेरी बीवी को बच्चा होने वाला है!' एक गठीला आदमी चिल्लाया। 'आप क्या उसे यहां सड़क पर बच्चा पैदा करने देंगे बिरादर?'

मरियम ने उस साल जनवरी में ऐलान सुना था कि मर्द और औरतों का इलाज अलग-अलग अस्पतालों में होगा, कि काबुल अस्पताल के स्टाफ की सारी औरतों को निकाल कर एक सेंट्रल फैसिलिटी में काम करने भेज दिया गया था। किसी ने इस पर यकीन नहीं किया था और तालिबान ने इस नीति का पालन नहीं किया था। अब तक नहीं किया था।

'अली अब्बासी अस्पताल में?' एक दूसरा आदमी चिल्लाया।

282 ख़ालिद हुसैनी

गार्ड ने सिर झटका।

'वजीर अकबर खान?'

'सिर्फ़ मर्द,' उसने कहा।

'हम फिर क्या करें?'

'राबिया बाल्खी में जाइए,' गार्ड ने कहा।

एक नौजवान औरत धक्के देते हुए आगे आई और बोली कि वो वहां गई थी।
उसने बताया कि वहां न साफ़ पानी है, न ऑक्सीजन, न दवाएं, न बिजली।
'वहां तो कुछ भी नहीं है।'

'आपको वहीं जाना होगा,' गार्ड ने कहा।

आहों और चीखों, एकाध गालियों की आवाजें भी आईं। किसी ने एक पत्थर फेंका।

तालिब ने अपनी कलाश्निकोव उठाई और हवा में कई राउंड फायर किए।
उसके पीछे के दूसरे तालिब ने एक कोड़ा फटकारा।

भीड़ फौरन ही तितर-बितर हो गई।

राविया वाल्खी का प्रतीक्षा कक्ष बुर्के वाली औरतों और बच्चों से भरा हुआ था। हवा में पसीने और बिना नहाई हुई देहों, पांवों, पेशाब, सिगरेट के धुएं और एंटीसेप्टिक दवाओं की गंध थी। छत में लगे स्थिर पंखे के नीचे बच्चे एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे और झपकी ले रहे अव्याओं के पसरे हुए पांवों को फांद रहे थे।

मरियम ने लैला को एक दीवार के सहारे बैठने में मदद की। दीवार से प्लास्टर झड़ने से देशों के नक्शों जैसी शक्लें बनी हुई थी। लैला आगे-पीछे हिल रही थी और उसने हाथों से पेट दबा रखा था।

'मैं तुम्हें देखती रहूंगी, लैला जो। वादा करती हूं।'

'जल्दी करो,' रशीद ने कहा।

रजिस्ट्रेशन की खिड़की के आगे औरतों का एक झुंड था। वो एक दूसरे को धक्के दे रही थीं। कुछ ने अपने बच्चे तक पकड़ रखे थे। कुछ भीड़ से अलग होकर तेजी से डबल डोर की तरफ़ बढ़ीं, जहां इलाज वाले कमरे थे। एक हथियारबंद तालिब ने उनका रास्ता रोक कर उन्हें वापस भेज दिया।

हजारों दमकते आफ़ताब 283

मरियम मजबूती से जुट पड़ी। उसने एड़ियां टिका दीं और अजनबी कोहनियों, कूल्हों, कंधों के बीच से राह बनाने लगी। किसी ने उसकी पसलियों में अपनी कोहनी गड़ाई और उसने भी पलट कर कोहनी मारी। उसके चेहरे को एक बेताब हाथ ने पकड़ना चाहा। उसने उसे झटक दिया। वो जोर लगा कर आगे बढ़ने के लिए गर्दनों पर, हाथों और कोहनियों पर, बालों पर पंजे मार रही थी और जब पास की एक औरत ने फुफकारा तो पलट कर उसने भी फुफकार भरी।

मरियम ने अब जाकर देखा था कि एक मां को किन चीजों की कुर्बानियां देनी होती हैं। शराफत उसमें सबसे पहली होती है। उसने अफसोस के साथ नाना के बारे में सोचा, उनके द्वारा दी गई कुर्बानियों के बारे में सोचा। नाना उसे छोड़ देतीं, या कहीं गड्ढे में फेंक कर भाग जातीं। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया था। नाना ने एक हरामी को लिए फिरने की शर्म को बर्दाश्त किया था, और मरियम को बड़ा और अपनी तरह से उसे प्यार करने के नाशुक्रगुजार काम के आसपास अपनी जिंदगी लगा दी थी। और आखिर में मरियम ने उनकी बजाए जलील को चुना। इस ढीठ धुन के साथ भीड़ में अपनी राह बनाने के लिए जद्दोजहद करते हुए मरियम

ने चाहा कि वो नाना की एक बेहतर बेटी हुई रहती। उसने चाहा कि वो तब मातृत्व के बारे में वो बात समझ गई होती जिसे वो अब समझ रही है।

उसने पाया कि वो एक नर्स के सामने खड़ी है, जो एक गंदे, स्याह बुर्के से एड़ी से चोटी तक ढंकी हुई थी। नर्स एक नौजवान औरत से बात कर रही थी, जिसके बुर्के का सिर का हिस्सा जमे हुए खून में सना हुआ था।

ने कहा। 'मेरी बेटी का पानी बह गया है और बच्चा नहीं निकला है,' मरियम

'मैं इनसे बात कर रही हूं' खून में सनी नौजवान औरत चिल्लाई। 'अपनी बारी का इंतजार कीजिए।'

उनकी पूरी भीड़ उनकी अगल-बगल डोल रहा था, कोल्बा के चारों ओर की लंबी घास की तरह, जो सपाट जगह में हवा बहने पर डोला करती थी। मरियम के पीछे एक औरत चिल्ला रही थी कि उसकी बेटी ने पेड़ से गिर कर कोहनी तोड़ ली है। एक दूसरी औरत चिल्ला रही थी कि उसे खून के पाखाने हो रहे हैं।

284 ख़ालिद हुसैनी

'क्या उसे बुखार है?' नर्स ने पूछा। मरियम को यह समझने में एक पल का वक़्त लगा कि उसी से बात की जा रही है।

'नहीं,' मरियम ने कहा।

'खून बह रहा है?'

'नहीं।'

'कहां है वो?'

मरियम ने बुर्के से ढंके हुए सिरों के ऊपर उस तरफ़ दिखाया जहां लैला रशीद के साथ बैठी हुई थी।

'हम उसके पास आएंगे,' नर्स ने कहा।

'कितनी देर में?' मरियम चिल्लाई। किसी ने उसके कंधे पकड़ रखे थे और पीछे घसीट रहा था।

'मुझे पता नहीं,' नर्स ने कहा। उसने कहा कि सिर्फ दो ही डॉक्टर थीं और दोनों इस वक़्त ऑपरेशन कर रही थीं।

'उसे दर्द हो रहा है,' मरियम ने कहा।

'मुझे भी!' वो औरत चिल्लाई जिसकी खोपड़ी पर खून लगा हुआ था। 'अपनी बारी का इंतज़ार करो!'

मरियम को पीछे घसीटा जा रहा था। अब कुछ कंधों और सिरों के पीछे कं हिस्सों ने नर्स को उसकी नज़रों से ओझल कर दिया था। उसे एक बच्चे की दूध मिली डकार की गंध आई।

'उसे टहलाने ले जाइए,' नर्स चिल्लाई। 'और इंतज़ार कीजिए।'

बाहर अंधेरा हो चुका था, तब आख़िरकार नर्स ने उनको भीतर बुलाया। डिलीवरी रूम में आठ बिस्तर थे, जिन पर औरतें कराह और ऐंठ रही थीं। उनकी देखभाल पूरी तरह ढंकी हुई नर्से कर रही थीं। बिस्तरों के बीच में कोई पर्दा नहीं था। लेला को एक दूर के कोने का बिस्तर दिया गया। यह एक खिड़की के नीचे था, जिसे किसी ने काले रंग में रंग दिया था। पास ही में एक चटका और सूखा हुआ सिंक था, जिसके ऊपर बंधे तार में सर्जिकल दस्ताने लटके हुए थे। कमरे के वीच में मरियम ने एक अल्युमीनियम की टेबल देखी। इसके सबसे ऊपर के खाने में कालिख के रंग का एक कंबल पड़ा हुआ था। नीचे का खाना

हजारों दमकते आफ़ताब 285

खाली था।

एक औरत ने मरियम को ये देखते हुए देखा।

'वो जिंदा बच्चों को ऊपर वाले खाने में रखते हैं,' उसने थकी हुई आवाज़ में कहा।

छोटे कद की, गहरे नीले रंग के बुर्के वाली डॉक्टर चिड़ियों जैसी एक फुर्तीली औरत थी। जो कुछ भी वो बोल रही थी, वो बेसब्री से भरा हुआ और बेहद महत्वपूर्ण लग रहा था।

'पहला बच्चा।' उसने यह बात ऐसे कही मानो यह सवाल नहीं बल्कि एक बयान हो।

'दूसरा,' मरियम ने कहा।

'लैला चीखते हुए करवट हो कर लेट गई। उसकी उंगलियों ने मरियम की उंगलियां पकड़ रखी थीं।

'पहली डिलीवरी में. कोई मुश्किल?'

'नहीं।'

'आप अम्मी हैं?'

'हां,' मरियम ने कहा।

डॉक्टर ने अपने बुर्के के नीचे के आधे हिस्से को उठाया और धातु के एक शंकु जैसा आला निकाला। उसने लैला का बुर्का उठाया और आले के चौड़े हिस्से को उसके पेट से लगाया। दूसरे पतले सिरे से अपना कान सटाया। उसने लगभग एक मिनट सुना, जगहें बदलीं, फिर से सुना, फिर से जगहें बदलीं।

'मैं अब बच्चे को महसूस कर सकती हूं, हमशीरा ।'

उसने सिंक के ऊपर क्लिप में टंगे दस्ताने पहने। फिर उसने एक हाथ से लैला का पेट दबाया और दूसरा भीतर डाल दिया। लैला ठुनठुनाई। जब डॉक्टर ने काम पूरा कर लिया तो उसने दस्ताना नर्स को थमा दिया जिसने उसे धो कर फिर से तार पर लटका दिया।

'आपकी बेटी को सीजेरियन की जरूरत है। आपको पता है कि ये क्या होता है? हमें उनका पेट खोल कर बच्चा निकालना होगा, क्योंकि उसके पैर आगे हैं।'

'मैं समझ नहीं पाई।'

डॉक्टर ने बताया कि बच्चे की पोजीशन ऐसी है कि वो खुद से बाहर

नाहीं निकल सकता है। 'और मतानि समय गुजर गया है। वहीं अभी ऑपरेटिंग रूम में आना जरूरी है।

हीला ने मुंह बनाते हुए सिर हिला कर साष्गति दी और अपना सिर एक तरफ लटका दिया।

'मुझे आपको कुछ बताना है,' डॉक्टर ने काप। यो मरियम के करीब आ गई, सुकी और धीमी आवाज में, खुफिया लहजे में बोली। अब उसकी आवाज में शर्मिंदगी की झलक थी।

'वो क्या कार रारी हैं?' लैला ने आह भरी। 'क्या बच्चे को कुछ हुआ

'लेकिन वो इसे कैसे बर्दाश्त करेगी?' मरियम ने कहा।

डॉक्टर ने इस सवाल में छुपे इल्जाम को भी सुन लिया होगा, क्योंकि उसका लहजा बचाव का हो गया था।

'आप सोचती हैं कि मैं ऐसा चाहती हूं?' उसने कहा। 'आप क्या चाहती हैं कि में क्या करूं? मुझे जिसकी जरूरत है, वो मुझे देंगे नहीं। मेरे पास एक्स-रे नाहीं है, न खींच कर निकालने का आला है, न ऑक्सीजन है, यहां तक कि मामूली एंटीबायोटिक्स तक नहीं हैं। जब एनजीओ पैसे की पेशकश करते हैं तो तालिबान उन्हें ठुकरा देते हैं। या फिर पैसे को उन जगहों पर भेज देते हैं जहां मदों का इलाज होता है।'

'लेकिन, डॉक्टर साहिब, क्या ऐसा कुछ नहीं है, जिसे आप उसे दे सकें?' मरियम ने पूछा।

'क्या चल रहा है?' लेला कराह उठी।

'आप खुद से दवा खरीद सकती हैं, लेकिन-'

'नाम लिखिए,' मरियम ने कहा। 'आप नाम लिखिए और मैं ले आती हूं।'

बुर्के के नीचे डॉक्टर ने रुखाई से सिर हिलाया। 'वक़्त नहीं है,' उसने कहा। 'अव्वल तो आस पास की किसी दवा की दुकान में यह नहीं है। इसलिए आपको ट्रफिक में रास्ता बनाते हुए एक जगह से दूसरी जगह भागना पड़ेगा, शायद शहर भर में घूमना पड़े और तव भी इसकी गुंजाइश बहुत कम है कि यह आपको मिल जाएगी। अभी ही साढ़े आठ बज चुके हैं,

इसकिए शायद आप कर्पयू तोड़ने के इल्जाम में गिरफ्तार ही कर ली जाएं। तब भी, अगर आपको दवा मिल जाए तो इसकी गुंजाइश भी हि आप उसकी कीमत न चुका

हजारों दमकते आफ़ताब 287

पाएं। या आपको किसी दूसरे जरूरतमंद से मुकाबला करते हुए बोली लगानी पड़े। वक़्त नहीं है। इस बच्चे को अभी निकालना जरूरी है।'

'मुझे बताइए कि क्या हो रहा है।' लैला ने कहा। वो कोहनियों के बल उठ गई थी।

डॉक्टर ने सांस ली और फिर लैला को बताया कि अस्पताल में एनेस्थेटिक यानी बेहोश करने की दवा नहीं थी।

'लेकिन अगर हम देरी करेंगे तो आप बच्चे को खो देंगी।'

'तब मुझे चीर डालिए,' लैला ने कहा। वो बिस्तर पर गिर पड़ी और अपने घुटने उठा लिए। 'मुझे चीर डालिए और मुझे मेरा बच्चा दे दीजिए।'

पुराने, गंदे ऑपरेटिंग रूम के भीतर लैला एक स्ट्रेचर पर लेटी। डॉक्टर बेसिन में अपने हाथ रगड़-रगड़ कर धो रही था। लैला कांप रही थी। हर बार जब नर्स एक पीले-भूरे लिक्विड में तर कपड़ा उसके पेट पर फिराती, लैला अपने दांतों के बीच से हवा खींचती। एक दूसरी नर्स दरवाजे पर खड़ी थी। उसने चरमराता हुआ दरवाज़ा खोल रखा था, ताकि बाहर झांक सके।

डॉक्टर ने अब अपना बुर्का उतार दिया था और मरियम ने देखा कि उसकी रुपहले बालों की चोटी थी। उसकी आंखों के पपोटे भारी थे और उसके मुंह के किनारों पर थकान से छोटी थैलियां बन गई थीं।

'वो चाहते हैं कि हम बुर्के में ही ऑपरेशन करें,' डॉक्टर ने अपने सिर से दरवाज़े वाली नर्स को इशारा करते हुए कहा। 'वो नज़र रखती है। वो उनको आते हुए देखती है, तो मैं ढंक लेती हूं।'

उसने यह बात इतनी गुस्ताखी और लगभग बेरुखी से कही कि मरियम समझ गई कि इस औरत ने नाराजगी को बहुत पीछे छोड़ दिया है। उसने सोचा कि यहां एक ऐसी औरत है, जो यह समझती है कि वो खुशकिस्मत है कि वो काम

कर रही है, कि हमेशा ऐसी चीज थी, कोई ऐसी चीज, जिसे वो उससे छीन सकते थे।

लैला के कंधों के दोनों तरफ़ खड़े, लोहे के सरिए थे। जिस नर्स ने लैला का पेट साफ़ किया था, उसने क्लिपों के जरिए उन पर चादर टांग दी। अब लैला और डॉक्टर के बीच एक पर्दा बन गया था।

288 ख़ालिद हुसैनी

मरियम ने लैला के सिर के ठीक पीछे जगह बनाई और अपना चेहरा इतना झुकाया कि उनके गाल छूने लगे। वो लैला के दांतों की कटकटाहट महसूस कर सकती थी। उनके हाथ एक दूसरे में गुंथे हुए थे।

पर्दे पर मरियम ने डॉक्टर की परछाई को लैला की वाई तरफ़ और नर्स की परछाईं को दाहिनी तरफ़ जाते देखा। लेला के होंठ पूरे खिंच गए थे। उसके भिंचे हुए दांतों की सतह पर लार के बुलबुले वन और फूट रहे थे। वो जल्दी-जल्दी फुफकारती हुई आवाजें निकाल रही थी।

डॉक्टर ने कहा, 'दिल कड़ा रखें छोटी बहन ।' वो लैला के ऊपर झुक गई।

लैला की आंखें झटके से खुल गई। इसके बाद उसका मुंह खुला। वो ऐसी बनी रही, ऐसी, ऐसी, कांपती हुई, उसके गले की नसें तनी हुई, चेहरे पर पसीना बहता हुआ, उसकी उंगलियां मरियम की उंगलियों को कसती हुई।

उसके चीख उठने के पहले जितना वक़्त गुजरा था, मरियम उसके लिए हमेशा लैला की तारीफ करने वाली थी।

चालीस

लैला

पतझड़, 1999

गड्डा खोदने का इरादा मरियम का था। एक सुबह उसने औजार रखने वाले छप्पर के पीछे मिट्टी के एक टुकड़े की तरफ़ इशारा किया। 'हम वहां खोद सकते हैं,' उसने कहा। 'वो अच्छी जगह है।'

उन्होंने बारी बारी से जमीन पर फावड़ा चलाया और फिर मिट्टी निकाल कर बगल में रखी। उन्होंने एक बड़े या गहरे गड्ढे का मंसूबा नहीं बनाया या, इसलिए खोदने का काम उतना मुश्किल नहीं होना चाहिए था, जितना यह हो गया। यह सूखा था, जो 1998 में शुरू हुआ था और अब यह दूसरा साल था, जिसने हर जगह तबाही लाई हुई थी। पिछली सर्दियों में मुश्किल से ही बर्फ पड़ी थी और बसंत में तो विल्कुल ही बारिश नहीं हुई थी। पूरे देश में किसान सूखी हुई जमीन छोड़ रहे थे, अपना सामान बेच रहे थे, और पानी की तलाश में गांव दर गांव भटक रहे थे। वो पाकिस्तान या ईरान जा रहे थे। वो काबुल में बस रहे थे। लेकिन शहर में भी पानी की सतह नीची थी और उथले कुएं सूख गए थे। गहरे कुओं पर कतारें इतनी लंबी होती थीं कि लैला और मरियम को अपनी बारी के इंतजार में घंटों लग जाते। काबुल नदी बसंत की सालाना बाढ़ के बिना सूख गई थी। अब यह एक आम शौचालय थी, जिसमें और कुछ नहीं बस मैला और मलबा भरा था।

:

इसलिए वो फावड़ा उठा कर चोट करती रहीं लेकिन धूप में जली हुई जमीन चट्टान की तरह सख़्त हो गई थी। अड़ियल मिट्टी कठोर थी और लगभग

290 ख़ालिद हुसैनी

पथरा गई थी।

मरियम अब चालीस की थी। चेहरे के ऊपर लपेटे हुए उसके बालों में कुछ स्याह लटें भी थीं। उसकी आंखों के नीचे वादामी मांस चांद की शक्ल में थैलियों की तरह लटक गया था। उसने आगे के दो दांत खो दिए थे। एक गिर गया था और दूसरा रशीद ने तोड़ दिया था, जब उससे अनजाने में जल्मै गिर गया था। खुली धूप में पूरे वक़्त आंगन में बैठे रहने से उसकी त्वचा रूखी और गहरे रंग की हो गई थी। वो बैठीं जल्मै को अजीजा का पीछा करते हुए देखतीं।

जब काम पूरा हुआ, जब गड्डा खोद लिया गया, तो वो इसके ऊपर खड़ी हुई और नीचे देखा।

'इसे काम करना चाहिए,' मरियम ने कहा।

जल्मै अब दो बरस का था। वो घुंघराले बालों वाला एक गुदगुदा लड़का था। उसकी छोटी, भूरी आंखें थीं और चाहे कोई भी मौसम रहे, उसके

गालों पर रशीद की तरह ही एक गुलाबी धब्बा मौजूद रहता था। उसके बाल भी अपने अब्बा की ही तरह थे-मोटे और आधे चांद की शक्ल में जो नीचे उसकी ललाट तक बिखरे रहते।

जब लैला उसके साथ अकेली होती तो जल्मै एक मीठा, हंसमुख और खेलता हुआ बच्चा हुआ करता। वो लैला के कंधों पर चढ़ना पसंद करता, उसके और अजीजा के साथ आंगन में छुपम-छुपाई खेलना पसंद करता। कभी कभी शांत पलों में वो लैला की गोद में बैठ कर उसे गाने को कहता। उसका पसंदीदा गीत था 'मुल्ला मोहम्मद जान।' जब वो उसके घुंघराले बालों में गाती तो वो अपने मोटे पांव लय में हिलाता और उसके साथ सुर मिलाता। अपनी बेसुरी आवाज़ में वो जो गा सकता, गाताः

आइए और हमें मज़ार तक ले चलिए, मुल्ला मोहम्मद जान, ट्यूलिप के खेतों के देखने के लिए, ओ प्यारे साथी

लैला को जल्मै के गीले चुंबन अच्छे लगते, जिन्हें वो उसके गालों पर चस्पां कर देता। वो उसकी गड्ढे पड़ती कोहनियों और मोटे, नन्हें पैरों के पंजों को प्यार करती। लैला को उसे गुदगुदाना अच्छा लगता, उसको रेंग कर चलने

हजारों दमकते आफ़ताब 291

के लिए कुशनों और तकियों की सुरंग बनाना अच्छा लगता, उसे अपने हाथों में सोते हुए देखना अच्छा लगता, वो हमेशा अपने एक हाथ से उसका कान पकड़ कर सोता। उस दोपहर के बारे में सोचते हुए उसका पेट मरोड़ उठता, जब वो अपने पांवों के बीच में साइकिल के पहिए के तार के साथ वो फर्श पर लेटी हुई थी। यो तब उसके कितने करीब थी। अब तो वो यह सोच भी नहीं सकती थी कि उसने कभी ऐसे ख्याल पर गौर भी किया था। उसका बेटा एक सौगात था और लैला को यह जान कर सुकून मिला था कि उसका डर बेबुनियाद था। कि वो जल्मै को अपने दिल की गहराइयों से प्यार करती थी, जैसे कि वो अजीजा को करती थी।

लेकिन जल्मै अपने अब्बा का अंधभक्त था और चूंकि वो ऐसा था, इसलिए जब भी उसके अब्बा उस पर दुलार बरसाने के लिए आसपास होते तो वो बदल जाता। तब जल्मै एक विद्रोही खिलखिलाहट या एक गुस्ताख हंसी के साथ फुर्तीला बन जाता। अपने अब्बा की मौजूदगी में वो आसानी से हमलावर बन जाता। झगड़ता। लैला के डांटने पर भी बदमाशियां करता, जो वो रशीद नहीं रहने पर कभी नहीं करता।

रशीद इन सबको पसंद करता। 'यह होशियारी की निशानी है,' वो कहता। वो रशीद की लापरवाहियों के बारे में भी यही कहता जब वो गोलियां निकाल कर थूकता, जब वो माचिस जलाता, जब वो रशीद के सिगरेट चबाता ।

जब जलील पैदा हुआ था तो रशीद ने उन्हें वह पलंग दे दी थी, जिस पर वो लैला के साथ सोता था। वो उसके लिए एक नया पालना खरीद लाया था, जिसकी बग़लों की तख्तियों पर शेर और दुबके हुए तेंदुए पेंट किए हुए थे। उसने नए कपड़ों, नए झुनझुनों, नई बोतलों, नए डाइपरों पर पैसे खर्च किए, यहां तक कि वो इतना खर्च नहीं उठा सकते थे और अजीजा का पुराना सामान अब भी इस्तेमाल में लाया जा सकता था। एक दिन वो बैटरी से चलने वाले मोबाइल के साथ घर लौटा, जिसे उसने जल्मै के पालने में टांग दिया। नन्हें पीले-काले भरि एक सूरजमुखी पर टंगे हुए थे और दबाने पर वो सिकुड़ जाते और आवाजें निकालते। उसे पलटने पर उसमें से एक धुन बजती।

'मैंने सोचा कि तुमने बताया था कि कारोबार मंदा है,' लैला ने कहा। 'मेरे ऐसे दोस्त हैं, जिनसे मैं उधार ले सकता हूं,' उसने उपेक्षा से कहा।

'उन्हें पैसे लौटाओगे कैसे?'

292 ख़ालिद हुसैनी

'चीजें बदलेंगी। वो हमेशा बदलती हैं। देखो, उसे यह पसंद आया। देखा?'

ज़्यादातर दिन लैला अपने बेटे से महरूम रहती। रशीद उसे दुकान लेकर जाता और अपनी भरी हुई काम की मेज के नीचे रेंगने तथा पुराने रबड़ के सोलों और चमड़े के बचे हुए टुकड़ों से खेलने के लिए छोड़ देता। रशीद अपनी लोहे की कीलों में डूबा रहता, रेगमाल पलट देता और उस पर एक चौकस निगाह रखता। अगर जल्मै जूतों का एक रैक गिरा देता तो वो नर्मी से, शांति से, हल्के से मुस्कुराते हुए उसे डांटता। अगर वो दोबारा ऐसा करता तो रशीद अपनी हथौड़ी नीचे रख कर उसे डेस्क पर बिठा देता और उससे नर्मी से वात करता ।

जल्मै को लेकर उसके सब्र का पैमाना बहुत गहरा था और कभी छलकता नहीं था।

शाम को वो साथ घर लौटते। जल्मै का सिर रशीद के कंधों पर उछलता रहता। दोनों से गोंद और चमड़े की गंध आती। वो इस तरह मुस्कुराते जैसे आपस में राज बांटने वाले लोग मुस्कुराते हैं। यह ऐसी कपट भरी मुस्कुराहट होती मानो वो सारे दिन उस हल्की अंधेरी जूतों की दुकान में बैठे जूते नहीं वल्कि खुफिया मंसूबे बनाते रहे हों। रात के खाने पर जल्मै अपने अब्बा के पास बैठना पसंद करता जहां वो अपने निजी खेल खेला करते, जब मरियम, लैला और अज़ीज़ा दस्तरख्वान पर प्लेटें सजातीं। वो बारी बारी से एक दूसरे के सीने को कोंचते, खिलखिलाते, रोटियों के टुकड़े एक दूसरे पर फेंकते, फुसफुसा कर बातें करते जिसे दूसरे नहीं सुन पाते। अगर लैला उनसे बोलती तो इस अनचाही दखलंदाजी पर रशीद नाराजगी से ऊपर देखता। अगर वो जल्मै को रुकने को कहती या इससे भी बुरा अगर जल्मै उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाता तो रशीद उसपर आंखें तरेरता।

लेला चिढ़ कर चली जाती।

जल्मे के दो बरस का होने के कुछ हफ़्तों के बाद, एक रात रशीद टेलीविजन और वीसीआर के साथ घर लौटा। दिन गर्म रहा था, लगभग सुहावना, लेकिन शाम ठंडी थी और बिना सितारों वाली एक घनी, सर्द रात में बदल गई थी।

उसने उसे बैठक की टेबल पर सेट किया। उसने कहा कि उन्हें उसने व्लैक मार्केट से खरीदा है।

'फिर से कर्ज?' लैला ने पूछा।

हजारों दमकते आफ़ताब 293

'ये मैग्नावोक्स है।'

पड़ी। अजीजा कमरे में आई। जब उसने टीवी देखा तो उसकी तरफ़ दौड़

'सावधानी से, अजीजा जो,' मरियम ने कहा। 'छूना मत।'

अजीजा के बाल लैला की ही तरह हल्के हो आए थे। लैला उसके गालों में अपने जैसे गड्ढे देख सकती थी। अजीजा एक शांत, ख़यालों में डूबी हुई नन्हीं लड़की बन गई थी, जिसका बरताव लैला को उसकी छह बरस की उम्र से परे का लगता। वो अपनी बेटी के बोलने के सलीके पर, उसकी

आवाज की लय और ताल पर, उसके सचेत तरीके से रुकने और उसके सुरों पर मुग्ध होती, जो इतने बालिग और उस देह से इतनी बेमेल होते, जिससे वो निकलते । अजीजा ने ही अपने खुशमिजाज अधिकार दो साथ खुद पर जल्मै को रोज जगाने, नाश्ता कराने और उसके बालों में कंघी करने का जिम्मा ले रखा था। वही उसे सुलाती, अपने झगड़ालू भाई के साथ वही सुलह-सफाई करती। उसके आसपास रहते हुए अजीजा उसे देख कर अजीब, उत्तेजित तरीके से सिर हिलाती रहती।

अज़ीज़ा ने टीवी का पावर बटन दबा दिया। रशीद ने त्यौरियां चढ़ा कर उसे देखा, उसकी कलाई झटक दी और टीवी को रुखाई से टेबल पर सेट करने लगा।

'यह जल्मै का टीवी है,' उसने कहा।

अज़ीज़ा मरियम के पास जाकर उसकी गोद में बैठ गई। उन दोनों को अब एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता था। इधर, लैला को इससे खुशी होती थी कि मरियम अजीजा को कुरान की आयतें पढ़ना सिखाने लगी थी।
अजीजा अब सूरह इखलास और सूरह फातिहा जबानी पढ़ सकती थी और वो सवेरे की चार रेकात नमाज भी अदा कर सकती थी।

उसे मुझे यही सिखाना है, मरियम ने लैला से कहां। यह ज्ञान, ये नमाजें।

मेरे पास बस यही सच्ची धरोहर रही है।

अब जल्मै कमरे में आ गया था। जिस तरह रशीद पहले से अंदाजा लगाते हुए देख रहा था, जैसे कि सड़क पर जादूगरों के करतब देखते हैं, जल्मै ने टीवी का तार खींचा, बटन दबाए और उसके काले पर्दे को हथेलियों से दबाने लगा। जब उसने उन्हें उठाया, शीशे पर घनी, नन्हीं हथेलियों फीकी पड़ गईं।

294 ख़ालिद हुसैनी

रशीद नाज से मुस्कुराया और जल्म को अपनी हथेलियां रखते और हटाते देखता रहा।

तालिबान ने टीवी पर पाबंदी लगा दी थी। वीडियो टेपों को सरेआम तोड़ा गया था, उसमें से टेप निकाल कर बाड़ों पर टांग दिए गए थे। सैटेलाइट डिशों को लैंपपोस्टों पर लटका दिया गया था। लेकिन रशीद

का कहना था कि चीज़ों पर बस पाबंदी होने मतलब ये नहीं होता कि आप उन्हें हासिल नहीं कर सकते।

'मैं कल से कुछ कार्टून वीडियो खोजूंगा,' उसने कहा। 'मुश्किल नहीं होगा। अंडरग्राउंड बाजारों से आप कुछ भी खरीद सकते हैं।'

'तब तो शायद तुम हमें एक नया कुआं भी खरीद सकते हो,' लैला ने कहा, जिस पर उसे रशीद की तरफ़ से एक अपमानजनक निगाह का सामना करना पड़ा।

बाद में, जब एक और रात सादे भात पर गुज़ारी गई और सूखे को देखते हुए चाय को भुला दिया गया, जब रशीद ने एक सिगरेट पी ली, तब उसने लैला को अपने फैसले के बारे में बताया।

'नहीं,' लैला ने कहा।

उसने कहा कि वो पूछ नहीं रहा था।

'मुझे परवाह नहीं कि तुम पूछ रहे हो या नहीं।'

'तुम परवाह करतीं अगर तुमको पूरी कहानी पता होती।'

उसने कहा कि उसने जितना बताया था, उससे ज़्यादा दोस्तों से कर्ज ले रखा था, कि एक दुकान से अब उन पांचों लोगों का गुजर नहीं हो सकता था। 'तुम्हें परेशान होने से बचाने के लिए मैंने पहले नहीं बताया।'

'इसके अलावा,' उसने कहा। 'उनसे इतनी कमाई होगी कि तुम हैरान रह जाओगी।'

लैला ने फिर से मना किया। वो बैठक में थे। मरियम और बच्चे रसोई में थे। लैला बर्तनों की खनखनाहट, जल्म की तेज हंसी और अपनी मजबूत, समझदारी भरी आवाज में मरियम से कुछ कहती अजीजा की आवाज सुन सकती थी।

'उसकी जैसी और भी होंगी, यहां तक कि उससे भी छोटी,' रशीद ने कहा। 'काबुल में हर कोई यही कर रहा है।'

लैला ने कहा कि दूसरे लोग अपने बच्चों के साथ क्या कर रहे हैं, इसकी

उसे परवाह नहीं है।

हजारों दमकते आफ़ताब 295

'मैं उस पर नजदीक से नजर रखूंगा,' रशीद ने कहा। अब वो पहले से बेसब्र हो गया था। 'यह एक महफूज नुक्कड़ है। सड़क के उस पार मस्जिद है।

'मैं तुम्हें अपनी बेटी को सड़क की भिखारिन नहीं बनाने दूंगी,' लैला गुस्से से बोली।

थप्पड़ की एक तेज आवाज़ आई, रशीद की मोटी उंगलियों वाला हाथ लैला के गालों के मांस पर पड़ा। इससे उसका सिर झटका खा गया। रसोई से आवाजें आनी बंद हो गई। एक पल के लिए घर पूरी तरह खामोश हो गया। गलियारे में दौड़ते कदमों की आवाज आई और फिर मरियम और बच्चे बैठक में थे और लैला और रशीद को बारी बारी से देख रहे थे।

तभी लैला ने रशीद को मुक्का मारा।

पहली बार उसने किसी को मारा था, इसमें उसके और तारिक़ के बीच की खेल-खेल में मुक्केबाजी की गिनती शामिल नहीं है। लेकिन तब वो खुली मुट्ठियों से अपने आप में सचेत, दोस्ताना तरीके से खेलते थे, जिनमें मुट्ठियों के बजाए थपकियां इस्तेमाल की जातीं। वो ऐसी उत्तेजनाओं का जाहिर रूप होतीं, जो एक ही साथ पेचीदा भी होतीं और रोमांचक भी। उनका. निशाना वो मांसपेशी होती जिसे तारिक़ अपनी प्रोफेसराना आवाज़ में डेल्टाइड कहता।

लैला ने अपनी बंद मुड्डी के मेहराब को देखा, उसने हवा में लहराते देखा और अपनी मुट्ठी पर रशीद के खूंटियों वाले खुरदरे चमड़े की सलवटों को महसूस किया। ऐसी आवाज़ निकली मानो चावल की बोरी फर्श पर गिर गई हो। उसने उसे ज़ोर से मारा था। इसके असर से वो दो क़दम पीछे हट गया।

कमरे की दूसरी तरफ़ से एक हांफ, एक तीखी आवाज और चीखं आई। लैला नहीं जान पाई कि कौन सी आवाज़ किसने निकाली थी। उस पल वो इतनी हक्का-बक्का थी कि किसी बात पर गौर नहीं कर रही थी या परवाह नहीं

कर रही थी। उसका पूरा दिमाग उसी हरकत पर लगा हुआ उसे समझने की कोशिश कर रहा था, जिसे उसके हाथ ने कर दिया था। जब ये हुआ, उसे यकीन था कि वो शायद मुस्कुराई होगी। शायद वो मुस्कुराई होगी, जब उसे हैरान करते हुए रशीद कमरे से चुपचाप बाहर निकल गया।

एकबारगी लैला को लगा कि उनकी उसकी, अजीजा की, मरियम

296 ख़ालिद हुसैनी

की-जिंदगियों की मुश्किलें सहज रूप से उड़ गई हैं, जैसे जल्मै की हथेली टीवी के पर्दे पर से उड़ गई थी। चाहे यह कितना भी बेतुका हो, ऐसा लगा कि उन लोगों ने जो कुछ भी बर्दाश्त किया था, उसे इस सर्वोच्च पल के लिए बर्दाश्त करना मुनासिब ही था, जिस पल में की गई अवज्ञा से भरी यह कार्रवाई सारी अमर्यादाओं का अंत कर देने वाली थी।

लैला ने इस पर गौर नहीं किया कि रशीद कमरे में लौट आया था। जब तक कि उसका हाथ उसके गले के गिर्द नहीं पड़ा। जब तक उसे अपने पैरों से उठा कर दीवार से नहीं मार दिया गया।

ऊपर से उसका उपेक्षा से भरा हुआ चेहरा नामुमकिन तरीके से बड़ा दिख रहा था। लैला ने गौर किया कि उम्र के साथ वो कितना सूजता जा रहा था, उसकी नाक पर कितनी टूटी हुई नसें राह बनाती निकल रही थीं। रशीद ने कुछ नहीं कहा। और सचमुच में क्या कहा जा सकता था, क्या कहने. की ज़रूरत थी, अगर आपने अपनी बीवी के मुंह में बंदूक की नली ठूंस दी हो?

आंगन में गड्डा खोदने की वजह छापे थे। ये कभी-कभी माहवार पड़ते कभी हफ्तावार। इधर तो रोज़ होने लगे थे। ज़्यादातर तो तालिबान चीज़ों को जब्त करते, किसी आदमी के पिछवाड़े में एक लात लगाते, एक या दो सिरों को वजाते। लेकिन कभी कभी सरेआम पिटाई होती, पांवों के तलवों और हथेलियों में कोड़े लगाए जाते।

'हल्के से,' मरियम ने अब कहा। उसने कगार पर घुटने टिका रखे थे।
उन्होंने प्लास्टिक की चादर के सिरों के पकड़े हुए टीवी को गड्ढे में उतारा, जिसमें उसे लपेट दिया गया था।

'यह कारगर होना चाहिए,' मरियम ने कहा।

काम पूरा हो जाने के बाद उन्होंने गड्ढे को भर कर मिट्टी को हथेलियों से थपथपाया। उन्होंने थोड़ी मिट्टी आस पास भी बिखेर दी ताकि यह अलग न दिखे।

' लो,' मरियम ने अपनी पोशाक पर हाथ फिराते हुए कहा।

उन्होंने राय की थी कि जब सुरक्षित होगा, जब तालिबान छापे कम कर देंगे तो एक या दो या छह महीनों में या शायद इसमें उससे भी ज़्यादा वक़्त लगे, वो खोद कर टीवी निकाल लेंगी।

हजारों दमकते आफ़ताब 297

लैला के सपने में वो और मरियम औजारों के छप्पर के पीछे फिर से खोद रही थीं। लेकिन इस बार वो अजीजा को गड्ढे में उतार रही थीं। अजीजा की सांसें प्लास्टिक की चादर पर कोहरा बना रही थीं, जिसमें उन्होंने उसे लपेट रका था। लैला ने उसकी खौफजदा आंखें, प्लास्टिक को धकेलती उसकी हथेलियों की सफ़ेदी देखीं। अजीजा फरियादें कर रही थी। लैला उसकी चीखें नहीं सुन पा रही थी। बस कुछ देर के लिए, वो बोल रही थी, बस कुछ देर के लिए। छापा पड़ने वाला है, नहीं जानती तुम मेरी जान? जन छापा ख़त्म हो जाएगा, तो मम्मी और खाला मरियम तुम्हें खोद कर निकाल लेंगी। वादा करती हूं, मेरी जान। फिर हम खेल सकते हैं। तुम जो भी चाहोगी हम वो खेल सकते हैं। उसने फावड़े में मिट्टी भरी। जब मिट्टी का पहला ढेला प्लास्टिक पर लगा तो लैला मुंह में मिट्टी का स्वाद लिए दम घुटने से जग पड़ी थी।

इकतालीस

मरियम

सूखा सन 2000 की गर्मियों में अपने तीसरे और सबसे बदतरीन साल में दाखिल हो गया था।

हेलमंद, जाबोल, कांधार में गांव खानाबदोश समुदायों में बदल गए थे जो हमेशा पानी और मवेशियों के लिए हरे चारे की तलाश में घूमते रहते थे। जब उन्हें कुछ भी नहीं मिला और उनकी बकरियां और भेड़ें और गाएं मर गई तो वो काबुल चले आए। वो कारतेह-आरियाना पहाड़ी इलाके में कामचलाऊ झोपड़ियां खड़ी करके रहने लगे। इन भरी हुई झोपड़ियों में कभी-कभी एक साथ पंद्रह से बीस लोग रहते थे।

गर्मियों का यही मौसम टाइटैनिक का मौसम भी था, इन्हीं गर्मियों में मरियम और अजीजा शरारतों, हंसी ठड्ढे में उलझी रहतीं। अजीजा ज़िद करती कि उसे जैक बनना है।

'चुप हो जाओ, अजीजा जो।'

'जैक! मुझे बुलाइए, खाला मरियम। बोलिए। जैक!' 'तुमने उन्हें जगा दिया तो तुम्हारे अब्बा गुस्सा करेंगे।'

'जैक! और आप हैं रोज।'

आखिर में मरियम पीछे हट जाती, हार मान लेती और फिर से रोज बनना कबूल कर लेती। 'ठीक है, तुम जैक हो,' वो हार मानते हुए कहती। 'तुम जवानी में मर जाओ और मैं बूढ़ी होने तक जीऊंगी।'

हजारों दमकते आफ़ताब 299

'हां, लेकिन मैं एक हीरो की तरह मरूंगी,' अजीजा कहती, 'जबकि तुम रोज, तुम एक पूरी, बेचारी जिंदगी मेरे लिए तरसते हुए गुजारोगी।' तव वो. मरियम के सीने पर बैठते हुए वो ऐलान करती, 'अब आप मुझे चूमेंगी!' मरियम मना करते हुए सिर हिलाती और अजीजा अपने हैरान कर देने वाले रवैए के साथ खुश होते हुए खुले हुए होंठे से खिलखिलाती ।

कभी कभी जल्मै भी दबे पांव आकर खेल देखता। जब भी वो होता, उससे पूछा जाता।

'तुम बर्फ़ का टीला बन सकते हो,' अजीजा कहती।

उस गर्मियों में टाइटेनिक का बुखार काबुल को जकड़े रहा। लोग पाकिस्तान से फ़िल्म की पाइरेटेड कॉपियां चोरी-छिपे लाते-कभी कभी तो अपने अंडरवियर तक में छुपा कर। कर्फ्यू के बाद हर कोई अपने दरवाजे बंद कर लेता, बत्तियां बुझा कर, आवाज़ धीमी करके जैक और

रोज और बदनसीब जहाज की सवारियों के लिए आंसू बहाता। अगर बिजली होगी, मरियम लैला और बच्चे भी इसे देखते। एक दर्जन भर बार या इससे भी ज़्यादा देर उन्होंने रात गए औजारों के छप्पर के पीछे के गड्डे से टीवी को निकाला और बत्तियां बंद कर और खिड़कियों पर लिहाफ डाल कर देखते।

काबुल नदी में दुकानदार नदी की सूखी पेटी में चले गए थे। जल्दी ही इसकी सख़्त और सूखी हुई पेटी में ठेलों पर लगी गांठों में टाइटेनिक दरियां, यइटेनिक कपड़े खरीदे जा सकते थे। टाइटेनिक डियोडोरेंट, टाइटेनिक टूथपेस्ट, टाइटेनिक परफ्यूम, टाइटेनिक पकोरा और यहां तक कि टाइटेनिक बुर्के भी मिलने लगे थे। एक ख़ास ज़िद्दी भिखारी ने खुद को 'टाइटेनिक भिखारी' कहना शुरू कर दिया था।

'टाइटेनिक' शहर' जन्म ले चुका था।

यह गीत है, वो कहते ।

नहीं, समुद्र है। लक्जरी। जहाज।

यह सेक्स है, वो फुसफुसाते ।

लियो, अजीजा शर्माते हुए कहती। यह कुल मिला कर लियो के बारे

में है।

'हर कोई जैक को चाहता है,' लैला ने मरियम से कहा। 'यह ऐसा ही है। हर कोई जैक को तबाही से बचाना चाहता है। लेकिन जैक है ही नहीं।

300 ख़ालिद हुसैनी

जैक लौट नहीं रहा है। जैक मर चुका है।'

फिर उन्हीं गर्मियों में, बाद के दिनों में एक कपड़ा बेचने वाला सोने में पहने अपनी सिगरेट बुझना भूल गया। आग से वह तो बच गया लेकिन उसका स्ट नहीं बचाया जा सका। आग पास के स्टोर तक फैल गई थी जिसमें एक मेकेंडहिँड कपड़ों की दुकान, फर्नीचर और बेकरी की दुकानें थीं।

लोगों ने रशीद को बताया कि अगर हवा पश्चिम के बजाए पृग्ब की त्तरफ़ बह रही होती तो उसकी दुकान बच सकती थी, जो ब्लॉक के कोने पर थी।

उन्होंने हर चीज़ बेच दी।

पहले मरियम की चीजें विकीं, फिर लैला की। अज़ीज़ा के बचपन के कपड़े, वो थोड़े से खिलौने जिन्हें खरीद देने के लिए लैला को रशीद से झगड़ना पड़ा था। अज़ीज़ा इस पूरी कार्रवाई को एक हारी हुई निगाह से देखती रही। रशीद की घड़ी भी बिक गई, उसका पुराना ट्रांजिस्टर रेडियो, उसकी नेकटाई का जोड़ा, उसके जूते, उसकी शादी की अंगूठी। पलंग, टेवल, कालीन और कुर्सियां भी चली गईं। रशीद ने जब टीवी बेचा तो बौखलाए हुए जल्मै ने खूब रोनाथांना मचाया।

आग के हादसे के बाद रशीद लगभग पूरे दिन घर पर रहता। वो अजीजा को थप्पड़ मारता। मरियम की लातें लगाता। चीजें फेंकता। लैला में वो मीन-मेख खोजा करता, उसके महक्कने पर, उसके कपड़े पहनने के तरीके पर, वालों को कंघी करने के उसके तरीके पर, उसके पीले पड़ते दांतों पर।

'क्या हो गया है तुम्हें?' वो कहता। 'मैंने एक परी से शादी की थी और अव में एक खूसट बुढ़िया के साथ बैठा हूं। तुम मरियम बनती जा रही हो।'

उसे हाजी यागृब मस्जिद के पास कवाव हाउस की नौकरी से निकाल दिया गया, क्योंकि वो और एक ग्राहक़ इागड़ बैठे थे। ग्राहक़ ने शिकायत की कि रशीद ने बेरुखी से उसकी टेवल पर रोटी पटकी थी। दोनों ने एक दूसरे को कड़ी बातें कहीं। रशीद ने ग्राहक को बंदर के मुंह वाला उज्बेक कहा। एक बंदूक निकली। इसके जवाब में कवाव के लिए इस्तेमाल में लाई जाने वाली एक सींख तलानी गई। रशीद की कहानी के मुताबिक उसने सींख

हजारों दमकते आफ़ताब 301

तानी थी। मरियम को इसमें संदेह था।

उसे तैमानी के रेस्टोरेंट से भी छुट्टी दे दी गई क्योंकि ग्राहक्कों ने देर तक इंतजार कराए जाने की शिकायत की थी। रशीद का कहना था कि रसोइया ही सुस्त और आलसी था।

'शायद तुम ऊंघने लग जाते होंगे,' लैला ने कहा।

'उसे उकसाओ नहीं, लैला जो,' मरियम बोली ।

'औरत, मैं तुमको चेता रहा हूं,' वो बोला।

'या तो सो रहे होंगे या सिगरेट पी रहे होंगे।'

'खुदा कसम ।'

'तुम उससे अलग नहीं हो सकते जो तुम हो।'

और फिर वो लैला के पीछे पड़ा, उसके सीने, उसके सिर, उसके पेट पर मुक्के मारने लगा, उसके बाल नोचने लगा, उसे कुएं में धकेलने ले जाने लगा। अज़ीज़ा कांपते हुए उसकी कमीज़ खींच रही थी, जल्मै भी चिल्ला रहा था और उसकी पकड़ से अम्मी को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। रशीद ने बच्चों को परे धकेल दिया, लैला को जमीन पर पटका और उसे लात मारने लगा। मरियम लैला के ऊपर लेट गई। रशीद ने लातें मारना जारी रखा था जो अब मरियम को लग रही थीं। रशीद के मुंह से थूक उड़ रही थी, उसकी आंखें कातिलाना इरादे से चमक रही थीं। वो तब तक लात चलाता रहा जब तक थक नहीं गया।

'खुदा कसम, तुम मुझे तुम्हारी जान ले लेने के लिए मजबूर कर रही हो, लैला,' हांफते हुए वो बोला। फिर वो झोंके की तरह घर से निकल गया। जब पैसे ख़त्म हो गए तो भूख उनकी जिंदगियों पर पसरने लगी। जिस तेज़ी से बढ़ती हुई भूख उनकी जिंदगियों का अहम हिस्सा बन गई थी, उससे

मरियम हैरान रह गई।

उबला हुआ और सफ़ेद भात, जिसके साथ अब गोश्त या सॉस भी नहीं होता, एक दुर्लभ दावत हुआ करती। अब बढ़ती हुई खतरनाक नियमितता के साथ वे उपवास करने लगे थे। कभी-कभी रशीद एक टिन या ब्रिटल में सार्डीन और सूखी रोटियां ले आता, जो स्वाद में लकड़ी के बुरादे जैसी लगतीं। हाथ काट लिए जाने का जोखिम उठा कर कभी कभी वो सेबों के चुराए हुए

होटल के दाखिले पर रशीद एक डोरमैन से दुआ-सलाम करके गले मिला, जिसने बरगंडी सूट और विसर टोपी पहन रखी थी। उनमें कुछ दोस्ताना

हजारों दमकते आफ़ताब 303

लगने वाली बातचीत हुई। रशीद उस डोरमैन की कोहनी थामे हुए बात कर रहा था। उसने एक बार मरियम की तरफ़ भी हाथ उठाया और दोनों उसे देखने लगे। मरियम ने सोचा कि उस डोरमैन में कोई जानी-पहचानी बात थी।

डोरमैन के भीतर जाने के बाद मरियम और रशीद बाहर इंतजार करने लगे। उस जगह से, जहां से दूर-दूर तक का नजारा दिख रहा था, मरियम को पॉलीटेक्नीक इंस्टीट्यूट और उसके पार पुराना खैर खाना जिला और मज़ार की तरफ़ जाता रास्ता दिख रहा था। दक्षिण में वो रोटियों के कारखाने सिलो को देख सकती थी, जो बहुत दिनों से बंद थी। इसकी पीली दीवार उस गोलीबारी के खुले हुए छेदों के साथ सिर उठाए झांक रही थीं, जिसे उसने अपने ऊपर झेला था। उससे भी आगे दक्षिण में वो दारुलअमन पैलेस के गिरे हुए खंडहरों को देख पा रही थी, जहां बरसों पहले रशीद उसे पिकनिक पर ले गया था। उस दिन की याद अतीत का एक ऐसा टुकड़ा थी, जो अब उसकी अपनी जिंदगी का अतीत नहीं लगता था।

मरियम अपना ध्यान इन्हीं चीज़ों पर, जगहों और इमारतों पर लगाए रही। उसे डर था कि अगर उसने अपना दिमाग भटकने दिया तो वो होश खो बैठेगी।

हर कुछ मिनट में जीपें और टैक्सियां होटल के दाखिले तक आतीं। डोरमैन सवारियों का स्वागत करने के लिए भाग कर जाते। सभी सवारियां मर्द होतीं, हथियार लिए हुए, दाढ़ी बढ़ाए, पगड़ी पहने हुए। वो सभी कारों से एक जैसे हौसले और रोब-दाब के साथ निकलतीं।
होटल के दरवाजों के पार ओझल होते हुए उनकी बातों के टुकड़े मरियम को सुनाई देते। उसे पश्तो और फ़ारसी सुनाई देती, लेकिन उर्दू और अरबी भी।

'हमारे असली मालिकों से मिलो,' रशीद ने धीमी आवाज़ में कहा। 'पाकिस्तानी और अरब इस्लामवादी। तालिबान तो कठपुतलियां हैं। ये बड़े खिलाड़ी हैं और अफ़ग़ानिस्तान उनका खेल का मैदान है।'

रशीद ने बताया कि उसने अफवाहें सुनी हैं कि तालिबान इन लोगों को देश भर में खुफिया कैंप लगाने की इजाजत दे रहे हैं, जहां नौजवान

फिदायीन बमवाज़ और जिहादी लड़ाके बनने के लिए ट्रेन किए जा रहे थे।

'उनको इतनी देर क्यों लग रही है?' मरियम ने कहा।

304 ख़ालिद हुसैनी

रशीद ने थूक फेंकी और लात मार कर उसे धूल से ढंक दिया।

घंटे भर बाद वो, मरियम और रशीद उस डोरमैन के पीछे-पीछे भीतर जा रहे थे। खुशनुमा ठंडी लॉबी से होकर ले जाए जाते हुए उनकी एड़ियां टाइलों वाली फर्श पर बज रही थीं। मरियम ने दो लोगों को चमड़े की कुर्सियों पर बैठे देखा। उनके बीच में राइफलें और कॉफी टेबल रखी थी और वो काली चाय पीते हुए, एक प्लेट में रखी रस में डूबी हुई जलेबियां खा रहे थे। मरियम को अजीजा का ख़याल आया, जिसे जलेबियां बहुत पसंद थीं और उसने नज़र दूसरी तरफ़ फेर ली।

डोरमैन उन्हें बाहर एक बालकनी में ले गया। अपनी जेब से उसने एक छोटा-सा काला कॉर्डलेस फोन और काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाला, जिस पर फोन नंबर लिखा हुआ था। उसने रशीद को बताया कि यह उसके सुपरवाइजर का सैटेलाइट फोन था।

नहीं।' 'मैंने तुम्हारे लिए पांच मिनट हासिल किए हैं,' उसने कहा। 'इससे ज़्यादा

तशक्कुर,' रशीद ने कहा। 'मैं इसे भूलूंगा नहीं।'

' डोरमैन ने सिर हिलायों और चला गया। रशीद ने नंबर डायल किया। उसने मरियम को फोन दे दिया।

फोन पर घंटी की खरोंचती हुई आवाज सुनते हुए मरियम का दिमाग भटकने लगा। वो वहां जा पहुंचा, जब उसने आख़िरी बार जलील को देखा था। यह तेरह साल पहले 1987 का बसंत था। वो उसके घर के बाहर गली में छड़ी के सहारे झुका हुआ खड़ा था। उसकी बगल में हेरात की लाइसेंस प्लेट वाली नीली बेंज खड़ी थी, जिसकी छतों, हुड और ट्रंक को एक सफ़ेद पट्टी बांट रही थी। वो घंटों वहां खड़ा उसका इंतजार करता रहा। थोड़ी-थोड़ी देर में वो उसका नाम पुकारता, जैसे मरियम एक बार उसके घर के बाहर उसे पुकार रही थी। मरियम ने एक बार बस थोड़ा सा पर्दा सरका कर, उसे एक झलक देखा था। केवल एक झलक, लेकिन यह देख लेने के

लिए उतनी ही देर काफ़ी थी कि जलील के बाल सफ़ेद हो गए थे और वो झुकने लगा था। उसने चश्मा पहन रखा था, हमेशा की तरह एक लाल टाई लगा रखी थी और सीने की जेब में एक सफ़ेद रूमाल तिकोना मोड़ कर लगाया हुआ था। सबसे ज़्यादा ध्यान इस पर गया कि वो दुबला हो गया था, पहले से

हजारों दमकते आफ़ताब 305

कहीं ज़्यादा दुबला, और तब उसने याद किया कि उसका गहरा स्याह कोट उसके कंधों पर झूल रहा था और पैंट उसकी एड़ियों तक लटक गई थी।

पल भर के लिए ही सही, लेकिन जलील ने भी उसे देख लिया था। पढ़ें की उस झिर्री से. ही उनकी आंखें थोड़ी देर को मिली थीं, जिस तरह बरसों पहले वो इसी तरह पर्दों के एक और जोड़े के पीछे से मिली थीं। लेकिन तभी मरियम ने जल्दी से पर्दा खींच लिया था। वो बिस्तर पर बैठ गई और उसके जाने का इंतजार करती रही।

उसे अब उस ख़त का ख़याल आया, जिसे जलील उसके दरवाजे पर छोड़ गया था। कई दिनों तक उसने उसे अपने तकिए के नीचे रखा। कभी-कभी वो उसे उठाती, हाथों में उलट-पलट कर देखती। आख़िर में उसने ख़त के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे।

और अब वो इतने बरसों के बाद उसे फोन कर रही थी।

मरियम को अब अपने लड़कपन की बेवकूफ़ी भरी आन पर पछतावा हो रहा था। उसने चाहा कि उसने जलील को भीतर आने दिया होता। उसे भीतर आने देने में, उसके साथ बैठने में, जो बात वो कहने आया था उसे कहने देने में क्या हर्ज था? वो उसका बाप था। यह सही था कि वो एक अच्छा बाप नहीं था, लेकिन रशीद के बुरे व्यवहारों या उस क्रूरता और हिंसा से तुलना करने पर, जिसे उसने लोगों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करते देखा था, अबे जलील की गलतियां कितनी साधारण लग रही थीं, उन्हें माफ़ किया जा सकता था।

उसने चाहा कि उसने उसका ख़त नहीं फाड़ा होता।

एक मर्द की गहरी आवाज़ उसके कानों में बजी और उसने बताया कि वो हेरात के मेयर के दफ्तर में है।

मरियम ने गला साफ़ किया। 'सलाम, बिरादर। मैं किसी को खोज रही हूं जो हेरात में रहते हैं। या बरसों पहले रहते थे। उनका नाम जलील खान है। वो शार-ए-नौ में रहते थे और उनका एक सिनेमाघर था। क्या आपको उनके पता-ठिकाना के बारे में कुछ मालूम है?'

मर्द की आवाज में चिढ़ साफ़ सुनाई दे रही थी। 'आपने इसके लिए मेयर के दफ्तर में फोन किया है?'

मरियम ने बताया कि उसे नहीं मालूम कि किसे फोन किया जाए।

306 ख़ालिद हुसैनी

'माफ़ कीजिए बिरादर। मुझे पता है कि आपको अहम काम देखने हैं, लेकिन यह जिंदगी और मौत का मामला है, यह जिंदगी और मौत का सवाल है, जिसके लिए मैं फोन कर रही हूं।'

'मैं उन्हें नहीं जानता। सिनेमाघर तो अनेक बरसों से बंद हैं।'

'शायद कोई हो, जो उन्हें जानता हो, कोई-'

'ऐसा कोई नहीं है।'

मरियम ने आंखें बंद कर लीं। 'मेहरबानी करके बिरादर। बच्चों का मामला है। छोटे-छोटे बच्चों का।'

एक लंबी गहरी सांस ।

'शायद कोई हो-'

'यहां एक माली है जो पूरी जिंदगी यहीं रहा है।'

'हां, मेहरबानी करके उससे पूछिए।'

'कल फोन कीजिए।'

मरियम ने कहा कि वो ऐसा नहीं कर सकेगी। 'मेरे पास फोन बस पांच ही मिनटों के लिए है। मैं नहीं कर सकूंगी'

दूसरे सिरे से क्लिक की आवाज़ आई और मरियम ने सोचा कि उसने फोन रख दिया है। लेकिन वो कदमों का आवाजें, बातें, दूर से बजती कार की सीटी और क्लिक क्लिक की लय के साथ किसी मशीन की घरघराहट की आवाजें आ रही तीं। शायद ये बिजली का पंखा था। मरियम ने फोन दूसरे कान से लगा लिया और आंखें बंद कर लीं।

ख्यालों में उसने मुस्कुराते हुए जलील को देखा जो अपनी जेब की तरफ़ हाथ बढ़ा रहा था।

आह। बेशक। खैर। तो ये लो। बिना किसी और सजाव...

पत्तियों की शक्ल का एक पेंडेंट, जड़े हुए चांद और सितारों की लटकन वाले नन्हें सिक्के।

पहन कर देखो मरियम जो।

आपको कैसा लगा?

मुझे लगता है कि तुम एक रानी जैसी दिख रही हो।

कुछ मिनट गुजरे। इसके बाद कदमों की आवाजें, चरमराने की आवाज और एक क्लिक। 'वो उनको जानता है।'

हजारों दमकते आफ़ताब 307

'वो जानता है?'

'उसने यही बताया।'

'वो कहां हैं?' मरियम ने कहा। 'क्या इस आदमी को पता है कि जलील खान कहां हैं?'

पल भर की चुप्पी। 'उसका कहना है कि वो कुछ बरस पहले 1987 में मर गए।'

मरियम का पेट बैठ गया। बेशक, उसने इस संभावना पर भी सोचा था। जलील अब पचहत्तर पार कर चुका होता, लेकिन...

□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□-□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□

'□□ □□□□ □□□□ □□□□,' □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□

'□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□,' □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ '□□□□□□□□,' □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□

□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□

'□□□□□,' □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ '□□□□ □□□□ □□□□ □□□□'

□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□, □□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□

***** □□□□□□-- 1 □□□□□□ *****

sjeet